पहले पकाशित अंक

जड़ी-बूटी बाजार

चुनौतियों, समाधानों और उपलब्धियों
से भरा सफर

क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र, उत्तर भारत-1, जोगिन्द्रनगर, मंडी, हिमाचल प्रदेश

NATIONAL MEDICINAL PLANTS BOARD
Plants For Health & Prosperity

E-Charak
e-Channel for Herbs, Aromatic, Raw Material & Knowledge

जड़ी-बूटी बाजार

हर माह प्रकाशित/प्रसारित

www.rcfcnorth.in ■ कुल पृष्ठ : 8 ■ वर्ष 1, अंक 1 ■ 1 सितंबर से 30 सितंबर

क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तर भारत, आयुष मंत्रालय भारत सरकार, दूरभाष-01908-222970, 222333 email:rcfcnorth@gmail.com

नेशनल मेडिसिनल प्लांट बोर्ड का जोगिंद्रनगर स्थित क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र औषधीय पौधों के लिए सिंगल विंडो

उत्पादकों, किसानों, शोधकर्ताओं और व्यापारियों के लिए सुगम समाधान

औषधीय पौधों की बढ़ती मांग को देखते हुए भारत सरकार ने नवंबर 2000 में स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अधीन राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड (नेशनल मेडीसिनल प्लांट बोर्ड) की स्थापना की। नेशनल मेडीसिनल प्लांट बोर्ड का मुख्य कार्य औषधीय पौधों की खेती, समर्थन नीतियों, व्यापार, निर्यात, संरक्षण और औषधीय खेती के विकास से सम्बंधित सभी कार्यक्रमों का समन्वय करना है। स्थानीय औषधीय पौधों और चिकित्सा जगत के लिए जरूरी पौधों की प्रजातियों की खेती को बढ़ावा देने के साथ बोर्ड अनुसंधान, विकास व प्रशिक्षण के माध्यम से क्षमता निर्माण में अहम भूमिका अदा कर रहा है। बीजों, दवाईयों और रोपण सामग्री की गुणवता के प्रमाणिकरण सहित बोर्ड नीतियों/कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के लिए विभिन्न मंत्रालयों/ विभागों/ संगठनों के बीच मजबूत तालमेल विकसित कर इस क्षेत्र का विकास कर रहा है। औषधीय पौधों के क्षेत्र में जारी विभिन्न गतिविधियों में समन्वय स्थापित करने के लिए मेडीसिनल प्लांट बोर्ड ने देश के पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, मध्य और उत्तर पूर्व में छह क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र स्थापित किए हैं। हिमाचल प्रदेश के आयुर्वेद विभाग के जोगिंद्रनगर स्थित आयुर्वेद अनुसंधान केंद्र के औषधीय पौधों के किए गए कार्यों के अनुभव और योग्यता के देखते हुए उत्तर भारतीय राज्यों के लिए क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र (आरसीएफसी) के तौर पर चयन किया गया है। आरसीएफसी जोगिंद्रनगर, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, चंडीगढ़ और दिल्ली में औषधीय पौधों के उत्पादकों, किसानों, शोधकर्ताओं, व्यापारियों और अन्य हितधारकों के लिए एक स्टॉप शॉप के रूप में कार्य कर रहा है।

क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तर भारत, जोगिंद्रनगर

श्री विपिन सिंह परमार
आयुर्वेद, स्वास्थ्य व परिवार कल्याण मंत्री, हिमाचल प्रदेश।

केंद्र के लक्ष्य

- जड़ी-बूटियों के विक्रेताओं-क्रेताओं के बीच करार करवाना।
- उत्पादकों को गुणवत्तापरक प्लांटिंग मैटीरियल की सुविधा दिलवाना।
- तकनीक के प्रयोग से जड़ी-बूटियों के कारोबार में मूल्यवर्धन करना।
- जड़ी-बूटियों के रखरखाव के लिए स्टोर हाउस की व्यवस्था करवाना।
- जड़ी-बूटियों के विपणन के लिए आउटलैट स्थापित करवाना।
- जड़ी- बूटी की खेती को बढ़ावा देना और उत्पादकों को बाजार से जोड़ना।
- जंगली- जड़ी बूटियों के वैज्ञानिक दोहन पर बल देना।
- जड़ी-बूटियों की खेती से रोजगार सृजन और ग्रामीण आर्थिकी को मजबूत करना।

क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तर भारत के कार्य

- **यह** केंद्र क्षेत्र आधारित औषधीय पौधों की खेती और व्यापार से संबंधित सभी समाधानों के लिए एक स्टॉप शॉप के रूप में कार्य कर नेशनल मेडीसनल प्लांट के उद्देश्य को पूरा कर रहा है। यह केंद्र क्षेत्र आधारित औषधीय पौधों से सम्बंधित अनुसंधान गतिविधियों को गति प्रदान कर रहा है।
- यह केंद्र विभिन्न प्रतिष्ठानों व संगठनों के साथ मिलके विभिन्न उत्पादों की ग्रेडिंग व मार्केटिंग के लिए सुविधा प्रदान कर रहा है।
- यह केंद्र विभिन्न प्रशिक्षण शिविरों, कार्यशालाओं, सेमिनारों के माध्यम से जड़ी- बूटी इक्टठा करने वालों, उत्पादकों सहित सभी हितधारकों के बीच प्रबंधकीय और तकनीकी कौशल विकसित कर रहा है।
- यह केंद्र औषधीय पौधों की कृषि करने के लिए प्रौद्योगिकी के विकास, विशेष रूप से लुप्तप्राय और उच्च मांग वाली प्रजातियों की खेती व पहले से विकसित कृषि तकनीकों के अनुकूल फील्ड परीक्षणों पर काम कर रहा है।
- यह केंद्र औषधीय पौधों के संरक्षण, टिकाऊ खेती, प्रौद्योगिकी उन्नयन और अनुसंधान पर जानकारी देने के साथ उन गतिविधियों में वन विभागों और राज्यों के अन्य संबंधित विभागों को शामिल करने के लिए प्रयास कर रहा है।
- यह केंद्र क्षेत्र अधारित विशेष विशिष्ट गुणवत्ता वाली रोपण सामग्री का विकास कर रहा है और इसके साथ संबंधित मुद्दों को वैज्ञानिक रूप से प्रचारित कर रहा है।
- यह केंद्र संबंधित सभी राज्यों में उन्नत कृषि पद्धतियों (जीएपी), गुड फील्ड कलेक्शन प्रैक्टिस (जीएफसीपी) को प्रसार कर रहा है और उन्हें विकसित कर रहा है।
- यह केंद्र संबंधित राज्यों में औषधीय पौधों के विभिन्न हितधारकों, संस्थाओं, गैर सरकारी संगठनों, जन संगठनों, किसान समूहों व महिला मंडलों को एक साथ लाकर औषधीय पौधों की खेती के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित कर रहा है।
- यह केंद्र औषधीय पौधों के बीज, खेती, प्रोसेसिंग और व्यापार क्षेत्र के विभिन्न संगठनों की सहायता कर औषधीय खेती को विकल्प के तौर पर स्थापित कर रहा है।
- यह केंद्र क्षेत्र विशेष की स्थानीय व जंगली प्रजातियों की विभिन्न किस्मों का विकास कर रहा है और उनके संरक्षण की दिशा में काम कर रहा है।
- यह केंद्र विभिन्न प्रशिक्षण शिविरों, कार्यक्रमों के तहत औषधीय पौधों के विभिन्न हितधारकों की क्षमता को विकसित कर रहा है।
- यह केंद्र औषधीय पौधों की खेती के विभिन्न हितधारकों के साथ समय-समय पर बैठकों, कार्यशालाओं, सेमिनारों का आयोजन कर जरूरी परामर्श दे रहा है।
- यह केंद्र सभी संबंधित राज्यों में औषधीय पौधों से संबंधित सभी क्षेत्रों के डाटाबेस को इकट्ठा कर संबंधित क्षेत्र के विभिन्न राज्यों के डेटाबेस का एकीकरण कर रहा है।
- यह केंद्र औषधीय पौधों के क्षेत्र में शोध निष्कर्षों व नई प्रौद्योगिकियों के प्रचार- प्रसार के साथ क्षेत्र विशेष के लिए शोध अनुसंधानों की प्रासंगिकता के बारे में भी कृषकों को जागरूक कर रहा है।
- यह केंद्र सूचना, शिक्षा और संचार के लिए रणनीति विकसित कर संबंधित राज्यों में इन गतिविधियों को लागू कर रहा है।
- यह केंद्र नेशनल मेडिसिनल प्लांट बोर्ड की गतिविधियों की सफलता की प्रेरक कहानियों के दस्तावेज तैयार कर उन्हें प्रसारित कर रहा है।
- यह केंद्र मासिक न्यूज लैटर के जरिये इस क्षेत्र से जुड़ी तमाम सूचनाएं हितग्राहियों तक पहुंचा रहा है।

- संजीव भटनागर, निदेशक आयुर्वेद, हिमाचल प्रदेश

www.rcfcnorth.in
2
जड़ी-बूटी बाजार
1 सितंबर से 30 सितंबर 2018

बाजार की सूचना

नेशनल मेडिसिनल प्लांट बोर्ड संचार नेटवर्क से उत्पादों की बिक्री के लिए विभिन्न बाजारों के थोक मूल्यों और रुझानों की सूचना देता है। कृषि मंत्रालय के किसान कॉल सेंटर से किसानों को औषधीय खेती के बारे में सलाह दी जाती है।

स्थानीय औषधीय पौधों और चिकित्सा जगत के लिए जरूरी प्रजातियों की खेती को बढ़ावा देने पर केन्द्रित

ऑरगेनिक खेती, व्यापार और निर्यात की प्रमुख संस्था नेशनल मेडिसिनल प्लांट बोर्ड

डॉ. सुंदर शर्मा, उपनिदेशक(तकनीकी) आयुर्वेद

किसानों के लिए औषधीय पौधों की खेती काफी लाभदायक सिद्ध हो रही है। कई राज्यों के किसानों ने मेडिसिनल प्लांट्स की खेती को विकल्प बनाया है और खेती कर लाभ कमा रहे हैं। मेडिसिनल प्लांट्स की खेती के प्रसिद्ध होने की वजह यह है कि यह कम समय और कम लागत में अच्छा मुनाफा देती है। ज्यादातर औषधीय पौधों की खेती 3 से 6 माह के लिए होती है। इस खेती को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार ने वर्ष 2000 में नेशनल मेडिसिनल प्लांट बोर्ड की स्थापना की। इस संस्था का मुख्य कार्य औषधीय पौधों, समर्थन नीतियों, व्यापार, निर्यात, संरक्षण और खेती के विकास से सम्बंधित सभी कार्यक्रमों का समन्वय करना है।

बोर्ड के लक्ष्य और उद्देश्य

औषधीय पौधों की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए नेशनल मेडिसिनल प्लांट बोर्ड स्थानीय औषधीय पौधों और चिकित्सा जगत के लिए जरूरी प्रजातियों की खेती को बढ़ावा देने पर केन्द्रित है। बोर्ड अनुसंधान और विकास, प्रशिक्षण के माध्यम से क्षमता निर्माण, हर्बल उद्यान बनाने जैसे कार्यों से जागरूकता बढाने का काम कर रहा है और अच्छी कृषि और संग्रह प्रथाओं के विकास गुणवता, सुरक्षा और प्रभावकारिता के मानकों को निर्धारित करने में प्रयत्नशील है। संस्था का लक्ष्य बीजों, दवाईयों और रोपण सामग्री की गुणवता के प्रमाणिकरण सहित नीतियों/ कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के लिए विभिन्न मंत्रालयों/ विभागों/ संगठनों के बीच मजबूत समन्वय विकसित करके इस क्षेत्र का विकास करना है।

वर्ष 2000 में हुई नेशनल मेडिसिनल प्लांट बोर्ड की स्थापना

36 स्टेट मेडिसिनल बोर्ड

इस संस्था के अधीन 36 राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों में स्टेट मेडिसिनल बोर्ड भी कार्यशील हैं। इसके तहत राजस्थान, छत्तीसगढ़, केरल, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, त्रिपुरा, मेघालय, पश्चिमी बंगाल, मणिपुर, हिमाचल प्रदेश, जम्मू- कश्मीर, झारखंड, कर्नाटक , हरियाणा, महाराष्ट्र, पंजाब, उड़ीसा, सिक्किम, तेलंगाना, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, चंडीगढ़, दमन एंड द्वीप, लक्षदीप, पांडिचेरी, गोवा, गुजरात, दिल्ली, बिहार, आसाम, अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम, नागालैंड, अंडमान- निकोबार, द्वीप समूह, दादर एंड नगर हवेली में बोर्ड के कार्यालय हैं।

8610 लाइसेंसी हर्बल इकाईयां

नेशनल मेडिसिनल प्लांट बोर्ड औषधीय खेती को बढ़ावा देने के साथ औषधीय पौधों से प्राप्त सह उत्पादों के निर्माण को बढ़ावा देने के लिए हर्बल इकाईयों की स्थापना में भी सहयोग करता है। वर्तमान में देश में 8610 लाइसेंसशुदा हर्बल इकाईयां, हजारों कुटीर स्तर की अनियमित हर्बल इकाईयां और लाखों लोक चिकित्सक आयुर्वेदिक, यूनानी एवं होम्योपैथी चिकित्सा व्यापार के लिए मजबूत आधार सतंभ हैं। हर्बल क्षेत्र के विपणन और व्यापार को समझने के लिए औषधीय पौधों की मांग और आपूर्ति पर ध्यान केंद्रित करने में इस संस्था का महत्वपूर्ण रोल है।

औषधीय पौधों 6500 प्रजातियां

भारत में औषधीय पौधों की लगभग 6500 प्रजातियां हैं। देश में इन औषधीय पौधों की मांग और आपूर्ति का आकलन पहली बार वर्ष 2001- 02 में राष्ट्रीय औषधीय संयत्र बोर्ड द्वारा किया गया। उस समय चयनित 162 पौधों के वार्षिक व्यापार स्तर को समझने के लिए सीआईआरपीए के माध्यम से अययन किया। वर्ष 2006-07 में राष्ट्रीय अध्ययन शुरू किया। इस अध्ययन के बाद हर्बल सेक्टर की जटिलताओं को सामने लाकर व्यापार में दवा इकाईयों की विविधता से संबंधित रिपोर्ट पेश की गई। इससे औषधीय पौधों की खेती की दिशा में अहम पहल हुई।

क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र

उत्तरी क्षेत्र -1
क्षेत्रीय निदेशक, आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, जोगिंद्रनगर, हि. प्र. - 175015
फोन : 1908-222970
मोबाइलः 09418010624,
मेलः rcfcnorth@gmail.com

उत्तरी क्षेत्र -2
क्षेत्रीय निदेशक, शेर-ए-कश्मीर कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय,
कृषि संकाय, वाडुरा, सोपोर,
जम्मू- कश्मीर
मोबाइलः 09797477664
मेलः sheikhbilala@gmail.com

केंद्रीय क्षेत्र
क्षेत्रीय निदेशक, राज्य वन अनुसंधान संस्थान, पोलिपाथर, जबलपुर,
मध्य प्रदेश - 482008,
फोन : 0761-2669035
मोबाइलः 9 300481678
rcfc_sfri@rediffmail.com
sdfri@rediffmail.com

पूर्वी क्षेत्र
क्षेत्रीय निदेशक, जादवपुर विश्वविद्यालय, 188, राजा एस.सी. मलिक रोड,
कोलकाता, पश्चिम बंगाल - 700032
मोबाइलः 09433069631
फोन : 033-24146799
registrar@admin.jdvu.ac.in
asism.ju@gmail.com;

पश्चिम क्षेत्र
क्षेत्रीय निदेशक, केरल वन अनुसंधान संस्थान, पिची त्रिशूर, केरल - 680653
मोबाइलः 09447618335,
फोन : 0487-2690100
मेलः rcfcsouthern@gmail.com

पूवोत्तर क्षेत्र
क्षेत्रीय निदेशक
असम कृषि विश्वविधालय,
जोरहाट, असम- 785013
फोन : 0376-2340001
मेलः webadmin@aau.ac.in

उत्तर भारत क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र जोगिंद्रनगर के अंतर्गत राज्यवार संपर्क

हिमाचल प्रदेश
निदेशक एवं सदस्य सचिव, राज्य मेडिसिनल प्लांटस बोर्ड, आयुर्वेद भवन, ब्लॉक 26, कसुम्पटी, शिमला - 171009
फोन 0177- 2622262
मेल : ayur-hp@nic.in

हरियाणा
सीसीएफ/सीईओ, हरियाणा राज्य मेडिसिनल प्लांटस बोर्ड, प्लॉट सी -18, वन भवन, सेक्टर -6 पंचकुला- 134109
फोन- 0172- 2560706
ccf_prodhr@yahoo.com

पंजाब
पीसीसीएफ/ सदस्य सचिव पंजाब मेडिसिनल प्लांटस बोर्ड, वन परिसर, सेक्टर 68, मोहाली, पंजाब।
फोन : 0172 2298010
iwardprojectpb@gmail.com

चंडीगढ़
निदेशक पर्यावरण/ सीईओ, राज्य राज्य मेडिसिनल प्लांटस बोर्ड, सेक्टर -19 बी, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ - 160091
फोन : 0172-2700217
cf.chandigarh@gmail.com

उत्तर प्रदेश
निदेशक,कृषि प्रबंधन संस्थान यूपी राज्य मेडिसिनल प्लांटस बोर्ड, रहमान खेड़ा, काकोरी, लखनऊ - 226001
फोनः 0522-2841013,

उत्तराखंड
बागवानी सचिव/ सीईओ राज्य मेडिसिनल प्लांटस बोर्ड ,94, वसंत विहार, चरण-2, देहरादून - 248006
फोन : 0135-2769918
undpgefuk@gmail.com

दिल्ली
निदेशक / सीईओ, राज्य मेडिसिनल प्लांटस बोर्ड, आईएसएम निदेशालय, करोल बाग, दिल्ली - 110005
फोन : 23682962
मोबाइल : 9871187889

प्रमुख सलाहकार
श्री संजीव भटनागर, (आईएएस)
श्री जतिंद्र शर्मा, (आईएसएफ)
डॉ. पदम कुमार (दिल्ली)
डॉ.वाई. के. शर्मा (हिमाचल)
डॉ के. के. शर्मा (हिमाचल)
डॉ. संजय कुमार (हिमाचल)
डॉ. सुंदर कुमार (हिमाचल)
डॉ. राखी (हिमाचल)
डॉ. डी. आर. नाग (हिमाचल)
डॉ. जे. पी. सिंह (पंजाब)
श्री गुरप्रीत सिंह (उत्तर प्रदेश)
डॉ. जी. एस. चीमा (पंजाब)
डॉ. नवीन जोशी (उत्तराखंड)
डॉ. आर. के. सूद (हिमाचल)
डॉ. गुरूपाल जरियाल (मध्य प्रदेश)
डॉ. रमन खन्ना (पंजाब)
डॉ.एन. एन. मैहरोत्रा (उत्तर प्रदेश)
श्री पंकज कुमार (उत्तराखंड)
श्री बी. एम. काण्डपाल (दिल्ली)
श्री कमलजीत सिंह (हरियाणा)
डॉ रविंद्र रैणा (उत्तर प्रदेश)
श्री जतिंद्र सौढी (हिमाचल)
श्री नरेश कुमार (पंजाब)
श्री राजेंद्र ठाकुर (हिमाचल)
डॉ. देवराज भारद्वाज (हिमाचल)
डॉ. गौरव (हिमाचल)
प्रो. कुतवंत राय (हिमाचल)
श्री शमीराज (हिमाचल)
श्री कलवंत भूरिया (हिमाचल)
डॉ. राज कुमार शर्मा (हिमाचल)
डॉ. विजय शर्मा (हिमाचल)
डॉ.ईश्वर सरदाना (पंजाब)

सम्पादक
डॉ. अरूण चंदन

सम्पादकीय टीम
श्री उज्जवल शर्मा
डॉ. प्रभाकर मिश्रा
डॉ अनुराग विजयवर्गीय
डॉ. विकास खजूरिया
श्री मदन पंवर
श्री राजीव ठाकुर
डॉ. ममता रानी
डॉ. सुनील पठानिया
डॉ. पंकज पालसरा
सुश्री स्वाति वालिया

हम ऑनलाईन उपलब्ध हैं
pdf यहां से डाऊनलाड करें।
www.rcfcnorth.in/download

लेखकों से आग्रह

यदि आप विषय से संबंधित कोई लेख/अनुभव/जानकारी प्रकाशनार्थ भेजना चाहें तो निसंकोच भेजें। छपने योग्य होने पर अवश्य प्रकाशित किया जाएगा।
सम्पादक

हमसे संपर्क करें

क्षेत्रीय निदेशक / सम्पादक
ई- चरक
जड़ी- बूटी बाजार
क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र
राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड
आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान
जोगिंदरनगर, मंडी, हिमाचल प्रदेश।
पिन : 175015
हेल्पलाईन : 8544734206
दूरभाष : 01908 222333
वैबसाइट : www.rcfcnorth.in
मेल: rcfcnorth@gmail.com

पारम्परिक चिकित्सा को मिली पहचान

डॉ. के.के शर्मा

ओएसडी आयुर्वेद एवं रजिस्ट्रार
आयुर्वेद, युनानी, होम्यो बोर्ड, हि. प्र.

प्रतिष्ठित पदमश्री पुरस्कार से सम्मानित दो हस्तियों 'दादी मां' कही जाने वाली लक्ष्मी कुट्टी और बौद्ध भिक्षु डॉ. यशी डोंडन ने आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति को नया शिखर प्रदान किया है। आयुर्वेद पद्धति से हासिल उपलब्धियों के लिए भारत सरकार ने उन्हें यूं ही सम्मानित नहीं किया है, दोनों ने जड़ी- बूटियों के दम पर चिकित्सा के क्षेत्र में कुछ ऐसा कर दिखाया है कि चिकित्सा जगत उनके ज्ञान से अचंभित हैं। उन्होंने मॉर्डन चिकित्सा पद्धति के लिए चुनौती बने कई रोगों का आयुर्वेद से सफल उपचार कर साबित कर दिया है कि हमें स्वस्थ्य रहने के लिए प्रकृति की तरफ ही लौटना होगा।

जड़ी- बूटियों के दम पर असाध्य रोगों की चिकित्सा के लिए प्रतिष्ठित पदमश्री पुरस्कार से सम्मानित दो हस्तियां 'दादी मां' कही जाने वाली लक्ष्मी कुट्टी और बौद्ध भिक्षु डॉ. यशी डोंडन ने आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति को नया शिखर प्रदान किया है। आयुर्वेद पद्धति से हासिल उपलब्धियों के लिए भारत सरकार ने उन्हें यूं ही सम्मानित नहीं किया है, दोनों ने जड़ी- बूटियों के दम पर चिकित्सा के क्षेत्र में कुछ ऐसा कर दिखाया है कि चिकित्सा जगत उनके ज्ञान से अचंभित हैं। उन्होंने मॉर्डन एलोपैथी चिकित्सा पद्धति के लिए चुनौती बने कई रोगों का आयुर्वेद से सफल उपचार कर साबित किया है कि हमें स्वस्थ्य रहने के लिए प्रकृति की तरफ ही लौटना होगा। उनकी उपलब्धियों से चिकित्सा जगत आयुर्वेद की ओर आकर्षित हुआ है। दोनों को चिकित्सा का यह ज्ञान अपने पुरखों से विरासत में मिला है। केरल की 75 साल लक्ष्मी कुट्टी विष उतारने वाली वैद्य के नाम से मशहूर हैं तो निर्वासित तिब्बत सरकार के मुख्यालय धर्मशाला में रहने वाले 91 साल के बौद्ध भिक्षु डॉ. यशी डोंडन तिब्बती आयुर्वेद पद्दति से कैंसर जैसे रोगों के उपचार के लिए दुनिया भर में अपनी पहचान रखते हैं।

त्रिवेंद्रम के कल्लार वन क्षेत्र के रहने लक्ष्मी कुट्टी एक ऐसी आदिवासी महिला हैं जो केरल की लोक संगीत अकादमी में शिक्षिका और एक कवयित्री हैं। वह केरल में विष उतारने वाली वैद्य के नाम से जानी जाती हैं। कुट्टी ने जंगल के एक छोटी सी कुटिया बना रखी है, जिसके आसपास कई तरह की जड़ी- बूटियां लगी हुई हैं। दूर- दूर से लोग कुट्टी के पास वन औषधियों से उपचार करवाने पहुंचते हैं। यहां आने वाले लोगों में सांपों के काटे का विष उतरवाने वालों की तादाद सबसे ज्यादा होती है। अपनी स्मरण शक्ति से ही कुट्टी 500 औषधियां तैयार कर सकती हैं। उन्हें यह सारा ज्ञान अपनी मां से मिला जो गांव में दाई का काम करती थी। केरल

वन विभाग ने उनके ज्ञान पर आधारित एक किताब संकलित करने का निर्णय लिया है। वर्ष 1995 में लोगों का ध्यान लक्ष्मी कुट्टी की ओर तब गया, जब केरल सरकार ने उन्हें 'नाटु वैद्य रत्न' पुरस्कार से सम्मानित किया। प्राकृतिक चिकित्सा से परे लक्ष्मी कुट्टी अपनी व्यंग्य भरी कविताओं के लिए भी जानी जाती है। उन्होंने आदिवासी संस्कृति और जंगल के वर्णन जैसे कई लेख लिखे हैं, जिन्हें डी.सी. बुक्स ने प्रकाशित किया है।

तिब्बत से भारत में शरणार्थी के रूप में पहुंचे डॉ. यशी डोंडन ने 23 मार्च 1961 के दिन धर्मशाला में तिब्बती चिकित्सा पद्धति की नींव रखी थी। उन्होंने तिब्बती मेडीकल एंड एस्ट्रो इंस्टीच्यूट की स्थापना कर इस पद्धति को आगे बढ़ाया। डॉ. यशी डोंडन का जन्म तिब्बत के लोका क्षेत्र में हुआ। उनका परिवार तिब्बत की चिकित्सा पद्धति के लिए प्रसिद्ध था। यशी डोंडन ने बीस वर्ष की आयु में ही इस पद्धति का प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया। तिब्बत से निर्वासन के दौरान वर्ष 1961 से लेकर 1980 तक वे दलाईलामा के निजी चिकित्सक रहे। इसी

दौरान उन्होंने तिब्बती चिकित्सा पद्धति में कई शोध किए और कैंसर जैसे घातक रोगों के उपचार में महारत हासिल की। वर्ष1980 में तिब्बतियन मेडीकल एंड एस्ट्रो इंस्टीच्यूट से रिटायर्ड होने के बाद मैक्लोडगंज में तिब्बितयन हर्बल क्लीनिक से निजी क्लीनिक की शुरूआत की। वे किसी भी रोगी के पेशाब और नब्ज का अध्ययन कर उनके रोगें की जांच कर तिब्बती आयुर्वेदिक दवाईयों से उपचार करते हैं। दुनिया भर से आसाध्य रोगों से पीड़ित उपचार के लिए उनके मैक्लोडगंज स्थित क्लीनिक में आते हैं।

आयुर्वेद में अपने ज्ञान से दुनिया को अचंभित करने वाले इन दो वैद्य की इस प्रेरककथा से सीख लेकर हम जड़ी- बूटियों के दम पर उपचार करने की आयुर्वेदिक पद्धतियों के दम पर चिकित्सा जगत में दुनिया के सिरमौर बन सकते हैं। गांवों में बसे भारत में जड़ी-बूटियों से रोगों का उपचार करने की पुरातन परम्परा है। जरूरत है कि ऐसे उपचार में माहिर लोगों की पहचान करने और उनके ज्ञान पर गहन शोध कर व्यवसायिक दोहन की।

समन्वय की तो सच में आवश्यकता है

डॉ. अरुण चंदन

क्षेत्रीय निदेशक, क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तर भारत, जोगिंद्रनगर।
arun.chandan@gov.in

सूचना प्रौद्योगिकी के युग में मोबाइल, इंटरनेट से जुड़ना तो आसान है, लेकिन यह प्रयास देश के उन किसानों के लिए है जो साधारण मोबाइल प्रयोग करते हैं और ऐसी सूचनाएं पाने के इच्छुक हैं। आईए मिल कर आगे बढ़ें।

जड़ी- बूटियों की ग्लोबल मांग दिन- प्रतिदिन बढ़ रही है। इसी के चलते शोध संस्थान प्रतिदिन नई खोजों, प्रजातियों और वैज्ञानिकी तरीकों के साथ सक्रिय हैं। उद्योग जगत अपने रास्ते पर है और देश का किसान अपनी आमदन बढ़ाने के तरीकों की खोज रहा है। औषधीय पौधों के क्षेत्र में उत्तर भारतीय राज्यों में जलवायु विविधता और विशेषकर हिमाचल- उत्तराखंड हिमालयी क्षेत्र होने के कारण एक विशेष आकर्षण का केंद्र है। औषधीय जैव विविधता में सभी हितग्राहियों का आपसी समन्वय बहुत कम हो पा रहा है। सबके रास्ते अलग हैं। औषधीय पौधों की संपूर्ण वैल्यू चेन को गंभीरता से देखें तो उच्च क्वालिटी का प्लांटिंग मैटीरियल, प्रारंभिक प्रसंस्करण, वैल्यू एडीशन और मार्केटिंग चुनौतियां बन कर उभरी हैं, जिनके शोधपरक समाधान अनिवार्य हैं।

आयुष मंत्रालय के राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड के क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र इस दिशा में सकारात्मक पहल है। मांग एवं वैज्ञानिकी तरीकों का सामजस्य बिठा कर समन्वय स्थापित करके औषधीय पौधों के सतत प्रयोग को सफल बनाने के महत्वपूर्ण कार्यों का दायित्व सरकार द्वारा इन केंद्रों को दिया गया है। क्षेत्रीय, स्थानीय मांग एवं प्राथमिकताओं के आधार पर योजनाओं को बढ़ाते हुए औषधीय जैव

विविधता का संरक्षण एवं संवर्धन सतत तरीके से हों, इसके लिए सही प्रयास है। मुझे आप सबसे आग्रह करना है कि आप सब हमारे केंद्र से जुड़ें और राष्ट्र निर्माण के इस महत्वपूर्ण यज्ञ में आहुति डालें। इस मासिक पत्र के माध्यम से हम आप सबको जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के युग में मोबाइल, इंटरनेट से जुड़ना तो आसान है, लेकिन हमारा यह प्रयास देश के उन किसानों के लिए है जो साधारण मोबाइल प्रयोग करते हैं और ऐसी सूचनाएं पाने के इच्छुक हैं। हमारी इस पहल का आप भी हिस्सा बनें। आईए, मिल कर आगे बढ़ें।

विषयवार होंगे विशेषांक

ई- चरक जड़ी बूटी बाजार के अगामी अंकों को औषधीय पौधों की वैल्यूचेन के अनुसार विषयों पर प्रकाशित किया जाएगा। आप सुझाव देते रहें।

दूरभाष : 01908 222333
वैबसाइट : www.rcfcnorth.in
मेल: rcfcnorth@gmail.com
arunchandan@gmail.com

पत्रिका प्राप्त करने के लिए संपर्क

किसान समूहों, स्वयं सहायता समूहों व किसान कंपनियों के लिए **ई- चरक जड़ी बूटी बाजार** की एक से ज्यादा प्रतियां प्राप्त करना चाहते हैं तो संपर्क कर सकते हैं।

दूरभाष : 01908 222333
वैबसाइट : www.rcfcnorth.in
मेल: rcfcnorth@gmail.com

ई-चरक : ज्ञान व जानकारी

ई-चरक लोकल लेंगुएज स्पोट सहित वेबसाइट और मोबाइल आधारित एप्लीकेशन है। यहां क्रेता और विक्रेता आपस में संवाद कर सकते हैं और इससे संबंधित ज्ञान व जानकारी का आदान-प्रदान कर सकते हैं।

लोकल लेंगवेज की स्पोट सहित वैब व मोबाइल एप्प ने आसान किया भारत में जड़ी-बूटी का कारोबार

पारंपरिक व्यापार का आधुनिक विकल्प

डॉ. ललित तिवारी की रिपोर्ट

विश्व स्वास्थ्य संगठन डब्ल्यूएचओ का अनुमान है कि वर्ष 2050 तक हर्बल इंडस्ट्री की मार्केट की 5 ट्रीलियन डॉलर की हो जाएगी। 2000 से 2050 तक इस इंडस्ट्रीज में ग्रोथ 7 प्रतिशत अनुमानित है। वर्ष 2005-2006 में भारत में हर्बल इंडस्ट्री 8800 करोड़ रुपए की थी जो वर्ष 2015-16 में बढ़कर 20 हजार करोड़ हो गई।

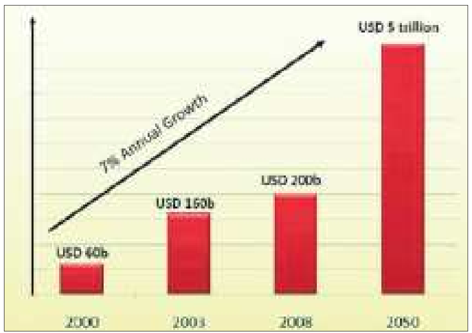

बढ़ रही औषधीय पौधों की मांग

देश में आयुर्वेद उद्योग के विकास के साथ ही हर्बल औषधियों के लिए कच्चे माल के तौर पर औषधीय पौधों की मांगसाल-दर-साल बढ़ रही है। वर्ष 1999-2000 में इसकी अनुमानित मांग 2,34,675 मीट्रिक टन थी जो 2014-13 में बढ़कर 5,12,000 मीट्रिक टन हो गई। इस दौरान 134 मीट्रिक टन औषधीय पौधों का निर्यात भी किया गया। औषधीय पौधों के निर्यात की वार्षिक वृद्धि दर 11 प्रतिशत, जबकि आयात की वार्षिक वृद्धि दर 7 प्रतिशत है। बढ़ती मांग के चलते औषधीय पौधों की खेती का विस्तार हो रहा है।

दूसरा सबसे बड़ा निर्यातक भारत

भारत औषधीय पौधों का दूसरा सबसे बड़ा निर्यातक देश बन गया है। आयुष के लिए भारतीय घरेलू बाजार अनुमानित 500 करोड़ रुपए का है, जबकि निर्यात का अनुमान 200 करोड़ रुपए का है। 6,600 औषधीय पौधों के साथ भारत दुनिया में आयुष और हर्बल उत्पादों का दूसरा सबसे बड़ा निर्यातक देश है। भविष्य में असीम संभावनाओं वाले इस उद्योग के लिए बढ़ती कच्चे माल की मांग ने जड़ी बूटियों की खेती के लिए बुनियाद रखी है। सूचना तकनीक के विकास से तेजी से सूचनाओं के अदान-प्रदान ने जड़ी- बूटियों की खेती करने वाले ग्रमीण किसान के लिए अपनी उत्पाद बेचने के के लिए ग्लोबल पहुंच बना दी है।

वर्चुअल प्लेटफार्म

अपर्याप्त मार्केटिंग लिंक, अव्यवस्थित सप्लाई चेन, सूखाने, ग्रेडिंग और स्टोर करने की सुविधा का अभाव, मूल्य संवर्धन के लिए सेमी प्रोसेसिंग सुविधा की कमी, मांग-आपूर्ति आधारित कीमत की जानकारी न होने के कारण जड़ी-बूटियों के विपणन में समस्या का सामना करना पड़ रहा था। जड़ी-बूटियों के उत्पादन और विक्रय से संबंधित सूचना कहीं भी किसी भी समय उपलब्ध हो, इसके चलते वर्चुअल प्लेटफार्म की जरूरत महसूस हुई। इसके जरिये औषधीय पौधों की खेती से संबंधित सूचनाओं का आदान-प्रदान और क्रय-विक्रय के लिए ऑनलाइन प्लेटफार्म उपलब्ध हुआ।

वेबसाइट, मोबाइल आधारित एप्लीकेशन

ई-चरक ने जड़ी-बूटियों के क्रेताओं-विक्रेता के लिए वर्चुअल मार्केट प्लेस प्रदान की। इस प्लेटफार्म पर क्रेता और विक्रेता आपस में संवाद कर सकते हैं और इससे संबंधित ज्ञान व जानकारी का आदान-प्रदान कर सकते हैं। इस प्लेटफार्म को किसान, ट्रेडर्ज, कलेक्टर्स और मेन्युफेक्चर्स प्रयोग कर सकते हैं। स्वयं सहायता समूह, गैर सरकारी संगठन और कॉपोरेट्स इस प्लेटफार्म के जरिये अपने कारोबार-व्यापार को बढ़ा सकते हैं। यहां प्लांटिंग मैटीरियल, औषधीय पौधे, वेल्यू एंड प्रोडक्ट्स से सबंधित जानकारी उपलब्ध है। ई-चरक लोकल लेंगुएज स्पोट सहित वेबसाइट और मोबाइल आधारित एप्लीकेशन है, जिस पर औषधीय पौधों से संबंधित कारोबार को गति मिलती है।

संभावनाएं : पांच खबर डॉलर के कारोबार में इंडिया बन सकता है लीडर

भारत में 16 एग्रो-क्लाइमेटिक जोन, 10 वेजिटेटिव जोन, 15 बायोटिक जोन, 426 बायोमास समेत 15,000 से ज्यादा पौधों की प्रजातियां हैं, जिनमें 7,000 आयुर्वेदिक पौधों की प्रजातियां शामिल है। दुनिया के 12 मेगा बायोडायवर्स देशों में भारत की गिनती होती है। भारत में तकरीबन 70 फीसदी आधुनिक दवाएं प्राकृतिक उत्पादों से बनाई जाती हैं। पारंपरिक दवाएं और विदेशी बाजारों की मांग के अनुरूप दवाएं बनाने में भी औषधीय पौधे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हालांकि, जड़ी बूटियों के वैश्विक कारोबार में भारत का हिस्सा महज 1.6 फीसदी है। एक अनुमान के मुताबिक 2050 तक जड़ी बूटियों का वैश्विक कारोबार पांच खरब डॉलर तक पहुंच सकता है। विशेषज्ञों के मुताबिक इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी के बाद हर्बल टेक्नोलॉजी से भारत सबसे ज्यादा आय अर्जित करने में कामयाब हो सकता है। इसके लिए जरूरी है कि एक तरह जंगली जड़ी बूटियों के वैज्ञानिक दोहन के साथ उसके संरक्षण की पहल हो और जड़ी- बूटियों की खेती के लिए धीर गंभीर प्रयास हों।

अगस्त महीने में जड़ी-बूटी मंडी के भाव

औषधीय पौधा	अमृतसर	देहरादून	दिल्ली	हरियाणा	हिमाचल
वासा, बसूटी Adatoda vasica	35	22	26	28	----
कालमेघ Andrographis paniculata	42	40	32	35	----
नीम Azadirachta indica	25	25	26	25	26
शतावर Asparagus racemosus	200	185	180	200	230
ब्राह्मी Bacopa monnieri	65	45	50	56	50
पुर्ननवा Boerhaavia diffusa	70	62	67	77	70
सनाए Cassia angustifolia	120	110	100	115	----
चर्कमर्द Cassia tora	18	23	20	25	----
मण्डूक पर्णी Centella asiatica	150	----	135	150	----
सफेद मूसली Chlorophytum borivillianum	1300	1300	1150	1300	----
तेज पत्ता Cinnamomum tamala	88	79	80	85	70
आंवला Emblica officinalis	160	155	148	152	----
गंभारी Gmelina arborea	44	43	40	44	----
सुहांजन Moringa oleifera	----	----	400	----	----
राम तुलसी Ocimum sanctum	25	20	20	22	----
मर्धीपिपली Piper longum	460	470	425	500	----
करंज Pongamia pinnata	125	115	----	----	----
सर्पगंधा rauwolfia serpentine	680	650	650	670	----
रीठा Sapindus mukorossi	48	47	45	50	40
अर्जुन Terminalia arjuna	38	32	35	----	----
हरड़ Terminalia chebula	215	220	188	220	----

औषधीय पौधों की जानकारी संबंधी सुविधा

क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तर भारत

राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड, आयुष मंत्रालय भारत सरकार

आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान जोगेंद्रनगर(मंडी)हि. प्र. 175015

हेल्पलाइन : 8544734206 | email:rcfcnorth@gmail.com | Whatsapp : 7018001026 | www.rcfcnorth.in www. echarak.in

इस 'बूटी' से कई रोगों का अचूक इलाज, सतावर की 'जड़' में छुपा आर्थिकी का राज

डॉ. सुनील पठानिया, प्रशिक्षण एवं प्रसार समन्वयक

सतावर जड़ वाली एक औषधीय फसल है, जिसकी मांसल जड़ों का इस्तेमाल विभिन्न प्रकार की औषधियों के निर्माण में होता है। सतावर को लोग भिन्न-भिन्न नाम से पुकारते हैं। कहीं इसे लोग शतमली तो कहीं शतवीर्या कहते हैं। सतावर कहीं वहुसुत्ता के नाम से विख्यात है, तो कहीं यह शतावरी के नाम से। यह औषधीय फसल भारत के विभिन्न प्रांतों में प्राकृतिक अवस्था में भी खूब पाई जाती है। विश्व में सतावर भारत के अतिरिक्त ऑस्ट्रेलिया, नेपाल, चीन, बांग्लादेश तथा अफ्रीका में भी पाया जाता है। सतावर का प्रयोग मुख्य रूप से औषधि के रूप में किया जाता है। इसका इस्तेमाल बलवर्धक, स्तनपान करने वाली महिलाओं के लिए लाभकारी दवाइयों व शारीरिक स्फूर्ति बढ़ाने के लिए किया जाता है। इसके साथ सतावर के नियमित सेवन से ल्युकोरिया व एनीमिया जैसी बीमारियों से बचा जा सकता है।

सतावर का वानस्पतिक विवरण

सतावर का पौधा झाड़ीदार, कांटेदार लता होता है। इसकी शाखाएं पतली होती हैं। पत्तियां सुई के समान होती हैं, जो 1.5-2.5 सेमी तकलम्बी होती हैं। इसके कांटे टेढ़े तथा 6-8 सेंमी लम्बे होते हैं। इसकी शाखाएं चारों ओर फैली होती हैं। इसके फूल सफेद या गुलाबी रंग के सुगंधयुक्त छोटे अनेक शाखाओं वाले डंठल पर लगते हैं, जो फरवरी और मार्च में फूलते हैं। अप्रैल में फल बढ़कर बड़े हो जाते हैं। फल मटर के समान 1-2 बीज युक्त होते हैं। इसके बीज पकने पर काले होते हैं। इसकी जड़े कन्दवत 20-30 सेंमी लम्बी, 1-2 सेंमी मोटी तथा गुच्छे में पैदा होती हैं। जड़ों की संख्या प्रति लता में 60-100 तक होती है। ये जड़े धूसर पीले रंग की हल्की सुगंधयुक्त स्वाद में कुछ मधुर तथा कड़वी लगती हैं। सतावर की श्वेत जड़ों का प्रयोग चिकित्सा कार्य में होता है। सूखी जड़े बाजार में सतावर के नाम से बेची जाती है। जिसमें सतावरिन-1 तथा सतावरिन-4 में ग्लूकोसाइड रसायन प्रमुख रूप से पाया जाता है। यही रसायन इसके औषधीय गुणों का स्रोत है।

बड़े काम का सतावर

सतावर की जड़ें स्वाद में मधुर, रसयुक्त, कड़वी, भारी, चिकनी तथा तासिर में शीतल होती हैं। इसका मुख्य प्रभाव पुरुष प्रजनन संस्थान पर बल तथा वीर्यवर्धक के रूप में पड़ता है। सतावर शीतवीर्य, रसायन, मेधाकारक, जठराग्निवर्धक, पुष्टिकारक, स्निग्ध, आंत एवं अतिसार एवं पितरक्त को शोधने वाला होता है। स्त्रियों के लिए टॉनिक, ल्युकोरिया, अनियमित मासिक चक्र, एनीमिया, गर्भपात और मेनोपासक सिन्ड्रोम तथा अन्य स्त्री रोगों में उपयोगी होता है। इसकी कंदिल जड़ों में सतावरीन-1 तथा सतावरीन-4 रसायन पाया जाता है। सतावरीन-1 सार्सपोनिन का ग्लूकोसाइड है जिसमें 3 ग्लूकोस तथा 1 रेम्नोस शर्करा के अणु पाए जाते हैं। सतावरीन 4 में 2 ग्लूकोस 1 रेम्नोस शर्करा के अणु पाए जाते है। जिनके कारण सतावर का औषधीय गुण बढ़ जाता है। इसका इस्तेमाल बलवर्धक, स्तनपान करने वाली महिलाओं के लिए लाभकारी दवाईयों व शारीरिक स्फूर्ति बढ़ाने के लिए किया जाता है। इसके साथ सतावर के नियमित सेवन से ल्युकोरिया व एनीमिया जैसी बीमारियों से बचा जा सकता है।

ऐसे करें सतावर की खेती

सतावर की खेती के लिए उचित तापमान 10 से 50 डिग्री सेल्सियस होना चाहिए। इसकी खेती के लिए जुलाई-अगस्त में 2-3 बार खेत की पहली जुताई कर लेनी चाहिए। इसमें प्रति एकड़ के दर से 10 टन गोबर की खाद मिला देनी चाहिए। दूसरी जुताई नवंबर के शुरुआती दिनों में होती है। प्रति एकड़ पांच किलोग्राम बीज की ज़रूरत होती है। अगस्त में क्यारियों में बीजों की बुआई कर देनी चाहिए। मुख्य रूप से दो प्रजातियों पिली या नेपाली सतावर, बेल या देसी सतावर को बोया जाता है। प्रति एक हेक्टेयर के खेत में 3 से 4 किलो सतावर के बीज डाले जाते हैं। बीज आसानी से उपलब्ध होते हैं।

सिंचाई, निराई- गुड़ाई और खुदाई

सतावर की खेती में ज़्यादा पानी की ज़रुरत नहीं होती है। पौधे लगाने के एक सप्ताह के भीतर हल्की सिंचाई कर देनी चाहिए। सतावर के पौधों की जड़ों के समुचित विकास के लिए खेत को खरपतवार रहित रखना तथा मिट्टी को भुरभुरी बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। खोदकर निकाली गई जड़ों को साफ कर अलग-अलग करके हल्की धूप में सुखने के लिए छोड़ देना चाहिए।

सतावर का बाज़ार: प्रति एकड़ के खेत में 300 से 350 क्विंटल गीली जड़ मिलती है, जो सूखने के बाद 40 से 50 क्विंटल रहती है। वर्तमान में सतावर की जड़ 250 से 300 रुपए प्रति किलो के रेट पर बिकती है।

यहां बेच सकते हैं अपना उत्पाद

डाबर इंडिया लिमिटेड
8/3, आसफअली रोड, नई दिल्ली-110002
फोन नं- 0120- 3962100

एके जैन (आर्यन इंटरनेशनल)
डी- 184 फ्रीडम फाइटर इंक्लेव, नबी सराय, नई दिल्ली
फोन नंबर- 011-26659020

रासिक लाल हिमानी एजेंसीज प्राइवेट लिमिटेड
508, खारी बावली, दिल्ली- 110006
फोन नं-011-23273875, 23273926

साई ट्रेडिंग कंपनी (गौरव गुप्ता)
1/2249, 3 लोर-2 स्ट्रीट नंबर- 12 निकट शांति आप्टिकल्स, सुभाष रोड,शाहदरा दिल्ली 110032
मो- 8447518302, 9891067409, 9891340865

गुलाब सिंह जौहरी माल (मुकुल गुन्धी)
302, दरीबा कलां, चांदनी चौक, नई दिल्ली
फोन- 011- 23263743, 23271345

रासिक लाल हिमानी एजेंसीज प्राइवेट लिमिटेड
प्रथम तल, सब हाउस 3/8 आसफ अली रोड नई दिल्ली
फोन- 011-23273875, 9971113565

विराट एक्सपोर्टर्स
23/3, ईस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली-110008
फोन-011-2576182

गुलाब एंड कंपनी, मातादीन रोड सआदतगंज, लखनऊ
फोन- 0522- 2649101, 2649102 मो. 9415108206

आशा ग्रामोद्योग संस्थान
647 बी/सी,144/ 1 (पी-18) जानकीपुरम गार्डेन, नियर नावेल सीटी एकेडमी, लखनऊ- 226021

महावीर ट्रेडिंग कंपनी
पासरत्ता गली, सआदतगंज, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

पुण्य ट्रेडिंग कंपनी
सआदतगंज, लखनऊ, मोबाइल नंबर- 9450009431

सक्सेस स्टोरी

देहरा के विपन कुमार 90 कनाल जमीन पर कर रहे जड़ी-बूटियों की खेती, स्थापित की हर्बल यूनिट

एलोवेरा की खेती से आई जीवन में खुशहाली

मदन पंवार, वनस्पतिज्ञ

हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिला की देहरा तहसील के मगरू सुरयाला के विपन कुमार उन अग्रणी किसानों में हैं जिन्होंने जड़ी-बूटियों की खेती से ग्रामीण क्षेत्र में सामाजिक और आर्थिक बदलाव की प्रेरक कथा लिखी है। उन्होंने हर्बल खेती को अपनाकर उन युवाओं के लिए मिसाल पेश की है, जो कॉर्पोरेट की चमक से मोहित होकर जड़ों से दूर शहरों की ओर पलायन करते हैं, लेकिन सदा के लिए अपनी जड़ों से कट जाते हैं। एक साधारण परिवार के विपन ने जमा दो की पढ़ाई करने के बाद जड़ी-बूटियों की खेती में अपने सुनहरे भविष्य के सपने बुने और अपने जुनून के बलबूते न केवल एक प्रगतिशील किसान, बल्कि उद्यमी के तौर भी स्थापित होकर साबित कर दिया कि लीक से हटकर कुछ करने की चाह हो तो नए रास्ते बनाकर मंजिल तक पहुंचा जा सकता है। कभी 5 कनाल में एलोवेरा की खेती से शुरू हुआ विपन का कारोबार अब 90 कनाल में पहुंच चुका है और खुद की यूनिट भी स्थापित की है।

जयपुर तक ले गई सीखने की ललक

विपन ने 2009 में 5 कनाल जमीन में एलोवेरा कि खेती शुरू की, जिसमे उन्हें हिमाचल सरकार के बागवानी विभाग ने तकनीकी एवं आर्थिक मदद की। विपन कुमार को विभाग की ओर से वानिकी विश्वविद्यालय नौणी, सोलन एवं कृषि विद्यालय पालमपुर में भी हर्बल खेती के बारे में प्रशिक्षण दिया गया। विपन ने जयपुर हर्बल अनुसंधान केंद्र से 15 दिन का भी परीक्षण प्राप्त किया, जिसमें बागवानी विभाग ने सहयोग किया। विपन ने जड़ी-बूटियों की खेती, प्रोसेसिंग के तकनीकी ज्ञान के अलावा मार्केटिंग के बारे में भी विस्तृत अध्ययन किया।

नींबू, पपीता, स्टीविया और सेब उत्पादन

विपन ने जड़ी-बूटियों की खेती को बढ़ाने के लिए और जमीन लीज पर ली। वर्तमान में विपन लगभग 90 कनाल जमीन पर जड़ी-बूटियों की खेती कर रहे हैं। उन्होंने एलोवेरा के साथ-साथ नींबू, पपीता, स्टीविया और गर्म इलाके में पैदा होने वाले सेब के पौधे उगाए हैं। भविष्य में विपन अपने कारोबार को विस्तार देने की योजनाओं पर काम कर रहे हैं।

एलोवेरा पाउडर व जूस का उत्पादन

विपन कुमार का कहना है कि विक्रय के लिए उनका 15 वर्षों का अनुबंध होशियारपुर की एक कंपनी से हुआ है। जड़ी-बूटियों की प्रोसेसिंग कर अच्छे मुनाफे को देखते हुए उन्होंने अपना मैन्युफैक्चरिंग यूनिट भी अपने हर्बल फार्म में स्थापित की। यहां वह एलोवेरा का एक्सट्रेक्ट और जूस का भी बनाते हैं।

चार लोगों को दिया रोजगार

विपन कुमार ने पिछले वर्ष 264 क्विंटल एलोवेरा, 7 हजार लीटर एक्ट्रेक्ट, 3500 लीटर जूस का उत्पादन किया। इसके साथ ही पपीते के एक्सट्रेक्ट का भी उत्पादन शुरू कर दिया है। उन्होंने चार लोगों को भी रोजगार दिया है, जबकि परिवार के सदस्य भी उनका सहयोग करते हैं।

भारत सरकार की ओर से राष्ट्रीय आयुष मिशन के तहत जड़ी-बूटियों की खेती के लिए दी जा रही आर्थिक मदद

किसान क्लस्टर बनाएं, औषधीय पौधों की खेती के लिए वित्तीय सहायता पाएं

उज्जवल दीप शर्मा, परियोजना अधिकारी

दुनियाभर में हर्बल उत्पादों की बढ़ती मांग के कारण देश के विभिन्न क्षेत्रों में किसान परंपरागत खेती के अलावा औषधीय और जड़ी-बूटियों की तरफ भी अपना रुख कर रहे हैं। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए केंद्र सरकार प्रायोजित राष्ट्रीय आयुष मिशन (एनएएम) योजना के अधीन भारत सरकार किसानों को अनुदान दे रही है, ताकि जड़ी-बूटियों और औषधीय पौधों की खेती को प्रोत्साहित किया जा सके। किसान औषधीय खेती करके अपनी आमदनी बढ़ा सकें, इसके लिए औषधीय खेती के लिए किसानों को अनुदान दिया जा रहा है। वर्तमान समय में 140 औषधीय पौधों की प्रजातियों को देशभर में खेती करने के लिए प्राथमिकता दी गई है। राष्ट्रीय आयुष मिशन के तहत केंद्र सरकार की ओर से औषधीय पौधों की खेती के लिए वित्तीय मदद किसानों का समूह (क्लस्टर) बनाकर प्राप्त की जा सकती है। इस संदर्भ में जारी दिशा-निर्देश के मुताबिक, औषधीय पौधों की खेती के लिए वित्तीय सहायता प्राप्त करने के लिए क्लस्टर में न्यूनतम 2 हेक्टेयर भमि होना अनिवार्य है। क्लस्टर में 15 किलोमीटर के भीतर के गांवों से किसान शामिल हो सकते हैं। यहां तक कि गिरवी भूमि पर भी औषधीय पौधों की खेती के बारे में विचार किया जा सकता है।

इन पौधों की खेती के लिए आर्थिक मदद

वर्तमान मे राष्ट्रीय आयुष मिशन के औषधीय संयंत्र घटक के तहत कई प्रजातियों की खेती के लिए वित्तीय सहायता उपलब्ध है। इनमें अतीश (Aconitum heterophyllum) कुटकी (Picrorhiza kurroa), कुठ (Saussurea costus), सुगंधवाला (Valeriana wallichi), अश्वगंधा (Withania somnifera), श्वेत मूसली (Chlorophytum borivillianum), सर्पगंधा (Rauwolfia serpentina) और तुलसी (Ocimum sanctum) की खेती के लिए किसान क्लस्टर बनाकर राज्य सरकारों से वित्तीय मदद प्राप्त कर सकते हैं।

घटक औषधीय पौधों की खेती	सहायता प्रति हेक्टेयर)	अधिकतम सहायता कुल हैक्टेयर	वित्तीय सहायता (राशि लाखो में)
अतीश	20788 .25	28	33.820
कुटकी	123533.40	29	35.824
कुठ	96082.00	18	17.295
सुगंधवाला	43923.00	20	8.785
श्वेत मूसली	137259,40	5	6,863
अश्वगंधा	10980.75	13	1.427
सर्पगंधा	45753.00	7	3.202
तुलसी	13176.90	7	0.922
	कुल	127	108.138

सहायता के लिए ऐसे करें आवेदन

download form

www.rcfcnorth.in/download

- राष्ट्रीय आयुष मिशन के तहत औषधीय पौधों की खेती के लिए वित्तीय सहायता हासिल करने के लिए निम्नलिखित औपचारिकताओं को पूर्ण करना होगा। इन शर्तों को पूरा करने पर ही संबंधित क्लस्टर के किसान वित्तीय सहायता के लिए पात्र होंगे।
- वित्तीय सहायता के लिए दिए जाने वाले व्यक्ति गत आवेदन में यह पूरी जानकरी देनी होगी कि खेती कितनी भूमि पर की जाएगी और औषधीय पौधों की कौन सी प्रजातियों के औषधीय पौधों की खेती की जाएगी।
- आवेदन के साथ उक्त क्लस्टर में शामिल प्रत्येक किसान की भूमि की स्थिति खसरा नंबर सहित रिपोर्ट संबंधित राजस्व अधिकारी (पटवारी) की ओर से सत्यापित होनी चाहिए।
- आवेदन के साथ उस खाली भूमि के राजस्व पत्र देने होंगे, जहां औषधीय पौधों की खेती की जानी है।
- क्लस्टर में शामिल किसानों का एक संयुक्त आवेदन, जिसमें उनके पते और संपर्क नाम हों।
- स्टैंप पेपर पर एक हल्फनामा देना होगा कि खेती के लिए प्रस्तावित भूमि पर केंद्रीय व राज्य सरकार के किसी विभाग, बोर्ड, निगम या किसी अन्य एजेंसी से कोई अनुदान अथवा सब्सिडी नहीं ली गई है।
- स्टैंप पेपर पर हल्फनामा देना होगा कि स्वीकृत क्षेत्र में अनुमोदित प्रजातियों की खेती की जाएगी और किसी निरीक्षण-निगरानी के दौरान किसी भी डिफॉल्ट की स्थिति में प्रदान की गई वित्तीय सहायता की पूरी अथवा कुछ भाग की संबंधित किसान से रिकवरी की जाएगी।
- आवेदन के साथ संबंधित ग्राम पंचायत की सिफारिश-अनापति प्रमाणपत्र देना होगा।
- औषधीय पौधों की खेती के लिए प्रस्तावित प्रत्येक किसान की भूमि का खसरा संख्या सहित विवरण।
- औषधीय पौधों की खेती के लिए वित्तीय सहायता प्राप्त करने के लिए आवेदन संबंधित जिला आयुर्वेदिक अधिकारी के पास करना होगा।
- जिला आयुर्वेदिक अधिकारी उचित सत्यापन के बाद राज्य औषध पादप बोर्ड को मामले की सिफारिश करेंगे।

सफल प्रयोग

फैक्ट शीट

16 मई 2003 को पजांब स्टेट कॉपरेटिव सोसायटी एक्ट 1963 के तहत बतौर उन्नति कॉपरेटिव, मार्केटिंग कम प्रोसेसिंग सोसायाटी के तौर पर पंजीकरण।

14 सदस्यीय कोर प्रबंधन ग्रुप।
आईएसओ 22000-2005।
सोसायटी के पास 5 एकड़ भूमि।
प्रोडक्सन एवं पैकिंग प्लांट।
वेयरहाऊस, लैब, ऑफिस

कभी 35 हजार के टर्नओवर वाली कॉपरेटिव सोसायटी का अब सलाना टर्न ओवर 25 करोड़

शिवालिक पहाड़ियों की वनस्पति और सहकारिता से की 'उन्नति'

विनोद कुमार भावकु, सम्पादक फोकस हिमाचल, साप्ताहिक, मंडी।

उत्साही और दूरदर्शी विज्ञानिकों ने शिवालिक पहाड़ियों की वनस्पति के बलबूते आत्मनिर्भरता, रोजगार और महिला सशक्तिकरण की अवधारणा को हकीकत की जमीन पर उतारा डाला है।14 वैज्ञानिकों ने पंजाब के कंडी क्षेत्र के 40 गांवों के 800 परिवारों को साथ जोड़कर शिवालिक पहाड़ियों में मौजूद औषधीय खजाने का वैज्ञानिक दोहन और प्रोसेसिंग कर सहकारिता के क्षेत्र में 'उन्नति' का एक ऐसा मॉडल विकसित किया है, जिसने सामाजिक उद्यमशीलता की अनूठी प्रेरककथा बुन डाली है। डेढ़ दशक पहले स्थापित उन्नति कॉपरेटिव, मार्केटिंग कम प्रोसेसिंग सोसायाटी का टर्नओवर बेशक पहले साल महल 35 हजार रुपए था, लेकिन वर्तमान में इस सोसायटी का टर्नओवर 25 करोड़ सलाना की सीमा पार कर चुका है। इस सोसायटी के उत्पाद देश-विदेश में हिट हैं। अपोलो, एमएचएस फार्मास्यूटिकल हैदराबाद, यूडिस, मार्कफैड जैसी कंपनियां उन्नति की ग्राहक हैं। पंजाब के कंडी क्षेत्र में स्थानीय लोगों के जीवन में समृद्धि लाने के लिए उन्नति को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर पंजाब के तत्कालीन मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल ने सम्मानित किया है।

14 वैज्ञानिकों ने देखा सपना

साल 2003 में क्षेत्र के 14 साइंटिस्टों ने 'उन्नति' कॉपरेटिव मार्केटिंग कम प्रोसेसिंग सोसायटी रजिस्टर्ड करवाई। बायो टेक्नोलॉजी, एग्रोनॉमी, प्लांट पैथोलॉजी, सॉयल साइंस व आयुर्वेद के माहिर इन विज्ञानियों के पास देश और विदेश में आकर्षक सैलरी पैकेज पर अपना करियर बनाने के कई चमकदार अवसर थे, लेकिन वे यहां मौजूद नेचुरल हर्बल बायो रिसोर्सिस से अपने हुनर और स्थानीय लोगों की मदद से अपने क्षेत्र में रोजगार सृजन और ग्रामीण आर्थिकी को मजबूत कर सामाजिक-आर्थिक बदलाव का सपना बन रहे थे। इसी जुनून से उन्नति की नींव पड़ी।

यहां से निकले उन्नति के रास्ते

उन्नति के फाउंडर मेंबर और एमडी डॉ. ज्योति स्वरूप बताते हैं कि उन्नति के सदस्यों ने सबसे पहले पंजाब स्टेट कौंसिल फॉर साइंस एंड टेक्नोलॉजी से संपर्क किया। कौंसिल के डायरेक्टर एसएस मरवाहा, ज्वॉइंट डायरेक्टर जेके अरोड़ा ने काफी मदद की। एक साल के बाद पंजाब स्टेट कौंसिल फॉर साइंस एंड टेक्नोलॉजी की मदद से उन्नति को भारत सरकार से एक प्रोजेक्ट मिला। इस प्रोजेक्ट के तहत पहाड़ी जड़ी-बूटियों और फलों को प्रोसेस कर इस्तेमाल करना था। उन्नति ने सबसे पहले क्षेत्र के उन 40 गांवों की निशानदेही की, जहां से इन नेचुरल रिसोर्सिस को लाया जाना था। इसके लिए इन गांवों के 800 परिवारों को साथ जोड़ा गया। यहीं से उन्नति के रास्ते बनते गए।

पहला आर्डर : 30 बोतल जूस

शिवालिक के इस इलाके में सबसे ज्यादा आंवला पाया जाता है। इसके अलावा करेला, गलोये, तुलसी, जामुन, हरड़ और भेहड़ा भी होते हैं। उन्नति की स्थापना से पहले यहां ज्यादातर आंवला पेड़ों से गिरकर बेकार हो जाता था। आंवले की ज्यादा पैदावार होने से चलते यहां आंवला जूस और अन्य उत्पाद आंवला बर्फी आदि बनाने की पहल हुई। पहले ही दिन उन्नति को 30 बोतल आंवला जूस का आर्डर मिला था। उसके बाद करेले, जामुन, गलो, हरड़, भेहड़ा का जूस तैयार किया जाने लगा। फिर तमाम फलों से बर्फी और गुड़ भी तैयार किया जाने लगा।

देश-विदेश में मार्केटिंग

'उन्नति' के उत्पादों ने देश और विदेश के बाजार में अपनी खास ब्रांडवैल्यू बनाई है। यहां तैयार किए गए माल की देश में ही नहीं, अपितु विदेश में भी भारी मांग है। अपोलो, एमएचएस फार्मास्यूटिकल हैदराबाद, यूडिस, मार्कफैड जैसी आदि कंपनियां उन्नति से उत्पादन खरीदती हैं। 'उन्नति' की ओर से ऑफ लाइन और ऑन लाइन सेल्ज की जाती है।

'उन्नति' के उत्पाद

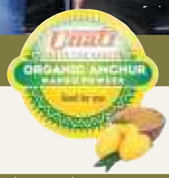

हेल्थ केयर जूस

आंवला जूस, ग्लोय- तुलसी जूस, करेला जामुन जूस, एलोवेरा जूस (नेचुरल फ्लेवर्ड, लिची फ्लेवर्ड, मैंगो फ्लेवर्ड, आरेंज फ्लेवर्ड), नोनी जूस, त्रिफला जूस, व्हीट ग्रास - आंवला जूस, हार्ट केयर जूस, तुलसी आंवला जूस, आंवला- जिंजर सक्वैश।

हर्बल फूड प्रोडक्ट्स

आंवला कैंडीज, आंवला चटनी, आंवला इन हनी, आंवला मुरब्बा, आंवला आचार, आंवला पाउडर, सेब मुरब्बा, गाजर मुरब्बा, हरड़ मुरब्बा, पंच तुलसी ड्राप्स।

फ्रूट बर्फी

आंवला बर्फी, एप्पल बर्फी, बेल बर्फी, गुआवा बर्फी, मैंगो बर्फी, पाइनएप्पल बर्फी।

नेचुरल फरमेंटेड विनेगर

आंवला विनेगर, एप्पल साइडर विनेगर, जामुन विनेगर।

गुड़

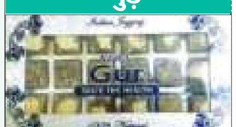

गुड़ टेस्ट ऑफ हेल्थ

ओर्गेनिक डिविजन

ओर्गेनिक जामुन पाउडर, ओर्गेनिक ग्लोये पाउडर, ओर्गेनिक नीम पाउडर, ओर्गेनिक हरड़ पाउडर, ओर्गेनिक त्रिफला पाउडर, ओर्गेनिक भेहड़ा पाउडर, ओर्गेनिक तुलसी पाउडर, ओर्गेनिक आंवला पाउडर, ओर्गेनिक करेला पाउडर, ओर्गेनिक अर्जुन पाउडर, ओर्गेनिक कड़ीपत्ता पाउडर, ओर्गेनिक मैंगो पाउडर, तुलसी-आंवला टी, ओर्गेनिक जिंजर आंवला टी, ओर्गेनिक आंवला-लेमनग्रास टी, ओर्गेनिक आंवला एंड कमोमाइल टी, ओर्गेनिक आंवला टी, ओर्गेनिक मेरिंगा पाउडर।

बदलाव की राह पर 'उन्नति'

'उन्नति' ने पंजाब स्टेट साइंस एंड टैक्नोलॉजी (पंजाब सरकार के उपक्रम) के बायोटेक्नोलॉजी विभाग की ओर से वित्त पोषित परियोजना के अंतर्गत गैर लकड़ी वन उपज (एनडब्ल्यूएफपी) के प्रसंस्करण से स्थानीय समुदायों की आय बढ़ाने में अहम भूमिका अदा की है। उन्नति विश्व बैंक सहायता प्राप्त कार्यक्रम के तहत पंजाब स्टेट काउंसिल फॉर साइंस एंड टैक्नोलॉजी (पंजाब सरकार के उपक्रम), गुरु अंगददेव पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालयव पंजाब, कृषि विश्वविद्यालय के सहयोग से औषधीय और सुगंधित पौधों की खेती और प्रसंस्करण की परियोजना चला रही है। बांस मिशन के तहत उन्नति लेंटाना प्रभावित भूमि पर बांस की खेती पर जोर दे रही है। स्थानीय लोगों की सहायता से बांस से हस्तशिल्प, फर्नीचर और खाद्य उत्पादों का निर्माण किया जा रहा है। उन्नति भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के सहयोग से गन्ना किसानों को लाभांवित करने के लिए उच्च गुणवत्ता के गुड़ का निर्माण कर रही है। झौंपड़ी और भूमिहीन आय व्युत्पन्न कार्यक्रम के तहत जामुन के फल एकत्र करने के लिए ऐसे लोगों को शामिल कर उनकी आय में बढ़ोतरी कर रही है। उन्नति की ओर से क्षेत्र में स्वच्छ स्कूल अभियान चलाया जा रहा है।

e-Charak **उपयोगकर्ताओं की मदद**

उत्पादों, सेवाओं के लिए बेहतर बाजार।
सही ग्राहक पहचाना और ऊर्जा की बचत।
माल की सही कीमत जानना।
लाभ में उचित हिस्सेदारी।
क्या और कितना उत्पादन करने के लिए बेहतर निर्णय।

औषधीय फसल बेचने की राह हुई अब आसान, किसानों को ऑनलाइन मिल जाएगा फसल का खरीददार

ई-चरक : जड़ी-बूटियों की खरीदने-बेचने का ऑनलाइन प्लेटफार्म

डॉ. देवराज भारद्वाज, संचालक किसान मंच, कुल्लू, हिमाचल प्रदेश।

किसानों को औषधीय फसल को बेचने की समस्या का सामना भी नहीं करना पड़ेगा, क्योंकि अब उनकी फसल का खरीदार ऑनलाइन ही मिल जाएगा। किसान को औषधीय पौधों की फसल को बेचने के लिए न तो मंडियों में जाने की जरूरत पड़ेगी और न ही नई योजनाओं की जानकारी के लिए विभाग के चक्कर काटने पड़ेंगे।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड ने औषधीय पौधों की खेती करने वाले किसानों के लिए 'ई-चरक' वेबसाइट तैयार की है, जिसमें किसान अपनी फसल के बारे में पूरी जानकारी अपलोड करेगा और इसी वेबसाइट के माध्यम से किसान को खरीददार भी मिल जाएगा। इतना ही नहीं, बोर्ड ने इसके लिए मोबाइल एप भी तैयार किया है। औषधीय पौधों की खेती करने वाले किसान दोनों सुविधाओं का लाभ उठा सकते हैं। बोर्ड की ई चरक वेबसाइट को हिंदी, अंग्रेजी और कन्नड़ भाषा में तैयार किया गया है, जबकि मोबाइल एप में छह भाषाओं की सुविधा दी गई है। ई-चरक पर किसान औषधीय पौधों की फसल के बारे में जानकारी देने के साथ-साथ उसका खुद दाम तय करके अपलोड कर सकता है, जिससे देश में किसी कोने का व्यापारी अपनी सुविधा के अनुसार किसान की फसल खरीदेगा। ई चरक में एग्रो तकनीक योजनाओं की पूरी जानकारी दी गई है।

औषधीय खेती की नई तकनीक

अब किसान औषधीय पौधों की खेती की नई तकनीक के बारे में भी जान सकेंगे। हिमाचल के किसानों को दूसरे राज्य के औषधीय पादप बोर्ड की ओर से की जा रही खेती और उनकी तकनीक के बारे में प्रशिक्षण देने के लिए राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड ने मंजूरी दी है।

औषधीय पौधों का प्लेटफार्म

ई-चरक चैनल जड़ी-बूटी, सुगंधित, कच्चे माल और उसकी जानकारी, औषधीय पौधों के क्षेत्र में शामिल विभिन्न हितधारकों के बीच जानकारी का आदान-प्रदान करने का एक मंच है। ई-चरक संयुक्त रूप से प्रगत संगणन विकास केंद्र (सी-डैक), राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड (NMPB), आयुष मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा विकसित किया गया है।

ई-चरक का उपयोग

खरीदारों और औषधीय पौध क्षेत्र के विक्रेताओं में आपसी संपर्क बनाने के लिए एक वर्चुअल बाजार के रूप में कार्य।

वर्चुअल शोकेस के रूप में औषधीय पौध क्षेत्र के उत्पाद और संबंधित सेवाओं को प्रदर्शित करने के लिए।

प्रौद्योगिकी , बाजार की जानकारी और औषधीय पौध क्षेत्र के अन्य संसाधनों के ज्ञान भंडार के रूप में।

मुख्य पृष्ठ पर विषयवस्तु

एडवांस्ड सर्च विकल्प, जैसे : 'वानस्पतिक, व्यापार', 'श्रेणी वार-उत्पाद', राज्यवार विषयवस्तु, खरीद/बिक्री के लिए विषयवस्तु की खोज का इस्तेमाल किया जा सकता है।

रुचि व्यक्त करने के लिए

उपयोगकर्ता विषय वस्तु के साथ 'संपर्क करें' विकल्प का उपयोग कर सकते हैं।

पंजीकृत उपयोगकर्ताओं विषय वस्तु पोस्ट करने वाले उपयोगकर्ता का संपर्क विवरण देख सकते हैं और संदेश बोर्ड का भी उपयोग कर सकते हैं।

विषय वस्तु पोस्ट करने वाले को प्रतिक्रियाएं एसएमएस और ई-मेल दोनों माध्यम से प्राप्त होती हैं। एप्लिकेशन उपयोगकर्ताओं को अधिसूचना मिलती है।

विषयवस्तु पोस्ट करने के लिए

केवल पंजीकृत सदस्य बिक्री/खरीद के लिए विषयवस्तु पोस्ट कर सकते हैं।

पंजीकृत उपयोगकर्ता जहां बिक्री-खरीद के पोस्ट करना चाहते हैं, वहां श्रेणी, उप श्रेणी का विकल्प का चयन कर सकते हैं।

उपयोगकर्ता विषय वस्तु पोस्टिंग के साथ एक इमेज भी जोड़ सकते हैं। फार्म जमा करने पर विषय वस्तु लोगों के लिए प्रदर्शित होती है।

ई-चरक में ऐसे करें पंजीकरण

ई-चरक में पंजीकरण काफी सरल है। बस 2 सरल चरणों का पालन कर आप इस उपकरण द्वारा प्रदान किए गए कई लाभों का आनंद ले सकते हैं। इसके लिए निम्नलिखित चरण का उपयोग करें।

- होम पेज पर, नया उपयोगकर्ता (new user) क्लिक करें। अब आप http://e-charak.in/echarak/signUpBuyer.do पेज पर पहुंच जाएंगे।

- पंजीकरण फॉर्म भरें और पूरा पंजीकरण करें।
- एक बार सबमिट करने के बाद, आपको एक अधिसूचना मेल भेजा जाएगा। उपकरण में लॉग इन करें और सेवाओं का उपयोग शुरू करें।

बिक्री के लिए आइटम ऐसे करें पोस्ट

सामान बिक्री के लिए पोस्ट करने के लिए प्रक्रिया काफी सरल है। इन चरणों का पालन करें और आपका आइटम बिक्री के लिए तुरंत उपलब्ध हो जाएगा।

- ई-चरक प्लेटफार्म पर लॉग इन करने के बाद पोस्ट एन आइटम पर क्लिक करें।
- श्रेणी, उप-श्रेणी, उत्पाद का चयन करें, जहां आपका आइटम उचित रूप से प्रदर्शित किया जा सकता है।
- अपने आइटम के बारे में विवरण दें और सबमिट करें। आपका आइटम ई-चरक के होम पेज पर दिखाई देगा।

आइटम खरीदने के लिए दिखाएं रुचि

निम्नलिखित चरणों का पालन कर आप पसंद की आइटम खरीदने के लिए रुचि दिखा सकते हैं।

नए यूजर के लिए : पूरी जानकारी देखने के लिए अपनी पसंद के आइटम पर क्लिक करें।

अभी संपर्क करें पर क्लिक करें और जो आइटम आप खरीदना चाहते हैं उसके संबंध में जानकारी सबमिट करें। आपका संदेश उस उपयोगकर्ता के साथ सांझा किया जाएगा, जिसने उक्त आइटम ई-चरक पर पोस्ट किया था।

पंजीकृत उपयोगकर्ता के लिए: लॉगिन करने के बाद अपनी रुचि के आइटम पर क्लिक करें।

'एड रिस्पांस' सुविधा का उपयोग करें और अपना संदेश उस उपयोगकर्ता को पोस्ट करें, जिसने आइटम पोस्ट किया है।

अगर आप ऐसी जड़ी-बूटी का विक्रय करना चाहते हैं जो किसी उत्पाद-श्रेणी संरचना में फिट नहीं है तो व्यवस्थापक को उस आइटम का विवरण ईमेल करें। indg@cdac.in पर लिखें।

एप्प प्राप्त करने के लिए

इसे प्राप्त करने के लिए डाउनलोड लिंक
अपना मोबाइल नं दें :

+91-

जमा करें

इस क्यूआर कोड को स्कैन करें

ईचरक एप्प

GET IT ON Google Play

हमसे संपर्क करें

नेशनल मेडिसिनल प्लांट्स बोर्ड, कक्ष 309, आयुष भवन, बी-ब्लॉक, जीपीओ कॉम्प्लेक्स आईएनए, नई दिल्ली - 110023
ईमेल : info-nmpb@nic.in

या

क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र
जोगिंद्रनगर - 175015
फोन 01908 222970
ईमेल : rcfc-north@gmail.com

NATIONAL MEDICINAL PLANTS BOARD
Plants For Health & Prosperity

E-Charak
e-Channel for Herbs, Aromatic, Raw Material & Knowledge

जड़ी-बूटी बाजार

हर माह प्रकाशित/प्रसारित

www.rcfcnorth.in | कुल पृष्ठ : 8 | वर्ष 1, अंक 2 | 1 अक्तूबर से 31 अक्तूबर 2018

क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तर भारत, आयुष मंत्रालय भारत सरकार, दूरभाष-01908-222970, 222333 email:rcfcnorth@gmail.com

उत्तराखंड के सीमांत घेस गांव में उत्तराखंड सरकार ने केंद्रीय आयुष मंत्री की अध्यक्षता में मनाया कुटकी महोत्सव

कुटकी से चमका चमोली का घेस गांव, बनेगा देश का 'आयुष ग्राम'

चमोली से अनुसुया दत्ता

उत्तराखंड के चमोली जनपद की पहाड़ियों से घिरे 5600 फुट की ऊंचाई पर स्थित खूबसूरत सीमांत गांव घेस बेशकीमती कुटकी की खेती को लेकर अपनी चमक बिखेर रहा है। इस गांव में सैंकड़ों किसान कुटकी का उत्पादन कर रहे हैं। यहां बीते दिनों कुटकी महोत्सव आयोजित किया गया, जिसमें आयुष मंत्री श्रीपद नायक ने मुख्यातिथि के रूप में शिरकत की। कल तक यह गांव मटर की खेती के लिए जाना जाता था, लेकिन अब मटर के साथ यहां के किसानों ने औषधीय पौधे कुटकी के उत्पादन में भविष्य की आर्थिकी पैदा करने की शुरूआत कर दी है। ग्रामीण अब यहां कुटकी उगा रहे हैं, जो मौसमी फसल के मुकाबले अच्छे दामों पर बिक रही है। कुटकी की खेती को लेकर लोगों में जागरूकता आए और उनके उत्पाद को बेहतर बाजार मिल सके, इसी को ध्यान में रखते हुए केंद्रीय आयुष मंत्रालय ने यहां कुटकी महोत्सव का आयोजन किया। महोत्सव के दौरान उत्तराखंड के सीएम त्रिवेन्द्र सिंह रावत ने कहा कि कुटकी की खेती में जुटे किसानों को बेहतर बाजार दिलाना सरकार की जिम्मेदारी है। उन्होंने किसानों को भरोसा दिया कि सरकार इस दिशा में गंभीर प्रयास कर रही है। कुटकी के उत्पादन व विपणन को लेकर अब सरकार ऑरगेनिक लैंड प्रमाणपत्र प्रदान करेगी, ताकि भविष्य में कुटकी उत्पादकों को बेहतर बाजार व उचित दाम मिल सकें। केंद्रीय आयुष मंत्री ने कहा कि केंद्र सरकार किसानों की आय दोगुनी करने के लिए प्रयासरत है। औषधीय पौधों की खेती आर्थिकी बदल सकती है।

औषधीय खेती की ओर गंभीर पहल का उत्सव

महोत्सव का महत्व

विलुप्त होती जड़ी-बूटियों के संरक्षण संवर्धन एवं विकास के लिए किसानों को प्रोत्साहित व सम्मानित करना, किसानों का उत्पादन एवं विपणन के लिए सशक्तिकरण करना, जड़ी- बूटियों के उत्पादन एवं विपणन के लिए किसानों, शासन-प्रशासन के बीच समन्वय से ऐसी नीतियों का निर्धारण करना, जिससे जड़ी- बूटियों के संरक्षण, संवर्धन के साथ किसानों व जड़ी- बूटियों के उपयोग करने वाले संस्थानों को इसका लाभ मिल सके, उत्पादित जड़ी-बूटियों के समर्थन मूल्य का निर्धारण करने, जड़ी-बूटियों के विक्रय को आसान बनाने, गांव के स्तर पर ही किसानों एवं खरीदारों के लिए सिंगल विंडो सिस्टम सुविधा की व्यवस्था करने का लक्ष्य रख कुटकी महोत्सव के आयोजन का खाका तैयार किया गया। इस आयोजन के बहाने गांव में पहली बार बिजली पहुंची और जड़ी- बूटियों के प्रसंस्करण की नई उम्मीदों को पंख लग गए। इस गांव को प्रदेश सरकार ने मॉडल गांव बनाने की पहल की तो केंद्र सरकार ने इस गांव को 'आयुष ग्राम' के तौर पर विकसित करने और जड़ी- बूटियों का राष्ट्रीय संस्थान खोलने के लिए हर संभव मदद का वादा किया है।

खुलेगा राष्ट्रीय जड़ी-बूटी संस्थान

केंद्रीय आयुष मंत्री श्रीपद नायक ने घेस क्षेत्र में राष्ट्रीय जड़ी- बूटी संस्थान खोलने की स्वीकृति दी। कुटकी महोत्सव के दौरान जड़ी- बूटियों की प्रदर्शनी भी लगाई गई है। कार्यक्रम में उत्तराखंड के मुख्यमंत्री ने क्षेत्र के सामाजिक कार्यकर्ता डॉ. हरपाल सिंह नेगी की लिखी पुस्तक 'उत्तराखंड की जड़ी-बूटी' का विमोचन भी किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि घेस गांव को एक मॉडल गांव बनाया जाएगा।

भांग और कीड़ा जड़ी पर चर्चा

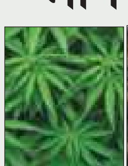

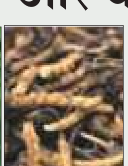

उत्तराखंड के मुख्यमंत्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत ने इस मौके पर भांग की खेती की उपयोगिता पर विस्तार से बात रखी। उन्होंने कहा कि भांग का संपूर्ण पौधा औषधीय गुणों से भरपूर है। इसके रेशों से आठ प्रकार के उत्पाद तैयार किए जा सकते हैं। उन्होंने कीड़ा जड़ी के विपणन के लिए सरल नीति बनाए जाने की बात भी केंद्रीय आयुष मंत्री के सामने रखी, ताकि क्षेत्र के लोग इस बहुमूल्य जड़ी का दोहन कर सकें।

कुटकी ले आई घेस गांव में बिजली

उत्तरांचल युवा एवं ग्रामीण विकास केंद्र नारायण बगड़ व घेस गांव की जड़ी- बूटी उत्पादन एवं विपणन की सहकारी संस्था 'कामगार स्वायत्त सहकारिता' ने यहां के किसानों को औषधीय पौधों की खेती के लिए प्रोत्साहित करने में अहम भूमिका निभाई है। घेस गांव में राष्ट्रीय स्तर के कुटकी महोत्सव के आयोजन में भी इस संस्था का अहम योगदान रहा। यह संस्था वर्ष 1999 से यहां के किसानों को विभिन्न प्रशिक्षण दिलवाने के साथ जड़ी- बूटियों के उत्पादन एवं विपणन में मदद कर रही है। वित्तीय मदद में भी संस्था हमेशा किसानों की मददगार रही है। इस संस्था के दो दशक के इमानदार प्रयासों का ही फल है कि कुटकी महोत्सव के बाद सुर्खियों में आए चमोली जनपद के घेस गांव में 150 किसान जड़ी- बूटी का उत्पादन कर रहे हैं। संस्था के प्रयासों के चलते यह पहाड़ी क्षेत्र मटर उत्पादन में अपनी पहचान बना चुका है। आयुष मंत्रालय के अधीन आते नेशनल मेडिसिनल प्लांट बोर्ड के क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र जोगिंद्रनगर के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. अरूण चंदन कहते हैं कि कुटकी की खेती में घेस गांव में अपनी खास पहचान बनाई है। वे कहते हैं कि यहां के किसानों को यह केंद्र विभिन्न योजनाओं के तहत लांभावित कर रहा है, ताकि यह क्षेत्र कुटकी सहित विभिन्न जड़ी- बूटियों की खेती में मुकाम हासिल करे।

रोड़पति से करोड़पति

- मल्टीपरपज प्रोसेसिंग मशीन का निर्माण।
- सब्जियां काटने, बूटियां सुखाने वाली मशीन का निर्माण।
- ट्रेक्टर से चलने वाले मोबाइल रेन टेंकर का निर्माण।
- सोलर बैटरी से चलने वाली झाडू मशीन का निर्माण।
- अब फार्मर टीचर के रोल में हैं धर्मवीर कंबोज।

प्रोसेसिंग उद्योग का चेहरा बदल कर रिक्शा चालक से करोड़पति बनने वाले हरियाणा के धर्मवीर कंबोज

धर्मवीर ने जुगाड़ से ऐसी मशीनें बनाईं, जड़ी- बूटियों की खेती से बढ़ी कमाई

यमुनानगर से कमलजीत सिंह, किसान संचार

धर्मवीर कंबोज जब छठी कक्षा में पढ़ते थे तो इलेक्ट्रिक हीटर व बोरिंग करने की मशीन का मॉडल तैयार कर दिया था और आठवीं कक्षा में प्रोजेक्ट वर्क में इमरजेंसी लाइट बना दी थी। हालांकि दसवीं के बाद पढ़ाई छूट गई, लेकिन बचपन के दिनों से दिल के अंदर बैठा इनोवेटर हमेशा से मशीनों के निर्माण की दिशा में सोचता रहा। जैसे ही मौका मिला, जुगाड़ से ऐसी मशीनें बनाईं जिन्होंने औषधीय पौधों के प्रसंस्करण की दिशा में क्रांतिकारी परिवर्तन किए। उनकी बनाई मशीनों ने जड़ी-बूटियों को प्रोसेस कर बेचने से कमाई कई गुणा बढ़ गई।

मल्टीपरपज प्रोसेसिंग मशीन

धर्मवीर ने एक मल्टीपरपज प्रोसेसिंग मशीन बनाई है। यह मशीन कई तरह के उत्पादों की प्रोसेसिंग कर सकती है। मशीन एक घंटे में दो क्विंटल एलोवेरा का जूस बनाने की क्षमता रखती है। इस मशीन से आंवला, अमरूद, स्ट्रॉबेरी जैसे फलों सहित गाजर, अदरक, लहसुन की भी प्रोसेसिंग की जा सकती है। इस मशीन से सब्जियों का छिलका उतारने, कटाई करने, उबालने और जूस बनाने का काम भी किया जाता है। मशीन की लागत डेढ़ लाख रुपए है। इस मशीन का उन्होंने पेटेंट भी कराया है। यह मशीन सिंगल फेज बिजली से चलती है और इसमें मोटर की रफ्तार को नियंत्रित करने की व्यवस्था है। धर्मवीर कंबोज अब तक ऐसी सैंकड़ों मशीनें बेच चुके हैं। अफ्रीका और नेपाल ने भी उनसे ऐसी मशीनें खरीदी हैं। अधिकांश मशीनें स्वयं सहायता समूहों को बेची गई हैं।

सब्जियां काटती, बूटियां सुखाती मशीन

धर्मवीर ने एक वेजीटेबल कटर मशीन भी बनाई है जो एक घंटे में 250 किलो सब्जियों को काट सकती है। बिजली से चलने वाली इस मशीन की कीमत छह हजार रुपए है। उन्होंने फलों, सब्जियों, इलायची और जड़ी-बूटियों को सुखाने वाली कम कीमत की एक मशीन भी बनाई है। वर्ष 2013 में फूड प्रोसेसिंग मशीन बनाने पर नेशनल अवार्ड भी मिला है।

ट्रेक्टर से चलने वाला मोबाइल रेन टेंकर

धर्मवीर ने मोबाइल सिंचाई मशीन बनाई है। इस मशीन की तत्कालीन राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल ने खूब सराहना की थी। मशीन को राष्ट्रपति भवन में प्रदर्शित किया। इसको रेन टेंकर नाम दिया गया। इसके सिंचाई सिस्टम में छह हजार लीटर पानी की क्षमता वाला टेंकर लगाया गया। इसे ट्रैक्टर की सहायता से खींच कर खेतों में ले जाकर फसलों की सिंचाई की जा सकती है। टेंकर के बिल्कुल पीछे चैसी पर एक पांच हार्स पॉवर का ईंजन लगाया गया है। इसकी सहायता से लगभग 150 फुट के दायरे में बरसात की जा सकती है।

सोलर बैटरी से चलने वाली झाडू मशीन

धर्मवीर ने सोलर बैटरी से चलने वाली झाडू मशीन तैयार की है। इस मशीन का निर्माण करने में घरेलू सामान का प्रयोग किया गया है। झाडू वाली यह मशीन सड़क पर पड़े पत्ते व अन्य कूड़ा- कर्कट उठाकर पानी के साथ सफाई करती है। इस मशीन को बहुत ही आसानी से चला सकते हैं। धर्मवीर कहते हैं कि भविष्य में इस मशीन को गोबर उठाने के कार्य में भी प्रयोग किया जाएगा। ई रिक्शा वाली झाडू की मशीन से सात फुट चौड़ाई में साफ- सफाई का काम किया जा सकता है। इस मशीन से कुछ ही समय में काफी दूरी तक सफाई की जा सकती है। यह मशीन रास्ते में पड़े कूड़े-कर्कट को निर्धारित स्थान पर डालती है। मशीन को बनाने पर एक लाख रुपए खर्च आया है। धर्मवीर कहते हैं कि उन्होंने सपने में भी नहीं सोचा था कि एक दिन उनकी बनाई मशीनें कृषि आर्थिकी का चेहरा बदलने में कारगर सिद्ध होंगी। वे कहते हैं कि इन मशीनों के निर्माण ने उन्हें न केवल देश, बल्कि देश से बाहर भी मान और सम्मान दिया है और वह एक कृषक टीचर के तौर पर पहचान बनाने में कामयाब रहे हैं।

कामयाबी का सफर

धर्मवीर कंबोज कभी दो जून की रोटी के लिए दिल्ली की सड़कों पर ऑटो रिक्शा चलाते थे, आज सफल उद्यमी, प्रगतिशील किसान, वैज्ञानिक और कृषि ट्रेनर के तौर पर देश- विदेश में अपनी पहचान रखते हैं। वह देश के उन बिरले लोगों में हैं, जिनकी बनाई मशीनों पर न केवल अपना देश, बल्कि विदेश भी फिदा है। उनका खुद का कारोबार अब करोड़ों में पहुंच चुका है। हरियाणा के यमुनानगर जिले के दंगला गांव के धर्मवीर कंबोज जड़ी- बूटियों की खेती और उनकी प्रोसेसिंग से एक करोड़ रुपए तक सलाना कमा रहे हैं।

आवश्यकता से अविष्कार

धर्मवीर कहते हैं कि पढ़ाई इतनी कम हुई थी कि गांव छोड़ दिल्ली में रिक्शा चलाने लगे। एक बार सड़क हादसे का शिकार हुए तो मजबूरन गांव लौटना पड़ा। कई महीने घर पर ही रहे। गांव के किसानों के भ्रमण में अजमेर जाने का अवसर मिला। वहां पर आंवले की मिठाइयां बना रहीं महिलाओं को देखकर ऐसा करने का बिजनेस आइडिया आया। घर लौट कर इस आइडिया को हकीकत पर उतारने की कोशिश की तो सामने आया कि व्यवसायिक स्तर पर गाजर अथवा आंवले को कद्दूकस करने के लिए जो औजार हैं, उनसे न केवल ज्यादा समय की बर्बादी होती है, बल्कि हाथ छिलने का डर भी बना रहता है। इसी जरूरत ने उन्हें ऐसी मशीन बनाने की दिशा में काम करने को प्रेरित किया। उन्होंने इसके लिए कई प्रयोग किए और रात- दिन एक कर ऐसी मशीन तैयार करने में सफलता हासिल की। उनकी मल्टीपरपज मशीन ने तो प्रोसेसिंग इंडस्ट्री में कमाल कर दिया।

प्रोसेसिंग इंडस्ट्री का चेहरा बदलने की प्रेरककथा

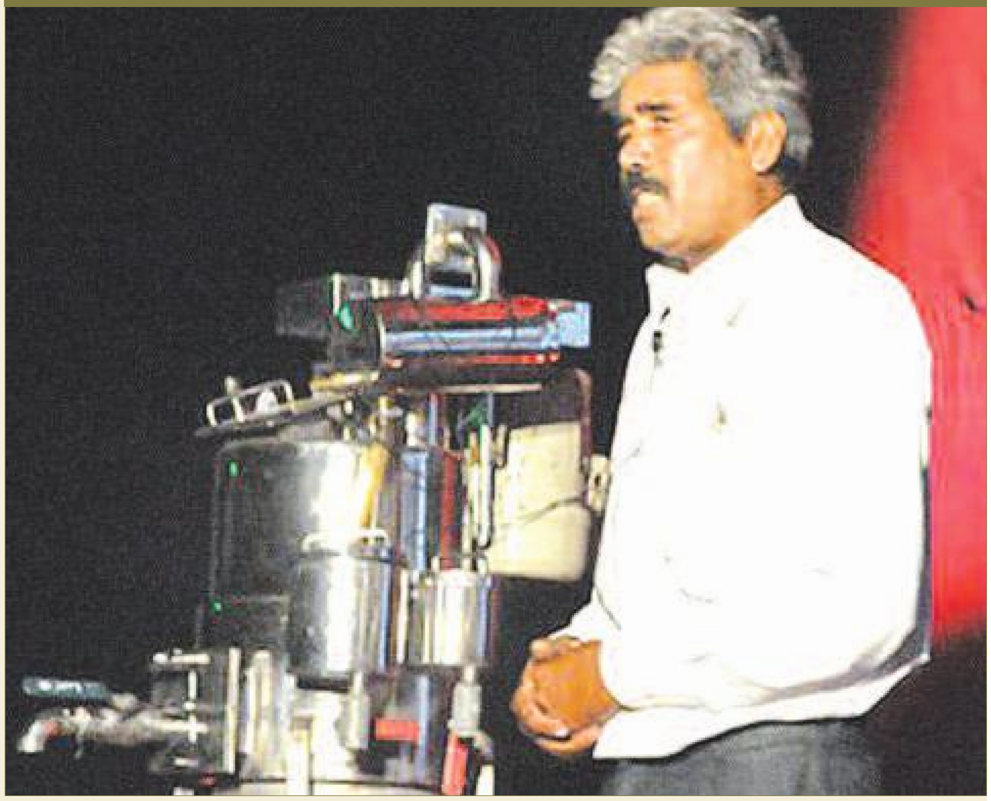

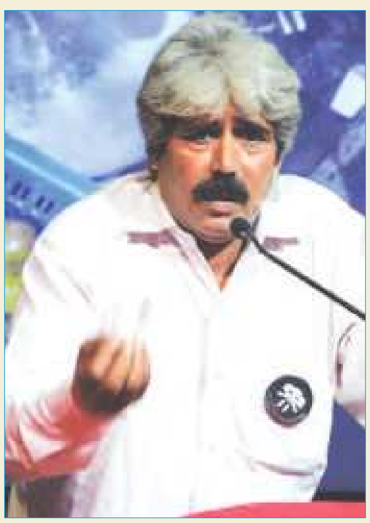

काम को सम्मान

धर्मवीर कंबोज को वर्ष 2009 में कृषि क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल ने सम्मानित किया। वर्ष 2010 में केंद्रीय कृषि मंत्री शरद पवार ने फार्मर साइंटिस्ट का अवार्ड दिया। वर्ष 2013 में फूड प्रोसेसिंग मशीन बनाने पर नेशनल अवार्ड मिला। मल्टीपरपज मशीन बनाने पर वर्ष 2015 में जिम्बाब्वे के राष्ट्रपति रॉबर्ट मुगांबे ने उनको सम्मानित किया। देश की कई संस्थाएं उन्हें सम्मानित कर चुकी हैं।

अब टीचर के रोल में धर्मवीर

धर्मवीर अब टीचर के रोल में भूमिका अदा कर रहे हैं। वे सेल्फ हेल्प ग्रुप की महिलाओं को घरेलू स्तर पर फूड प्रोसेसिंग के लिए निशुल्क प्रशिक्षण देते हैं। वे देश के विभिन्न भागों में अब तक पांच हजार से ज्यादा महिलाओं को प्रशिक्षित कर चुके हैं। उनके खुद के कारोबार से 35 महिलाएं जुड़ी हैं। वे कहते हैं कि बचपन में मां को जड़ी-बूटियां उगाते देखा था। दिल्ली में ऑटो चलाने के दौरान जड़ी- बूटियों की मंडी में आना- जाना लगा रहता था। इसी वजह से मन में जड़ी- बूटियों की खेती करने को लेकर एक सोच थी। दिल्ली छोड़कर जब गांव लौटे तो औषधीय पौधों की खेती शुरू कर दी। अकरकरा, अश्वगंधा, सफेद मूसली, ब्रह्मी, बच, एलोवेरा, कालमेघ, गिलोए, तुलसी व आंवला की खेती करने के साथ ही प्रोसेसिंग मशीनें बनाने की दिशा में प्रयास शुरू किए। धर्मवीर अपनी फसल को प्रोसेसिंग कर तुलसी का तेल, सोयाबीन का दूध, हल्दी का अर्क, गुलाब जल, जीरे का तेल, पपीते और जामुन का जैम, अमरूद जूस, आइसक्रीम और टॉफी बनाते हैं।

ऑरगेनिक खेती करने वाले किसानों के उत्पाद ग्राहकों तक पहुंचाने के लिए बाप- बेटी ने बनाई मजबूत सप्लाई चेन

लखनऊ का पहला ऑरगेनिक सुपर स्टोर 'जीवनीय नेचुरल'

'जीवनीय सोसायटी' के तीन दशक की मेहनत का प्रतिफल है 'जीवनीय नेचुरल'

लखनऊ से डॉ. अरूण चंदन

'जीवनीय नेचुरल' पारंपरिक स्वास्थ्य और कृषि प्रणालियों को बढ़ावा देने के काम में जुटी 'जीवनीय सोसायटी' के तीस सालों के प्रयासों का प्रतिफल है। डॉ. नरेंद्र नाथ मेहरोत्रा ने करीब तीन दशक पहले 'जीवनीय सोसायटी' की स्थापना की थी। इस गैर सरकारी संगठन ने पारंपरिक स्वास्थ्य, खेती और शिक्षा प्रणालियों के प्रचार के लिए सालों काम किया है। डॉ. मेहरोत्रा पारंपरिक कृषि के समर्थक हैं और किसानों को इस दिशा में काम करने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करते रहे हैं। जीवनीय सोसायटी ने देश भर में हजारों किसानों को पारंपरिक खेती के तरीके सिखाए हैं। देश के विभिन्न हिस्सों में एक हजार हेक्टेयर से ज्यादा भूमि पर हजारों किसानों को ऑरगेनिक खेती करने के लिए प्रशिक्षित किया है।

महिला सशक्तिकरण की पहल

जीवनीय सोसायटी महिलाओं में सामाजिक आर्थिक बदलाव लाने के लिए काम कर रही है। यह सोसायटी स्वयं सहायता समूहों के जरिये महिला उद्यमिता को विस्तार देने के प्रयास कर रही है। जीवनीय सोसायटी महिलाओं को पारम्परिक खेती, प्रोसेसिंग और पैकेजिंग में दक्ष करने के साथ ऑरगेनिक खेती के लिए प्रोत्साहित करने के लिए कार्यशालाओं का आयोजन करती है। यह सोसायटी सामुदायिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी काम कर रही है। जीवनीय सोसायटी स्वास्थ्य शिविर लगाने, परम्परागत व ऑरगेनिक खेती को बढ़ावा देने और औषधीय व सुगंधित पौधों की खेती करने व उनका उपयोग करने के लिए कई सरकारी और गैर सरकारी संगठनों के साथ काम कर रही है।

पिता- पुत्री की जोड़ी का कमाल

स्वास्थ्य और भोजन के प्रति जागरूक समाज के बीच ऑरगेनिक उत्पाद तेजी से मजबूत जगह बना रहे हैं, इसलिए ऐसे उत्पादों की मांग लगातार बढ़ रही है। डॉ. नरेंद्र नाथ मेहरोत्रा और उनकी बेटी दीप्ति मेहरोत्रा की जोड़ी ने ऑरगेनिक खेती करने वाले किसानों को उत्पादों के खरीदारों के साथ जोड़ने के लिए मजबूत सप्लाई चेन नेटवर्क तैयार किया है। जीवनीय सोसायटी से कई चिकित्सक, उद्यमी व मानव संसाधन परामर्शदाता जुड़े हुए हैं। लखनऊ का पहला ऑरगेनिक सुपर स्टोर 'जीवनीय नेचुरल' आज ग्राहकों को ऑरगेनिक उत्पाद उपलब्ध करवाने वाला भरोसे का ब्रांड है। भविष्य में इस ऑरगेनिक स्टोर का विस्तार करने की योजनाओं पर काम चल रहा है।

दिल्ली, बंगलुरू और हैदराबाद तक सेल, ग्राहकों में कई बड़े नाम

जीवनीय नेचुरल में ऑरगेनिक दालें, अनाज, , मसाले, जड़ी- बूटी, तेल, स्क्वैश, स्नैक्स, बायो डिग्रेडेबल ऑरगेनिक सैनिटरी नैपकिन, क्रॉकरी और बांस-आधारित उत्पाद उपलब्ध हैं। दिल्ली, बंगलुरू और हैदराबाद में तक उत्पाद बेचे जाते हैं। जीवनीय नेचुरल के ग्राहकों में कई बड़े नाम शामिल हो चुके हैं।

जीवनीय नेचुरल प्राइवेट लिमिटेड बी -17, सेक्टर जी, अलीगंज, पुराणिया पेट्रोल पंप के पास, रविंद्र गार्डन के विपरीत, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
संपर्क : 91907 670 1565, 1708 082 5825 deepti@jeevaniyanaturals.com

दीप्ति का स्टार्टअप 'जीवनीय नेचुरल'

'जीवनीय नेचुरल' लखनऊ का पहला ऑरगेनिक स्टोर है। यह स्टोर अपने ग्राहकों के लिए ऑरगेनिक खाद्यान्न, सब्जियां, दलहन, खाद्य तेल, घी, मसाले, पर्सनल केयर का सामान, स्क्वैश, स्नैक्स और ऑरगेनिक कपड़े उपलब्ध करवाता है। इस ऑरगेनिक सुपरस्टोर में बायोडिग्रेडेबल ऑरगेनिक सैनिटरी नैपकिन, क्रॉकरी और बांस-आधारित उत्पादों को भी शामिल किया है। इस सुपर स्टोर के उत्पाद दिल्ली, बंगलुरू और हैदराबाद के स्टोर्स पर भी उपलब्ध हैं। यह दीप्ति मेहरोत्रा का स्टार्टअप है। दीप्ति ने एक साल पहले हैदराबाद में कॉर्पोरेट की जॉब को क्विट कर लखनऊ में 'जीवनी नेचुरल' की शुरूआत की और ऑरगेनिक खेती में जुटे किसानों के लिए मजबूत सप्लाई चेन नेटवर्क तैयार किया। दीप्ति का उद्यम ऑरगेनिक खेती करने वाले किसानों के नेटवर्क से उत्पादित वस्तुओं को सीधे खरीददारों तक पहुंचाता है। दीप्ति अब देश भर में ऑरगेनिक खेती करने वाले किसानों के लिए एक मजबूत सप्लाई चेन बनाने में जुटी हैं। 'जीवनीय नेचुरल' ऑरगेनिक उत्पादों के लिए खुद का एक ई कॉमर्स प्लेटफार्म भी बना रहा है तथा लखनऊ में ही दूसरा स्टोर खोलने की भी योजना है। 'जीवनीय नेचुरल' देश के विभिन्न शहरों में विभिन्न स्टोर्स पर अपने उत्पाद बेचने की योजना बना रहा है। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली से पीएचडी करने वाली सामाजिक वैज्ञानिक एवं पीएमपी प्रमाणित प्रबंधन विशेषज्ञ दीप्ति मेहरोत्रा का जन्म ऐसे घर में हुआ जहां आयुर्वेद, खेती व ग्रामीण विकास पर चर्चा मुख्य विषय होते थे। वैज्ञानिक पिता और प्रतिभाशाली मां ने बेटी को उड़ान के लिए असीम आकाश दिया। देश की सामाजिक स्थिति और सांस्कृतिक विरासत को समझने के लिए दीप्ति ने न केवल पूरे भारत में यात्राएं की, बल्कि अमेरिका, ब्रिटेन, चीन, डेनमार्क और स्वीडन में भी घूमीं। दीप्ति हैदराबाद में कॉरपोरेट सेक्टर में आकर्षक सैलरी पैकेज वाली बड़ी पोस्ट पर काम कर रहीं थीं, लेकिन पिछले साल उन्होंने जॉब छोड़ पिता की तीन दशक पहले स्थापित की गई 'जीवनीय सोसायटी' को संभालने का बीड़ा उठाया। 'जीवनीय नेचुरल' के नाम से लखनऊ का पहला ऑरगेनिक सुपर स्टोर शुरू कर दीप्ति ने अपने स्टार्टअप की शुरूआत की। दीप्ति एक प्रशिक्षित कथक नर्तकी , चित्रकार, लेखक व फोटोग्राफर हैं और ट्रैवलिंग उनकी हॉबी है।

पते की बात

प्रमुख सलाहकार
श्री संजीव भटनागर, (आईएएस)
श्री जतिंद्र शर्मा, (आईएसएफ)
डॉ. पदम कुमार (दिल्ली)
डॉ.वाई. के. शर्मा (हिमाचल)
डॉ के. के. शर्मा (हिमाचल)
डॉ. संजय कुमार (हिमाचल)
डॉ. सुंदर कुमार (हिमाचल)
डॉ. राखी (हिमाचल)
डॉ. डी. आर. नाग (हिमाचल)
डॉ. जे. पी. सिंह (पंजाब)
श्री गुरप्रीत सिंह (उत्तर प्रदेश)
डॉ. जी. एस. चीमा (पंजाब)
डॉ. नवीन जोशी (उत्तराखंड)
डॉ. आर. के. सूद (हिमाचल)
डॉ. गुरूपाल जरियाल (मध्य प्रदेश)
डॉ. रमन खन्ना (पंजाब)
डॉ.एन. एन. मैहरोत्रा (उत्तर प्रदेश)
श्री पंकज कुमार (उत्तराखंड)
श्री बी. एम. काण्डपाल (दिल्ली)
श्री कमलजीत सिंह (हरियाणा)
डॉ रविंद्र रैणा (उत्तर प्रदेश)
श्री जतिंद्र सौढी (हिमाचल)
श्री नरेश कुमार (पंजाब)
श्री राजेंद्र ठाकुर (हिमाचल)
डॉ. देवराज भारद्वाज (हिमाचल)
डॉ. गौरव (हिमाचल)
प्रो. कुतवंत राय (हिमाचल)
श्री शमीराज (हिमाचल)
श्री कलवंत भूरिया (हिमाचल)
डॉ. राज कुमार शर्मा (हिमाचल)
डॉ. विजय शर्मा (हिमाचल)
डॉ.ईश्वर सरदाना (पंजाब)

सम्पादक
डॉ. अरूण चंदन

सम्पादकीय टीम
श्री उज्जवल शर्मा
डॉ. प्रभाकर मिश्रा
डॉ अनुराग विजयवर्गीय
डॉ. विकास खजूरिया
श्री मदन पंवर
श्री राजीव ठाकुर
डॉ. ममता रानी
डॉ. सुनील पठानिया
डॉ. पंकज पालसरा
सुश्री स्वाति वालिया

हम ऑनलाईन उपलब्ध हैं
pdf **डाऊनलाड करें।**

लेखकों से आग्रह
यदि आप विषय से संबंधित कोई लेख/ अनुभव/जानकारी प्रकाशनार्थ भेजना चाहें तो निसंकोच भेजें। छपने योग्य होने पर अवश्य प्रकाशित किया जाएगा।
सम्पादक

हमसे संपर्क करें
क्षेत्रीय निदेशक / सम्पादक
ई- चरक
जड़ी- बूटी बाजार
क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र
राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड
आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान
जोगिंद्रनगर, मंडी, हिमाचल प्रदेश।
पिन : 175015
हेल्पलाईन : 8544734206
दूरभाष : 01908 222333
बैवसाइट : www.rcfcnorth.in
मेलः rcfcnorth@gmail.com

चिकित्सा का आधार बने औषधीय पौधे

संजीव भटनागर(आईएएस)
निदेशक आयुर्वेद
हिमाचल प्रदेश।
ayur-hp@nic.inm

अध्ययन बताते हैं कि इस ढांचे में महिलाओं की भूमिका उल्लेखनीय है। अति प्राचीनकाल से ही स्वास्थ्य रक्षा के लिए वनौषधियों का प्रयोग मनुष्य द्वारा किया जाता रहा है। नवीनतम अनुमानों के अनुसार नौ हजार औषधीय पौधों की उपयोगिता विभिन्न देशों, समुदायों में सिद्ध की जा चुकी है। हमारे देश में वनौषधियों का प्रयोग न केवल घरेलू स्तर पर महिलाओं द्वारा परिवार की स्वास्थ्य संबंधी देखभाल के लिए किया जाता है, बल्कि सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में वंशज परम्पराओं का निर्वहन करते हुए लाखों पारम्परिक चिकित्सकों द्वारा भी किया जा रहा है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार विकासशील देशों की अस्सी प्रतिशत से अधिक जनसंख्या प्राथमिक स्वास्थ्य के लिए पारम्परिक पद्धतियों विशेष कर वनौषधियों पर निर्भर है अथवा विश्वास करती है। एलोपैथिक दवाईयों के निर्माण में भी 25 प्रतिशत वनौषधियों से निकाले हुए पदार्थों का प्रयोग किया जाता है। स्वास्थ्य सेवाओं के मामले में यूएनडीपी की ह्युमन इंडेक्स रिपोर्ट के आंकड़े भी विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुमानों की पुष्टि करते हैं कि भारत की जनता ज्यादातर वनौषधियों पर आधारित चिकित्सा व्यवस्था से लाभ ले रही है। भारत की राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्रणाली में भारतीय चिकित्सा पद्धतियों आयुर्वेद, सिद्धा, यूनानी, योग, प्राकृतिक चिकित्सा इत्यादि का विशेष योगदान है। प्राकृतिक, सुरक्षित, दोष रहित, सस्ती व निम्न आय वर्ग के लोगों के इलाज के लिए दुनिया भर में औषधियों पौधों पर आधारित चिकित्सा पद्धतियों की मांग बढ़ रही है। पारम्परिक तौर पर औषधीय पौधे ग्रामीण लोगों की सांस्कृतिक, अध्यात्मिक व सामाजिक प्रक्रिया का हिस्सा होने के साथ स्वास्थ्य रक्षा का बड़ा हथियार है। वनौषधियों का एकत्रण व भंडारण बड़े रोजगार का हिस्सा है।

अध्ययन बताते हैं कि इस ढांचे में महिलाओं की भूमिका उल्लेखनीय है। अति प्राचीन काल से ही स्वास्थ्य रक्षा के लिए वनौषधियों का प्रयोग मनुष्य द्वारा किया जाता रहा है। नवीनतम अनुमानों के अनुसार नौ हजार औषधीय पौधों की उपयोगिता विभिन्न देशों, समुदायों में सिद्ध की जा चुकी है। हमारे देश में वनौषधियों का प्रयोग न केवल घरेलू स्तर पर महिलाओं द्वारा परिवार की स्वास्थ्य संबंधी देखभाल के लिए किया जाता है, बल्कि सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में वंशज परम्पराओं का निर्वहन करते हुए लाखों पारम्परिक चिकित्सकों द्वारा भी किया जा रहा है। हालांकि वनौषधियों पर आधारित चिकित्सा की पारम्परिक विधियां विकसित राष्ट्रों में लोकप्रियता हासिल कर रही हैं, लेकिन अपने देश में इनकी चाल धीमी है। हॉवर्ड विश्वविद्यालय के एक सर्वे के आधार पर कहा गया है कि अमेरिका में प्रत्येक तीसरे नागरिक ने अपने जीवन में कभी न कभी वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति का प्रयोग किया है। एक अन्य सर्वेक्षण के अनुसार साठ प्रतिशत से ज्यादा अमेरिकी चिकित्सकों ने कभी न कभी अपने रोगियों को पारम्परिक चिकित्सा पद्धति के चिकित्सकों के पास भेजा है। प्रख्यात पत्रिका लैसेंट में भी एक सर्वेक्षण छप चुका है, जिसके अनुसार आस्ट्रेलिया में चालीस प्रतिशत लोगों में इन पद्धतियों की ओर दिन- प्रतिदिन रुझान बढ़ने के कारण वहां की सरकार नीतिगत निर्णय लेकर इसके लिए धन उपलब्ध करवा रही है। विकसित राष्ट्रों में महिलाओं की सजगता के कारण इनके अनुसंधान एवं विकास का क्रम तेज गति से चल रहा है। महंगी सिंथेटिक दवाईओं की तुलना में ग्रीन मैडिसिनज ज्यादा सुरक्षित और प्रभावकारी होती हैं, इस धारणा के कारण वनौषधियों पर आधारित दवाईयों की मांग बढ़ रही है। दुष्प्रभाव न के बराबर होने के कारण इन औषधियों के निर्माण के लिए विभिन्न प्रकार की वनौषधियों की मांग बढ़ रही है। परिणामस्वरूप वनौषधियों का अंधाधुंध अवैज्ञानिक दोहन सम्पूर्ण सीमाएं लांघ गया है। कई कलियां फूल बनने से पहले उखाड़ दीं जाती हैं और कई पौधे दवाई बनने से पहले व्यापारी के स्टोर में आ जाते हैं। लुप्त एवं लुप्तप्राय होने वाले पौधों की सूची प्रतिदिन लंबी होती जा रही है। वनाौषधियों का अंतरराष्ट्रीय बाजार तेजी से बढ़ रहा है। देश में हर्बल उत्पादों तथा दवाईयों का निर्यात भी तेजी से बढ़ रहा है।

पूर्व में अरूणाचल प्रदेश तक फैला हिमालय का व्यापक क्षेत्र अत्यंत बहुमूल्य प्राकृतिक संपदाओं से सम्पन्न क्षेत्र है। अपनी सुंदरता, भव्यता व अदभुत परिस्थितिकी दृष्टि से अद्वितीय इस क्षेत्र में प्राकृतिक संसाधनों का भंड़ार है, जिससे इस क्षेत्र के लोग व इससे बाहर रहने वाले लोग निर्भर करते हैं। यहां वनौषधियों की नौ हजार प्रजातियां पाई जाती हैं। लगभग 79 प्रतिशत वनौषधियां पूर्वी- पश्चिमी घाटों, विध्यांचल पर्वत श्रृंखलाओं, छोटा नागपुर, अरावली और हिमालय में पाई जाती हैं। तीन प्रतिशत औषधीय पौधे बर्फ से ढकी रहने वाली हिमालय की ऊंची श्रृंखलाओं में पाए जाते हैं। अवैज्ञानिक दोहन, असमय और अत्याधिक दोहन के कारण बहुत से पौधे जंगलों में प्राकृतिक अवस्था में लुप्तप्राय हो चुके हैं अथवा लुप्त होने की कतार में हैं। देश के पारम्परिक चिकित्सक साढ़े चार हजार से पांच हजार वनौषधियों का प्रयोग करते हैं। हालांकि यह ज्ञान का भंडार धीरे- धीरे लुप्त हो रहा है। जंगलों में से वनौषधियों का एकत्रण करने के बजाये इसकी खेती कर दवाईयों के लिए उपलब्ध करवाया जाना समय की मांग है।

हमारे देश के बहुत से किसानों ने पारम्परिक खेती से हट कर जड़ी- बूटियों की खेती करने की ओर रुख किया है। दवा उत्पादक कंपनियां भी अपनी मांग के अनुसार खेती करवा रही हैं। ऐसी औषधियों की पौध उपलब्ध करवाने के लिए आयुष मंत्रालय के अधीन आते नेशनल मेडिसनल प्लांट बोर्ड ने अनूठी पहल की है। बोर्ड की ओर से एक तरफ जहां किसानों को प्लांटिंग मैटीरियल उपलब्ध करवाने की व्यवस्था की जा रही है, वहीं दूसरी ओर उत्पादित जड़ी- बूटियों को बेचने के लिए बाजार भी तलाश किया जा रहा है। आयुष मिशन इन औषधीय पौधों की प्रोसेसिंग और तकनीकी ज्ञान प्रदान करने की दिशा में भी अहम भूमिका अदा कर रहा है। एक तरफ जहां विलुप्त होती औषधियों के संरक्षण पर जोर दिया जा रहा है, वहीं बौद्धिक संपदा अधिकारों की रक्षा के लिए गंभीर प्रयास किए जा रहे हैं। चिकित्सा की स्थानीय परम्पराओं के वैज्ञानिक अन्वेषण पर भी तेजी से काम हो रहा है। औषधीय पौधों की खेती के लिए भारत सरकार के गंभीर प्रयासों से इस दिशा में भारत दुनिया का लीडर बनने की ओर अग्रसर है।

जड़ी- बूटियों का सही मोल देती एमिल

के. के. शर्मा
प्रबंध निदेशक, एमिल
फार्मास्युटिकल्स (इंडिया) लिमिटेड
corporate@aimilpharma-ceuticals.com

एमिल को वर्ष 1998 में प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने आयुर्वेद में उत्कृष्ट उद्यमिता व उत्कृष्ट गुणवत्ता के लिए दो राष्ट्रीय पुरस्कारों व वर्ष 2000 में वित्त मंत्री जसवंत सिंह ने अनुसंधान के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया।

एमिल फार्मास्युटिकल्स (इंडिया) लिमिटेड स्वदेशी दवाओं के माध्यम से समाज को हेल्दी रखने के मिशन पर जुटी है। कंपनी ने आयुर्वेदिक शास्त्रीय पाठ्य पुस्तकों से जड़ी-बूटियों के बारे में सीखने, आयुर्वेदिक चिकित्सकों (वैद्य) से परामर्श कर जड़ी- बटियों पर आधारित उच्च गुणवत्ता वाली किफायती चिकित्सा के विकास के लिए उस दौर में निवेश किया, जब क्षेत्र में कोई निवेशक जोखिम लेने को तैयार नहीं था। एमिल फार्मास्युटिकल्स (इंडिया) लिमिटेड की स्थापना 30 नवंबर 1984 को हुई। आयुर्वेद दवा निर्माण के क्षेत्र में भारत की अग्रणी एमिल ने कच्चे माल की खरीद व उत्पादों की बिकी के लिए विपणन कौशल विकसित किया है। हमने महसूस किया कि अगर इन दवाओं को वैज्ञानिक रूप से समर्थित किया गया तो पूरी दुनिया में विशेषज्ञ आसानी से आयुर्वेदिक दवाओं को स्वीकार करेंगे। हमने व्यापक अनुसंधान के जरिये आयुर्वेद के पारंपरिक मूल्यवान विज्ञान को पुरानी बीमारियों के इलाज में कारगर बनाने के लिए फॉर्मूलेशन की एक विस्तृत श्रृंखला तैयार की। एमिल ने वर्ष 2006 में नालागढ़ में उन्नत प्रौद्योगिकी के साथ एक विशाल विनिर्माण सुविधा की स्थापना की। एमिल भारत की तकनीकी रूप से उन्नत विनिर्माण शीर्ष इकाइयों में से एक है, जो स्वचालित प्रणाली से लैस है। एमिल को वर्ष 1998 में तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने आयुर्वेद के क्षेत्र में उत्कृष्ट उद्यमिता और उत्कृष्ट गुणवत्ता के लिए दो राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया। वर्ष 2000 में वित्तमंत्री जसवंत सिंह ने अनुसंधान और विकास में प्रयासों के लिए कंपनी को राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया। एमिल विनिर्माण और विपणन के लिए प्रतिष्ठित रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) व वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) जैसी सरकारी संस्थाओं के साथ मिल कर काम कर रही है। सलाना तीन सौ करोड़ का कारोबार कर रही है एमिल के प्रबंधन ने आने वाले दशक में एक हजार करोड़ के कारोबार का लक्ष्य निर्धारित किया है। कंपनी ने हमेशा जड़ी बूटियों के उत्पादकों को उनके उत्पाद का जायज मूल्य प्रदान किया है। औषधीय पौधों की खेती के लिए किसानों को प्रोत्साहित करने व किसानों के उत्पाद को खरीदने के लिए हम हमेशा तैयार हैं। आप भी अगर औषधीय पौधों की खेती करते हैं तो कंपनी खरीद के लिए आपसे करार करने को तैयार है। आप हमसे ऑनलाईन अथवा ऑफलाईन संपर्क कर सकते हैं। आओ मिल कर आयुर्वेद को गति प्रदान करें।

विशेषांक

ई- चरक जड़ी बूटी बाजार का अगामी अंक हिमाचल प्रदेश में औषधीय कृषिकरण से संबंधित गतिविधियों पर आधारित होगा।
आप सुझाव देते रहें।
दूरभाष : 01908 222333
बैवसाइट : www.rcfcnorth.in
मेलः rcfcnorth@gmail.com
arunchandan@gmail.com

पत्रिका प्राप्त करने के लिए संपर्क

किसान समूहों, स्वयं सहायता समूहों व किसान कंपनियों के लिए **ई- चरक जड़ी बूटी बाजार** की एक से ज्यादा प्रतियां प्राप्त करना चाहते हैं तो संपर्क कर सकते हैं।
दूरभाष : 01908 222333
बैवसाइट : www.rcfcnorth.in
मेलः rcfcnorth@gmail.com

बड़े काम की हैं सर्पगंधा की जड़ें

सर्पगंधा का उपयोगी भाग जडें ही हैं। जड़ों में बहुत से एल्कलाइड्स पाए जाते हैं। 18 माह में सर्पगंधा की खेती तैयार होती है और एक एकड़ से सर्पगंधा की 7-9 क्विंटल सूखी जड़ें प्राप्त होती हैं।

अपने खेतों में उगाएं बेशकीमती सर्पगंधा, 18 माह में ही चमक उठेगा आपका धंधा

सर्पगंधा एक अत्यंत उपयोगी पौधा है। यह 75 सेंटीमीटर से 1 मीटर ऊंचाई तक बढ़ता है। इसकी जडें 0.5 से 2.5 सेंटीमीटर व्यास तक होती हैं तथा 40 से 60 सेंटीमीटर गहराई तक जमीन में जाती हैं। इस पर अप्रैल से नवंबर तक लाल सफेद फूल गुच्छों में लगते हैं। सर्पगंधा की जड़ों में बहुत से एल्कलाइड्स पाए जाते है, जिनका प्रयोग रक्तचाप, अनिद्रा, उन्माद, हिस्टीरिया आदि रोगों के उपचार में होता है। इसका उपयोगी भाग जडें ही हैं। सर्पगंधा 18 माह की फसल है। इसे बलुई दोमट से लेकर काली मिट्टी में उगाया जा सकता है।

खेत की तैयारी: सर्पगंधा की जड़ों की अच्छी वृद्धि के लिए मई माह में खेत की गहरी जुताई करें तथा खेत को कुछ समय के लिए खाली छोड़ दें। पहली वर्षा के बाद खेत की जुताई करें। खेत एकसार करने के बाद उचित नाप की क्यारियां तथा पानी देने के लिए नालियां बना दें। सर्पगंधा को बीजों अथवा जड़, स्टम्प या तने की कटिंग द्वारा उगाया जाता है।

कृषि -

(क) बीज से : अच्छे जीवित बीजों को छिटक कर बोया जा सकता है। अच्छे बीजों के चुनाव के लिए उन्हें पानी में भिगो कर भारी बीज तथा हल्के बीजों को अलग कर लें। भारी बीजों को बोने के लिए 24 घंटे बाद प्रयोग करें। सर्पगंधा के 30 से 40 प्रतिशत बीज ही उगते हैं, इसलिए एक हेक्टेयर में करीब 6-8 किलो बीज की आवश्यकता होती है। पहले नर्सरी बनाकर पौध तैयार करना चाहिए। इसके लिए पहले 10 गुणा 10 मीटर की क्यारियों में छायादार स्थान पर पौध तैयार करें। बीजों को 2 से 3 सेंटीमीटर जमीन के नीचे लगाकर पानी लगाते हैं। 40 दिन के अंदर बीज उपजना शुरू हो जाते हैं।

(ख)जड़ों से : लगभग 5 सेंटीमीटर जड़ कटिंग को फार्म में खाद मिट्टी व रेत मिलाकर बनाई गई क्यारियों में बसंत ऋतु में लगाया जाता है। इसे उचित मात्रा में पानी लगा कर नम रखा जाता है। इनको 45-30 सेंटीमीटर दूरी पर रोपित किया जाता है। एक हेक्टेयर के लिए लगभग 100 किलोग्राम जड़ कटिंग की आवश्यकता होती है।

गुणकारी सर्पगंधा

अनिद्रा रोग दूर करने में : सर्पगंधा में हिप्नोटिक गुण होते हैं, जो कि नींद दिलाने में लाभकारी होते हैं। इसकी जड़ों का पाउडर बनाकर इस्तेमाल किया जाता है। सोने से पहले सर्पगंधा के पाउडर को अजवाइन के साथ मिलाकर इसमें थोड़ा सा मिश्री पाउडर मिला कर पानी के साथ इसका सेवन करने से अच्छे से नींद आती है।

हाइपर टेंशन कम करने में : सर्पगंधा ब्लड प्रेशर को कम करने के लिए उपयोगी होता है। यह न्यूरोट्रांसमीटर होता है, जो नर्वस सिस्टम व नर्व सेल्स को रिलेक्स करके बढ़ा हुआ ब्लड प्रेशर कम करने के लिए उपयोगी होता है।

मेंटल डिसऑर्डर ठीक करने में : सर्पगंधा में हाइपोटिक और एंटीसाइकोटिक और एंटी-एंग्जायटी गुण होते है। यह बहुत सारे मेंटल डिसऑर्डर जैसे रोना, नींद न आना, बेहद ज्यादा गुस्सा आदि जैसी समस्या को कम करते हैं।

बुखार को कम करने में : तेज बुखार को कम करने के लिए भी सर्पगंधा फायदेमंद होता है। पीरियड्स के दौरान होने वाले दर्द को कम करने में सर्पगंधा का इस्तेमाल किया जाता है। सर्पगंधा का पौधा सांप के जहर के दुष्प्रभाव को कम करता है।

(ग)कटिंग से : तना कटिंग 15 से 22 सेंटीमीटर को जून माह में नर्सरी में लगाते हैं। जब जड़ें व पत्तियां निकल आएं तथा उनमें अच्छी वृद्धि होने लगे, तो कटिंग को निकालकर खेतों में लगाया जा सकता है।

खाद तथा सिंचाई : करीब 25 टन कम्पोस्ट खाद प्रति हेक्टेयर से अच्छी उपज प्राप्त होती है। वर्षा में कम पानी, गर्मियों में 30 दिन के अंतर से पानी लगाना चाहिए।

फसल प्रबंधन : सर्पगंधा की फसल 18 महीने में तैयार हो जाती है। जड़ों को सावधानी से खोदकर निकाला जाता है। बड़ी व मोटी जड़ों को अलग तथा पतली जड़ों को अलग करें। फिर 12 से 15 सेंटीमीटर के टुकड़े काटकर सुखा दें। जड़ों को पॉलिथीन की थैलियों में सुरक्षित रखा जाता है।

सर्पगंधा की बढ़ती मांग : एक एकड़ से सर्पगंधा की 7-9 क्विंटल सूखी जड़ें प्राप्त होती हैं। सर्पगंधा की जड़ों को उखाड़ने में विशेष सावधानियां बरतने की जरूरत होती है, क्योंकि इसकी जड़ों की छाल में सर्वाधिक एल्केलाइड्स की मात्रा होती है तथा जड़ों का 40 से 55 प्रतिशत भाग इस छाल का ही होता है। सूखी जड़ों की कीमत वर्तमान में औसतन 150 रूपए किलोग्राम चल रही है, लेकिन आयुर्वेद उद्योग में बढ़ती सर्पगंधा की जड़ों की मांग आपूर्ति के चलते इसकी जड़ों की कीमतों में उछाल की संभावनाए हैं। चूंकि यह पौधा जंगलों से तेजी से विलुप्त हो रहा है। नेशनल मेडिसिनल प्लांट बोर्ड की ओर से इस पौधे के कृषिकरण पर बल दिया जा रहा है।

- डॉ. सौरभ शर्मा, उपनिदेशक आरसीएफसी

यहां बेच सकते हैं अपना उत्पाद

डाबर इंडिया लिमिटेड
8/3, आसफअली रोड, नई दिल्ली-110002
फोन नं- 0120- 3962100

एके जैन (आर्यन इंटरनेशनल)
डी- 184 फ्रीडम फाइटर इंक्लेव, नबी सराय, नई दिल्ली
फोन नंबर- 011-26659020

रसिक लाल हिमानी एजेंसीज प्राइवेट लिमिटेड
508, खारी बावली, दिल्ली- 110006
फोन नं-011-23273875, 23273926

साई ट्रेडिंग कंपनी (गौरव गुप्ता)
1/2249, 3 लेर-2 स्ट्रीट नंबर- 12 निकट शांति आप्टिकल्स, सुभाष रोड, रामनगर-शाहदरा दिल्ली 110032
मो- 8447518302, 9891067409, 9891340865

गुलाब सिंह जौहरी माल (मुकुल गुप्ता)
302, दरीबा कलां, चांदनी चौक, नई दिल्ली
फोन- 011- 23263743, 23271345

रसिक लाल हिमानी एजेंसीज प्राइवेट लिमिटेड
प्रथम तल, सब हाउस 3/8 आसफ अली रोड नई दिल्ली
फोन- 011-23273875, 9971113565

विराट एक्सपोर्टर्स
23/3, ईस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली-110008
फोन-011-2576182

गुलाब एंड कंपनी, मातादीन रोड सआदतगंज, लखनऊ
फोन- 0522- 2649101, 2649102 मो. 9415108206

आशा ग्रामोद्योग संस्थान
647 बी/सी,144/ 1 (पी-18) जानकीपुरम गार्डेन, नियर नावेल सीटी एकेडमी, लखनऊ- 226021

महावीर ट्रेडिंग कंपनी
पासरत्ता गली, सआदतगंज, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

पुण्य ट्रेडिंग कंपनी
सआदतगंज, लखनऊ, मोबाइल नंबर- 9450009431

सक्सेस स्टोरी

कांगड़ा के कर्नल पीसी राणा तीन सौ किसानों को जोड़ कर रहे जैविक हल्दी की पैदावार

हल्दी की खेती ने कर्नल को फल दिया जल्दी

कांगड़ा से प्रदीप कुमार

सेना के एक रिटायर्ड कर्नल ने अपने मजबूत इरादों से जैविक विधि से हल्दी की खेती कर कामयाबी का नया मुहावरा गढ़ा है। वे अपनी 80 कनाल जमीन पर जैविक विधि से हल्दी की खेती कर रहे हैं। हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिला के सोहरन गांव के रिटायर्ड कर्नल पीसी राणा ने खेती- बाड़ी से जुड़ने का जोखिम उठाया और चार साल की कड़ी मेहनत से हल्दी की खेती करने में इतिहास रच दिया। कर्नल राणा ने आंध्र प्रदेश के प्रगतिशील किसान चंद्रशेखर से मिलकर हल्दी की खेती की पूरी जानकारी हासिल की ओर चंद्रशेखर को ऑर्गेनिक बीज तैयार करने का प्रोजेक्ट दिया। शुद्ध आर्गेनिक बीज को तैयार करने में 2 साल का समय लगा। 15 क्विंटल ऑर्गेनिक बीज लेकर अपनी जमीन में हल्दी की खेती की शुरुआत की। वे 2 सालों में तकरीबन 300 किसानों को अपने साथ जोड़कर हल्दी की खेती को बढ़ावा दे रहे हैं। वह खुद तकरीबन 80 कनाल भूमि में हल्दी की खेती कर रहे हैं।

अहमदाबाद में बेची लाखों की हल्दी

कर्नल राणा ने पिछले वर्ष तकरीबन 1 टन हल्दी के बीज की बिजाई की थी, जिससे 7 महीने में 24 टन हल्दी की पैदावार हुई है, जिस की कीमत 24 लाख रुपए है। हल्दी को कर्नल पीसी शर्मा ने अहमदाबाद मार्केट में बेचा जहां इसका दाम 450 रुपये प्रतिकिलो के हिसाब से मिला है। कर्नल का कहना है कि अगर प्रदेश में हल्दी की मार्केट तैयार हो जाती है तो किसानों के लिए यह आय का साधन बन सकती है। वह हल्दी से तेल निकालने के लिए इसकी एक किस्म मेघा वन खेतों में लगाई है। इस बार इसका बीज तैयार किया जा रहा है।

सात महीनों में हुई फसल तैयार

कर्नल राणा कहते हैं कि इस बीज की खासियत यह है कि इसमें कुकुमिन तेल की मात्रा लैब परीक्षण में 5.2 प्रतिशत आंकी गई है, जो कि इसकी उच्च गुणवत्ता को दर्शाती है। सामान्य हल्दी की फसल में 2 से 3 वर्ष का समय लगता है, वहीं हल्दी का यह बीज 7 महीने यानी 210 दिन में तैयार हो जाता है और बीस से तीस गुणा ज्यादा फसल देता है।

कई जिलों के किसानों साथ काम

कर्नल राणा की तैयार हल्दी को लैब परीक्षण कर ग्लोबल सर्टिफिकेशन सोसाइटी ने आर्गेनिक हल्दी का प्रमाण पत्र दिया है। कांगड़ा, हमीरपुर, बिलासपुर, मंडी व ऊना के किसान उनके साथ हल्दी की खेती कर रहे हैं। किसी जानकारी के लिए कर्नल राणा से मोबाइल 98170 23888 पर संपर्क कर सकते हैं।

हल्दी उगाने का कारण

कर्नल राणा कहते हैं। नौजवान खेती से जुड़ना नहीं चाहता। जो थोड़े से जुड़े हैं वे भी खेती छोड़ रहे हैं, क्योंकि ज्यादातर खेती वर्षा पर आधारित है। बन्दरों, जंगली जानवरों और आवारा पशुओं का आतंक है। ऐसे में उन्होंने हल्दी से की खेती के लिए किसानों को तैयार किया।

पांगी के 75 स्वयं सहायता समूहों की 1100 महिलाएं व 5 किसान उत्पादक संगठनों के 4000 किसान 'सेवा' संस्था से जुड़ कर विकास की नई इबारत लिख रहे हैं। घाटी के 52 उत्पाद 'पांगी हिल्स रूरल मार्ट' में बिक्री के लिए उपलब्ध हैं।

जन जातीय पांगी घाटी के कृषि उत्पादों के लिए 'सेवा' की पहल से चंबा में खुला 'पांगी हिल्स रूरल मार्ट'

विदेशों तक पहुंचा दिए जंगली उत्पाद, महिलाओं ने रखी कारोबार की बुनियाद

पांगी से अरविंद शर्मा

भारत के सबसे पिछड़े जिलों में शुमार होने वाले हिमाचल प्रदेश के चंबा जिला की कबायली घाटी पांगी की हजारों महिलाएं विकास की नई इबारत लिख रहीं हैं। इन महिलाओं ने पांगी के जंगली उत्पादों को विदेशों तक पहुंचाकर मजबूत आर्थिकी की बुनियाद डाल दी है। उत्पादन, कलेक्शन, ग्रेडिंग, पैकेजिंग और सेल्ज सब जिम्मेदारियां यहां की महिलाएं खुद निभा कर सफल उद्यमी के तौर पर खुद को स्थापित कर रहीं हैं। अब घाटी में परम्परागत खेती और मजदूरी की जगह सामाजिक उद्यमशीलता का अनूठा उदाहरण देखा जा सकता है। इस पहल में अब घाटी के सीमांत किसान भी शामिल हो चुके हैं। वाइल्ड कलेक्शन, जैविक कृषि, बागवानी, औषधीय पौधों का कृषिकरण और केसर की खेती के प्रयोग हो रहे हैं। पांच साल पहले तक जन जातीय पांगी घाटी की महिलाओं व सीमांत किसानों के पास आजीविका का कोई स्त्रोत नहीं था। आर्थिक जरूरतों के लिए परंपरागत खेती व मजदूरी ही विकल्प थे। यहां के लोगों के जीवन में आए सामाजिक- आथिक बदलाव देखिए कि इस घाटी में अब न केवल सेब के बगीचे लगाए जा रहे हैं, बल्कि बहुमूल्य केसर सहित कई जड़ी-बूटियों की खेती की पहल हुई है। यह सब संभव हुआ है गैर सरकारी संगठन 'सेवा' के प्रयासों से। 'सेवा' यहां के सामाजिक- आर्थिक बदलाव में अहम भूमिका अदा कर रही हैं। घाटी के 75 स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी 1100 महिलाएं और 5 किसान उत्पादक संगठनों के 4000 किसान संगठन 'सेवा' के साथ जुड़ कर अब तक पिछड़ी रही इस घाटी में विकास की नई इबारत लिख रहे हैं। 'सेवा' ने यहां की महिलाओं को संगठित किया, उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में कौशल विकास का प्रशिक्षण दिया। सीमांत किसानों को जैविक खेती व जड़ी- बूटियों के कृषिकरण के लिए प्रशिक्षित किया। कौशल मे निपुण होकर यहां की महिलाएं हथकरघा एवं खड्डी पर शाल, टोपी, जुराबें, पैरी आदि बना रही है। हस्तशिल्प, हथकरघा व बुनाई तथा जैविक कृषि उत्पादों की ग्रेडिंग व पैकेजिंग कर वस्तुओं का मूल्य संवर्धन किया जा रहा है। किसान पारम्परिक खेती की जगह जैविक खेती करने लगे हैं। पांगी के उत्पादों को बाजार तक पहुंचाने की व्यवस्था के लिए चंबा के उदयपुर में 'पांगी हिल्स रूरल मार्ट' खोला गया है और ऑनलाइन पोर्टल की शुरूआत हुई है। अपनी गुणवता के चलते यहां के जंगली उत्पादों व हस्तशिल्प की देश- विदेश में भारी मांग है। साल दर साल रूरल मार्ट का टर्नओवर बढ़ता जा रहा है। पांगी में महिलाओं को कारोबार की ओर प्रेरित करने के सफल प्रयोग के बाद अब 'सेवा' संस्था चंबा के तीसा, मैहला, भरमौर विकास खंडों में भी महिला सशक्तिकरण में जुटी हुई है।

बदला सोचने का नजरिया, महिलाओं ने खुद संभाल ली कारोबार की कमान

सेवा संस्था के संस्थापक डॉ. हरेश बताते हैं कि 'सेवा' के गठन के पीछे यहीं उद्देश्य है कि जैव विविधता और लोक संस्कृति में समृद्ध पांगी के लोगों के सामाजिक- आर्थिक जीवन को बदल कर उनके जीवन स्तर में सुधार लाया जाए। पांगी घाटी के लोगों को आर्थिक तौर से मजबूत करने के लिए उन्हें संगठित और शिक्षित करना जरूरी था। पहले चरण में यही किया गया। प्रशिक्षण शिविर व कार्यशालाएं आयोजित की गईं, जिनमें विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों से संवाद की व्यवस्था की गई। फिर घाटी में पैदा होने वाले उन उत्पादों पर काम किया गया, जिस की गुणवता के चलते बाजार में अच्छी मांग है। वाइल्ड कलेक्शन, ग्रेडिंग और पैकेजिंग के लिए व्यवस्था की गई। वे कहते हैं नाबार्ड और स्थानीय प्रशासन ने सहयोग किया। पांच सालों के सफर में यहां के उत्पादों को बाजार तक पहुंचाने के लिए चंबा के उदयपुर में 'पांगी हिल्स रूरल मार्ट' खोला गया और बिक्री के लिए ऑनलाइन व्यवस्था की गई। वे कहते हैं कि जागरूकता ने घाटी के लोगों के सोचने के नजरिये को बदल डाला और नए आइडिया की नींव पड़ी।

पांगी के बेटे से समझा अपनो का दर्द, बदला जीवन

पांगी से संबंध रखने वाले डॉ. हरेश शर्मा ने पंजाबी युनिवर्सिटी पटियाला से सोशल वर्क में पीएचडी यही सोच कर की थी कि वह अपने क्षेत्र के लोगों के जीवन स्तर को बदल सकें। वर्ष 2012 में उन्होंने पांगी की महिलाओं व सीमांत किसानों के सशक्तिकरण के लिए 'सेवा' संस्था की शुरूआत की। इसी के साथ स्वयं सहायता समूहों और किसान उत्पादक संघों के गठन की पहल हुई। महिलाओं व सीमांत किसानों को कौशल विकास का प्रशिक्षण दिया गया। उन्हें बैंक और बाजार से जोड़ा गया। उन्हें कांगड़ा के विकास राणा का सहयोग मिला। एनिमेशन व कम्प्यूटर एक्सपर्ट विकास राणा ने पांगी की जैविक विविधता व जनजीवन को लेकर कई डॉक्यूमेंट्रीज बनाईं, यहां के उत्पादों की ब्रांडिंग और पैकेजिंग मैटीरियल पर काम किया। उत्पादों को देश- विदेश तक पहुंचाने के लिए वेबसाइट तैयार की। उन्होंने 'पांगी हिल्स रूरल मार्ट' की डिजायनिंग में सहयोग किया।

काम को मिला सम्मान

सेवा संस्था की ओर से पांगी घाटी में महिला सशक्तिकरण के प्रयासों की जम कर सराहना हो रही है। संस्था के प्रयासों का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि पांगी किसान उत्पादक सोसायटी को इस साल प्रदेश के सर्वश्रेष्ठ किसान उत्पादक संघ को खिताब मिला है। यहां के उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलवाने के लिए 'सेवा' के संस्थापक डॉ. हरेश शर्मा का चयन इस साल के राष्ट्रीय ग्रीन एंबेसडर पुरस्कार के लिए हुआ है। प्रदेश सरकार की ओर से भी पांगी में सामाजिक- आर्थिक बदवाल के लिए 'सेवा' संस्था प्रयासों को सराहा गया है। डॉ. हरेश कहते हैं कि 'सेवा' अब चंबा जिला में महिला सशक्तिकरण की दिशा में काम कर रही है, ताकि चंबा की आर्थिकी मजबूत हो।

पांगी हिल्स रूरल मार्ट में 52 प्रोडक्ट्स

चंबा जिला के जन जातीय लोगों के उत्थान के लिए प्रयासरत 'सेवा' संस्था ने चंबा के उदयपुर में पांगी हिल्स के नाम से रूरल मार्ट की स्थापना की है। इस रुरल मार्ट का मुख्य उद्देश्य घाटी के लोगों खासकर महिलाओं व सीमांत किसानों को सक्षम और सशक्त बनाना है। पांगी हिल्स रूरल मार्ट के रख रखाव एवं संचालन में सेवा लक्ष्मी स्वयं सहायता समूह फिनडरू की महिलाएं अहम भूमिका निभा रही हैं। पांगी हिल्स रूरल मार्ट घाटी मे पैदा होने वाले उत्तम गुणवत्ता के जैविक उत्पादों व हस्तशिल्प के लिए एक मंच प्रदान कर रहा है। रुरल मार्ट की सहायता से जन जातीय महिलाएं व किसान अपनी आय मे बढ़ोतरी कर कर अपने जीवन स्तर को बेहतर बना रहे हैं। घाटी के किसान उत्पादक संघ भी पांगी हिल्स के साथ जोड़े गए हैं। अब किसानों को उनके उत्पादों के लिए बेहतर बाज़ार व ग्राहक मिल रहे हैं। यहां जैविक उत्पाद, हस्तशिल्प व बहुमूल्य वनोषधियों के उत्पाद उपलब्ध हैं। यहां शहद, हेजलनट, अखरोट, राजमाह, माह, मक्की, शिलाजीत, केसर, हर्बल चाय, रतनजोत तेल, हवन सामग्री और हस्तशिल्प से निर्मित शाल, टोपी व पैरी सहित 52 उत्पादों की बिक्री होती है। भविष्य में यहां और उत्पाद शामिल करने की योजना है। पांगी हिल्स रूरल मार्ट के उत्पाद ऑनलाइन भी उपलब्ध हैं। दुनिया भर में यहां के उत्पादों की भारी डिमांड है। उत्पादों का एकत्रिकरण, ग्रेडिंग और पैकेजिंग सब महिलाएं करती हैं। अपनी गुणवत्ता को लेकर यहां के उत्पाद अपनी खास पहचान बना रहे हैं। महिलाओं द्वारा संचालित किए जा रहे अपनी तरह के इस रूरल मार्ट का वार्षिक टर्नओवर 23 से 25 लाख रुपए तक पहुंच गया है। आने वाले सालों में इसके बढ़ने की असीम संभावनाएं है। डॉ. हरेश शर्मा कहते हैं कि 'सेवा' संस्था पांगी हिल्स रूरल मार्ट में प्रोडक्ट्स रेंज बढ़ाने और चंबा के शिल्पकारों के उत्पादों को भी मंच देने की योजना के ऊपर काम कर रही है।

प्रोडक्ट्स रेंज

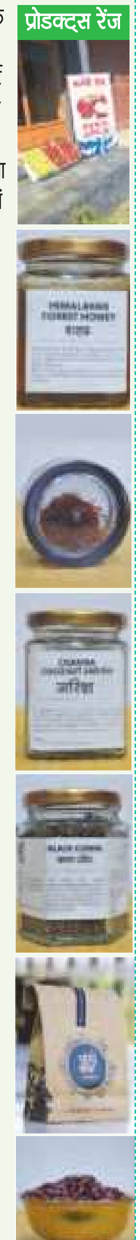

30 सहकारी सभाओं से जुड़े 507 किसान कर रहे एलोविरा की खेती। हमीरपुर में स्थापित हर्बल यूनिट में एलोविरा के चार उत्पाद हर्बल शैम्पू, हर्बल हेंड वाश, एलोविरा जैल और एलोविरा जूस का हो रहा उत्पादन।

सहकारिता में औषधीय कृषिकरण का अनूठा मॉडल, हमीरपुर में 30 सहकारी सभाएं मिल कर रहीं हैं खेती

सिंचाई के लिए नहीं पानी, पांच सौ किसानों ने एलोविरा उगाकर लिख दी नई कहानी

शीतल चंदेल, तकनीकी अधिकारी

औषधीय पौधों की खेती के लिए सहकारिता का अनूठा मॉडल हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर जिला के बमसन ब्लॉक में देखा जा सकता है। यहां तीस सहकारी सभाएं मिल कर एलोविरा की खेती कर रही हैं। इन सभाओं के सदस्यों ने मिलकर हमीर जिला हर्बल संघ का गठन किया है, जो इन सभाओं को खेती के लिए जरूरी प्लांटिग मेटीरियल और उत्पादों को बेचने में अहम भूमिका निभा रहा है। इन सहकारी सभाओं के साथ क्षेत्र के 500 से ज्यादा किसान जुड़े हुए हैं। सभाओं के सदस्यों ने ऐसे क्षेत्र से औषधीय पौधों की खेती की शुरूआत की है, जहां एक तरफ सिंचाई सुविधाओं का अभाव है, वहीं दूसरी ओर बंदरों का आतंक हैं। यहां के किसानों ने विपरीत परिस्थितियों के बावजूद एलोविरा की बंपर फसल उगाकर कमाल किया, वहीं हमीर जिला हर्बल संघ ने हर्बल यूनिट स्थापित कर हिम हर्बल के नाम से चार हर्बल प्रॉडक्स को बाजार में स्थापित करने में अहम भूमिका अदा की। उत्पादों की गुणवता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि एचपीएमसी से हमीर जिला हर्बल संघ से उत्पाद खरीदने का करार किया है। हमीर जिला हर्बल संघ को औषधीय पौधों की खेती और हर्बल उत्पाद निर्माण में बेहतरीन कार्य के लिए प्रदेश सरकार की ओर से उत्कृष्ठ संघ का पुरस्कार प्रदान किया गया है। हालांकि प्रदेश में सत्ता परिवर्तन के चलते सरकार की प्राथमिकताएं बदलने का खामियाजा सभाओं से जुड़े किसानों को भुगतने को मजबूर होना पड़ा, लेकिन वर्तमान प्रदेश सरकार से जिला हर्बल संघ को ढेरों उम्मीदें हैं कि औषधीय पौधों की खेती में अग्रणी इस संस्था को प्रोत्साहित करने में सार्थक कदम उठाए जाएंगे। वर्ष 2008 में जब हिमाचल प्रदेश में प्रेम कुमार धूमल के नेतृत्व में भाजपा की सरकार बनी तो हिमाचल प्रदेश को हर्बल राज्य के रूप में विकसित करने को प्राथमिकता दी गई। उसी दौरान हमीरपुर जिला के बमसन ब्लॉक में ऐसे किसानों ने औषधीय पौधों की खेती की ओर रूख किया जो सिंचाई सुविधा न होने और बंदरों के आंतक के चलते खेती से सालों पहले हाथ पीछे खींच चुके थे। वर्ष 2010 में औषधीय पौधों की खेती के लिए इस क्षेत्र में 30 सहकारी सभाओं का गठन किया गया और 507 किसानों ने औषधीय पौधों की खेती की पहल की और औषधीय पौधों की खेती करने वाली सहकारी सभाओं के सदस्यों ने हमीर जिला हर्बल सहकारी संघ गठित किया और एलोविरा पर आधारित चार हर्बल उत्पाद बाजार में उतारे और सहकारी सभाओं के जरिये उत्पादों के लिए बाजार विकसित किया।

हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर जिला के बमसन ब्लॉक में देश की अनूठी पहल

मार्केट में चार हर्बल प्रॉडक्ट्स

जिला हर्बल संघ ने तीन लाख का कर्ज लेकर एलोविरा से हर्बल उत्पाद बनाने के लिए यूनिट स्थापित किया। इसके लिए जहां जरूरी मशीनरी की खरीद की गई, बल्कि हर्बल उत्पाद बनाने के लिए अपने कर्मचारियों को जरूरी ट्रेनिंग करवाई। स्थानीय सांसद अनुराग ठाकुर ने इस यूनिट का शुभारंभ किया। इस यूनिट में एलोविरा के चार उत्पाद हर्बल शैम्पू, हर्बल हेंड वाश, एलोविरा जैल और एलोविरा जूस का उत्पादन किया।

पतंजलि मॉडल की स्टडी

हर्बल खेती करने से पहले सहकारी संघ के पदाधिकारी बाबा राम देव के पतंजलि योगपीठ के विशेषज्ञों से मिले। पतंजलि के पदाधिकारियों ने यहां किसानों को एलोविरा की खेती करने की सलाह दी और जितना की उत्पादन होगा, उसे पांच रूपए प्रति किलोग्राम के हिसाब से खरीदने का करार भी कर लिया। संघ ने औषधीय पौधों की खेती में जुटी सहकारी सभाओं के सदस्यों को एलोविरा के पांच लाख पौधे वितरित कर बड़े पैमाने पर औषधीय पौधों की खेती शुरू की।

एचपीएमसी से कान्ट्रेक्ट

जिला हर्बल संघ ने हिम ब्रांड से अपने उत्पाद बाजार में उतारे। संघ ने प्रदेश की सहकारी सभाओं के जरिये अपने उत्पादों के लिए राह तैयार की। ये हर्बल उत्पाद तेजी से ग्राहकों की नजर में चढ़ गए। नतीजे इतने शानदार व उत्साहवर्धक थे कि एक साल से भी कम समय की अवधि में जिला हर्बल सहकारी संघ ने आधे से ज्यादा बैंक कर्ज चुकता कर दिया। शुरूआती दौर में औषधीय पौधों की खेती करने वालों को भी खासा लाभ हुआ। बड़ी कामयाबी तब मिली जब जिला हर्बल सहकारी संघ के साथ हिमाचल प्रदेश के सरकारी उपक्रम एचपीएमसी ने जूस खरीदने के लिए बड़ा करार किया। बेहतर नतीजों को देखते हुए जिला हर्बल सहकारी संघ न केवल औषधीय पौधों की खेती में विस्तार की योजनाएं बनाने में जुट गया, बल्कि और कई हर्बल उत्पाद तैयार करने की दिशा में प्रयास होने लगे हैं। प्रोत्साहन मिले तो यह संघ एलोविरा की खेती और प्रसंस्करण की दिशा में पहले से भी बेहतर प्रदर्शन कर सकता है।

मॉडल के तौर विकसित

सरकार हिमाचल को हर्बल राज्य के तौर पर विकसित करने जा रही थी, ऐसे में औषधीय पौधों की खेती को आगे आईं इन सहकारी सभाओं को नेशनल मेडिसिनल प्लांट्स बोर्ड, स्टेट मेडिसिनल प्लंट्स बोर्ड, प्रदेश के सहकारिता, बागवानी और पंचायती राज विभाग का सहयोग मिला। मनरेगा के तहत औषधीय पौधों की प्लांटेशन की गई। विभिन्न विभागों के अधिकारियों ने किसानों को प्रोत्साहित करने के लिए इस क्षेत्र के दौरे किए और इसे मॉडल के तौर पर विकसित करने के प्रयास किए है। वर्ष 2012 में एलोविरा की पहली फसल तैयार हुई तो जिला हर्बल संघ के पदाधिकारियों ने पतंजलि के पदाधिकारियों से संपर्क किया। पतंजलि की ओर से कहा गया कि कच्चे माल को उसकी फैक्टरी तक पहुंचाया जाए। पतंजलि की ओर से यह भी सुझाव दिया गया कि जिला हर्बल संघ वहीं पर यूनिट स्थापित कर एलोविरा की प्रोसेसिंग और इसके उत्पाद बनाने की शुरूआत करे। ऐसे में जिला हर्बल संघ ने पतंजलि के सुझाव पर अमल करते हुए हमीरपुर में खुद का हर्बल प्रॉडक्ट्स यूनिट स्थापित करने का फैसला लिया।

किसानों का दरकार, मदद करे सरकार

रसील सिंह मनकोटिया कहते हैं कि सरकार को ग्रांट इन एड देकर औषधीय पौधों की खेती करने वाले किसानों को प्रोत्साहित करना चाहिए। किसानों के प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाए और जिला स्तर पर कलेक्शन सेंटर खोला जाए। उनका कहना है कि औषधीय पौधों की खेती करने वाली सहकारी सभाओं पर हर साल लगने वाली ऑडिट फीस भी माफ होनी चाहिए।

बेरोजगारी का निकलेगा हल

रसील सिंह मनकोटिया कहते हैं कि हिमाचल प्रदेश में हर्बल खेती को बढ़ावा देकर ही बेरोजगारी को दूर किया जा सकता है। हिमाचल प्रदेश में विभिन्न प्रकार की जड़ी-बूटियों की खेती करने के अनुकूल जलवायु है। रसील सिंह मनकोटिया का कहना है कि अगर प्रदेश में औषधीय पौधों की खेती के लिए गंभीर प्रयास हों तो न केवल खेती छोड़ चुके किसानों को खेतों की ओर मोड़ा जा सकता है, बल्कि बड़े स्तर पर रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाए जा सकते हैं। उनका कहना है कि अगर कृषि आय को दोगुना करना है तो औषधीय पौधों की खेती को प्रोत्साहन देना समय की मांग है। मनकोटिया कहते हैं कि उन्होंने नेशनल मेडिसनल प्लांट्स बोर्ड व स्टेट मेडिसिनल प्लांट्स बाड के अधिकारियों से भी संपर्क साधा है। वे कहते हैं कि औषधीय पौधों की खेती के लिए केंद्र व प्रदेश सरकार की ओर से चलाई जा रहीं विभिन्न योजाओं के क्रियान्वयन की गति तेज होनी चाहिए। उनका कहना है कि यह सही समय है कि औषधीय पौधों की खेती को बढ़ावा देकर हिमाचल प्रदेश की आर्थिकी को मजबूत किया जा सकता है। उन्होंने प्रदेश सरकार से इस दिशा में गंभीर प्रयास करने की मांग की है।

फैक्ट शीट

12 करोड़ रुपये से निर्मित संयंत्र 8 घंटे की शिफ्ट में 5 टन स्टेविया पत्तियों को प्रोसेस कर सकता है, जो 5 एकड़ की फसल के बराबर है।

कोर टीम

राजपाल सिंह गांधी
अमरदीप सिंह गांधी
इंद्रप्रीत सिंह चावला

स्टीविया क्रांति के जनक एवं ग्रीन वैली स्टेविया फार्म के फाउंडर राजपाल सिंह गांधी की प्रेरककथा

कड़वे अनुभव से स्टीविया की मिठास

डॉ. अरूण चंदन, क्षेत्रीय निदेशक, आरसीएफसी नॉर्थ, जोगिंद्रनगर

दो बार नेशनल अवार्ड, एग्रीबिजनेस अवॉर्ड 2018 से सम्मानित

24 अक्टूबर भारतीय खाद्य एवं कृषि परिषद की ओर से नई दिल्ली में आयोजित एग्रो वर्ल्ड 2018 में ग्रीन स्टीविया फार्म के फांउडर डॉ राजपाल गांधी को देश में स्टीविया की खेती को बढ़ावा देने के लिए एग्रीबिजनेस अवॉर्ड प्रदान किया गया। उन्हें वर्ष 2015 में पंजाब के तत्कालीन मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल ने राज्य पुरस्कार से सम्मानित किया। साल 2014 में वे हरित क्रांति के जनक स्वामी स्वामीनाथन के हाथों राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित हुए। राजपाल सिंह गांधी के स्टीविया की खेती और उसके उत्पादों में किए गए शानदार प्रयासों को देखते हुए डॉ. एमएस स्वामीनाथन और डॉ एमजे खान के नेतृत्व वाली भारतीय खाद्य और कृषि परिषद में सदस्यता दी गई। पंजाब सरकार ने उन्हें किसान विकास चैंबर, मोहाली में कार्यकारी सदस्य के तौर सदस्यता दी है।

प्रोडक्ट्स रेंज

ग्रीन वैली फार्म ऑन लाइन व ऑफ लाइन स्टीविया के बहुत से उत्पाद बेच रहा है। उनकी प्रोडक्स रेंज में चीनी कम, चीनी कम जीरो कैलोरी, स्टीविया मिल्क टी मसाला, स्टीविया मिल्क टी लैमन ग्रास, स्टीविया मिल्क टी इलायची, विभिन्न फ्लेवर्स में इंस्टेंट स्टीविया टी, स्टीविया लीफ टी जैसे उत्पाद शामिल हैं।

टोटल स्टेविया सेल्यूशन

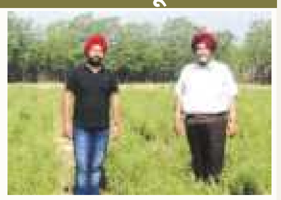

राजपाल सिंह ने स्टीविया नर्सरी, अनुबंध खेती, प्रोसेस, फॉर्मूलेशन और मूल्यवर्धन के जमीनी अनुभव हासिल किए हैं और नए विकसित उत्पादों के लिए पेटेंट भी दायर किए हैं। ग्रीन वैली के पास इस उद्योग के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचा, प्लांट टिशू कल्चर लैब इंफ्रास्ट्रक्चर, पॉली एंड नेट हाउस के साथ हाई टेक नर्सरी, विश्लेषण, प्रोसेसिंग सुविधा, पैकेजिंग इकाई, अनुबंध खेती, फॉर्मूलेशन और मूल्यवर्धन जैसे सभी क्षेत्रों में समाधान प्रदान करने के लिए सुविधा और आधारभूत संरचना है। राजपाल सिंह की कंपनी ग्रीन वैली फार्म ब्रांड नाम के नाम से संसाधित स्टीविया बेचती है। उनकी टीशू कल्चर प्रयोगशाला पौधों की विविधता में सुधार करने में मदद करती है। वह स्टीविया की खेती के लिए किसानों को हर संभव समाधान उपलब्ध करवाते हैं।

विदेशों तक पहुंच बनाई, किसानों तक तकनीक पहुंचाई

स्टीविया प्रसंस्करण से पहले पौधे के बारे में जानने के लिए राजपाल सिंह ने चीन और दक्षिण अमेरिकी देशों कोलंबिया और पराग्वे का दौरा किया। वह कनाडाई कंपनी पिक्सल हेल्थ के साथ स्टीविया पाउडर की आपूर्ति करने के लिए समझौता कर चुके हैं। बीते साल मध्य अफ्रीकी देश कांगों में उन्होंने स्टीविया की खेती करवाई, जिसके परिणामों से प्रोत्साहित करने वाले हैं और कांगों के साथ खरीद- वापसी व्यवस्था में प्रवेश करने को तैयार है। गुजरात सरकार ने उन्हें वाइब्रेंट गुजरात निवेश शिखर सम्मेलन में आमंत्रित किया। उन्होंने अरावली और कपगंज जिलों में 2,500 एकड़ से अधिक भूमि पर स्टीविया विकसित करने के लिए करार किया। वह यूपी में एक प्रसंस्करण संयंत्र बनाने की योजना तथा गुरदासपुर, लुधियाना और फिरोजपुर जिलों में 25 एकड़ में किसानों को स्टीविया बढ़ाने में मदद कर रहे हैं।

कड़वे अनुभव के बाद कामयाबी की मिठास की इस प्रेरककथा के नायक हैं पंजाब के शहीद भगत सिंह नगर (नवांशहर) के 58 साल के राजपाल सिंह गांधी। आयकर सलाहकार से स्टीविया क्रांति के जनक बनने वाले राजपाल सिंह गांधी ने उस दौर में खेत की तरफ लौटने का इरादा किया, जिस दौर में कृषि संकट की कहानियां सामने आ रही थीं। उनके पास पंजाब के औसत किसान के मुकाबले जोखिम उठाने के लिए ज्यादा संसाधन थे, जिसके चलते वे प्राकृतिक स्वीटनर स्टीविया को विकसित करने की अलग राह पर चले और गहन शोध के साथ देश का पहला स्टीविया प्रसंस्करण संयंत्र स्थापित किया।

किन्नो से स्टीविया तक का सफर से आलू बीजे, फलों की खेती

राजपाल सिंह गांधी कहते हैं कि उन्होंने वर्ष 2003 में 35 एकड़ में किन्नो की बागवानी के साथ शुरुआत की, लेकिन मार्केटिंग सुविधाओं की कमी ने उन्हें इस तरफ से हटने के लिए मजबूर कर दिया। इसके बाद उन्होंने आलू और अन्य सब्जियां, यहां तक कि ग्लेडियोलस लगाने की भी कोशिश की, लेकिन यहां भी मार्केटिंग सुविधाओं के अभाव ने उनकी राह रोक दी। ऐसे में उन्हें स्टीविया की ओर बढ़ने का निर्णय ही सही लगा।

बंपर हुई स्टीविया की फसल, खरीददार कोई नहीं

वर्ष 2005-06 में राजपाल सिंह गांधी ने पांच एकड़ में स्टीविया की खेती शुरू की। तीन महीनों के बाद ही बम्पर फसल तैयार हो गई, लेकिन इसके लिए बाजार में कोई खरीदार नहीं मिला। उन्होंने अपना उत्पाद बेचने के लिए कई जगह कोशिश की लेकिन, खेतों में अगली फसल तैयार हो गई, पर पिछली फसल नहीं बिकी। वे हैरान थे कि जो पौधा स्वास्थ्य के लिए इतना लाभदायक है और पिछले चालीस सालों से आबादी जिसका प्रयोग कर रही है, उसके लिए आखिर बाजार क्यों नहीं है।

इंडिया में नहीं थी कोई प्रोसेसिंग यूनिट

राजपाल सिंह को यह बात समझ आ गई कि स्टीविया से शून्य कैलोरी चीनी बनाने की कोई प्रसंस्करण इकाई ही भारत में नहीं है। देश का खाद्य सुरक्षा प्राधिकरण किसी भी उद्योग को किसी भी घटक उत्पाद का उपयोग करने की इजाजत नहीं देते हैं, जब तक कि वह स्वीकृत न हो। स्टीविया उस समय तक खाद्य सुरक्षा प्राधिकरण द्वारा स्वीटनर के रूप में स्वीकृत नहीं था। राजपाल सिंह बताते हैं कि उस समय दो ही विकल्प थे। या तो फसल को उखाड़ दिया जाए या फिर अपनी प्रसंस्करण इकाई स्थापित की जाए, जो स्टीविया से हर्बल चीनी बना सके। उन्होंने दूसरे विकल्प चुनने का जोखिम उठाया।

फार्म में स्थापित कर दी प्रयोगशाला

राजपाल सिंह ने खेत में आरएंडडी प्रयोगशाला स्थापित की और स्टीविया पत्तियों से स्टीविया सफेद पाउडर बनाने के लिए प्रक्रिया को विकसित करने के लिए केंद्रीय सरकार के संस्थान के साथ समझौता किया। दो साल की अवधि के बाद इससे संतुष्ट न होने पर आईआईटी मुंबई की तकनीकी टीम को रासायनिक मुक्त प्रक्रिया विकसित करने के लिए हायर किया। यूनिट बनाने और इसमें वाणिज्यिक परीक्षण करने मे तीन साल लग गए। इस बीच भारत में खाद्य सुरक्षा प्राधिकरण ने स्टेविया के उपयोग को खाद्य उत्पादों के रूप में स्वीटनर के रूप में मंजूरी भी दे दी। अब उनका काम आसान हो गया। वह देश में पहला स्टीविया प्रोसेसिंग इकाई स्थापित करने में कामयाब हुए।

आठ घंटों की शिफ्ट में पांच टन स्टीविया की प्रोसेसिंग

राजपाल सिंह की स्टीविया परीक्षण और शोध प्रयोगशाला भारतीय वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान विभाग (डीएसआईआर) द्वारा प्रमाणित है और उनके प्रसंस्करण संयंत्र विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तहत जैव प्रौद्योगिकी विभाग से सॉफ्ट लोन के साथ बनाया गया है। 12 करोड़ रुपए से निर्मित संयंत्र 8 घंटे की शिफ्ट में 5 टन स्टेविया पत्तियों को संसाधित कर सकता है, जो कि 5 एकड़ में फसल के बराबर है।

फार्मः ग्रीन वैली स्टीविया फार्म, वीपीओ पोजेवाल, तहसील बालाचौर, शहीद भगत सिंह नगर, पंजाब। कंपनी : जीवीएस बायोटेक प्राइवेट लिमिटेड, बंगा, पंजाब।

www.Greenvalleystevia.com www.Steavia.in ईमेलः info@greenvalleystevia.com ईमेलः info@steavia.in संपर्क : 08099009901 मोबाइल. 9814060700, 9855060704

E-Charak
e-Channel for Herbs, Aromatic, Raw Material & Knowledge

NATIONAL MEDICINAL PLANTS BOARD
Plants For Health & Prosperity

जड़ी-बूटी बाजार

हर माह प्रकाशित/प्रसारित

www.rcfcnorth.in ■ कुल पृष्ठ : 8 ■ वर्ष 1, अंक 3 ■ 1 नवंबर से 30 नवंबर 2018

क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तर भारत, आयुष मंत्रालय भारत सरकार, पिन-175015, दूरभाष-01908-222970 (टेलीफैक्स), 9418010624 (मोबाइल) email:rcfcnorth@gmail.com

हिमाचल प्रदेश के आयुर्वेद विभाग, राज्य औषधीय पादप बोर्ड व आरसीएफसी के संयुक्त प्रयासों का परिणाम

जड़ी- बूटियों की खेती और विपणन के लिए हिमाचल की अनूठी पहल

डॉ. अरूण चंदन, क्षेत्रीय निदेशक, आरसीएफसी, जोगिंद्रनगर

हिमाचल प्रदेश का आयुर्वेद विभाग, राज्य औषधीय पादप बोर्ड और राष्ट्रीय पादप बोर्ड का क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र जहां एक ओर प्रदेश में जड़ी- बूटियों की खेती के लिए किसानों को प्रेरित और प्रोत्साहित कर रहा है, वहीं दूसरी ओर जड़ी- बूटियों के विपणन के लिए बाजार भी तैयार कर रहा है। औषधीय पौधों की खेती के लिए प्रशिक्षण, कार्यशालाओं, प्लांटिंग मैटीरियल की व्यवस्था तथा किसानों की मेहनत व व्यय के अनुसार उनके उत्पाद का मूल्य निर्धारित करवाने के प्रयास किए जा रहे हैं। हिमाचल प्रदेश में जड़ी- बूटियों की खेती और उनके विपणन के लिए अनूठे प्रयासों के चलते किसान औषधीय पौधों की खेती के लिए आगे आ रहे हैं।

औषधीय पौधों की खेती के लिए वित्तीय मदद

केंद्र सरकार प्रायोजित राष्ट्रीय आयुष मिशन के तहत हिमाचल प्रदेश में अतीस, कुटकी, कुठ, सुगंधवाला, अश्वगंधा, सर्पगंधा और तुलसी जैसे औषधीय पौधों की खेती के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है। जड़ी- बूटियों की खेती के लिए किसानों को गुणवतापरक प्लांटिंग मैटीरियल उपलब्ध करवाया जा रहा है। जड़ी- बूटियों के लिए फार्मेसियों की मांग को ध्यान में रखते हुए किसानों को उन्हीं जड़ी- बूटियों की खेती के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। सरकार के इन प्रयासों से हिमाचल प्रदेश में औषधीय पौधों के कृषिकरण का माहौल बन रहा है।

39 औषधीय पौधे कृषि उपज घोषित, मंडी में बिकेंगे

आयुर्वेद विभाग ने 39 औषधीय पौधों को हिमाचल प्रदेश कृषि विपणन बोर्ड से कृषि उपज घोषित करवाया गया है। किसान अब इन औषधीय पौधों के उत्पाद प्रदेश की मंडियों में बेच सकते हैं। अब इन उत्पादों को ऑनलाइन प्लेटफार्म ई-नाम में डालने की प्रक्रिया भी जारी है। आयुर्वेद विभाग की ओर से जड़ी- बूटी उत्पादों के न्यूनतम मूल्य निर्धारित करने संबंधी प्रयास जारी हैं, जिसे कृषि मंत्रालय की ओर से अनुमोदित किया जाना है।

न्यूनतम मूल्य निर्धारण और कलेक्शन सेंटर प्रस्तावित

आयुर्वेद विभाग के सामने चुनौती यह है कि मंडी में अपना उत्पाद बेचने गए किसानों को अगर खरीददार नहीं मिलता है तो उस स्थिति में उनके उत्पाद को कहां बेचा जाएगा? विभाग उस उत्पाद को कैसे खरीदेगा और किस रेट से खरीद करेगा? इस समस्या के समाधान के लिए न्यूनतम मूल्य निर्धारण के प्रयास जारी है। न्यूनतम मूल्य निर्धारण होने की स्थिति में विभाग का कलेक्शन सेंटर किसान के उत्पाद की खरीद कर लेगा। कलेक्शन सेंटर स्थापित करने और जड़ी- बूटियों की गुणवता जांचने और आगे उनके उपयोग के लिए प्रयास किए जा रहे हैं।

मासिक न्यूज लैटर 'जड़ी- बूटी बाजार' का प्रकाशन

किसानों को सीधे फार्मेसियों से जोड़ने के लिए मासिक न्यूज लैटर 'जड़ी- बूटी बाजार' का प्रकाशन शुरू किया गया है। इस न्यूज लैटर के जरिये किसानों को जड़ी- बूटियों के कृषिकरण, प्रोसेसिंग व विपणन के बारे में नियमित जानकारी प्रदान की जा रही है और जड़ी- बूटियों के खरीददारों तक किसानों की सीधी पहुंच बनाई जा रही है। किसानों के लिए विपणन की बेहतर व्यवस्था करने के लिए किसानों के साथ खरीददारों की कार्यशाला भी प्रस्तावित है।

एमिल से गिलोय की खरीद के लिए करार

जड़ी- बूटियों के विपणन के लिए किसानों को देश की प्रमुख फार्मेसियों से संपर्क स्थापित करवाने की पहल रंग लाने लगी है। जोगिंद्रनगर स्थित आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान व औषध पादप बोर्ड के क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र ने देश की एक बड़ी आयुर्वेद दवा निर्माता कंपनी एमिल के साथ गिलोय खरीद के लिए किसानों के साथ करार पर काम शुरू किया गया है। खरीद करार के चलते अब किसानों को अपने उत्पाद की सही कीमत मिल रही है।

आयुष खरीद रहा शिमला के किसानों से कुटकी

कुटकी की विपणन व्यवस्था करने के लिए शिमला की शिव औषधीय पौध उत्पादन सहकारी समिति के किसानों का करार नगरोटा बगवां औद्योगिक क्षेत्र में स्थित आयुर्वेद निर्माता कंपनी आयुष हर्ब्स के साथ करवाया गया है। वन विभाग के नियमों के तहत इस वर्ष लगभग एक क्विंटल कुटकी के विपणन की व्यवस्था की गई है। अगले साल कुटकी के उत्पादन के बढ़ने की संभावना है।

ई- चरक और ई नाम प्लेटफार्म से बिक्री

केंद्रीय आयुष मंत्रालय की ओर से बनाए गए ऑनलाइन प्लेटफार्म एवं मोबाइल एप्प ई- चरक के माध्यम से प्रदेश के किसानों को अपने उत्पाद देश भर में बेचने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। केंद्रीय कृषि मंत्रालय की ओर से कृषि उपज के विपणन के लिए शुरू किए गए ऑन लाइन प्लेटफार्म 'ई नाम' के जरिये भी प्रदेश की मंडियों में जड़ी- बूटियों के विपणन के लिए प्रयास किए जा रहे हैं।

हिमाचल प्रदेश सरकार

मुख्य मन्त्री
हिमाचल प्रदेश
शिमला- 171002
दूरभाष: (का0)+ 91-177-2625400
फैक्स: (आ0)+ 91-177-2621384
ईमेल: 91-177-2625011

संदेश

मुझे यह जानकर भी प्रसन्नता हो रही है कि आयुर्वेद विभाग के तत्वाधान में आयुष मंत्रालय भारत सरकार के राष्ट्रीय औषधि पादप बोर्ड द्वारा उत्तर भारत के सात राज्यों को औषध पौधों सम्बन्धी ज्ञान एवं जानकारी का आदान- प्रदान करने के लिए जोगिंद्रनगर में एक क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र स्थापित किया गया है और यह केंद्र सैंकड़ों किसानों व हित्यग्राहियों को आपस में जोडने के लिए 'जड़ी बूटी बाजार' पत्रिका का प्रकाशन करने जा रहा है।

यह हर्ष का विषय है कि जैव विविधता में समृद्व हिमाचल प्रदेश में कई विलक्षण एवं चमत्कारी वनोषधियां पाई जाती हैं। यहां के औषधीय पौधे अपनी गुणवता के चलते विश्व भर में विख्यात हैं और दिव्य गुणों के कारण उनकी भारी मांग है। राज्य औषधीय पादप बोर्ड, आयुर्वेद विभाग हिमाचल प्रदेश राष्ट्रीय आयुष मिशन के माध्यम से हिमाचल प्रदेश के किसानों, बागवानों को वित्तीय सहायता प्रदान कर औषधीय पौधों की खेती के लिए प्रोत्साहित कर रहा है।

मेरा किसानों से अनुरोध है कि अपनी कृषि आय को बढ़ाने के लिए वे सरकार की इस योजना का भरपूर लाभ उठाकर अपनी आथिकी को मजबूत करें और भविष्य में प्रदेश को हर्बल राज्य भी बनाने में अपना योगदान दें।

पत्रिका के प्रकाशन के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

(जयराम ठाकुर)

संदेश

आयुष मिशन

औषधीय पौधों की खेती के लिए वित्तीय मदद।
अतीस, कुटकी, कुठ, सुगंधवाला, अश्वगंधा व सर्पगंधा की खेती।
दो हैक्टेयर में कल्सटर बनाकर कृषिकरण।
बंजर भूमि, बंदरों के आतंक व फूलणू वाली भूमि पर खेती करें।
सरकार खरीदेगी किसानों के उत्पाद।

हिमाचल प्रदेश सरकार

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, चिकित्सा शिक्षा, आयुर्वेद और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री, हिमाचल प्रदेश।

संदेश

हिमाचल प्रदेश में जैव विविधता प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। विश्व भर में औषधीय पौधों के महत्व को देखते हुए इनके उत्पादन और संरक्षण पर सरकार विशेष ध्यान दे रही है। आयुर्वेद विभाग द्वारा किसानों को औषधीय पौधों की खेती के लिये प्रोत्साहित किया जा रहा है, जिससे न केवल उनकी आर्थिकी मजबूत होगी, बल्कि आयुर्वेद औषधियां तैयार करने के लिये औषधीय पौधों की सुगम उपलब्धता होगी। प्रदेश सरकार राष्ट्रीय आयुष मिशन के तहत औषधीय खेती के लिए इच्छुक किसानों को अनुदान दे रही है। राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, आयुर्वेद विभाग जड़ी- बूटियों के विपणन एवं किसानों को न्यूनतम मूल्य प्रदान करने की दिशा में प्रयासरत है। मेरी मान्यता है कि जंगली जानवरों, बंदरों व आवारा पशुओं के प्रकोप के चलते किसानों के लिए जड़ी- बूटियों की खेती करना एक टिकाऊ विकल्प हो सकता है। विभाग की इस योजना का किसान लाभ उठाएं। उगाई जाने वाली जड़ी- बूटियों के सभी पहलुओं पर किसानों का मार्गदर्शन करने के लिए ही आयुष मंत्रालय द्वारा क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र जोगिंद्रनगर में स्थापित किया गया है।

किसानों से मेरा आग्रह है कि वे योजना का लाभ लें।

हार्दिक सुभकामनाएं।

(विपिन सिंह परमार)

SANJAY GUPTA
I.A.S.
ADD. CHIEF SECRETARY
आयुर्वेदा

हिमाचल प्रदेश सरकार

ARMSDALE
H.P. SECRETARIAT
SHIMLA

संदेश

अनुकूल जलवायु के कारण गुणवता में श्रेष्ठ पाये जाने वाले हिमालयी राज्यों के औषधीय पौधों की मांग विश्व भर में तेजी से बढ़ रही है, परिणामस्वरूप उसी अनुपात में व्यापार भी बढ़ा है। वर्तमान में टिकाऊ आजीविका का एकमात्र विकल्प औषधीय पौधे ही हो सकते हैं। हिमाचल के किसान अपनी बंजर जमीन व नीले फुलणू के प्रकोप से खाली पड़ी जमीन पर बाजार में मांग वाले औषधीय पौधों की खेती करके लाभ उठा सकते हैं।

राज्य औषधीय पादप बोर्ड, आयुर्वेद विभाग प्रदेश के दूरस्थ इलाकों में कार्यरत हर किसान तक पहुंचने के लिए प्रयासरत है ताकि राष्ट्रीय आयुष मिशन की औषधीय पौधों की खेती के लिए अनुदान की योजना का सही लाभ उठा सकें। विभाग के सभी अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि वे लोगों से मिल कर काम करें और हरसंभव मार्गदर्शन करें।

(संजय गुप्ता) भा. प्र. से.

हिमाचल प्रदेश सरकार

Director

Ayurveda Department
Himachal Pradesh

Phone: 0177-2622262
Fax: 0177-2622010
"Ayurved Bhawan"
Block No. 26 SDA Complex,
Kasumpti, Shimla-171009.
E-Mail: ayur-hp@nic.in

आयुर्वेदिक एवं हर्बल दवाईयों की मांग विश्व भर में बढ़ रही है। औषधीय पौधों की विश्व बाजार में खपत 7 प्रतिशत की वृद्धि दर से बढ़ रही है। जैव विविधता अधिनियम के लागू होने के कारण आने वाले समय में जंगलों से जड़ी- बूटियों का निष्कर्षण संभव नहीं होगा। राज्य औषध पादप बोर्ड, आयुर्वेद विभाग ने इसकी गंभीरता को समझते हुए राष्ट्रीय आयुष मिशन के अंतर्गत हिमाचल में अलग- अलग जलवायु क्षेत्रो के लिए औषधीय पौधों की खेती के लिए अनुदान योजना शुरू की है।

औषधीय पौधों की वैल्यू चैन के सभी पहलुओं पर नियोजित तरीके से विभाग कार्यरत है। विभाग के समस्त अधिकारी सक्रियता से योजना लागू कर रहे हैं। मेरा सभी किसान बहनों- भाईयों से आग्रह है कि इस योजना का लाभ उठाएं। राष्ट्रीय आयुष मिशन के अंतर्गत वित्तीय सहायता का लाभ प्राप्त करने के लिए किसानों के कलस्टर (समूह) के पास दो हैक्टेयर भूमि होना अनिवार्य है। कलस्टर में 15 किलोमीटर दायरे में आने वाले तीन गांवों के किसान मिल कर भी यह काम कर सकते हैं। वर्तमान में अतीस, कुटकी, कुठ, सुगन्धवाला, अश्वगंधा, सर्पगन्धा तथा तुलसी की खेती के लिए अनुदान दिया जा रहा है। इस सम्बन्ध में सम्बधित जिला आयुर्वेदिक अधिकारी से संपर्क किया जा सकता है।

मुझे विश्वास है विभाग की इस योजना का आप सब अवश्य लाभ उठाएंगे।

(संजीव भटनागर भा. प्र. से.)

कलस्टर बनाकर औषधीय पौधों की खेती के लिए वित्तीय सहायता प्राप्त कर सकते हैं हिमाचल के किसान

जड़ी- बूटियों की खेती के लिए अनुदान

पौधों के नाम	वित्तीय सहायता	क्षेत्रफल	कुल वित्तीय सहायता
अतीस	120785 प्रति हैक्टेयर	20 हैक्टेयर	24.157 (रूपए लाखों में)
कुटकी	123530 प्रति हैक्टेयर	26.5 हैक्टेयर	32.735 (रूपए लाखों में)
कुठ	96080 प्रति हैक्टेयर	18 हैक्टेयर	17.294 (रूपए लाखों में)
सुंगधवाला	123530 प्रति हैक्टेयर	20 हैक्टेयर	8.785 (रूपए लाखों में)
अश्वगंधा	10977 प्रति हैक्टेयर	2 हैक्टेयर	0.219 (रूपए लाखों में)
सर्पगंधा	45742 प्रति हैक्टेयर	7 हैक्टेयर	3.202 (रूपए लाखों में)
तुलसी	13171 प्रति हैक्टेयर	7 हैक्टेयर	0.922(रूपए लाखों में)
कुल		100.5 हैक्टेयर	87. 314 (रूपए लाखों में)

आरसीएफसी फीचर सर्विस

केंद सरकार की ओर से प्रायोजित राष्ट्रीय आयुष मिशन योजना के अधीन भारत सरकार जड़ी-बूटियों और औषधीय पौधों की खेती को प्रोत्साहित करने के लिए किसानों को अनुदान दे रही है।140 औषधीय पौधों की प्रजातियों को देशभर में खेती करने के लिए प्राथमिकता दी गई है। वर्तमान में अतीस, कुटकी, कुठ, सुगंधवाला, अश्वगंधा, सर्पगंधा और तुलसी जैसे औषधीय पौधों की खेती के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है। हिमाचल प्रदेश के किसान कलस्टर बनाकर औषधीय पौधों की खेती के लिए अनुदान प्राप्त कर सकते हैं।

कुछ शर्तें पूरी कर अनुदान

राष्ट्रीय आयुष मिशन के तहत केंद्र सरकार की ओर से औषधीय पौधों की खेती के लिए वित्तीय सहायता का लाभ लेने के लिए किसानों के एक समूह के पास कम से कम 2 हैक्टेयर भूमि होनी चाहिए। एक समूह में किसान15 किलोमीटर के क्षेत्र में साथ लगते तीन गांवों से भी हो सकते हैं। रहन रखी हुई भूमि पर भी खेती की जा सकती है। वित्तीय सहायता के लिए दिए जाने वाले व्यक्तिगत आवेदन में यह पूरी जानकारी देनी होगी कि खेती कितनी भूमि पर की जाएगी और कौन सी प्रजातियों के औषधीय पौधों की खेती की जाएगी। आवेदन के साथ उक्त क्लस्टर में शामिल प्रत्येक किसान की भूमि की स्थिति खसरा नंबर सहित रिपोर्ट संबंधित राजस्व अधिकारी (पटवारी) की ओर से सत्यापित होनी चाहिए। आवेदन के साथ उस खाली भूमि के राजस्व पत्र देने होंगे, जहां औषधीय पौधों की खेती की जानी है। क्लस्टर में शामिल किसानों को एक संयुक्त आवेदन देना होगा, जिसमें उनके नाम, पता और संपर्क हों। स्टैंप पेपर पर एक हल्फनामा देना होगा कि खेती के लिए प्रस्तावित भूमि पर केंद्रीय व राज्य सरकार के किसी विभाग, बोर्ड, निगम या किसी अन्य एजेंसी से कोई अनुदान अथवा सब्सिडी नहीं ली गई है। प्रत्येक किसान को शपथपत्र के माध्यम से यह भी स्पष्ट करना होगा कि वह अनुमोदित औषधीय पौधों को स्वीकृत क्षेत्रफल में उगायेगा और निरीक्षण के दौरान किसी प्रकार की भी कमी पाए जाने पर वह पूर्ण अथवा आंशिक वित्तीय सहायता लौटाने के लिए वाधित होगा। आवेदन के साथ संबंधित ग्राम पंचायत की सिफारिश/अनापति प्रमाणपत्र देना होगा। औषधीय पौधों की खेती के लिए वित्तीय सहायता प्राप्त करने के लिए आवेदन संबंधित जिला आयुर्वेदिक अधिकारी के पास करना होगा। जिला आयुर्वेदिक अधिकारी उचित सत्यापन के बाद राज्य औषध पादप बोर्ड को मामले की सिफारिश करेंगे।

यहां- यहां कर सकते हैं संपर्क

1. राज्य औषधीय पादप बोर्ड आयुर्वेद निदेशालय, ब्लॉक न. 26, एससी परिसर, कसुम्पटी, शिमला। फोनः 0177-2622262, 2623978, 2625427
2. अनुसन्धान संस्थान आई.एस.एम. जोगिंद्रनगर, जिला मंडी। 01908- 222970
3. क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र जोगिन्द्रनगर, जिला मंडी। 01905-222333
4. समस्त जिला आयुर्वेदिक अधिकारी।

मंडी, ऊना, बिलासपुर, सिरमौर, कांगड़ा और सोलन जिलों में तुलसी उगाने की हैं अपार संभावनाएं

तुलसी की खेती से आंगन में खुशियां

आरसीएफसी फीचर सर्विस

तुलसी खास औषधीय महत्व वाला का पौधा है। इसके जड़, तना, पत्तियों समेत सभी भाग उपयोगी हैं। वर्तमान में आयुर्वेद, यूनानी, होम्योपैथी व एलोपैथी की तमाम दवाओं में अनिवार्य रूप से इसका इस्तेमाल किया जा रहा है। इसकी पत्तियों में चमकीला वाष्पशील तेल पाया जाता है, जो कीड़ों और बैक्टीरिया के खिलाफ काफी कारगर होता है। तुलसी मुख्य रूप से तीन तरह की होती है। हरी पत्तियों वाली, काली पत्तियों वाली और तीसरी नीली बैंगनी रंग की पत्तियो वाली। यह कम सिंचाई वाली और कम से कम रोगों व कीटों से प्रभावित होने वाली फसल है।

झाड़ी के रूप में उगती है तुलसी

एक द्विबीजपत्री तथा शाकीय औषधीय पौधा है। यह झाड़ी के रूप में उगता है और 1 से 3 फुट ऊंचा होता है। इसकी पत्तियां बैंगनी आभा वाली हल्के रोएं से ढकी होती हैं। पत्तियां 1 से 2 इंच लम्बी सुगंधित और अंडाकार या आयताकार होती हैं। पुष्प मंजरी अति कोमल एवं 8 इंच लम्बी और बहुरंगी छटाओं वाली होती है, जिस पर बैंगनी और गुलाबी आभा वाले बहुत छोटे हृदयाकार पुष्प चक्रों में लगते हैं। बीज चपटे पीतवर्ण के छोटे काले चिह्नों से युक्त अंडाकार होते हैं। पौधा सामान्य रूप से दो-तीन वर्षों तक हरा बना रहता है।

बरसात की फसल है तुलसी

तुलसी की खेती सामान्य मिट्टी में आसानी से हो जाती है। तुलसी की खेती के लिए गरम जलवायु बेहतर है। तुलसी पाला बिल्कुल बर्दाश्त नहीं कर पाती है। तुलसी की नर्सरी फरवरी के अंतिम हफ्ते में तैयार करनी चाहिए. यदि अगेती फसल लेनी है, तो पौधों की रोपाई अप्रैल के मध्य से शुरू कर सकते हैं। वैसे मूल रूप से यह बरसात की फसल है, जिसे गेहूं काटने के बाद लगाया जाता है। यह 90 दिनों में होने वाली बरसात की फसल है, जिस में रोग और कीट बहुत ही कम लगते हैं।

अनेक जैव सक्रिय रसायन

तुलसी में अनेक जैव सक्रिय रसायन पाए गए हैं, जिनमें ट्रैनिन, सैवोनिन, ग्लाइकोसाइड और एल्केलाइड्स प्रमुख हैं। तुलसी के प्रमुख सक्रिय तत्व हैं एक प्रकार का पीला उड़नशील तेल। तुलसी में 0.1 से 0.3 प्रतिशत तक तेल पाया जाना सामान्य बात है। इस तेल में लगभग 71 प्रतिशत यूजीनॉल, बीस प्रतिशत यूजीनॉल मिथाइल ईथर तथा तीन प्रतिशत कार्वाकोल होता है। तेल के अतिरिक्त पत्रों में विटामिन सी एवं कैरोटीन होता है। तुलसी बीजों में हरे पीले रंग का तेल लगभग 17.8 प्रतिशत की मात्रा में पाया जाता है। कुछ सीटोस्टेरॉल, पामिटिक, स्टीयरिक, ओलिक, लिनोलक और लिनोलिक अम्ल तुलसी के मुख्य घटक हैं। बीजों में श्लेष्मक भी प्रचुर मात्रा में होता है।

तुलसी का औषधीय महत्व

भारतीय संस्कृति में तुलसी को पूजनीय माना जाता है, धार्मिक महत्व होने के साथ-साथ तुलसी औषधीय गुणों से भी भरपूर है। आयुर्वेद में तो तुलसी को उसके औषधीय गुणों के कारण विशेष महत्व दिया गया है। तुलसी ऐसी औषधि है जो ज्यादातर बीमारियों में काम आती है। इसका उपयोग सर्दी-जुकाम, खांसी, दंत रोग और श्वास सम्बंधी रोग के लिए बहुत ही फायदेमंद माना जाता है।

तुलसी - उत्पति व वितरण : इसकी खेती के लिए समुद्रतल से 900 मी. ऊंचाई वाले उष्ण कटिबंधीय और उप-उष्ण कटिबंधीय जलवायु खंड अनुकूल हैं। हिमाचल प्रदेश के निचले क्षेत्र मंडी, ऊना, बिलासपुर, सिरमौर, कांगड़ा और सोलन इलाके में उगाई जा सकती है।

प्रयोग अंग : पत्ते और पंचाग

बीज प्रति एकड़ : 80-120 ग्राम बीज एक एकड़ जमीन के रोपण के लिए पर्याप्त है। बीज नर्सरी में 2 से.मी. गहरा बोया जाना चाहिए।

रोपाई : बीज 8-12 दिनों में अंकुरित हो जाते हैं। नर्सरी पौध 6 सप्ताह में 4-5 पत्तों की अवस्था में रोपाई के लिए तैयार हो जाती है।

अंतराल : पौधों को (40- 40) सें.मी. और (40-50) सें.मी. दूरी पर प्रत्यारोपित करें।

फसल अवधि : पहली फसल बुआई के 90-95 दिनों में और बाद में हर 65-75 दिनों के अंतराल मे फसल काटी जा सकती है।

उपज : 5 क्विंटल सूखा पंचांग एक एकड़ भूमि से प्राप्त किया जा सकता है।

दर : 14,520 रु.

बाजार कीमत : 80रु. किलोग्राम सूखा पंचांग।

सकल आय प्रति एकड़: 40,000 रु.

शुद्ध आय : 25,000रु.

पते की बात

डॉ. अरुण चंदन
लेखक, क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तर भारत, जोगिंद्रनगर के क्षेत्रीय निदेशक हैं।

हाल ही में अमेरिका में एक पेटेंट स्वीकृत हुआ है, जिस के अनुसार गिलोय का उपयोग एक विधि द्वारा एड्स, फ्लू, राजयक्ष्मा(टीबी), क्षीण रोग प्रतिरोधकता के लिए किया गया है। हमारे देश में सदियों से इस का प्रयोग त्रिदोष हरने वाली, रक्तशोधक, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाली, ज्वर नाशक, खांसी मिटाने वाली प्राकृतिक औषधि के रूप में खूब उपयोग किया जाता है। हमारे देश में सदियों से इस का प्रयोग त्रिदोष हरने वाली, रक्तशोधक, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाली, ज्वर नाशक, खांसी मिटाने वाली प्राकृतिक औषधि के रूप में खूब उपयोग किया जाता है।

अमृत से कम नहीं गुणकारी गिलोय

गिलोय का काढ़ा या रस यदि प्रतिदिन सेवन किया जाए तो शरीर में रोगों से लड़ने की जोरदार ताकत आ जाती है। गिलोय यानि ग्लोयें को अमृता, गड़ूची, गुल्वेल नामों से जाना जाता है। इस के अमृत तुल्य गुणों के कारण ही अमृता भी कहा जाता है। गिलोय की एक बहुवर्षिय लता होती है। इसके पत्ते पान के पत्ते की तरह होते हैं। आयुर्वेद साहित्य में इसे जीवन्तिका नाम दिया गया है। गिलोय की लता जंगलों, खेतों की मेड़ों, पहाड़ों की चट्टानों पर सामान्यतः कुंडलाकार चढ़ती पाई जाती है। गलोये नीम, आम के वृक्ष के आस-पास भी मिलती है। जिस वृक्ष को यह अपना आधार बनाती है, उसके गुण भी इसमें समाहित रहते हैं। इस दृष्टि से नीम पर चढ़ी गिलोय श्रेष्ठ औषधि मानी जाती है। इसमें से स्थान-स्थान पर जड़ें निकलकर नीचे की ओर झूलती रहती हैं। चट्टानों अथवा खेतों की मेड़ों पर जड़ें जमीन में घुसकर अन्य लताओं को जन्म देती हैं। हिमाचल प्रदेश में गलोये बहुतायत होती है और इसे दुधारू पशुओं को चारे के साथ भी खिलाया जाता है। आयुर्वेद में बढ़ती गिलोये की मांग के चलते जोगिंद्रनगर स्थित आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान व औषध पादप बोर्ड के क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र के प्रयासों से गलोय के किसानों को फार्मेसी से जोड़ने की प्रक्रिया शुरू की गई।

वैज्ञानिक शोधों से अब यह साबित हो गया है कि यह एक श्रेष्ठ इम्मुनोमोडुलेटर औषधि है और शरीर में रोग प्रतिरोधक शक्ति को बढाती है। गिलोय में ग्लुकोसाइन, गिलो इन, गिलोइनिन, गिलोस्टेराल तथा बर्बेरिन नामक एल्केलाइड पाए जाते हैं। कहा जाता है कि देव-दानवों के युद्ध में अमृत कलश की बूंदें जहां-जहां पडी, वहां-वहां गिलोय उग गई।

यही नहीं, हाल ही में अमेरिका में एक पेटेंट(संख्या 5529778, एस रोस्तगी) स्वीकृत हुआ है, जिस के अनुसार गिलोय का उपयोग एक विधि द्वारा एड्स, फ्लू, राजयक्ष्मा(टीबी), क्षीण रोग प्रतिरोधकता के लिए किया गया है। हमारे देश में सदियों से इस का प्रयोग त्रिदोष हरने वाली, रक्तशोधक, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाली, ज्वर नाशक, खांसी मिटाने वाली प्राकृतिक औषधि के रूप में खूब उपयोग किया जाता है। टाइफायड, मलेरिया, कफ, पीलिया, यकृत निष्क्रियता, तिल्ली बढ़ना, सिफलिस, एलर्जी सहित अन्य त्वचा विकार, झाइयां, झुर्रियां, कुष्ठ आदि में गिलोय का सेवन आश्चर्यजनक परिणाम देता है।

गिलोय के तने के टुकड़ों का काढ़ा आसानी से बनाया जा सकता है। काढ़े की मात्रा एक बार में 30 मिली(चार बड़े चम्मच) दिन में दो बार लिया जा सकता है। प्रयास करें तो इस का रस भी निकाल कर उपयोग किया जा सकता। रस की मात्रा 5 मिली तक ली जा सकती है। कहते हैं काढा बनाने के लिए अंगूठे जितनी मोटी और पैर जितनी लम्बी यानि 8-10 इंच लम्बी गिलोय चार ग्लास पानी में काढ़ा बनाने के लिए काफी होती है। आधा गिलास शेष रहने पर इस का प्रयोग करना चाहिए। काढ़ा हर समय ताजा ही बनाएं तो अच्छा।

आचार्य चरक ने गिलोय को वात दोष हरने वाली श्रेष्ठ औषधि माना है। यह शरीर में इंसुलिन उत्पादन क्षमता बढ़ाती है। रोगों से लड़ने, उन्हें मिटाने और रोगी में शक्ति के संचरण में यह अपनी विशिष्ट भूमिका निभाती है। इसका नियमित प्रयोग बुखार, फ्लू, पेट कृमि, रक्त विकार, निम्न रक्तचाप, हृदय कमजोरी, मूत्र रोग, एलर्जी, उदर रोग, चर्म रोग आदि अनेक व्याधियों से बचाता है। आज के प्रदूषणयुक्त वातावरण में जीने वाले हम लोग हमेशा त्रिदोषों से ग्रसित रहते हैं। हमारा शरीर कफ,वात और पित्त द्वारा संचालित होता है। पित्त का संतुलन गडबडाने पर पीलिया, पेट के रोग जैसी कई परेशानियां सामने आती हैं। कफ का संतुलन बिगड़े तो सीने में जकड़न, बुखार आदि दिक्कतें पेश आती हैं। वायु अगर असंतुलित हो गई तो जोडों में दर्द, शरीर का टूटना,असमय बुढ़ापा जैसी चीजें झेलनी पड़ती हैं। इसी हालत में गिलोय का पांच ग्राम चूर्ण घी के साथ लीजिये। पित्त की बिमारियों में गिलोय का चार ग्राम चूर्ण चीनी या गुड के साथ खा लें तथा अगर आप कफ से संचालित किसी बीमारी से परेशान हो गए हैं तो इसे छः ग्राम की मात्र में शहद के साथ खाएं। प्रतिदिन सुबह-शाम गिलोय का रस शहद गुड या मिश्री के साथ सेवन करने से शरीर में खून की कमी दूर होती है।

सम्पादक
डॉ. अरूण चंदन

हम ऑनलाईन उपलब्ध हैं
pdf यहां से डाऊनलाड करें।
www.rcfcnorth.in/download

लेखकों से आग्रह
यदि आप विषय से संबंधित कोई लेख/अनुभव/जानकारी प्रकाशनार्थ भेजना चाहें तो निसंकोच भेजें। छपने योग्य होने पर अवश्य प्रकाशित किया जाएगा।
सम्पादक

हमसे संपर्क करें
क्षेत्रीय निदेशक / सम्पादक
ई- चरक
जड़ी- बूटी बाजार
क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र
राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड
आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान
जोगिंद्रनगर, मंडी, हिमाचल प्रदेश।
पिन : 175015
हेल्पलाईन : 8544734206
दूरभाष : 01908 222333
बैवसाइट : www.rcfcnorth.in
मेल: rcfcnorth@gmail.com

प्रयोगशाला में नाग छतरी उगाने की कोशिश

डॉ. एचसी शर्मा
लेखक डॉ. वाईएस परमार उद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी के कुलपति हैं।

नेशनल मेडिसिनल प्लांट्स बोर्ड ने नौणी विवि को नाग छतरी पर शोध और इसकी प्रजातियां विकसित करने की जिम्मेदारी सौंपी है। इसके लिए तीस लाख रुपए की परियोजना मंजूर की गई है।

हिमालय में चार हजार मीटर की ऊंचाई पर मिलने वाली दिव्य एवं दुर्लभ जड़ी-बूटी नाग छतरी (ट्रिलियम गोवाएनियम) को अब प्रयोगशाला में तैयार करने की तैयारी चल रही है। डॉ. वाईएस परमार उद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी ने इस दिव्य जड़ी- बूटी को उगाने के लिए रिसर्च चल रही है। सोलन के शिल्ली स्थित प्रयोगशाला में इस जड़ी- बूटी को विकसित करने का काम जारी है। प्रयोगशाला में नाग छतरी बूटी के लिए चंबा, शिमला या मनाली के अधिक ऊंचाई वाली जगहों जैसा कृत्रिम तापमान तैयार किया है। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने उक्त क्षेत्रों से नागछतरी के पौधे लाकर उन्हें विकसित करने का काम शुरू कर दिया है। अगले तीन साल में प्रयोगशाला में नाग छतरी को विकसित करने और इसकी पौध बचाए रखने पर वैज्ञानिक काम करते रहेंगे। इस पौधे के औषधीय गुणों को देखते हुए इसे टिशू कल्चर से विकसित कर इसकी व्यवसायिक खेती करने की कवायद के चलते इस महत्वाकांक्षी परियोजना पर काम चल रहा है। नौणी विवि में यह परियोजना केंद्र के आयुष मंत्रालय की निगरानी में चला रहा है। आयुष मंत्रालय के नेशनल मेडिसिनल प्लांट्स बोर्ड ने नौणी विवि को नाग छतरी पर शोध और इसकी प्रजातियां विकसित करने की जिम्मेदारी सौंपी है। इस शोध के लिए डॉ. वाईएस परमार उद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी को तीस लाख रुपए की परियोजना मंजूर की गई है। नाग छतरी की चीन में जबरदस्त मांग है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में नाग छतरी की कीमत लाखों रुपए प्रति किलोग्राम बताई जाती है। हिमाचल प्रदेश में नाग छतरी के दोहन पर प्रतिबंध है। विशेष मामलों में वन विभाग परमिट के आधार पर

वैज्ञानिक तरीके से नाग छतरी के दोहन की इजाजत देता है। पिछले कुछ सालों में हिमाचल प्रदेश से नाग छतरी की बड़े पैमाने पर तस्करी हुई है। प्रदेश पुलिस और वन विभाग ने ऐसे कई मामलों का पटाक्षेप किया है। तस्करी के चलते नाग छतरी का वजूद मिटने के कगार पर है। केंद्र सरकार ने नाग छतरी के पौधे को अति दुर्लभ प्रजातियों में शामिल किया है। इस औषधीय पौधे में हार्मोन में गड़बड़ी रोकने, अल्सर व डायरिया को ठीक करने करने सही कई अन्य रोगों को दूर करने की क्षमता है। दवा उद्योग में इस चमत्कारी पौधे की बढ़ती मांग के चलते इस पौधे के वजूद पर छाए संकट को दूर करने के लिए अब टिशू कल्चर से इस पौधे को बचाने की पहल हुई है। अगर प्रयोगशाला में इस पौधे को विकसित करने के प्रयास सफल रहते हैं तो न केवल दवा उद्योग की मांग को पूरा करने में आसानी होगी, बल्कि प्राकृतिक रूप से पैदा होने वाले नाग छतरी पौधे का अवैध दोहन भी कम होगा। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को विश्वास है कि अपने वजूद को बचाने के संकट से जूझ रहे इस पौधे को प्रयोगशाला में विकसित करने के प्रयास सफल होंगे।

ऊना, हमीरपुर, कुल्लू, कांगड़ा, मंडी, सोलन, बिलासपुर व सिरमौर जिलों में खेती की संभावनाएं

अश्वगंधा की हरियाली से आए खुशहाली

अश्वगंधा -

उत्पति व वितरण : इसकी खेती समुद्रतल से 1400 मी. से नीचे वाले क्षेत्रों में की जा सकती है। हिमाचल प्रदेश में यह पौधा ऊना, हमीरपुर, कुल्लू, कांगड़ा, मंडी, सोलन, बिलासपुर व सिरमौर जिलों में उगाया जा सकता है।

प्रयोग अंग : जड़

बीज प्रति एकड़ : 7-8 किग्रा. बीज एक हेक्टेयर के लिए पर्याप्त होता है।

रोपाई : जून- जुलाई नर्सरी के दो महीने बाद।

अंतराल : पौधों को 4- 6 इंच दूरी पर प्रत्यारोपित किया जाता है

फसल अवधि : बीज के माध्यम से 5 से 6 महीने।

उपज : 250/300 कि. ग्रा. प्रति एकड़।

दर : 80 रु. प्रति कि. ग्रा.।

खेती की लागत :12,100 रु. प्रति एकड़।

शुद्ध आय : 7,900-11,900 रु.

आरसीएफसी फीचर सर्विस

अश्वगंधा झाड़ीदार रोमयुक्त पौधा है। यह बहुवर्षीय पौधा पौष्टिक जड़ों से युक्त है। अश्वगंधा के बीज, फल व छाल का विभिन्न रोगों के उपचार में प्रयोग किया जाता है। अश्वगंधा की कच्ची जड़ से अश्व जैसी गंध आती है। सूख जाने पर अश्वगंधा की गंध कम हो जाती है। अश्वगंधा भारत के पश्चिमोत्तर भाग, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब तथा हिमाचल प्रदेश में 5000 फुट की ऊंचाई तक पाई जाती है। अश्वगंधा उन स्थानों पर भी उग आती है, जहां अन्य वनौषधियां नहीं उग पातीं।

झाड़ीदार होता है अश्वगंधा का पौधा

अश्वगंधा का पौधा झाड़ीदार होता है, जो एक से चार फुट ऊंचा तथा बहुशाखीय होता है। इसकी शाखाएं गोलाकार रूप में चारों ओर फैली रहती हैं। अश्वगंधा के पत्र जोड़े में अखंडित अंडाकार पांच से दस सेंटीमीटर लंबे तथा तीन से पांच सेंटीमीटर चौड़े होते हैं। इसका डंठल बहुत ही छोटा होता है। अश्वगंधा के फूल छोटे-छोटे कुछ लंबे, कुछ पीला व हरापन लिए चिलम के आकार के होते हैं। फूल शाखाओं के अग्र भाग पर खिलते हैं। इन पर भी डंठल के समान सफ़ेद रंग के छोटे-छोटे रोम होते हैं। फल छोटे-छोटे, गोल मटर के फल के समान पहले हरे फिर लाल रंग के हो जाते हैं। अश्वगंधा के फल के अंदर श्वेत असंख्य बीज होते हैं। इन्हें यदि दूध में डाल दिया जाए तो वे उसे जमा भी देते हैं। इसकी झाड़ी चार से आठ इंच लंबी, ऊपर से मटमैली, अंदर से सफेद और शंकू आकार की होती है। यह नीचे से मोटी ऊपर से पतली, गोल व चिकनी होती है। बरसात में बीज बोये जाते हैं तथा जाड़े में फसल निकाली जाती है।

जड़ में होते हैं कई एल्केलाइड्स

अश्वगंधा की जड़ में कई एल्केलाइड्स पाए गए हैं। इनमें कुस्कोहाइग्रीन, एनाहाइग्रीन, ट्रोपीन, स्युडोट्रोपीन, ऐनाफेरीन, आईसोपेलीन, टोरीन और तीन प्रकार के ट्रोपिलीटग्लोएट शामिल हैं। इनकी मात्रा 0.13 से 0.31 प्रतिशत तक होती है। इसके अलावा जड़ में स्टार्च, शर्करा, ग्लाइकोमाइड्स-हेंट्रियाकाल्टेन तथा अलसिटॉल व विदनाल पाए जाते हैं। इसमें बहुत से अमीनो अम्ल जैसे एस्पार्टिक अम्ल, ग्लाइसिन आयरोसिन, एलेनिन, प्रोलीन, ट्रिप्योफैन, ग्लूटेमिक अम्ल एवं सिस्टीन पाए जाते हैं। अश्वगंधा की पत्तियों में विदानोलाइड परिवार के पदार्थ पाए जाते हैं। पत्तियों में एल्केलाइड्स, ग्लाकोसाइड्स, ग्लूकोस एवं मुक्त अमीनो अम्ल पाए जाते हैं। इसके तने में प्रोटीन बहुतायत पाए जाते हैं। इनमें रेशा बहुत कम तथा कैल्शियम व फ़ॉस्फ़ोरस प्रचुर मात्रा में होते हैं। फलों में प्रोटीनों को पचाने वाला एन्जाइम कैमेस भी उपस्थित होता है।

बड़ी बलवर्धक है अश्वगंधा

अश्वगंधा कशकाय रोगियों, सूखा रोग से ग्रस्त बच्चों व व्याधि उपरांत कमज़ोरी में, शारीरिक व मानसिक थकान में पुष्टिकारक बलवर्धक के नाते प्रयुक्त होती रही है। कुपोषण, बुढ़ापे व मांसपेशियों की कमज़ोरी और थकान जैसे रोगों में अश्वगंधा बहुत काम का औषधीय पौधा है। अश्वगंधा के लगातार सेवन करने से शरीर से सारे विकार बाहर निकल जाते हैं। अश्वगंधा को आयुर्वेद में पुरातन काल से ही वीर्यवर्धक, शरीर में ओज और कांति लाने वाले, परम पौष्टिक व सर्वांग शक्ति देने वाली, क्षय रोगनाशक, रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ाने वाली एवं वृद्धावस्था को दूर रखने वाली सर्वोत्तम वनौषधि माना है। यह वायु एवं कफ के विकारों को नाश करने वाली खुजली, व्रण, आमवात आदि नाशक है।

हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर, ऊना, सोलन, कांगड़ा और हमीरपुर जिलों में उगाई जा सकती है सर्पगंधा

सर्पगंधा उगाई तो समझिए चोखी कमाई

आरसीएफसी फीचर सर्विस

सर्पगंधा एक महत्वपूर्ण औषधि है, जो आधुनिक और आयुर्वेदिक दवाइयां बनाने के लिए प्रयोग की जाती है। इसकी जड़ें सुगन्धित होती हैं, लेकिन स्वाद में कड़वी होती हैं। इसे लाल लैटेराइट दोमट से रेतली जलोढ़ मिट्टी में उगाया जा सकता है। यह नमी और नाइट्रोजन युक्त मिट्टी, जिसमें जैविक तत्व मौजूद हों और अच्छे जल निकास वाली हो, में उगाने पर अच्छे परिणाम देती है। यह चिकनी और चिकनी दोमट मिट्टी में भी उगाई जा सकती है। यह भारतीय वनौषधि है। आयुर्वेद में इसका उल्लेख सर्पगन्धा, सुगन्धा, महासुगन्धा, नाकुली, सर्पाक्षी, नागगन्धा, अहिलता आदि अनेक नामों से मिलता है। यह रूखी, कड़वी, कसैली, गरम, तेज, चटपटी, कृमिनाशक, त्रिदोषशामक और सर्प व बिच्छू के विष को नष्ट करने वाली वनौषधि है। यह निद्रा लाने वाली, मस्तिष्क की उत्तेजना को शान्त करने वाली तथा उन्माद रोग की उत्तेजित अवस्था को शान्त करने वाली है। लोक व्यवहार में सर्पगंधा 'पागलपन की दवा' के नाम से प्रसिद्ध है। सर्पगंधा एक महत्वपूर्ण औषधीय वनस्पति है, इसलिए इसका संरक्षण आज समय की मांग है। इसके प्राकृतिक आवास का संरक्षण अति आवश्यक है एक तरफ प्राकृतिक आवास को सिकुड़ने से रोका जाना जरूरी है, वहीं आधुनिक तकनीक का उपयोग कर इसके कृषिकरण के लिए किसानों को प्रेरित, प्रोत्साहित करने की जरूरत है।

एक झाड़ी वाला पौधा सर्पगंधा

यह एक झाड़ी वाला पौधा है, जिसकी औसतन ऊंचाई 0.3-1.6 मीटर है। इसका तना मोटी छाल से ढका रहता है। इसके पत्ते लम्बाकार होते है, जिनकी लम्बाई 8-15 सें.मी. होती हैं। इसके फूल सफेद या गुलाबी, फल जामुनी काले रंग के और जड़ें 0.5-3.6 सें.मी. तक व्यास की होती हैं। इसकी प्रधान जड़ प्रायः 20 से.मी. तक लम्बी होती है। इसकी जड़ में कोई शाखा नहीं होती है।

जड़ों की छाल है गुणकारी

सर्पगन्धा में रिसार्पिन तथा राउलफिन नामक उपक्षार पाया जाता है। इसकी जड़ में क्षारीय पदार्थ, स्टार्च, रेजिन तथा कुछ लवण पाए जाते हैं। इसकी जड़ से कई तत्व जैसे क्षाराभ रिसरपिन, सर्पेन्टिन, एजमेलिसिन निकलते हैं। इसमें 1.7 से 3.0 प्रतिशत तक क्षाराभ पाए जाते हैं, जिनमें रिसरपिन प्रमुख हैं। सर्पगंधा की जड़ में 55 से भी ज्यादा क्षार पाये जाते हैं। लगभग 80 प्रतिशत क्षार जड़ों की छाल में केन्द्रित होते हैं। सर्पगंधा के पौधे की जड़ों में उपस्थित अजमेलीन, सर्पेन्टीन तथा सर्पेन्टीनीन क्षार केन्द्रीय वात नाड़ी संस्थान को उत्तेजित करते हैं। इसमें सर्पेन्टीन अधिक प्रभावशाली होता है। सर्पगंधा में मद्यसारीय सत्व में शामक तथा निद्राकर गुण होते हैं। कुछ क्षार हृदय, रक्तवाहिनी तथा रक्तवाहिनी नियंत्रक केंद्र के लिए अवसादक होते हैं।

प्रभावी विषनाशक है सर्पगंधा

सर्पगंधा की जड़ें रिक्त पौष्टिक, ज्वरहर, निद्राकर, शामक, गर्भाशय उत्तेजक तथा विषहर होती हैं। प्राचीन काल से सर्पगंधा की जड़ों का उपयोग प्रभावी विषनाशक के रूप में सर्पदंश तथा कीटदंश के उपचार में होता आया है। पारंपरिक चिकित्सा पद्धति में सर्पगंधा की जड़ों का उपयोग उच्च रक्तचाप, ज्वर, वातातिसार, अतिसार, अनिद्रा, उदरशूल व हैजा आदि के उपचार में होता है। इसी जड़ का रस अथवा अर्क उच्च रक्तचाप की बहुमूल्य औषधि है। अर्क का उपयोग फोड़े- फुन्सियों के उपचार में भी होता है। हिस्टीरीया, मिर्गी, घबराहट, मानसिक विकार तथा पागलपन के उपचार में भी सर्पगंधा की जड़ों का प्रयोग किया जाता है। सर्पगंधा की पत्तियों का रस नेत्र ज्योति बढ़ाने के लिए किया जाता है। इसका उपयोग सोरेसिस तथा खुजली के उपचार में भी किया जाता है। उच्च रक्तचाप को कम करने, घाव भरने, बुखार, पेट का दर्द, अनिद्रा व मिर्गी रोग में सर्पगंधा काम आता है। सर्प के काटने के अलावा इसे बिच्छू के काटने के स्थान पर भी लगाने से राहत मिलती है। आज सर्पगंधा से बनी सर्पगन्धा टेबलेट और सर्पगन्धा वटी, सर्पगन्धादि गुटिका, सर्पगन्धाघनवटी, स्लीपिल्स टेबलेट, सर्पगन्धावटी जैसी दवाईयां उपलब्ध है, जो विभिन्न प्रकार के रोगों के उपचार के लिए प्रयोग की जा रही हैं। दवा उत्पादन के लिए सर्पगंधा की मांग बढ़ती जा रही है।

सर्पगंधा-

उत्पति व वितरण : इसकी खेती के लिए समुद्रतल से 1800 से 2500 मी. की ऊंचाई अनुकूल है। हिमाचल प्रदेश में यह पौधा बिलासपुर, ऊना, सोलन, कांगड़ा और हमीरपुर जिलों में उगाया जा सकता है।

प्रयोग अंग : जड़

बीज दर प्रति एकड़ : 1-1.25 कि.ग्रा. प्रति एकड़ भूमि के लिए पर्याप्त होता है।

रोपाई : छायादार क्षेत्रों में मार्च- अप्रैल में धूप वाले क्षेत्रों में जुलाई- अक्तूबर में।

अंतराल : पौधों को 40- 40 से.मी. दूरी पर प्रत्यारोपित किया जाता है।

फसल अवधि : बीज के माध्यम से 3 से 4 वर्ष और कलम के माध्यम से 2 से 3 वर्ष।

उपज : 300 कि.ग्रा. प्रति एकड़।

दर : 900 रु. प्रति कि.ग्रा.

सकल आय : 2,70,000 रु. प्रति एकड़ तीन वर्ष के बाद

खेती की लागत : 30,250.00 रु. प्रति एकड़।

शुद्ध आय : 2,39,750 रु. एकड़/(2.5 वर्ष के बाद)

95,000 रु. एकड़ प्रति वर्ष।

कृषिकरण

www.rcfcnorth.in

जड़ी-बूटी बाजार

1 नवंबर से 30 नवंबर 2018

चंबा, कुल्लू, शिमला, कांगड़ा और मंडी जिले के ऊपरी इलाकों में अतीस की खेती की संभावनाएं

अतीस की खेती की नहीं कोई रीस

आरसीएफसी फीचर सर्विस

अतीस उष्णवीर्य, कटु व तिक्त रसयुक्त, पाचक, अग्निदीपक है तथा कफ, पित्त, अतिसार,

विष, खांसी, वमन और कृमि जैसी व्याधियों को दूर करने वाली है। यह 2-3 फीट ऊंचा पौधा होता है। यह पश्चिमोत्तर हिमालय में 6 हजार फुट से से15 हजार फुट ऊंची चोटियों पर पाया जाता है। इसकी जड़ी त्रिदोष शामक है। कुटकी अत्यंत कड़वी होने के कारण कफ और पित्त, जबकि उष्ण होने के चलते वात का शमन करने वाली है। अपने गुणों के कारण यह दीपन, पाचन ग्राही, अर्शनाशक, कृमिनाशक, आम पाचन, रक्त शोधन कार्य करने वाली होती है। हिमालय की दिव्य जड़ी बूटियों में अतीस का खास स्थान है। अतीस भोजन को पचाती है, धातु को बढ़ती है, दस्त को बंद करती है, कफ को नष्ट करती है और वायु का नाश करके जलोदर और बवासीर में लाभ करती है। अतीस पित्तज्वर व खांसी में भी लाभदायक है। अतीस विषनाशक भी है।

बुखार में उत्तम औषधि

बच्चों के बुखार में अतीस एक उत्तम औषधि है। छोटे बालकों की दवाइयों में इसका उपयोग बहुत होता है। बालकों की घुटी (बालघुटी) में अतीस एक मुख्य औषधि है। इस बूटी की विशेषता यह है कि यह विष वत्सनाभ कुल की होने पर भी विषैली नहीं है। इसके ताजे पौधों का जहरीला अंश केवल अतिसूक्ष्म जीव- जन्तुओं के लिए प्राणघातक है। इसका विषनाशक प्रभाव भी इसके सूख जाने पर अधिकांशतः उड़ जाता है। छोटे बच्चों को बुखार में यह निर्भयता से दी जा सकती है।

कई नामों से मशहूर औषधि

भारत का हर हिस्सा इस चमत्कारी औषधि से परिचित है। इसे संस्कृत में अतिविषा या भंगुरा, बंगाली में आतीच, तेलगू में अतिवस, मराठी में अतिविस, मारवाड़ी व पंजाबी में अतीस व गुजराती में अतवस कहते हैं। अतीस का वैज्ञानिक नाम Aconitum heterophyllum है। कुल्लू के ऊपरी हिस्सों में अतीस की खेती के लिए पहल हुई है। चंबा, कुल्लू, शिमला, कांगड़ा और मंडी जिले के ऊपरी इलाकों में खेती की संभावनाएं हैं।

अतीस के पौधे की पहचान

अतीस के पौधे 1-4 फुट ऊंचे, शाखाएं चपटी होती हैं। एक पौधे में एक ही तना होता है, जिस पर अनेक पत्तियां लगी होती हैं। निचले भाग में पत्ते सवृन्त, तश्तरी नुमा, 2-4 इंच लम्बे गोल तथा 5 खंडों से युक्त होते हैं। इसके फूल चमकीले नीले या हरित नीले और देखने में फन के आकार की टोपी की तरह होते हैं। इन पर बैगनी रंग की शिरायें होती हैं। इसका मूल द्विवर्षायु होता है, जिनमें एक नया और एक पुराना, दो कन्द होते हैं। औषधियों के लिए इन्ही कन्दाकार जड़ों का प्रयोग होता है।

कंद है बड़े काम का

अतीस की जड़ अथवा कन्द को खोदकर निकाल लिया जाता है, उसी को अतीस कहते हैं। कन्द का रंग भूरा और स्वाद कुछ कषैला होता है। इसकी तीन जातियां हैं- काली, सफेद और पीली। औषधियों में सफेद रंग की अतीस का ही उपयोग होता है। अतीस में अतिसीन नामक एमारुस ऐल्केलाइड पाया जाता है, जो स्वाद में अत्यंत तीखा होता है। इसके अलावा एकोनीटिक एसिड, टेनिक एसिड, पेक्टस, स्टार्च, वसा तथा शर्करा भी पाई जाती है।

अतीस

उत्पति व वितरण : अतीस की खेती समुद्र तल से 3000 मीटर से 4500 मीटर की ऊंचाई वाले क्षेत्रों में की जा सकती है। हिमाचल प्रदेश में यह पौधा चंबा, कुल्लू, शिमला, कांगड़ा और मंडी जिले के ऊपरी इलाकों में पाया जाता है।

प्रयोग अंग : प्रकंद।

बीज प्रति एकड़ : 400 ग्राम बीज।

रोपाई : फरवरी- मार्च में।

अंतराल : पौधों को 30- 30 सें.मी. दूरी पर प्रत्यारोपित किया जाता है।

फसल अवधि : कंद द्वारा 3 से 4 साल और बीज द्वारा 4 से 5 साल।

उपज : 120 किलोग्राम जड़ें प्रति एकड़।

दर : 4000.00 रु. प्रति किलो।

सकल आय : 4.8 लाख रु.प्रति एकड़ (5 साल के बाद)।

खेती की लागत : 53,240.00 रु.।

शुद्ध आय : 4,26,760,00 रु. (5 वर्ष के बाद)

शुद्ध आया : 85,352 रु. प्रति वर्ष।

चंबा, कुल्लू, शिमला, कांगड़ा, लाहौल- स्पीति, किन्नौर व मंडी के ऊपरी क्षेत्रों में हो सकता है कुटकी उत्पादन

चलो कुटकी उगाएं, बढ़िया दाम पाएं

कुटकी

उत्पति व वितरण : कुटकी की खेती समुद्रतल से 3000 मीटर से 4500 मीटर की ऊंचाई वाले क्षेत्रों में की जा सकती है। हिमाचल प्रदेश में यह पौधा चंबा, कुल्लू, शिमला, कांगड़ा, लाहौल- स्पीति, किन्नौर व मंडी के ऊपरी क्षेत्र में उगाया जा सकता है।

प्रयोग अंग : जड़ें/ कंद।

बीज प्रति एकड़ : 25-30 ग्राम बीज एक एकड़ के लिए प्रर्याप्त है।

रोपाई : जून नर्सरी के दो माह बाद।

अंतराल : कुटकी के पौधों को 15-15 सें.मी. दूरी पर प्रत्यारोपित किया जाता है।

फ्सल अवधि : जड़ों द्वारा 2 से 3 साल और बीज द्वारा 3 से 4 साल।

उपजः 375 किलोग्राम जड़ें प्रति एकड़ प्राप्त होती हैं।

दरः 1000. रु.प्रति किलो।

सकल आय : 3,75,000. रु. प्रति एकड़।

खेती की लागतः 53,450.रु.

शुद्ध आय : 3,20,550.रु.

(3 साल के बाद) 1,06,850. रु.प्रति वर्ष।

आरसीएफसी फीचर सर्विस

कुटकी ऊपरी हिमालयी क्षेत्रों में पैदा होने वाला एक छोटा पौधा है। आयुर्वेद में इस पौधे का नाम इसके कड़वे स्वाद के कारण कटिका है। यकृत विकार में इसकी जड़ का प्रयोग सदियों से होता आ रहा है। वर्तमान में इस पौधे का प्रयोग यकृत विकर, मधुमेह, श्वास रोग, गुर्दा रोग व हृदय रोग के उपचार में किया जाता है। भूख कम लगना, कब्ज रहना और पेट में गैस बनने के रोग में भी इस औषधि का प्रयोग किया जाता है। कुटकी में कई महत्वपूर्ण फाइटोकेमिकल होते हैं। दवा उद्योग में कुटकी की बढ़ती मांग के चलते इस औषधीय पौधे के कृषिकरण पर जोर दिया जा रहा है।

कुटकी के पौधे की पहचान

कुटकी के पत्ते 2-4 इंच लंबे, अंडाकार, जड़ की अपेक्षा आगे की ओर कुछ चौड़े, चिकने और झालरदार होते हैं। पौधे के बीच से निकले डंठल पर नीले या सफेद रंग के अनेक फूल लगते हैं। कुटकी के फल आकार और रंग में कुछ जौ से मिलते-जुलते होते हैं। कुटकी छोटा कड़वा, बारहमासी बहुवर्षीय पौधा है। इसका तना छोटा, कमजोर तथा रेंगनेवाला सीधा, टहनियों पर फूलवाला और थोड़ा सा बालों वाला होता है। कुटकी की जड़ बहुत कड़वी होती है। जड़ 6-7 इंच तक लंबी, अंगुली की तरह मोटी, खुरदरी, सूक्ष्म ग्रन्थियुक्त और भूरे रंग की होती है।

कश्मीर से सिक्किम तक पैदावार

कुटकी का औषधि के तौर पर सारे भारत में प्रयोग होता है। कुटकी को संस्कृत में तिक्त, बंगला में कटकी, मराठी में काली कुटकी, गुजराती में कडू, तमिल में डुगुरोहिणी और तेलुगु में कटुकी तथा लैटिन में पिक्राराईजाकुरो कहा जाता हैं। यह हिमालय पर 3000 मीटर से 4500 मीटर की ऊंचाई पर कश्मीर से सिक्किम तक पैदा होती हैं।

स्वाद में कड़वी होती है कुटकी

कुटकी स्वाद में कड़वी, पचने पर कटु तथा रूखी, हल्की और शीतल है। इसका मुख्य प्रभाव पाचन संस्थान पर भेदक (दस्त लाने वाला) व विरेचक रूप में पड़ता है। यह अग्निदीपक , यकृत उत्तेजक, हृदय-बलदायक, रक्तशोधक, ब्लडप्रेशर बढ़ाने वाला, स्त्री दुग्ध शोधक , कटु-पौष्टिक, दाहशामक व ज्वरहर है। इसकी जड़ में एक कड़वा सत्तव पिक्रोराइजिन 15 प्रतिशत, कीकेथर्टिक एसिड 9 फीसदी तथा ग्लूकोज व मोम आदि पदार्थ होते हैं।

बड़े काम की है कुटकी की जड़

कुटकी कई रोगों की अचूक दवा है। सफेद दाद, मासिक धर्म में होने वाले दर्द, एक्जिमा, गठिया रोग, पित्तज्वर, हृदय-रोग, यकृत विकार, उदर-कृमि, जलोदर व उल्टी के उपचार में कुटकी महत्वपूर्ण औषधि है।

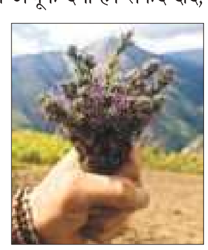

कुटकी महोत्सव का आयोजन

उत्तराखंड में कुटकी की खेती के लिए किसान आगे आए हैं। इस बार घेस गांव में कुटकी महोत्सव का आयोजन किया गया। युवा एवं ग्रामीण विकास केंद्र नारायण कुटकी की खेती में अहम भूमिका अदा कर रहा हे। घेस गांव के 150 किसान कुटकी की खेती कर रहे हैं। हिमाचल प्रदेश में भी कुटकी की खेती की असीम संभावनाएं है।

कृषिकरण

www.rcfcnorth.in
जड़ी-बूटी बाजार
1 नवंबर से 30 नवंबर 2018

लाहौल स्पीति, किन्नौर व कांगड़ा के बड़ा भंगाल में हैं कुठ की व्यवसायिक खेती की अपार सभावनाएं

कुठ का कमाल, कर देगा मालामाल

आरसीएफसी फीचर सर्विस

हिमालय की दिव्य वनस्पतियों में कुठ एक अहम दिव्य औषधि है। कुठ के पत्ते अत्याधिक बड़े और काफी चौड़े होते हैं। इसके फूल नीले-बैंगनी और गोलाकर तथा दानेनुमां होते हैं। ये अढ़ाई से चार सें.मी. व्यास के अनेक गुच्छों में लगते हैं। कुठ के फल आठ मि.मी लंबे होते हैं। कुठ का पुष्पकाल और फलकाल अगस्त से अक्तूबर तक होता है। यह एक सीधा बहुवर्षीय पौधा होता है जिसकी जड़ों की लम्बाई 60 सेंटीमीटर तक होती है। यह पौधा हिमालय शीतोष्ण एवं हिमाद्री क्षेत्र में 2000-3500 मीटर तक जल स्त्रोतों के नजदीक पैदा होता है। कुठ की तासीर गर्म होती है और यह चरपरा और स्वादिष्ट होता है। अगर कुठ की जड़ आसानी से टूट जाए तो समझो कुठ असली है। वर्तमान में कुठ को जम्मू- कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में व्यवसायिक तौर पर उगाया जा रहा है। कुठ की जड़ का प्रयोग कई तरह की दवाईयां बनाने में होता हैं। इस दिव्य जड़ी का प्रयोग आयुर्वेद के अलावा युनानी चिकित्सा में भी खूब हो रहा है।

कामोदीपक है कुठ

कुठ को आयुर्वेद के प्राचीन ग्रंथों में कामोदीपक माना गया है। इसके पाउडर को तेल अथवा मक्खन में मिलाकर मालिश करने से रक्त संचार बढ़ जाता है। कुठ का प्रयोग पेट के विकारों को दूर करने में किया जाता है। इसके पत्ते को पीस कर लगाने से एग्जिमा के रोगियों को राहत मिलती है। सर्दी, खांसी और बुखार में भी कुठ गुणकारी है। सफेद वालों को काला करने, शरीर की सूजन और दर्द को ठीक करने, बेरी- बेरी के उपचार और गठिया रोग को दूर करने में भी कुठ रामबाण औषधि है। कुठ पांचन तंत्र को मजबूत करती है और प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाती है। कुठ का प्रयोग कुष्ठ रोगियों के उपचार तथा अस्थमा व श्वास के रोगियों के लिए भी होता है। कैंसर और पक्षघात के रोगी भी कुठ का प्रयोग कर सकते हैं। इसके प्रयोग से इन बिमारियों से लड़ने के लिए रोगियों को ताकत मिलती है। पेट में कीड़े पड़ने पर कुठ का प्रयोग करना लाभकारी होता है, जबकि ज्वर और दमा के रोगियों के लिए भी कुठ बहुत गुणकारी औषधि है।

प्रचुर मात्रा में पौष्टिक तत्व

कुठ मीठी और कड़वी दोनों प्रकार की होती है। कड़वी कुठ में खास प्रकार की सुगंध होती है। कुठ की जड़ों में कई मिनरल, विटामिन, एंटी ऑक्सीडेंट तथा डाइवेटिक जैसे बेहद फायदेमंद पौष्टिक तत्व प्रचुर मात्रा में होते हैं।

हिमाचल से निर्यात होती कुठ

कहा जाता है कि लाहुल घाटी में वर्ष 1925 से कुठ उगाया जा रहा है। वर्तमान में लाहौल घाटी के अलावा किन्नौर और कुल्लू घाटी में कुठ की खेती की जा रही है। हालांकि पहले लाहुल में बड़े पैमाने पर होती थी, लेंकिन अब कुछ सालों से किसान कुठ की खेती से विमुख होते जा रहे हैं, जिसके चलते इसका कृषिक्षेत्र और उत्पादन दोनों कम होते जा रहे हैं। बावजूद इसके अब भी हिमाचल प्रदेश से कुठ की सूखी जड़ों का निर्यात हो रहा है। आयुष मिशन के तहत हिमाचल प्रदेश व उत्तराखंड में कुठ के कृषिकरण पर जोर दिया जा रहा है और किसान बड़े पैमाने पर कुठ की खेती के लिए आगे आ रहे हैं।

कुठ

उत्पति व वितरण : इसकी खेती के लिए समुद्रतल से 2000 से 3500 मीटर की ऊंचाई अनुकूल है। हिमाचल प्रदेश में यह पौधा सिरमौर जिले के शीतोश्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में प्राकृतिक रुप से उगता है। किन्नौर, लाहौल स्पीति व कांगड़ा के बड़ा भंगाल में इसकी खेती की जा सकती है।
प्रयोग अंगः जड़
बीज प्रति एकड़ : 1500 ग्राम बीज एक एकड़ भूमि के लिए पर्याप्त होता है।
रोपाई : अप्रैल व मई।
अंतराल : पौधों को 60- 60 सें.मी. दूरी पर प्रत्यारोपित किया जाता है।
फसल अवधि : 2 साल 3 महीने के रोपण के बाद।
उपज : 1400 किलोग्राम सूखी जड़ें
दर : 240.00 रु. प्रति किलो (सूखी जड़ें)।
सकल आय : 3,36,000 रु. प्रति एकड़।
खेती की लागत : 42,350.00 रु.।
शुद्ध आय : 3,93,650 रु. एकड़ (2.5 वर्ष के बाद)
शुद्ध आय : 1,17,460 रु प्रति वर्ष।

चम्बा, कुल्लू, शिमला, सिरमौर, कांगड़ा और मंडी जिलों के ऊपरी भागों में उगाया जा सकता है सुगंधबाला

सुगंधबाला की खेती से जीवन में महक

सुगंधवाला

उत्पति व वितरण : इसकी खेती के लिए समुद्रतल से 1500 से 4000 मीटर की ऊंचाई पर हो सकती है। यह हिमाचल के ठंडे क्षेत्र चंबा, कुल्लू, शिमला, सिरमौर, कांगड़ा और मंडी के ऊपरी भागों में पाया जाता है।
प्रयोग अंग : जड़/ कंदमूल।
बीज प्रति एकड़ : 300- 350 ग्राम बीज एक एकड़ भूमि के लिए पर्याप्त होता है।
रोपाई : जून (पौधा तैयार करने के दो माह बाद)।
अंतराल : पौधों को 30- 30 सें.मी. दूरी पर प्रत्यारोपित किया जाता है
फसल अवधि : बीज के माध्यम से 3 से 4 वर्ष व कलम के माध्यम से 2-3 वर्ष।
उपज : प्रति एकड़ 800 किलोग्राम।
दर : 100 रु. प्रति किलोग्राम।
सकल आय : 80,000 रु. प्रति एकड़ तीन वर्ष के बाद।
खेती की लागत : 24,000.रु. एकड़।
शुद्ध आय : 56,000.रु. प्रति एकड़ तीन साल बाद।

आरसीएफसी फीचर सर्विस

कॉस्मेटिक और आयुर्वेद के ग्लोबल बाजार में बढ़ती सुगंधबाला की मांग के चलते आयुष मिशन के तहत इस जड़ी- बूटी के कृषिकरण के लिए औषध पादप बोर्ड की ओर से किसानों को उदार अनुदान दिया जा रहा है। भौगोलिक दृष्टि और जलवायु के लिहाज से हिमाचल प्रदेश का लगभग आधा भाग सुगंधबाला की खेती के लिए अनुकूल है। इतना ही नहीं, हिमाचल प्रदेश में पैदा होने वाला सुगंधबाला गुणवता की दृष्टि से सबसे उत्तम पाया गया है। बाजार में सुगंधबाला के तेल के अच्छे दाम मिल रहे हैं। यही वजह है कि औषध पादप बोर्ड और आयुर्वेद विभाग प्रदेश के किसानों को सुगंधबाला की खेती के लिए प्रोत्साहित कर रहा है।

पश्चिमोतर प्रदेशों में पैदावार

सुगंधबाला का पौधा भारत में भी पश्चिमोतर प्रदेशों में अधिक देखने को मिलता है। समुद्र तल से 1500 मीटर से 4000 मीटर की ऊंचाई वाले जंगलो में इसका वितरण अधिक मिलता है। इसका पौधा मध्यम आकार का होता है और तीक्ष्ण रोयों से अच्छादित रहता है। इसकी पत्तियां हृदय की आकृति की होती हैं, जो 3 से 5 भागों में विभक्त रहती हैं। इनकी लंबाई 4 से 6 सेमी. होती है। सुगंधवाला के पत्तों की चौड़ाई 5 से 7 सेंटीमीटर होती है। सुगंधबाला के फूल गुलाबी रंग के होते है। ये पुष्प गुच्छो में पतियों से अलग लगते है और शाखाओं के अंत तक फैले हुए होते है। इनकी आकृति सिपल्स जैसी होती है, जो 5 से 6 की पुष्प पंखुडियो में विभक्त रहते है। सुगंधवाला के फल अंडाकार आकृति के कुछ चिकने होते हैं।

जड़ में होता है सुगंधित तेल

आयुर्वेद में सुगंधवाला की जड़ का उपयोग किया जाता है। इसके मूल में एक प्रकार का सुगन्धित तेल बलेरियन पाया जाता है। इसी कारण से इसे सुगंधवाला कहा जाता है। इस सुगन्धित द्रव्य के साथ एक सत्व भी मिलता है। सुगंधवाला का रस तिक्त एवं कषाय होता है एवं इसके गुण रुक्ष और लघु होते है। सुगंधवाला शीत वीर्य की होती है एवं पचने पर इसका विपाक मधुर होता है। यह वनौषधि त्रिदोषशामक होती है। शीत वीर्य होने के कारण दाह और प्रशमन में उपयोगी है। गुणों में रक्ष और लघु होने के कारण रक्तपित्त और सर्दी में प्रभावी औषधि है। सुगंधवाला वमन, अतिसार, रक्तपित्त और हृदयरोगों में भी प्रभावी है। पिछले कुछ समय से आयुर्वेद दवा निर्माण के क्षेत्र में सुगंधबाला का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। दवा उद्योग में बढ़ती मांग के चलते सुगंधवाला की व्यवसायिक खेती के प्रयास तेज हो रहे हैं और किसान खेती के लिए आगे आ रहे हैं।

गुणवता में टॉप चंबा का सुगंधवाला

गुणवता में चंबा जिला के भांदल और संघणी क्षेत्र में पाया जाने वाला सुगंधवाला देश में सर्वोत्तम आंका गया है। सुगंधवाला से निकलने वाले बलेरियन ऑयल की अंतरराष्ट्रीय बाजार में खासी कीमत है। परफ्यूम और कॉस्मेटिक उद्योग में सुगंधवाला के तेल की खासी मांग है। सुगंधवाला का उत्पाद तीन वर्ष में एक बार लिया जा सकता है। हिमाचल प्रदेश में सबसे पहले सुगंधवाला की व्यवसायिक खेती करने की शुरूआत गोल्डन ग्रीन परियोजना के तहत चंबा जिला से हो चुकी है। कुल्लू, शिमला, सिरमौर, मंडी और कांगड़ा जिलों के ऊपरी हिस्सों में सुगंधवाला की खेती की अपार संभावनाएं हैं।

राज्य औषधी पादप बोर्ड, आयुर्वेद विभाग हिमाचल प्रदेश

राष्ट्रीय आयुष मिशन के अंतर्गत औषधीय पौधों की खेती सबंधी प्रार्थना पत्र

सेवा में
निदेशक एवं सदस्य सचिव महोदय
हिमाचल प्रदेश औषधी पादप बोर्ड
आयुर्वेद विभाग हिमाचल प्रदेश, शिमला-9

विषय: औषधीय पौधों की खेती संबंधी आवेदन

महोदय,
मैं जड़ी बूटियों की खेती करना चाहता हूं, मेरा विवरण इस प्रकार है:

नाम	
पिता का नाम पूरा पता पिन कोड	
ग्राम पंचायत	
मोबाइल नबर	
पटवार सर्कल का नाम	
कितनी भूमि पर खेती करना चाहते हैं (बीघा/कनाल/हेक्टर), बीज, पौधे कहाँ से लेने हैं?	
खसरा नबर जिसमे खेती की जानी है (पर्चा, ततीमा लगायें)	
कितनी भूमि पर खेती करना चाहते हैं बीघा/कनाल/हेक्टेयर (बीज, पौधे कहां से लेने हैं)	
खसरा नबर जिसमे खेती की जानी है (पर्चा, ततीमा लगायें)	
समूह में अन्य किसानों के नाम एवं पता तथा भूमि का क्षेत्रफल जिसमें पूरे समूह की भूमि कम से कम दो हैक्टेयर हो जाए।	
जिस जगह पर खेती करनी है उस इलाके में कौन कौन से जंगली पेड़/जड़ी बूटियाँ पाई जाती हैं	
एक शपथ पत्र(एफिडेविट) लगायें इन घोषणाओं के साथ: 1. प्रस्तावित भूमि पर केवल जड़ी बूटियों की खेती ही करेंगे। 2. मैंने कोई भी अनुदान पहले इस काम के लिए नहीं लिया है। 3. यदि जड़ी बूटियों की खेती नहीं करता हूं तो विभाग अनुदान वापिस ले सकता है और मैं कर दूंगा।	
आधार नबर	
बैंक खाता संख्या	
बैंक व शाखा नाम एवं IFS कोड	

मैं घोषणा करता/करती हूं कि ऊपर दी गयी समस्त जानकारी सत्य है।

किसान के हस्ताक्षर

मामले की संस्तुति एवं अग्रेषित करने वाले अधिकारी की टिप्पणी

आवेदन प्राप्त करने की तिथि: अग्रेषित करने की तिथि:

चैक लिस्ट के अनुसार प्रमाणित दस्तावेज संलग्न हैं एवं अनुदान देने की संस्तुति की जाती है

1. भूमि का पर्चा
2. भूमि का ततीमा
3. शपथ पत्र
4. पंचायत का अनापत्ति प्रमाणपत्र (एन ओ सी)
5. आधार कार्ड
6. बैंक का विवरण (कैंसल चेक या खाते की छाया प्रति)

आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी

उपमंडलीय आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी

जिला आयुर्वेद अधिकारी: (जिला आयुर्वेदिक अधिकारी पूर्ण सत्यापन करने के उपरान्त किसान को वित्तीय सहायता जारी करने की संस्तुति निदेशक आयुर्वेद एवं सदस्य सचिव, राज्य औषधीय पादप बोर्ड, हि. प्र. को करेंगे।)

निदेशक आयुर्वेद एवं सदस्य सचिव

आवेदन की एडवांस कॉपी आवेदक सीधे निदेशक आयुर्वेद एवं सदस्य सचिव, राज्य औषधीय पादप बोर्ड हिमाचल प्रदेश को ई-मेल या डाक से भी भेज सकता है
ई-मेल: ayur-hp@nic.in, smpbhp@gmail.com फोन: 0177-2626222, 2625427

www.rcfcnorth.in

जड़ी-बूटी बाजार

E-Charak e-Channel for Herbs, Aromatic, Raw Material & Knowledge

हर माह प्रकाशित/प्रसारित

कुल पृष्ठ : 8 | वर्ष 1, अंक 4 | 1 दिसंबर से 31 दिसंबर 2018

क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तर भारत, आयुष मंत्रालय भारत सरकार, दूरभाष-01908-222970, 222333 email:rcfcnorth@gmail.com

आयुर्वेद, योगा, नैचुरोपैथी, यूनानी व होम्योपैथी के साथ सोवा-रिग्पा आयुष विभाग की छठी अधिकृत चिकित्सा पद्धति

तिब्बती चिकित्सा पद्धति का चमत्कार, कैंसर जैसे रोगों का संभव सफल उपचार

डॉ. अरूण चंदन , क्षेत्रीय निदेशक आरसीएफसी, जोगिंद्रनगर

कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों के सफल उपचार के चलते तिब्बती आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति को दुनिया भर में तेजी से अपनाया जाने लगा है। सदियों से चली आ रही प्राचीन तिब्बती चिकित्सा पद्धति आमची को भारतीय संसद ने कानून बनाकर 'सोवा-रिग्पा' के नाम से वैधानिक अस्तित्व दिया है। आयुर्वेद, योगा, नैचुरोपैथी, यूनानी एवं होम्योपैथी के बाद 'सोवा-रिग्पा' आयुष विभाग की छठी अधिकृत चिकित्सा पद्धति बन गई है। सेंट्रल काउंसिल ऑफ तिबेतन मेडिसिन दलाईलामा की मंजूरी के बाद वर्ष 2004 में आई थी। वर्तमान में इसके अधीन 383 चिकित्सक और चार तिब्बती मेडिकल कॉलेज आते हैं। हिमालयी क्षेत्र के सिक्किम, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल, लद्दाख व अरुणाचल प्रदेश में यह चिकित्सा पद्धति प्रचलित है।

ऐसे हाती है रोग की पहचान, जड़ी- बूटियों से उपचार

इस चिकित्सा विधा में नब्ज, चेहरा, जीभ, आंखे और सुबह के यूरिन की जांच से रोग के लक्षणों का पता लगाया जाता है। 'सोवा-रिग्पा' के चिकित्सक देखकर, छूकर और पूछकर इलाज करते हैं। इलाज में जड़ी बूटियों का प्रयोग किया जाता है। रोग को जड़ से दूर करने पर जोर रहता है, इसलिए इलाज लम्बा चलता है। मेडिटेशन भी इलाज का एक हिस्सा है।

विश्व की पुरातन चिकित्सा परम्परा, दुनिया भर में प्रयोग

'सोवा-रिग्पा' को सामान्यतः आमची चिकित्सा पद्धति के रूप में जाना जाता है, जो कि विश्व की प्राचीनतम, जीवंत एवं सुप्रलेखित चिकित्सीय परंपराओं में से एक है। यह चिकित्सा पद्धति तिब्बत, मंगोलिया, भूटान, चीन के कुछ क्षेत्रों, नेपाल, भारत के हिमालयी क्षेत्रों और पूर्व सोवियत संघ के कुछ क्षेत्रों में सदियों से लोकप्रिय रही है। कुछ विद्वानों का मानना है कि यह भारत से उत्पन्न हुई है, जबकि कुछ लोग इसे चीन व कुछ इसे तिब्बत से उत्पन्न मानते हैं।

भारत के पहाड़ी क्षेत्रों में खूब प्रचलित है सोवा-रिग्पा

सोवा- रिग्पा के अधिकांश सिद्धांत एवं अभ्यास आयुर्वेद के समान है। बौद्ध धर्म एवं अन्य तिब्बती कला व विज्ञान के साथ सोवा-रिग्पा का प्रभाव पड़ोसी हिमालयी क्षेत्रों में फैला। भारत में सिक्किम, अरूणाचल प्रदेश, पश्चिम बंगाल के दार्जलिंग, हिमाचल प्रदेश के लाहौल एवं स्पीति तथा जम्मू एवं कश्मीर के लद्दाख जैसे पहाड़ी क्षेत्रों में इस चिकित्सा पद्धति से अधिकतर रोगों का उपचार किया जाता है।

परम्परागत चिकित्सा ज्ञान को सहेजने की अनूठी रीत

गुरू-शिष्य परम्परा या परिवारों में ग्युद पा (वंश परम्परा) पद्धति के अधीन आमची को प्रशिक्षित किया जाता है। कुशल आमची बनने में कठिन सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। प्रशिक्षण पूरा करने के बाद प्रशिक्षु आमची को विशेषज्ञ आमचियों की उपस्थिति में परीक्षा देनी होती है। ऐसे प्रमाण हैं कि पूर्व में हिमालयी क्षेत्र के लोग इस पद्धति के प्रशिक्षण के लिए तिब्बत जाते थे।

बौद्ध दर्शन से जुड़ी चिकित्सा पद्धति ने बनाई विश्व में तिब्बतियों की एक अलग पहचान

तिब्बती चिकित्सा पद्धति बौद्ध दर्शन से जुड़ी हुई है। इस पद्धति से विश्व में तिब्बतियों की एक अलग पहचान है। तिब्बतियन चिकित्सा सेंटर मेन-सी-खंग के 102 वर्ष पूरे हो चुके हैं। तिब्बत के ल्हासा में तिब्बती चिकित्सा सेंटर मेन-सी-खंग का शुभारंभ 13वें धर्मगुरु दलाईलामा ने 1916 में किया था। 14वें दलाईलामा सहित शरणार्थी तिब्बतियों ने वर्ष 1959-60 में धर्मशाला आने के बाद तिब्बती चिकित्सा सेंटर मेन-सी-खंग को यहां पर स्थापित किया गया। अप्पर धर्मशाला में तिब्बतियन लाइब्रेरी के पास चल रहे मेन-सी-खंग में कई दवाईयों का उत्पादन होता है। तिब्बती धर्मगुरू 14 वें दलाई लामा कहते हैं कि यह हमारी पारंपरिक चिकित्सा पद्धति है और मुझे इस बात पर खुशी भी है कि हमने अभी तक न केवल इस पद्धति को जारी रखा है, बल्कि भारत सहित विश्व के अन्य देशों में भी इसका प्रचार व प्रसार बढ़ा है।

बीटीएमएस या आमची चिकित्सा आचार्य

दुनिया भर में सोवा-रिग्पा चिकित्सा के प्रति बढ़ते प्रभाव के चलते भारत के चार संस्थान आधुनिक चिकित्सा पद्धति के समकक्ष सोवा-रिग्पा चिकित्सा शिक्षा पद्धति की भी शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। वर्तमान में जमा दो उत्तीर्ण करने के बाद स्टूडेंट्स का चयन प्रवेश परीक्षा में वरीयता के आधार पर किया जाता है। इस छह वर्षीय पाठ्यक्रम का नाम तिब्बती चिकित्सा पद्धति में स्नातक (बीटीएमएस) या आमची चिकित्सा आचार्य है।

सोवा-रिग्पा के शिक्षण संस्थान

केन्द्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान, लेह
91-1982-264548,-264391
cibsladakh@gmail.com

तिब्बती चिकित्सा एवं ज्योतिष संस्थान, धर्मशाला
www.men-tsee-khang.org

केन्द्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय, सारनाथ
91-542-2585242; 2581737
cuts@gmail.com

चोकपोरी चिकित्सा संस्थान, दार्जिलिंग
91-354-2251099
info@chagpori.org

केंद्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान सारनाथ में खुलेगा रिसर्च सेंटर

सारनाथ स्थित केंद्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान में प्राचीन चिकित्सा पद्धति सोवा- रिग्पा का अनुसंधान केंद्र खुलेगा। इसके लिए केंद्र सरकार ने 46 करोड़ रुपए मंजूर किए है। केंद्रीय संस्कृति मंत्री डॉ. महेश शर्मा ने संस्थान के 15 वें दीक्षांत समारोह में बताया कि आयुर्वेद की तरह सोवा रिग्पा प्राचीन तिब्बती चिकित्सा पद्धति है। इस पर व्यापक शोध के लिए यह केंद्र अहम भूमिका अदा करेगा। यहां यह बताना प्रासंगिक होगा कि अधिकांश हिमालयी क्षेत्रों के हर गांव में समुदायिक सहयोग से आमची द्वारा पारंपरिक रूप से सोवा- रिग्पा से उपचार किया जाता रहा है। भारत में सोवा- रिग्पा के लगभग एक हजार चिकित्सक, दुर्गम हिमालयी क्षेत्रों एवं अन्य स्थानों में स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। भारत में सोवा रिग्पा संस्थानों के मुख्य केन्द्र हिमाचल प्रदेश में धर्मशाला एवं जम्मू व कश्मीर के लद्दाख हैं। तिब्बती धर्मगुरू दलाई लामा ने धर्मशाला में सोवा- रिग्पा के माध्यम से उत्तम स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने के लिए तिब्बती चिकित्सा एवं ज्योतिष संस्थान की स्थापना की है। इस संस्थान में एक मेडिकल कॉलेज, फार्मेसी, ज्योतिष विभाग और पूरे भारत में 40- 50 क्लीनिकों की एक श्रृंखला है। देश में सोवा-रिग्पा के चिकित्साभ्यास को विनियमित करने के लिए धर्मशाला में केंद्रीय तिब्बती चिकित्सा परिषद स्थापित की गई है। यह चिकित्सा परिषद चिकित्सकों के पंजीकरण के अतिरिक्त महाविद्यालयों के मानक और सोवा-रिग्पा को विनियमन करनेकी अन्य क्रियाविधियों का कार्य करती है।

तिब्बती चिकित्सा पद्धति को शिखर देने के लिए येशि डोडेन को पद्मश्री

बौद्ध दर्शन से जुड़ी और कैंसर जैसे खतरनाक रोगों के सफल उपचार में कारगर तिब्बती चिकित्सा पद्धति 'सोवा-रिग्पा' को शिखर प्रदान करने के लिए धर्मशाला के बुजुर्ग बौद्ध भिक्षु येशी डोंडेन को भारत के प्रतिष्ठित पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। दो दशकों तक तिब्बती आध्यात्मिक गुरू दलाईलामा के निजी चिकित्सक रह चुके येशी डोंडेन को तिब्बती दवा के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए पद्मश्री सम्मान के लिए चुना गया। यशी डोंडेन वर्ष 1960 से दलाई लामा के निजी चिकित्सक रहे थे। उन्होंने तिब्बती चिकित्सा पद्धति से रोगियों के प्रभावी उपचार करने को लेकर ख्याति हासिल है। यशी डोंडेन ने 63 सालों तक तिब्बती दवाओं से विभिन्न रोगों के उपचार में महारत हासिल की है। उन्हें दुनिया भर में कैंसर का विशेषज्ञ चिकित्सक माना जाता है। डोंडेन तिब्बत की निर्वासित सरकार के मुख्यालय मैक्लोडगंज में रहते हैं। वह 1979 तक तिब्बतिन मेडिकल एंड एस्ट्रोलॉजिकल इंस्टीट्यूट के निदेशक रहे हैं। यह संस्थान तिब्बती चिकित्सा पद्धति की शिक्षा, प्रचार- प्रसार, उपचार और तिब्बती दवा निर्माण में जुटा है। तिब्बती दवाओं को लेकर किए गए उनके अध्ययन और शोध ने इस चिकित्सा पद्धति को विदेशों तक पहचान दिलवाने में अहम भूमिका अदा कर दुनिया भर के चिकित्सकों का ध्यान तिब्बती दवाईयों की ओर खींख है। पद्मश्री के लिए उनका चयन तिब्बती दवाओं की मान्यता में मील- पत्थर साबित होगा और चमत्कारी चिकित्सकीय गुणों के कारण यह चिकित्सा पद्धति तेजी से प्रचलित होगी।

सफल प्रयोग

खेत से बाजार तक

- बागवानी, कृषि, फल प्रसंस्करण के क्षेत्र में उलेखनीय कार्य।
- हजारों युवकों और महिलाओं को घर के पास रोजगार।
- कास्तकारों की आर्थिकी को मजबूत बनाया।
- फल तथा सब्जी बेचने के लिए बाजार उपलब्ध कराया।
- उच्च मूल्य श्रृंखला के उत्पादों के लिए मजबूत सप्लाई चेन।

हिमालयन एक्शन रिसर्च सेंटर ने उत्तराखंड में साबित किया सतत आजीविका के लिए कृषि बेहतर विकल्प

खेती और बागवानी को बनाया आधार घर के पास ही दिया हजारों को रोजगार

हिमालयन एक्शन रिसर्च सेंटर देहरादून के तीस साल के प्रयासों के मील पत्थर

1989 -1993- विकास योजना कार्यान्वयन पर लोगों की समझ विकसित की। कार्यान्वयन में भागीदारी के लिए ग्राम कार्य योजना की तैयारी। संसाधनों के उपयोग व संरक्षण के लिए लोगों में जागरूकता। इको-सिस्टम प्लानिंग पर कार्यक्रम।

1994 - 1997- समुदाय आधारित संस्थान बनाने व मजबूत करने पर फोकस। समुदाय आधारित संगठनों का प्रशिक्षण। महिला मुद्दों के लिए रैनवेन महिला मंच का गठन। पंचायती राज व माइक्रो प्लानिंग के लिए प्रशिक्षण। विभिन्न हितधारकों के साथ नेटवर्किंग। सतत आजीविका के लिए कृषि बेहतर विकल्प का लोगों को परिचय करवाया।

1998 - 2002- खाद्य सुरक्षा व आजीविका हासिल करने पर फोकस। कृषि आधारित विविध आय सृजन विकल्पों का चयन करने में सक्षम बनाने के लिए किसानों को तकनीकी प्रशिक्षण। कृषि उत्पादन बढ़ाने व कृषि आधारित उद्यमों को बढ़ावा दिया। एसएचजी फेडरेशन व किसान एसोसिएशन का आर्थिक विकास मॉडल उत्तराखंड सरकार द्वारा स्वीकृत। प्रौद्योगिकी हस्तांतरण। राज्य महिला नीति और महिला आयोग की स्थापना का मुद्दा उठाया।

2003 - 2006- समुदाय आधारित संस्थानों व संघों के माध्यम से कृषि व्यवसाय को बढ़ावा देने पर फोकस। महिला किसान सहकारी और पुरुष किसान संघ के माध्यम से सामाजिक-आर्थिक विकास मॉडल। महिलाओं को व्यापारिक गतिविधियों में मान्यता और सामाजिक स्वीकृति मिली।

2007 - 2014 - स्व-सहायता समूहों, किसान हित समूहों, महिला सहकारिता, पुरुष कृषक संघ को मजबूती। सीमांत किसानों के बीच डिजिटल सेवाओं के माध्यम से विकास संचार। छंटाई, ग्रेडिंग, पैकिंग और लेबलिंग जैसी गुणवत्ता जांच पर फोकस। मूल्य संवर्धन, गुणवत्ता नियंत्रण के लिए सामान्य सुविधा केंद्र। रोगमुक्त बीज और पौधे प्रदान करने के लिए सीड सेंटर व टीशू कल्चर प्रयोगशाला की स्थापना। बाजार नेटवर्क स्थापित करने पर ध्यान केंद्रित। उत्पादों की उच्च मूल्य श्रृंखला के लिए बाजार की शुरुआत। आजीविका के अवसर बढ़ाने के लिए मेघालय सरकार के साथ काम करने के लिए करार। विकास संचार को बढ़ावा देने के लिए काम। तकनीक से स्मार्ट कृषि प्रणाली का विकास।

2014 के बाद - सरकारी व अन्य एजेंसियों के साथ इस मॉडल के महत्व की वकालत। उच्च मूल्य श्रृंखला के उत्पादों के लिए सप्लाई चेन को मजबूत करना। आपदा राहत सहायता के लिए प्रशिक्षिण। एसएमएस, कॉल सेंटर के माध्यम से किसानों को जरूरी जानकारी। ऐसी स्मार्ट कृषि प्रणाली को मजबूत करना, जिस पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव न हो। प्रसंस्करण व मार्केटिंग पर फोकस।

सामुदायिक प्रबंधन का मॉडल

नारीशक्ति के हाथ है इस फैक्ट्री की कमान

चमोली गढवाल क्षेत्र माल्टा व नींबू प्रजाति के फलों के लिए एक आदर्श क्षेत्र है। संस्था ने यहां की महिलाओं को संगठित कर सहकारिता संस्थाओं का गठन किया। कालेश्वर में फल प्रसंस्करण फैक्ट्री की स्थापना की। फलों के बगीचे लगाने के लिए वैज्ञानिक प्रशिक्षण का प्रबंध किया। नई नर्सरियां व नए बगीचे तैयार किये गए। गैरसैण, मन्दाकिनी व अलकनन्दा व पिंडर घाटी के साथ पौड़ी जनपद के माल्टा उत्पादन वाले क्षेत्रों का फैक्ट्री में जोड़ा गया। फैक्ट्री में माल्टा, नींबू, गलगल, बुंराश, तुलसी व अदरक के उत्पाद तैयार होने लगे।

इस मॉडल की खास बात यह कि कच्चे माल के उत्पादन से लेकर इस फैक्ट्री में मशीनों के संचालन, गुणवत्ता व पैकिंग का सारा काम खुद महिलाएं संभाल रही हैं। मार्केटिंग का बेहतर प्रबंध होने के कारण यहां के उत्पाद हाथों- हाथ बिक रहे हैं।

देहरादून से डॉ. आदित्य शर्मा

हिमालयन एक्शन रिसर्च सेंटर संस्था ने उत्तराखंड में बागवानी, कृषि, औषध कृषिकरण व फल प्रसंस्करण के क्षेत्र में ऐसा सामुदायिक मॉडल तैयार किया है, जिसने साबित कर दिया कि सतत अजीविका के लिए कृषि ही बेहतर विकल्प है। संस्था के करीब तीन दशक के प्रयासों से जहां क्षेत्र के हजारों युवकों और महिलाओं को घर के पास रोजगार उपलब्ध हुआ है, वहीं पलायन की समस्या का भी हल हुआ है। संस्था ने यहां के कास्तकारों की आर्थिकी को मजबूत बनाया है। रवाई तथा पुरोला घाटी के कृषकों को फल तथा सब्जी उत्पादन से जोड़ कर तो चमोली गढवाल के किसानों को बागवानी की ओर मोड़ कर, प्रसंस्करण उद्योग स्थापित कर उत्पादों के लिए बाजार उपलब्ध कराया है। संस्था के कार्यकर्ताओं के समर्पण और लगन से उत्तराखंड के हजारों कृषको की जिन्दगी में सामाजिक-आर्थिक बदवाल आया है। संस्था तीन दशक से जमीनी स्तर पर काम कर रही इस संस्था ने चालीस हजार से अधिक किसानों व कास्तकारों को वैजानिक और उन्नत कृषिकरण की ओर मोड़ा है और आजीविका के लिए कृषि को बेहतर विकल्प बनाकर इस पहाड़ी राज्य में रोजगार के हजारों अवसर उपलब्ध करवाए हैं।

अध्ययन, चिन्तन व शोध से पहाड़ की पर्यावरणीय परिस्थितियों के अनुकूल विकास की अवधारणा के ठोस विकल्प तैयार करने के मकसद से वर्ष 1988 में देहरादून में हिमालयन एक्शन रिसर्च सेंटर की स्थापना की गई। सबसे पहले जल संरक्षण के कार्यो की शुरूआत की गई। वर्षा व प्राकृतिक जल श्रोतों के पानी को एकत्र करने के लिए सैकड़ों पॉलीथीन टैंकों का निर्माण किया गया। पॉलीहाउस के माध्यम से सब्जी व फूलों के उत्पादन के लिए ग्रामीणों को तैयार किया गया। किसानों को प्रशिक्षित करने के लिए वाईएस परमार विश्वविद्यालय सोलन से मदद ली गई। उत्तरकाशी की यमुना घाटी के पुरोला में किसानों के शिक्षण- प्रशिक्षण के लिए एक केंद्र की स्थापना की गई। हिमालयन एक्शन रिसर्च सेंटर के स्वयंसेवियों ने सबसे पहले स्थानीय कृषि व पर्यावरण का अध्ययन किया, फिर किसानों व महिलाओं को संगठित कर उनके शिक्षण-प्रशिक्षण का प्रबंध कर उन्हें आधुनिक व वैज्ञानिक कृषि की ओर मोड़ा। तीन साल बाद ही प्रयास रंग लाने लगे। किसान टमाटर, वीन्स, मटर, राजमाह व मौसमी सब्जियों के उत्पादन की ओर आकर्षित हुए। उत्पादों को सही दामों पर बेचने के लिए मॉडल तैयार किया गया। एक तरफ जहां ग्रामीण स्तर पर सहकारिता समूहों का गठन किया गया, वहीं दूसरी ओर देहरादून, हिमाचल व दिल्ली की मंडियों के साथ उत्पाद बेचने के लिए करार किए गए। यह संस्था के प्रयासों का ही परिणाम है कि अब यमुनाघाटी के किसान हर साल करोंड़ो रूपए का कृषि व्यापार कर रहे हैं। हिमालयन एक्शन रिसर्च सेंटर ने चमोली गढ़वाल जनपद के किसानों को फल उत्पादन व फल प्रसंस्करण की ओर मोड़ने में अहम भूमिका अदा की है। यह संस्था उत्तराखंड के किसानों को औषध कृषिकरण की ओर मोड़ने में भी अहम भूमिका अदा कर रही है।

हार्क किसान एप्प

हिमालयन एक्शन रिसर्च सेंटर ने अब सूचना तकनीक का बेहतरीन प्रयोग कर किसानों को खेती व बाजार की हर सूचना उपलब्ध करवा रही है। हार्क किसान मोबाइल एप्प के लिए ऐसी ऐसी स्मार्ट कृषिपर फोकस है, जिस पर जलवायु परिवर्तन का कोई प्रभाव न हो। कॉल सेंटर और एसएमएस के जरिये किसानों को विशेषज्ञों व बाजार दोनों के साथ जोड़ा गया है।

कुंवर का कमाल

हिमालयन एक्शन रिसर्च सेंटर संस्था उत्तराखंड की खेती- बागवानी के दम पर सामाजिक आर्थिक बदलाव की प्रेरककथा लिख रही है। उत्तराखंड में करोड़ों की कृषि आर्थिकी की बुनियाद डालकर सतत अजीविका के लिए कृषि व बागवानी को बेहतरीन विकल्प बनाने का कमाल करने वाली इस संस्था को महेन्द्र कुंवर ने दशकों अपने खून- पसीने से सींचा है। इस संस्था के संस्थापक महेन्द्र कुंवर चमोली गढ़वाल के कांसवा गांव के रहने वाले हैं। पिता सेना में थे, जिस कारण उन्हे भी कई स्थानों पर अपना अध्ययन करना पड़ा। इंटरमीडिएट पिथौरागढ़ से करने के बाद उच्च शिक्षा के लिए राजकीय महाविद्यालय गोपेश्वर पहुंचे। यहीं प्रसिद्ध पर्यावरणाविद् व चिपको आंदोलन के नेता चंडीप्रसाद भट्ट से प्रभावित होकर पर्यावरण संरक्षण आंदोलन के कार्यकर्ता बन गए और पर्यावरण संरक्षण का संदेश देने के लिए कई उत्तराखंड की कई पदयात्राएं की। श्रीनगर विश्वविद्यालय में भूगर्भ विज्ञान की पढ़ाई के दौरान दोस्तों से मिलकर पर्यावरण संरक्षण के लिए 'डाल्यों का दगड़या' संगठन की स्थापना की। सेंटर फॉर साइंस एंड इन्वायरनमेंट संस्था के संस्थापक प्रसिद्ध पर्यावरण, चिंतक, लेखक, पत्रकार अनिल अग्रवाल ने महेन्द्र कुंवर को पर्यावरणीय सामाजिक व वानस्थितिक अध्ययन की ओर मोड़ दिया। यह महेंद्र कुंवर की जिंदगी का टर्निंग प्वायंट था। लंबे समय तक चले इसी अध्ययन से ही हिमालयन एक्शन रिसर्च सेंटर की राह निकली। संस्था ने जमीनी स्तर पर किसानों व महिलाओं को एकजुट कर सामुदायिक प्रबंधन वाले मॉर्डन मॉडल को सफल कर दिखाया। महेन्द्र कुंवर को उत्तराखंड में कृषि व बागवानी के क्षेत्र में किए गए उनके कार्यों के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। हाल ही में महिला आधारित पत्रिका 'तालाश' ने उनको 'एनवायरमेंट एंड हेल्थ वॉरियर अवार्डी 2019' पुरस्कार देने का फैसला किया है।

स्टार्टअप

फैक्ट शीट

देहरादून की इशिता खन्ना दिल्ली विश्वविद्यालय से भूगोल में स्नातक और टाटा इंस्टीच्यूट ऑफ सोशल साइंस से समाज शास्त्र में स्नातकोत्तर हैं। पैसन के लिए उन्होंने दिल्ली की नौकरी छोड़ दी।

स्पीति इकोस्फीयर की संस्थापक
2004 में दोस्तों का स्टार्टअप।
बेरी कलेक्शन और प्रोसेसिंग।
लेह बेरी कंपनी से करार ।
होम स्टे टूरिज्जम का स्टार्टअप।

जनजातीय घाटी के सामाजिक-आर्थिक बदलाव में स्पीति इकोस्फीयर निभा रहा है अहम भूमिका

देहरादून की इशिता खन्ना के प्रयास स्पीति बन गई बेरी इंडस्ट्री में खास

आरसीएफसी नॉर्थ जोगिंद्रनगर, फीचर सर्विस

दिल्ली विश्वविद्यालय से भूगोल में स्नातक करने के बाद प्रतिष्ठित टाटा इंस्टीच्यूट ऑफ सोशल साइंस से समाज शास्त्र में स्नातकोत्तर करने वाली देहरादून की इशिता खन्ना ने 'स्पीति इकोस्फीयर' संस्था बनाकर हिमाचल प्रदेश के जनजातीय जिला लाहौल स्पीति की दुर्गम स्पीति घाटी को बेरी इंडस्ट्री का हब बनाकर सामाजिक उद्यमिता की अनूठी मिसाल कायम की है। इशिता जहां घाटी में पैदा होने वाली बेरी के संरक्षण की मुहिम में जुटी हैं, वहीं पर्यटन का नया मुहावरा गढ़ रही हैं। छह माह तक बर्फ के आगोश में रहने वाली लाहौल-स्पीति घाटी के सामाजिक और आर्थिक जीवन में बदलाव में पिछले डेढ़ दशक में ' स्पीति इकोस्फीयर' संस्था अहम भूमिका निभा रही है। यह संस्था के प्रयासों का ही परिणाम है कि जहां एक ओर घाटी पर्यटन के लिए अपनी पहचान बना चुकी है, वहीं स्थानीय ग्रामीणों की आर्थिकी में भी जबरदस्त बदलाव आया है। पर्यावरण संरक्षण के साथ बेरी कलेक्शन और पर्यटन विकास का इशिता खन्ना का मॉडल उसके जुनून और सामुदायिक प्रबंधन की मुंह बोलती तस्वीर है। डेढ़ दशक पहले पर्यावरण संरक्षण संग उद्यमिता के मजबूत इरादों के साथ कुछ लीक से हट कर करने के लिए इशिता खन्ना दिल्ली छोड़ स्पीति घाटी में पहुंची थी। उस समय स्पीति घाटी में वहां के ही संसाधनों से रोजगार की बुनियाद डालने के बारे में सोचना एक बड़ी चुनौती थी। चुनौती को स्वीकार करते हुए इशिता खन्ना ने तय किया कि उसके सपनों की मंजिल यही है और उसे इसी क्षेत्र में विकास और संरक्षण दोनों के लिए काम करना हैं। इशिता ने स्थानीय लोगों से बातचीत शुरू की और इस पूरे कबायली क्षेत्र के बारे में बरीकी से अध्ययन किया और हर जरूरी जानकारी हासिल की। इशिता खन्ना ने अपने दो दोस्तों के साथ मिल कर इकोस्फीयर संस्था बनाई। संस्था ने स्थानीय लोगों को विश्वास में लिया। सबसे पहले महिलाओं को बेरियों की कलेक्शन के लिए प्रशिक्षित किया। बेरी जूस बनाने वाली 'लेह बेरी' कंपनी के साथ बेरियों को बेचने का करार किया, बेरियों की प्रोसेसिंग के लिए युनिट स्थापित किया। घाटी को बेरी हब बनाने केस्टार्टअप के बाद 'स्पीति इकोस्फीयर' ने घाटी के लोगों को पर्यटन के लिए प्रशिक्षित किया और स्थानीय लोगों से मिल कर होम स्टे के जरिये पर्यटकों को घाटी में पहुंचाने की राह आसान की।

रिस्पॉन्सिवल टूरिज्जम का आइडिया

ऐसे समय में जहां व्यापार प्रतियोगिता और व्यक्तिगत लाभ का पर्याय बन गया है, 'इकोस्फीयर' ने पर्यटन कारोबार का एक मॉडल पेश किया है जो पिछले 12 सालों से प्रतियोगिता के बजाय सहयोग पर आधारित है। होम स्टे की अनूठी मिसाल कायम करने वाले स्पीति के दिमूल गांव की सबसे खास बात यह है कि यहां हर घर को

पर्यटन कारोबार में बराबर पैसा मिलता है। यहां रोटेशन सिस्टम लागू है और यह सुनिश्चित किया गया है कि गांव के हर घर मालिक को पर्यटन कारोबार से बराबर की कमाई हो। यहां पर्यटन से कमाई का सारा पैसा हर परिवार की महिला के हाथ जाता है। स्पीति इकोस्फीरयर को आउटलुक पत्रिका की ओर से सामुदायिक प्रबंधन से चलने वाले देश के सर्वश्रेष्ठ होम स्टे मॉडल के लिए रिस्पांसिबल टूरिज्जम अवॉर्ड से सम्मानित किया गया है।

बेरियों की डिमांड से स्टार्टअप का आइडिया, प्रोसेसिंग युनिट स्थापित की, लेह बेरी से किया बेचने के लिए करार

स्पीति घाटी में कुदरती तौर छोटी- छोटी बेरियां उगती हैं। ये बेरियां विटामिन सी का प्रमुख स्रोत होती हैं, इसलिए बाजार में इनकी मांग भी काफी है। बाजार में बेरियों की अच्छी कीमत मिलने के बावजूद सबसे बड़ी समस्या यह है कि बेरियां इकट्ठी करना बहुत ही कड़ी मेहनत का काम है। इसके लिए बड़े श्रम साधनों की जरूरत होती है। स्पीति पहुंच कर इशिता ने जब स्थानीय आर्थिकी का अध्ययन किया तो पाया कि यहां पैदा होने वाली बेरियों के विपणन की व्यवस्था कर रोजगार पैदा किया जा सकता है। इशिता को लगा कि घाटी में पैदा होने वाली छोटी- छोटी बेरियों से यहां की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत किया जा सकता है। इशिता ने अपने मिशन की शुरूआत यहीं से करने का फैसला किया। इसके लिए उन्होंने स्थानीय महिलाओं को प्रशिक्षित किया और उनके सहयोग से प्रेरककथा लिख दी।

'लेह बेरी' से किया बेचने का करार

इशिता को बेरियों की भारी मांग से स्टार्टअप का आइडिया आया। साल 2004 में इशिता खन्ना ने अपनी आकर्षक पैकेज वाली नौकरी छोड़ दी और स्पीति 'इकोस्फीयर' की स्थापना की। उसने बेरी एकत्र करने के लिए स्थानीय महिलाओं के समूह बनाकर उन्हें प्रशिक्षित किया। इशिता की यह योजना पूरी तरह से स्थानीय लोगों को फायदा पहुंचाने की थी, इसलिए इस मॉडल से ठेकेदारों को दूर रखा। इकोस्फीयर ने लेह बेरी से बेरियों का गुद्दा बेचने के लिए अनुबंध किया। जर्मन एजेंसी जीटीजेड ने इकोस्फीयर की मदद की और बेरियों को प्रोसेस करने के लिए मशीनें खरीदी गईं। वर्ष 2004 में इशिता ने खुद का ब्रांड बनाने का निश्चय किया और इस पर काम करना शुरू किया। इशिता का कारोबार आइडिया सफल रहा और महिला आधारित इस इंडस्ट्री की नींव पड़ी।

अर्थ का यह विज्ञान

इकोस्फीयर अपनी वार्षिक आय का 50 प्रतिशत खुद सृजन कर लेती है बाकी का पैसा सहायता देने वाली एजेंसियों से आता है। इशिता का कहना है कि पिछले डेढ़ दशक के सफर में उन्होंने स्पीति घाटी को करीब से समझा है और यहां के प्राकृतिक संसाधनों के जरिये यहां के स्थानीय लोगों के जीवन को बेहतर बनाने की कोशिश की है। उनका कहना है कि पर्यावरण संरक्षण उनकी प्राथमिकता है।

रिस्पांसिबल टूरिज्जम : प्रतियोगिता की जगह सहयोग पर आधारित होम स्टे

अपने बेरियों के प्रोजेक्ट को सफल ब्रांड बनाने के बाद इकोस्फीयर ने स्पीति में पर्यटन को बढ़ावा देने और पर्यटकों को यहां कुछ नया अनुभव करवाने के आइडिया पर काम करना शुरू किया। इशिता ने स्थानीय लोगों के साथ मिलकर पर्यटकों को स्थानीय लोगों के घरों में सस्ते दामों में ठहराने की योजना बनाई। यह योजना कारगर साबित हुई और यहां होम स्टे का कारोबार चमक उठा। पर्यटकों का आना बढ़ता गया। इशिता खन्ना को उनके बेहतरीन कार्यों के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। वर्ष 2008 में उन्हें वाइल्ड एशिया रिस्पॉन्सिबल टूरिज्म अवॉर्ड, वर्ष 2010 में वर्जिन हॉलिडे रिस्पॉन्सिबल टूरिजम अवॉर्ड और साल 2010 में ही सीएनएन आईबीएन रियल हीरोज अवॉर्ड दिया गया। इशिता कहती हैं कि अवॉर्ड उन्हें प्रेरणा देते हैं और बेहतरीन करने को प्रेरित करते हैं। अपनी कोशिशों से इशिता खन्ना आज युवाओं के लिए एक परफेक्ट रोल मॉडल बन गई हैं।

इंटरनेट से बुलाए मेहमान

स्पीति में पर्यटन को ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए इशिता खन्ना और उसकी टीम ने इंटरनेट का जमकर प्रयोग किया। स्पीति इकोस्फीयर की ओर से सोशल साइट्स पर पर्यटकों को आकर्षक ऑफर दिए गए। घाटी की फोटोग्राफी, वीडियोग्राफी के जरिये घाटी को पर्यटन ब्रांड बनाकर पेश किया गया। संस्था ने स्थानीय युवाओं को पर्यटकों को क्षेत्र में घुमाने और इसकी विशेषताओं के बारे में जानकारी देने का प्रशिक्षण दिया। अब घाटी में पहले के मुकाबले ज्यादा पर्यटक यहां आने लगे है। स्पीति इकोस्फीयर के वॉलन्टियर इस बात का खास ख्याल रखते हैं कि प्रकृति को किसी भी तरह का नुकसान न पहुंचे और प्लास्टिक का प्रयोग न के बराबर किया जाए। पर्यटन से यहां औसतन 35-40 लाख रुपए सलाना कमाई हो रही है और सैंकड़ों लोगों को रोजगार मिल रहा है।

पारंपरिक चिकित्सा, नवयुग की अग्रदूत

डॉ. अरूण चंदन
लेखक, क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तर भारत, जोगिंद्रनगर के क्षेत्रीय निदेशक हैं।

डॉ. तनुजा मनोज नेसारी राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड की मुख्य कार्यकारी अधिकारी व आयुष मंत्रालय के तहत आते स्वायत्त संगठन अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान की निदेशक हैं। डॉ. नेसारी आयुर्वेद में एमडी और द्रव्यगुण में पीएचडी हैं। वे आयुर्वेद में अनुभवी शोधकर्ता, प्रोफेसर और विशेषज्ञ हैं। आयुर्वेद शिक्षा व स्टूडेंट्स को आयुर्वेद की ओर मोड़ने वाली डॉ. नेसारी ने पिछले कुछ वर्षों में आयुर्वेद के समग्र प्रसार और उन्नति में विशेष योगदान दिया है। आयुर्वेद चिकित्सा के क्षेत्र में किए गए गहन शोध एवं अध्ययन के कारण वे पारम्परिक चिकित्सा के क्षेत्र में नवयुग की अग्रदूत हैं।

डॉ. तनुजा मनोज नेसारी राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड की मुख्य कार्यकारी अधिकारी एवं आयुष मंत्रालय के तहत आते स्वायत्त संगठन अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान की निदेशक हैं। डॉ. नेसारी आयुर्वेद में एमडी और द्रव्यगुण में पीएचडी हैं। वे आयुर्वेद में अनुभवी शोधकर्ता, प्रोफेसर और विशेषज्ञ हैं। आयुर्वेद शिक्षा एवं स्टूडेंट्स को आयुर्वेद शिक्षा की ओर मोड़ने में अहम भूमिका अदा करने वाली डॉ. नेसारी ने पिछले कुछ वर्षों में आयुर्वेद के समग्र प्रसार और उन्नति में विशेष योगदान दिया है। आयुर्वेद चिकित्सा के क्षेत्र में कई उपलब्धियां उनके नाम हैं। आयुर्वेद चिकित्सा के क्षेत्र में किए गए गहन शोध एवं अध्ययन के कारण वे पारम्परिक चिकित्सा के क्षेत्र में नवयुग की अग्रदूत हैं।

रोसेनबर्ग यूरोपियन एकेडमी ऑफ आयुर्वेद, जर्मनी और भारत के आयुष विभाग की ओर से संयुक्त रूप से आयोजित 15 वें अंतर्राष्ट्रीय आयुवेद सम्मेलन में 27 अक्टूबर 2013 को 'राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन के लिए नीति तैयार करने में आयुष की भूमिका' पर डॉ. नेसारी का व्याख्यान उनके आयुर्वेद के क्षेत्र में अथाह ज्ञान की गवाही देता है और उन्हें पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली में एक नए युग के अग्रदूत के रूप में परिभाषित करता है। राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन में आयुष की अहम भूमिका है।

आयुर्वेद के विकास और प्रसार में महिलाओं के योगदान को लेकर डॉ. नेसारी का कहना है कि महिलाओं ने शुरू से ही पारंपरिक स्वास्थ्य देखभाल में प्रमुख भूमिका निभाई है और आज भी निभा रहीं हैं। उनका कहना है कि महिला चिकित्सकों या सामान्य रूप से महिलाओं के महत्व की बात करने के लिए दो बातों पर विचार करना चाहिए। पहला, मदर एंड चाइल्ड केयर जैसे विभाग को हमेशा महिला चिकित्सकों की सक्रिय भूमिका की आवश्यकता होती है। महिला चिकित्सक स्वाभाविक रूप से अधिक सहानुभूतिपूर्ण और दयालु होते हैं। यही कारण है कि महिला चिकित्सक माताओं और शिशुओं की उचित चिकित्सा देखरेख और उनकी स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों को बेहतर तरीके से करते हैं।

डॉ. नेसारी के अनुसार आयुर्वेद का मूल लक्ष्य बीमारियों की

रोकथाम और स्वास्थ्य को बढ़ावा देना है। उनके अनुसार आहार, जीवन शैली और नींद स्वस्थ जीवन के तीन आधार हैं। महिलाएं आहार की प्रभारी हैं और इसलिए स्वस्थ जीवन की पहली कसौटी अपने आप पूरी हो जाती है। वे अपने बच्चों को अच्छे संस्कार देती हैं और अच्छी स्वस्थ आदतों का परिचय करवाती हैं। इन सबके अलावा एक मां अपने बच्चे के लिए आदर्श होती है। वह अपने दयालु और सामंजस्यपूर्ण स्वभाव के कारण मनोवैज्ञानिक तौर पर बच्चे के लिए मददगार होती है। महिला अपने परिवार के स्वास्थ्य की नींव होती है। आयुर्वेद के विकास व प्रसार में सबसे अहम योगदान महिलाओं का है। इसलिए महिलाओं की प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष भूमिकाओं को श्रेय दिए बिना आयुर्वेद के इतिहास का वर्णन नहीं किया जा सकता है।

डॉ. नेसारी का कहना है कि आयुर्वेद लोगों के मानसिक, शारीरिक और सामाजिक स्वास्थ्य के बारे में बात करता है। महिलाएं इन सभी स्तरों पर भी अपना सक्रिय योगदान देती हैं। सामाजिक रूप से उत्साही व्यक्तियों के समुदाय का निर्माण करने में महिलाएं स्वस्थ दृष्टिकोण और व्यवहार बनाने में मदद करती हैं। ऐसे में आयुर्वेद के विकास में महिलाओं की सक्रियता इसके लिए सुखद संदेश है। जब एक महिला सशक्त होती है तो वह सभी को लाभ पहुंचाती है, चाहे वह व्यक्ति हो, परिवार हो, समाज हो या समुदाय हो।

डॉ. नेसारी कहती हैं कि महिलाओं ने आयुर्वेद को अपार योगदान दिया है। आज अधिकांश आयुर्वेद स्टूडेंट्स लड़कियां हैं। वर्तमान स्थिति यह है कि लड़कों के मुकाबले लड़कियां अधिक सक्रिय रूप से आयुर्वेद शिक्षा हासिल कर रही हैं। यदि लड़कियां आज आयुर्वेद को अपने करियर विकल्प के रूप में चुन रहीं है, तो इसका मतलब यह है कि वे कल को वे इस क्षेत्र में एक सक्रिय चेंजमेकर बनने जा रही हैं।

डॉ. नेसारी वकालत करती हैं कि महिलाएं आहार, जीवन शैली, दृष्टिकोण, आचार संहिता सहित और भी बहुत क्षेत्रों में समाज की मदद कर सकती हैं। सच तो यह है कि वे वर्षों से ऐसा करती आ रही हैं। वर्तमान में लोगों के उपचार में आयुर्वेद चिकित्सा को शिखर पर पहुंचाने में महिलाओं का विश्वास कई मायनों में एक निर्णायक कारक होने जा रहा है।

डॉ. नेसारी बताती हैं कि आयुर्वेद सभी रोगों के लिए एक प्रभावी दवा प्रणाली है। स्वस्थ्य रहने के लिए आहार, जीवनशैली, देखभाल आदि अमूल्य वेलनेस प्रेक्टिस हैं। ऐसे दिशानिर्देश राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2017 में भी शामिल हैं। उनके अनुसार आयुर्वेद का समग्र दृष्टिकोण समय की आवश्यकता है।एक स्वस्थ और खुशहाल समाज के लिए डॉ. नेसारी का यह संदेश है कि खुश रहो, स्वस्थ रहो, सकारात्मक रहो। संचार, आत्मविश्वास और साहस को बढ़ाओ। यदि हम इन मूल्यों और कौशल का पालन करते हैं तो हम एक स्वस्थ और सफल जीवन प्राप्त करने जा रहे हैं।

उम्मीद की जा सकती है कि राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड के मुख्य कार्यकारी अधिकारी के तौर डॉ. नेसारी औषधीय पौधों के कृषिकरण में भी महिलाओं की भी भूमिका को जमीनी स्तर पर रेखांकित करेंगी।

सम्पादक
डॉ. अरूण चंदन

हम ऑनलाईन उपलब्ध हैं
pdf यहां से डाऊनलाड करें।
www.rcfcnorth.in/download

लेखकों से आग्रह
यदि आप विषय से संबंधित कोई लेख/अनुभव/जानकारी प्रकाशनार्थ भेजना चाहें तो निसंकोच भेजें। छपने योग्य होने पर अवश्य प्रकाशित किया जाएगा।
सम्पादक

हमसे संपर्क करें
क्षेत्रीय निदेशक / सम्पादक
ई- चरक
जड़ी- बूटी बाजार
क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र
राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड
आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान
जोगिंद्रनगर, मंडी, हिमाचल प्रदेश।
पिन : 175015
हेल्पलाईन : 8544734206
दूरभाष : 01908 222333
बैवसाइट : www.rcfcnorth.in
मेल: rcfcnorth@gmail.com

तरड़ी की व्यवसायिक खेती की संभावनाएं

डॉ. विक्रम शर्मा
लेखक कॉफी बोर्ड ऑफ इंडिया के निदेशक हैं।

इस कन्द में बहुत ज्यादा मात्रा में जरुरी तत्वों के अलावा, बिटामिन बी ग्रुप व फोस्फेट्स, कैल्शियम, जिंक, आयरन व क्रोमियम पाया जाता है। यह कुदरती आहार शरीर के लिए बहुत फायदेमंद होता है।

सर्दियों के मौसम में हिमाचल प्रदेश में तरड़ी नामक जंगली कंद हिमाचल प्रदेश के कुछ बाजारों में बहुत थोड़ी मात्रा में बिकने को पहुंचता है। बेशक मध्य प्रदेश में इस कन्द की सालाना खेती की जाती है तथा सब्जी मंडियों में इसकी भारी मांग रहती है, लेकिन अभी तक हिमाचल प्रदेश में इसे वाणिज्यिक फसल का दर्जा हासिल नहीं हुआ है। प्रदेश में व्यवसायिक स्तर पर अभी तक कहीं भी तरड़ी की खेती की पहल नहीं हुई है। हालांकि कई गांवों में लोग इसे थोड़ा- बहुत घरों के आस- पास खेतों में लगाते हैं तथा इस अति स्वादिस्ट व्यंजन का आनंद उठाते हैं। तरड़ी के औषधीय गुणों को देखते हुए बाजार में इसकी भारी मांग होने के कारण अगर व्यर्थ जमीन पर सही तरीके से इसकी खेती की जाए तो किसान के लिए मेंड़ों या बेकार जमीन से आमदन के साधन बढ़ सकते हैं। पहाड़ के किसान तरड़ी की खेती कर मालामाल हो सकते हैं। तरड़ी के बीज बेल पर ही लग कर बेल सूखने पर नीचे गिर जाते हैं। इन बीजों को अगर पॉलीथीन की परत पर मिट्टी डाल कर लाइन में उगाया जाए तो किसान इस फसल से अच्छी आमदन कमा सकते हैं। इस कंद के पूरी तरह से जैविक होने के कारण बाजार में इसकी भारी मांग रहती है और काफी अच्छा भाव मिलता है।

एक कन्द के रूप में हिमाचल प्रदेश व देश के अन्य भागों उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तराखंड व जम्मू कश्मीर आदि में पाया जाता है। यह कन्द ज्यादातर सर्दियों के दिनों में सब्जी के रूप में प्रयोग किया जाता है। तरड़ी कन्द अति स्वादिष्ट होने के साथ अति बलवर्धक व सेहत के लिए बहुत ही गुणकारी होता है। यह कन्द जंगल में भी पैदा होता है, वहीं खेती के रूप में भी उगाया जा सकता है। इसके पौधे बेलनुमा होते हैं तथा इस बेल के नीचे कन्द के रूप में तरड़ी नामक कन्द पाया जाता है, जिसे चाट बनाकर व सब्जी के रूप में खाया जाता है।

इस कन्द का पौराणिक कथाओं में भी वर्णन मिलता है। इस कन्द का सम्बन्ध महादेव शिव की शिवरात्रि से माना जाता है। कहा जाता है कि यह कन्द भगवान शिव के प्रिय फलाहारों में आता है तथा शिवरात्रि के समय खुद व खुद जमीन से ऊपर आ जाता है। आयुर्वेद में भी इस कन्द की महिमा का वर्णन है। इस कन्द में कई औषधीय गुण मौजूद होते है, जिस कारण इस कन्द का औषधीय महत्व भी बहुत ज्यादा है। इस कन्द में बहुत ज्यादा मात्रा में जरुरी तत्वों के अलावा, बिटामिन बी ग्रुप व फोस्फेट्स कैल्शियम, जिंक आयरन व क्रोमियम पाया जाता है। यह कुदरती

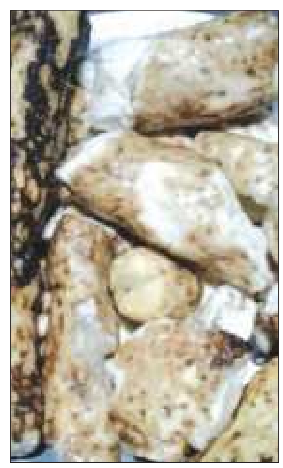

आहार मानव शरीर के लिए बहुत ही फायदेमंद होता है। हिमाचल प्रदेश में अगर तरड़ी की व्यवसायिक खेती की पहल हो तो यहां के किसानों की कृषि आर्थिकी मजबूत हो सकती है,वर्ना अवैज्ञानिक व अन्धाधुंध दोहन से जंगलों में पैदा होने वाले इस कन्द के वजूद पर खतरा है।

कुदरत से पहाड़ को तोहफे में मिले यह मेडिसनल वेल्यू वाले ऑरगेनिक सुपरफूड

सुपरफूड वर्तमान समय हर कोई अपनी सेहत को लेकर सचेत और सतर्क है और फिट रहने के लिए कसरत के साथ हेल्थी डाइट पर फोकस कर रहा है। बदलती जीवन शैली में बढ़ती नई और खतरनाक बिमारियों के चलते सेहत के लिए चिंतित वर्तमान पीढ़ी पौष्टिक तत्वों से युक्त खाद्य पदार्थों को अपने आहार में शामिल करने लगी है। इनमें विटामिन्स, मिनरल्स और एंटी ऑक्सिडेंट्स भरपूर मात्रा में होते हैं। पोषण के साथ फिटनेस देने वाले

इन्हीं खाद्य पदार्थों को सुपरफूड कहा जाता है। सुपरफूड के बढ़ते प्रचलन ने फलों, हरी सब्जियों, ड्राई फ्रूट्स सहित औषधीय गुणों वाले खाद्य पदार्थों को आहार में शामिल करने की अवधारणा को शामिल किया है। महानगरों में सुपरफूड के प्रति आकर्षण बढ़ता जा रहा है, जिसके चलते सुपरफूड का बाजार तेजी से बढ़ता जा रहा है। कई ऑनलाइन कंपनियां सुपरफूड के कारोबार में उतर आई हैं और रोज नए ब्रांड मार्केट में उतारे जा रहे हैं।

पहाड़ पर कुदरती सुपरफूड

पहाड़ पर कुदरत से तोहफे में मिले औषधीय गुणों वाले ऐसे कई ऑरगेनिक सुपरफूड मौजूद हैं, जिनका सेवन यहां के लोग सदियों से करते आ रहे हैं। यहां के लोकजीवन में कुदरती तौर पर पहाड़ पर पैदा होने वाले औषधीय गुणों वाले कई खाद्य पदार्थ आहार में शामिल हैं। पहाड़ के परम्परागत ज्ञान के जरिये यह प्रेक्टिस पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ती जा रही है। यहां के कई पेड़- पौधों के फल, फूल, पत्तियां और जड़ें लोगों के आहार का हिस्सा हैं, जो न केवल पोषण देते हैं, बल्कि स्वस्थ्य रखने में अहम भूमिका अदा करते हैं। यहां यह भी रोचक है कि पहाड़ के लोगों ने हर मौसम के हिसाब से अपने सुपरफूड खोजे हैं। भोजन, सब्जी, आचार, व चटनी के रूप में ऐसे सुपरफूड हर मौसम में यहां की हर रसोई में मौजूद रहते हैं। इन सुपरफूड का प्रयोग पहाड़ के अधिकतर घरों में होता आ रहा है, लेकिन देश- विदेश में बढ़ते सुपरफूड के क्रेज के चलते अब इनके व्यवसायिक दोहन के प्रयास चल रहे हैं। पहाड़ के इन सुपरफूड को लेकर बाजार में क्रेज बढ़ रहा है। इस अंक में पहाड़ में प्रचलित ऐसे ही चार ऑरगेनिक सुपरफूड के बारे में आपको बता रहें हैं, जो औषधीय गुणों से भरपूर हैं और कई रोगों का अचूक इलाज है। आईए, जानते हैं कुदरत से तोहफे के रूप में मिली पहाड़ की इस अनमोल धरोहर के बारे में।

डॉ. सौरभ शर्मा, आरसीएफसी,जोगिंद्रनगर

1. कचनार — सब्जी, आचार, रायता और चटनी

कचनार की कलियों की सब्जी, फूलों का रायता, फूलों के पकोड़े व कलियों का आचार पहाड़ के लोगों के आहार का हिस्सा है। कई जनपदों में इसके फूलों को सुखाकर चट्नी में प्रयोग किया जाता है, जबकि इसके पत्तों को दुधारू पशुओं के आहार के लिए प्रयोग करते हैं। फरवरी-मार्च महीने में कचनार के फेड फूलों से लद जाता है और कचनार की कलियों व फूलों का लगभग हार रसोई में प्रयोग होता है। कचनार के आचार व चटनी

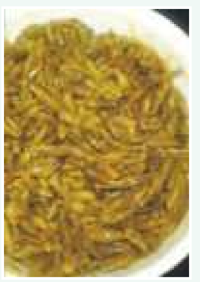

की अब बाजार में भी मांग बढ़ रही है और हर सीजन में प्रदेश की कई सब्जी मंडियों में कचनार के फूल व कलियां बिकने बाजार में पहुंचती हैं। अब इसका आचार व चटनी भी बाजार में उपलब्ध है। कचनार में कई औषधीय गुण मौजूद हैं। इसके फूल, पत्तियां, तना और जड़ किसी न किसी बीमारी का निराकरण करने में लाभकारी हैं। कचनार की कई प्रजातियां होती हैं। इनमें गुलाबी कचनार बेहद लाभकारी होता है। कचनार के फूलों की कली लंबी, हरी व गुलाबी रंग की होती है। आयुर्वेद में इसे बेहद चामत्कारी और औषधीय गुणों से भरपूर वृक्ष माना जाता है। कचनार वात रोग, जोड़ों के दर्द के लिए विशेष लाभकारी है। आयुर्वेदिक में कचनार की छाल को भी शरीर के किसी भी हिस्से में बनी गांठ को गलाने के इस्तेमाल में लिया जाता है। दाद, खाज खुजली, एक्जीमा, फोड़े- फुंसी आदि में भी इसकी छाल बेहद लाभकारी है। मुंह के छाले, बवासीर, पेट के कीड़े, भूख न लगना, गैस की समस्या, पेट फूंलने की समस्या, खांसी-दमा, दांतों का रोग, मसूढ़ों से खून का निकलना, पायरिया, थायराइड, लिवर की समस्या और यहां तक कि पेट के कैंसर में कचनार बेहद उपयोगी औषधि है। आयुर्वेद में कचनार से कई दवाओं को निर्माण किया जाता है, जबकि पहाड़ के खाने में कचनार सुपरफूड के तौर पर शामिल है।

2.लसुड़ा — सब्जी और आचार में फल का प्रयोग

लसुड़ा या लिसोड़ा के फल की सब्जी व आचार पहाड़ के आहार में शामिल है। प्रदेश के अधिकतर घरों में सब्जी के रूप में यह सुपरफूड खाया जाता है। लसुड़ा का वृक्ष सारे भारत में पाया जाता है। हिमाचल प्रदेश में जनजातीय जिलों को छोड़ कर सारे प्रदेश में लसुड़ा के पेड़ पाए जाते हैं। वसंत ऋतु में इसमें फूल आते हैं और ग्रीष्म ऋतु के अंत में फल पक जाते है। पहाड़ पर लसुड़ा के कच्चे और पक्के फलों की सब्जी व आचार बनाया जाता है। सीजन आने पर प्रदेश के सब्जी बाजारों में कहीं- कहीं लसुड़ा के फल बिकते दिखते हैं। प्रदेश के कुछ निजी आचार उत्पादक लसुड़ा का आचार बनाकर देश के महानगरों तक बेच रहे हैं। लसुड़ा के आचार की मांग तेजी से बढ़ रही है। अपने औषधीय गुणों के चलते लसुड़ा एक सुपरफूड के तौर पर पहचान रखता है। आयुर्वेद में लसुड़ा का खास महत्व है। यह मधुर-कसैला, शीतल, विषनाशक, कृमि नाशक, पाचक, मूत्रल, जठराग्नि प्रदीपक, अतिसार व सब प्रकार दर्द दूर करने वाला, कफ निकालने वाला होता है। इसकी छाल और फल का काढ़ा जमे व सूखे कफ को ढीला करके निकाल देता है। सुखी खांसी ठीक करने के लिए

यह बहुत ही उपयोगी होता है। जुकाम खांसी ठीक करने के लिए इसकी छाल का काढ़ा उपयोगी होता है। इसके फल का काढ़ा बना कर पीने से छाती में जमा हुआ सुखा कफ पिघलकर खांसी के साथ बाहर निकल जाता है। इसके कोमल पत्ते पीस कर खाने से पतले दस्त लगना बंद होते हैं और पाचन तंत्र में सुधार हो जाता है। इसकी छाल को पानी में घिस कर पीस कर लेप करने से

खुजली नष्ट होती है। इसके पके हुए फल का प्रयोग करने से मूत्र रोग भी ठीक होते हैं।

3.बिच्छु बूटी — पत्तों का साग और हर्बल टी

पहाड़ पर बिच्छु बूटी का प्रयोग सुपरफूड के तौर पर सर्दियों में होता है। हिमाचल प्रदेश के कई क्षेत्रों में सदियों से बिच्छु बूटी का साग आहार में शामिल है। हिमाचल प्रदेश व उत्तराखंड के कई क्षेत्रों में इसका साग मेडिशनल फूड के तौर पर प्रचलित है। पहाड़ पर सर्दियों के मौसम में शरीर को गर्म रखने के लिए बिच्छु बूटी का साग खाया जाता है। जानकारों का मानना है कि सर्दियों में बिच्छु बूटी के साग का प्रयोग करने से ठंड के

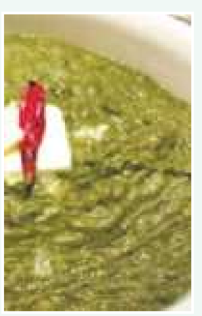

प्रकोप से शरीर को राहत मिलती है। उत्तराखंड में बिच्छु बूटी की चाय भी बनाई जा रही है, जो देश भर में खूब बिक रही है। उत्तराखंड में स्थापित एक कंपनी बिच्छु बूटी की हर्बल टी का व्यवसायिक उत्पादन कर सारे देश में बेच रही है। औषधीय गुणों से भरपूर इस हर्बल चाय की बाजार में खासी मांग है। बिच्छु बूटी कई औषधीय गुणों से भरपूर है। इसमें विटामिन ए, बी और डी, आयरन , कैल्शियम और मैंगनीज़ की प्रचुर मात्रा होती है। इसमें प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेड, एनर्जी, कोलेस्ट्रोल जीरो, सोडियम भी पाया जाता हैं। बिच्छू बूटी हिमाचल प्रदेश व उत्तराखंड सहित मध्य हिमालय क्षेत्र में होती है। इस बूटी में पतले कांटे होते हैं। यह किसी को छू जाये तो इसमें बिच्छु के काटने जैसी पीड़ा होती है और शरीर में सूजन आ जाती है। आयुर्वेद का ज्ञान रखने वाले गुणी लोग इस बूटी का उपयोग बुखार, शरीर में कमजोरी, पित दोष, गठिया, मोच, जकड़न और मलेरिया जैसे रोगों के उपचार के लिए करते आ रहे हैं। इसके बीजों को पेट साफ करने वाली दवा के रूप में प्रयोग किया जाता है। आयुर्वेद में इस औषधीय पौधे का खास महत्व है। कई दवाओं में इस औषधीय पौधे का प्रयोग होता है। वैज्ञानिक इससे बुखार भगाने की दवा तैयार करने में जुटे हैं। प्रकृति की इस चमत्कारी औषधि से और भी कई तरह के रोगों के उपचार के लिए दवा निर्माण पर शोध जारी हैं।

4. लुंगड़ू — सब्जी और आचार

हिमालयी क्षेत्रों के लोग अपने भोजन में लुंगड़ू को सब्जी व आचार के रूप में शामिल करते हैं। लुंगड़ू की सब्जी न केवल स्वादिष्ट होती है, बल्कि शरीर के लिए औषधीय रूप में फायदेमंद भी होती है। यह पहाड़ को कुदरत से मिला एक महत्वपूर्ण सुपरफूड है। गर्मियों के मौसम में पहाड़ के अधिकतर बाजारों में लुंगड़ू बिकने को पहुंचता है। हिमाचल व उत्तराखंड में लुंगड़ू का आचार तैयार किया जाता है, जिसकी बाजार में काफी मांग है। गर्मियों के मौसम में उगने वाला लुंगड़ू ऊंचे पहाड़ों पर अपने आप प्राकृतिक रूप में पैदा होता है। यह हिमालयी क्षेत्रों में पाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण पत्तेदार पौधा है, जिसका उपयोग सब्जी व आचार में होता है। देश भर में लुंगड़ू की अभी तक 1200 प्रजातियों का पता लगाया गया है। लुंगड़ू जून से सितंबर माह तक होता है, लेकिन अब टिशू कल्चर के माध्यम से भी इसका उत्पादन होने लगा है, जिसे साल में कभी भी उगाया जा सकता है। सीएसआईआर- आईएचबीटी पालमपुर के वैज्ञानिकों ने शोध करके इसे अब पूरा वर्ष पैदा करने पर सफलता पाई है। ऐसे में हिमाचल प्रदेश व उत्तराखंड में बड़े पैमाने पर लुंगड़ू की व्यवसायिक खेती शुरू होने की संभावना है। लुंगड़ू में कई

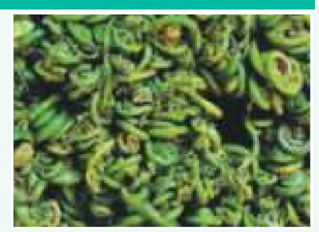

औषधीय गुण हैं। इसमें विटामिन ए, विटामिन बी कॉम्पलेक्स, पोटेशियम, कॉपर, आयरन, फैटी एसिड, सोडियम, फास्फोरस, मैग्नीशियम, कैरोटिन और मिनरल्स भरपूर मात्रा में मौजूद होते हैं। सीएसआईआर-आईएचबीटी के शोध में पाया गया कि लुंगड़ू में मैग्नीशियम, कैल्शियम, नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटेशियम, आयरन और जिंक कुपोषण से निपटने के लिए एक अच्छा स्रोत है। लुंगड़ू में मधुमेह और चर्म रोगों से

लड़ने की ताकत है। लुंगड़ू का सेवन हार्ट आदि के मरीजों के लिए भी अच्छा माना जाता है।

हिमालय क्षेत्र की औषधीय व खुशबूदार वनस्पति के संरक्षण,अनुसंधान, उत्पाद व दवा निर्माण पर फोकस

20 हजार करोड़ की एरोमा इंडस्ट्री का जनक इंस्टीट्यूट ऑफ इंटीग्रेटिव मेडिसिन जम्मू

डॉ. सौरभ शर्मा, उप निदेशक,

आरसीएफसी नॉर्थ-1. जम्मू

इंस्टीट्यूट ऑफ इंटीग्रेटिव मेडिसिन (आइआइआइएम) जम्मू देश के उन पुरातन राष्ट्रीय वैज्ञानिक संस्थानों में शामिल हैं, जिनकी स्थापना आजादी से पहले हुई। यह संस्थान देश में 20 हजार करोड़ रुपए की एरोमा इंडस्ट्रीज स्थापित करने की पहल पर गर्व कर सकता है। इस संस्थान की प्रयोगशाला के शोध एरोमा इंडस्ट्री का आधार बने। संस्थान के नाम पर एक और बड़ी उपलब्धि यह है कि वर्ष1958 में मिंट की भी शुरुआत भी इसकी प्रयोगशाला से हुई। दरअसल, आजादी से पहले 1941 में जम्मू कश्मीर में ड्रग्स रिसर्च लैब की स्थापना हुई। देश की आजादी के बाद वर्ष 1957 में यह लैब वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसधान परिषद (सीएसआइआर) का हिस्सा बन गई और इसे रीजनल रिसर्च लैब (आरएलएल) कहा जाने लगा। वर्ष 2007 में सीएसआइआर के इस संस्थान का नाम बदल कर इंस्टीट्यूट ऑफ इंटीग्रेटिव मेडिसिन(आइआइआइएम) हो गया। आइआइआइएम जम्मू देश के सबसे पुराने वैज्ञानिक संस्थानों में से एक है। हिमालय क्षेत्र की औषधीय व खुशबूदार वनस्पति विरासत की संभाल, वनस्पति की खोज, उस पर अनुसंधान कर उत्पादों व दवाओं के निर्माण की दिशा में प्रयास और औषधीय पौधों की खेती को बढ़ावा देकर किसानों को लाभांवित करना इस संस्थान का काम है। 77 सालों के सफर में संस्थान के नाम कई उपलब्धियां हैं। संस्थान ने जड़ी- बूटियों के संरक्षण, वैज्ञानिक दोहन, अनुसंधान व जड़ी- बूटियों की खेती को लेकर स्थानीय किसानों को प्रोत्साहित करने में अहम भमिका निभाई है। यह संस्थान कई अहम परियोजनाओं पर काम कर रहा है।

निदेशक इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ इंटीग्रेटिव मेडिसिन, वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद, जम्मू। 180001

डॉ. राम विश्वकर्मा

दूरभाष : (0191) 2585222

मोबाइल : 09322955391

मोबाइल : 09419182833

ई-मेल ram@iiim.res.in ravboc@gmail.com

1958 में इंस्टीट्यूट ऑफ इंटीग्रेटिव मेडिसिन जम्मू की प्रयोगशाला से ही शुरू हुआ था मिंट का उत्पादन

CSIR-IIIM

51 प्रोजेक्ट्स पर हो रहा काम

आईआईआईएम संस्थान जम्मू ने औषधीय पौधो की कई नई प्रजातियां विकसित की हैं। जम्मू कश्मीर क्षेत्र वनस्पति से भरपूर है। कई किस्म के फूलों पर अनुसंधान कर तेल निकालने, खुशबूदार सामान तैयार करने और दवा बनाने के लिए संस्थान 52 परियोजनाओं पर काम कर रहा है जिनमें से 33 परियोजनाएं ग्रांट इन एड प्रोजेक्ट्स, 5 स्पॉन्सर प्रोजेक्ट्स, 11 नेटवर्क प्रोजेक्ट्स व एक कंल्टेंसी प्रोजेक्ट शामिल है।

केले की खेती

आईआईआईएम ने टीशू कल्चर से केले की खेती की शुरुआत की है । टीशू कल्चर से खेले की खेती सफल रही है। संस्थान ने गुजरात की एक कंपनी के साथ मिलकर ट्रायल किया, जिसके अच्छे परिणाम सामने आए। एक पौधे से 30 किलो की पैदावार प्राप्त की जा सकती है। जम्मू में केले की अच्छी पैदावार हो सकती है। इसलिए संस्थान किसानों को सब्सिडी पर टीशू कल्चर के पौधे उपलब्ध कराने में जुटा हुआ है।

विकसित किया आरएंड डी का मजबूत आधार

पिछले कुछ वर्षों में आईआईआईएम ने प्रौद्योगिकी, दवा की खोज, जैव विविधता, मानकीकरण, गुणवत्ता नियंत्रण जैसे क्षेत्रों में मजबूत आरएंड डी आधार विकसित किया है। राष्ट्रीय और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के लिए आईआईआईएम के साथ काम करने के लिए बहुत सारे व्यावसायिक अवसर मौजूद हैं। संस्थान कई सहयोग परामर्श परियोजनाओं, सहयोगी परियोजनाओं या प्रायोजित परियोजनाओं में विभिन्न एजेंसियोंके साथ काम कर रहा है।

राज्य में सौ से ज्यादा वैज्ञानिक और तकनीकी अधिकारी, देशभर के सैकडों स्कॉलर अनुसंधान के काम में लगे हैं। इस संस्थान में 55 वैज्ञानिक 60 लोगों का तकनीकी सहायक स्टाफ व 184 अन्य सहायक स्टाफ है। यहां अनुसंधान में काम में जुटे एसीएसआईआर के साथ पंजीकृत 68 स्टूडेंट्स व अन्य विश्वविद्यालयों के साथ पंजीकृत 52 स्टूडेंट्स शामिल हैं। इस संस्थान के 19 डिविजन हैं और श्रीनगर में आईएएम की ब्रांच है। पिछले 77 सालों में संस्थान ने औषधीय पौधों के संरक्षण, अनुसंधान और किसानों को औषधीय पौधों की खेती करने की ओर प्रोत्साहित करने में अहम भूमिका अदा की है। एरोमा उद्योग की उत्पति का श्रेय इसी संस्थान को जाता है।

नामी कंपनियों से करार

आईआईआईएम के ग्राहकों में कई नामी कंपनियां शामिल हैं। मल्टी नेशनल दवां कंपनियों में इंडिजीन (यूएसए) कोलगेट पामोलिव (यूएसए), प्रोक्टर एंड गैंबल (यूएसए), प्रोक्टर एंड गैंबल (जापान, ट्रोपिकल बॉटेनिक (मलेशिया), सिग्मा, क्रोमैडेक्स, नोवाकोस, नेशनल कैंसर इंस्टीच्यूट (यूएसए),देश की दवा कंपनियों में निकोलस पिरामल, स्ट्रटेजी, मेडले फार्मा, ल्यूपिन फार्मा, यूनिलॉयड बायोसाइंसेस, झंडू फार्मा, हाई बायोटेक, ओचोआ फार्मा दोपत्पेश्वर, प्रतिस्थ इंडस्ट्रीज, आईएमपीसीएल, शान्ता बायोटेक, देश के नामी अस्पताल मेदांता मेडिसिटी, गुड़गांव एनसीआर और रामचंद्र अस्पताल, चेन्नई के अलावा सरकारी विभागों में जम्मू कश्मीर राज्य कृषि, बागवानी, वानिकी विभाग, सेंटर फॉर अरोमैटिक प्लांट्स, उत्तराखंड, वन विभाग, दसुआ, पंजाब व जम्मू- कश्मीर राज्य साइंस एंड टेक्नोलॉजी कांउसिल आईआइआईएम के मुख्य ग्राहकों में शामिल हैं। यह संस्थान कई तकनीकें विकसित कर कंपनियों के लिए उसका हस्तातरण कर चुका है।

इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ इंटीग्रेटिव मेडिसिन जम्मू में निदेशक के पद पर ये तमाम हस्तियां सेवाएं दे चुकी हैं।

सर आरएन चोपड़ा 1941- 1957

आईसी चोपड़ा 1957- 1964

डॉ. के गणपति 1964- 1971

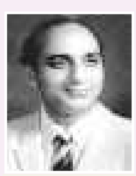

डॉ. सी के अटल 1971- 1984

डॉ. आरएस कपिल 1989- 1995

प्रो एसएस हांड़ा 1989- 1995

डॉ. जीएन काजी 1989- 1995

'दूरदर्शन किसान' नेटवर्क

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 26 मई 2015 को दूरदर्शन किसान की शुरूआत की। साढ़े तीन साल के सफर में देश के एक करोड़ किसानों तक सीधी पहुंच। हैलो किसान के जरिये लाइव चैनल से जुड़ सकते हैं किसान।

साढ़े तीन साल के सफर में भारत के एक करोड़ किसानों तक पहुंच बनाने में कामयाब 'दूरदर्शन किसान' चैनल

'दूरदर्शन किसान': खेत से बाजार तक, उत्पादक से खरीददार तक सूचनातंत्र

आरसीएफसी नार्थ फीचर सर्विस

भारत में कृषि की परंपरा हजारों वर्ष पुरानी रही है। कृषि ही भारतीय संस्कृति का आधार बनी और नदियों के किनारे पनपीं इस सभ्यता ने पूरे विश्व पर छाप छोड़ी है। कृषि इससे जुड़े उद्योग-धंधों तीज-त्यौहारों ने ही भारत को सांस्कृतिक आर्थिक और सामाजिक रूप से संपन्न और समृद्ध बनाया। हल के पीछे चलता व्यक्ति ही देश को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने में उन्नत तकनीकों व नई-नई प्रासंगिक खोजों की जानकारी प्रदान करता है। यह चैनल मौसम की सामयिक जानकारी और मंडी के भाव के बारे में भी किसानों को अपडेट रखता है। यह चैनल अपने आप में दुनिया का पहला ऐसा टीवी चैनल है जो पूरी तरह ग्रामीण भारत खासकर किसानों को समर्पित है। दूरदर्शन किसान देश के किसानों खेत-मजदूरों व कामगारों का मंच है। दूरदर्शन किसान किसानों को

अहम रहा है। देश की आत्मा को समझने की शुरूआत भारत के गांव-देहात, यहां के किसानों के जीवन से शुरू होती है। देश के किसानों, कारीगरों, बुनकरों, हस्तशिल्पकारों, दस्तकारों, बुनकरों व महिला किसानों के लिए डीडी किसान की शुरूआत की गई। दूरदर्शन किसान किसानों को कृषि लागत में कमी करने के उपाय, जैविक व पर्यावरण मित्र खेती करने के साथ सरकारी नीतियों से तो अवगत करवा ही है, साथ ही नीतियों की दिशा तय करने में भी अहम भूमिका निभा रहा है। किसान चैनल ने साढ़े तीन साल के सफर में देश के ग्रामीण क्षेत्र के करोड़ों दर्शकों तक अपनी पहुंच बनाई है। भारतीय खेती का चेहरा बदलने में दूरदर्शन किसान चैनल के सभी कार्यक्रम अहम भूमिका अदा कर रहे हैं।

24 घंटे का टीवी चैनल, अमिताभ हैं ब्रांड अम्बेसडर

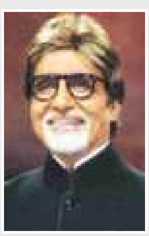

डीडी किसान भारतीय कृषि सम्बधित 24 घंटे का टेलीविजन चैनल है, जो दूरदर्शन के स्वामित्व में है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 26 मई 2015 को दूरदर्शन किसान की शुरूआत की। अब स्मार्टफोन पर भी डीडी किसान चैनल को देखा जा सकता है। इस चैनल के प्रति किसान आकर्षित हों , इसलिए इसका ब्रांड अम्बेसडर मशहूर सीने अभिनेता अमिताभ बच्चन को बनाया गया। यह चैनल खास तौर पर देश के किसानों और ग्रामीण समुदाय के लिए पूरी तरह समर्पित है। किसान चैनल किसानों को न सिर्फ कृषि आधारित जानकारी उपलब्ध कराता है, बल्कि शिक्षा, कुटीर उद्योगों, बैंकिग और संस्कृति से जुड़ी हर जानकारी भी देता रहता है। मंडियों की जानकारी उपलब्ध करवाकर यह चैनल किसान को अपने उत्पाद को बेचने के लिए बाजार के साथ जोड़ने में भी खास भूमिका अदा करता है। दूरदर्शन किसान चैनल दूरदर्शन के क्षेत्रीय चैनलों से मिल कर किसानों को क्षेत्र विशेष के लिए जरूरी कृषि जानकारियां प्रदान करता है।

करोड़ों में है डीडी किसान की दर्शक संख्या

इस चैनल की पहुंच देश के काफी दूर दराज इलाकों तक है। चैनल की दर्शक संख्या करोड़ों में पहुंच चुकी है। इस चैनल के खेत-खेलिहान, फूलों की खेती, किसान, पर्यावरण की ओर, लोक रंग जैसे कार्यक्रम काफी पसंद किए जा रहे है। इस चैनल के जरिये सूचना के साथ मनोरंजक कार्यक्रमों के जरिये किसानों का ज्ञानवर्धन किया जाता है। चैनल पर पहली बार कृषि कवि गोष्ठी के माध्यम से कृषि विज्ञान की जानकारी किसानों की दी जाती है। चैनल पर फिक्शन सीरियल, नॉन फिक्शन सीरियल भी किसानों और उनके परिवार के लिए बनाए जाते है। कई बार सीरियलों के माध्यम से किसानो को वैज्ञानिक जानकारी उपलब्ध कराई जाती है।

अब क्षेत्रीय भाषाओं और बोलियों में दिखेंगे प्रोग्राम

डीडी किसान हिंदी चैनल के रूप मे स्थापित होने के बाद दूसरे चरण में इसमें क्षेत्रीय भाषाओं और बोलियों को सम्मिलत करने के लिए क्षेत्रीय केंद्रों की मदद कर ली जा रही है। देश के करीब पचास से ज्यादा केंद्र अपनी-अपनी क्षेत्रीय भाषाओं मे कृषि का कार्यक्रम दिखाते है। किसान चैनल का इन तमाम केंद्रों से लगातार तालमेल बना रहता है। क्षेत्र विशेष से सम्बन्धित अच्छे कार्यक्रमों को क्षेत्रीय भाषाओं मे डबिंग करके दर्शकों तक पहुंचाया जाता है। चैनल में आदिवासी समाज, आर्टस और कल्चर को ध्यान मे रखकर कई प्रोग्राम जोड़े जा रहे हैं। डीडी स्पोर्टस चैनल के साथ मिलकर स्वदेशी खेल, ट्राईबल गेम और इनोवेशन पर कार्यक्रम तैयार किए जा रहे हैं।

देश की महिला किसानों की प्रेरककथाओं का प्रसारण

दूरदर्शन किसान पर देश भर की उन महिलाओं की प्रेरककथाओं का प्रसारण किया जा रहा, जिन्होंने कृषि क्षेत्र में शानदार सफलता हासिल कर अपनी पहचान बनाई है। इस कार्यक्रम में लीक से हट कर कृषि को सतत जीविका का आधार बनाने वाली महिलाओं को शामिल किया गया है।

'हैलो किसान' : अपने मोबाइल से दूरदर्शन किसान के लाइव प्रोग्राम से जुड़िये

डीडी किसान चैनल पर रोज फोन- इन कार्यक्रम के माध्यम से किसानों की समस्याओं का निदान किया जाता है। किसान किसी भी समय फोन करके अपने सवाल रिकॉर्ड कर सकते हैं। कृषि वैज्ञानिक उन सभी सवालों का जवाब समय-समय पर देते रहते हैं। कई बार किसानों और वैज्ञानिकों के बीच माडरेटर का इस्तेमाल भी किया जाता है, जिससे सही और सटीक जानकारी किसानों तक पहुंचाई जा सके। खेत-खलिहान प्रोग्राम में किसानों को आज या अभी क्या करना है, इस बारे में बताया जाता है। इस प्रोग्राम के माध्यम से किसानों को कृषि से सम्बन्धित ताजा जानकारी सुबह- सुबह दी जाती है। शाम को 'हैलो किसान' लाइव प्रोग्राम है, जिसमें किसान फोन पर चैनल से जुड़ सकते है।

जड़ी-बूटी बाजार

E-Charak

हर माह प्रकाशित/प्रसारित

www.rcfcnorth.in ■ कुल पृष्ठ : 8 ■ वर्ष 2, अंक 1 ■ 1 जनवरी से 31 जनवरी 2019

क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तर भारत, आयुष मंत्रालय भारत सरकार, पिन-175015, दूरभाष-01908-222970 (टेलीफैक्स), 9418010624 (मोबाइल) email:rcfcnorth@gmail.com

संस्थान

कृषि वानिकी को लोकप्रिय बना रहा है हिमालय वन अनुसंधान संस्थान शिमला

दुनिया के सबसे पुराने पेड़ के वजूद को बचाने में कारगर साबित हुई नेशनल मेडीसनल प्लांट बोर्ड की परियोजना

परमाणु प्रदूषण से बचाने, स्मरण शक्ति बढ़ाने वाला दुर्लभ पौधा जिंको बाइलोबा

डॉ. सौरभ शर्मा, उप निदेशक, आरसीएफसी जोगिंद्रनगर

धरती पर मानव सभ्यता की गवाह कहे जाने वाली डायनासोर युग की दुर्लभ वृक्ष प्रजाति जिंको बाइलोबा के वजूद को बचाने के लिए नेशनल मेडीसनल प्लांट्स बोर्ड की परियोजना वरदान साबित हुई है। नेशनल मेडिसनल प्लांट्स ने सीएसआईआर- हिमालयन जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर को परमाणु प्रदूषण से बचाने वाले दुनिया के सबसे पुराने औषधीय पेड़ जिंको बाइलोबा की प्रमाणिक वंशवृद्धि और कृषि तकनीक विकसित करने के लिए दो चरणों में वित्त पोषण किया। जनवरी 2005 में इस परियोजना पर काम शुरू हुआ। मसूरी, देहरादून, रानीखेत, नैनीताल, शिमला, मनाली व कल्पा से जिंको बाइलोबा की कलमें जुटाकर इसकी वंशवृद्धि के लिए पालमपुर में प्लांटिंग शुरू की गई। वर्ष 2007 में चीन से जिंको बाइलोबा के बीज मंगवाकर जर्मीनेशन ट्रायल शुरू हुआ। यह अहम परियोजना सीएसआईआर- हिमालयन जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर के वैज्ञानिक डॉ. गोपी चंद के नेतृत्व में आगे बढ़ी और वर्तमान में संस्थान के वैज्ञानिक रामजी लाल मीणा इस परियोजना की जिम्मेदारी संभाल रहे हैं। संस्थान के वैज्ञानिक कलम और बीज दोनों विधियों से जिंको बाइलोबा का क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल विकसित करने में सफल रहे हैं। संस्थान के निदेशक डॉ. संजय कुमार कहते हैं कि संस्थान के जैव विविधता फार्म में पांच एकड़ पर जिंको बाइलोबा के तीस हजार पौधे तैयार हैं। संस्थान के लाहौल स्थित रिसर्च सेंटर में भी जिंको बाइलोबा के पौधे विकसित करने में कामयाबी हासिल की है। आठ हजार पौधे हिमाचल प्रदेश वन विभाग, गैर सरकारी संस्थाओं व किसानों को आबंटित किए हैं।

डॉ. संजय कुमार
निदेशक,
सीएसआईआर-
आईएचबीटी
पालमपुर।

कलम और बीज दोनों से सफल प्रयोग

नेशनल मेडीसनल प्लांट्स बोर्ड की इस परियोजना के तहत सीआएसआईआर- हिमालयन जैवसंपदा प्रोद्योगिकी संस्थान पालमपुर के वैज्ञानिकों ने वर्ष 2005 से 2013 तक दो चरणों में जिंको बाइलोबा की वंश बढ़ोतरी के लिए प्रयोग किए और कलम और बीज दोनों तरीकों से इसकी प्रमाणिक पौधे विकसित करने की एग्रो टेक्नीक विकसित की। प्रयोगशाला और नर्सरी में विभिन्न प्रयोग कर संस्थान के वैज्ञानिकों ने जिंको बाइलोबा का क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल विकसित करने में सफलता हासिल की है। नेशनल मेडीसनल प्लांट्स बोर्ड अब इस पौधे के व्यापक कृषिकरण की तैयारियों में है।

जैव विविधता फार्म में तैयार जिंको बाइलोबा के तीस हजार पौधे

यहां पैदा हो सकता है जिंको बाइलोबा

सीएसआईआर- हिमालयन जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर के वैज्ञानिकों के अनुसार जिंको बाइलोबा को समुद्रतल से 500 मीटर से लेकर 3500 मीटर की ऊंचाई तक उगाया जा सकता है। इसकी खेती के लिए 10 डिग्री सेल्शियस से लेकर 25 डिग्री सेल्शियस तक तापमान आदर्श है। वैज्ञानिक सलाह देते हैं कि पांच साल तक नर्सरी में तैयार पौधे का ही रोपण करना चाहिए। जिंको वाइलोबा का क्लालिटी प्लांटिंग मैटीरियल सीआएआईआर हिमालयन जैवसंपदा प्रोद्योगिकी संस्थान पालमपुर से प्राप्त किया जा सकता है।

प्रति हेक्टेयर होगी दो लाख कमाई

7- 8 साल के बाद जिंको बाइलोबा आय देना शुरू करता है। इसे फार्म में लगाने के साथ खेतों की मेढ़ों पर भी लगाया जा सकता है। जिंको बाइलोबा से प्रति हैक्टेयर डेढ़ क्विंटल तक सूखी पत्तियां प्राप्त की जा सकती हैं। दवा उद्योग में वर्तमान में जिंको बाइलोबा की पत्तियां 300-400 रूपए प्रति किलोग्राम के हिसाब से बिक रही हैं। ऐसे में कृषिकरण के तमाम खर्चे निकालने के बाद सलाना प्रति हेक्टेयर दो लाख से ज्यादा की आय हासिल की जा सकती है।

लाइलाज रोगों में रामबाण हैं पत्तियां

जिंको बाइलोबा की पत्तियों के चिकित्सीय प्रभावों पर दुनिया भर के तीन सौ वैज्ञानिकों ने अध्ययन और शोध किया और इसके बाद मानव सभ्यता के लिए इस पेड़ के नए युग का सूत्रपात हुआ। जिंको बाइलोबा की पत्तियों में मौजूद जिंको लाइड्स व ग्लाइको साइड्स रसायन अल्जाइमर, कैंसर, जोड़ों का दर्द, किमोथैरेपी के दुष्प्रभाव कम करने व अवसाद जैसे लाइलाज रोगों में रामबाण है। जिंको बाइलोबा को स्मरण शक्ति वृक्ष भी कहते हैं।

दवा उद्योग में तेजी से बढ़ रही मांग

दवा उद्योग में जिंको बाइलोबा की पत्तियों की वैश्विक मांग तेजी से बढ़ रही है। इसका सत्व दुनिया के टॉप दस कमर्शियल उत्पादों में शामिल है और इसकी मांग में सलाना 26 से 32 प्रतिशत बढ़ोतरी हो रही है। चिकित्सा जगत में बढ़ती मांग को देखते हुए जिंको बाइलोबा के वंश को बढ़ाने की दुनिया भर मे कोशिशें हो रही हैं। प्रमाणिक कृषि तकनीक के जरिये दुनिया के सबसे पुराने औषधीय पेड़ की खेती पर जोर दिया जा रहा है।

संकट

धरती पर मानव सभ्यता का गवाह कहे जाने वाले जिंको बाइलोबा वृक्ष का वजूद संकट में है। भारत में इसके मात्र 33 ही पेड़ बचे हैं। बचे हुए पेड़ों में भी 60 प्रतिशत पेड़ों की उम्र 30- 35 साल के बीच है, जबकि 40

प्रतिशत पेड़ सूखने लगे हैं। जिंको बाइलोबा के प्राकृतिक पुनरोत्पादन में नर के साथ मादा पेड़ का होना जरूरी है, तभी बीज बनते हैं। मादा पेड़ विलुप्त हो रहे हैं, इसीलिए पेड़ के वजूद पर संकट है।

चीन का मूल धार्मिक पेड़

जिंको चीन का मूल धार्मिक पेड़ है। यह पेड़ चीन का राष्ट्रीय पेड़ भी है। बौद्ध मठों में इसका खास महत्व है। इसकी पत्तियों का चीनी चिकित्सा पद्धति में लगभग डेढ़ हजार वर्षो से उपयोग होता आ रहा है। चीन में लंबे समय से जिंको बाइलोबा की खेती होती आ रही है। माना जाता है कि बौद्ध मठों में स्थित पेड़ 1,500 साल पुराने हैं। आज से 350 साल पहले तक इस गुणकारी पेड़ के औषधीय गुणों के बारे में केवल चीन के लोग ही जानते थे। चीन से ही इसके बीज जापान ले जाए गए। बौद्ध धर्म में इस पेड़ की खास हैसियत के चलते कोरिया और जापान के कुछ हिस्सों में इसे बड़े पैमाने पर लगाया जाता है। वर्ष 1690 में जर्मन वनस्पतिशास्त्री केंफर इन्गेलबर्ट ने जब जापानी मंदिर के बागानों में इस पेड़ को देखा तब यूरोपीय लोगों का इस पेड़ के साथ पहला परिचय हुआ। इस पेड़ के औषधीय गुणों के चलते यूरोप और अमेरिका में भी इस पेड़ को लेकर संरक्षण की पहल हुई।

परमाणु विस्फोट भी रहा बेअसर, आज भी हिरोशिमा में जिंदा हैं पेड़

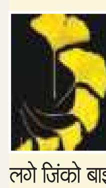

जिंको बाइलोबा की न्यूक्लियर पॉल्यूशन से बचाव करने वाला पेड़ है। हिरोशिमा में 1945 में हुए परमाणु बम विस्फोट के दो किलोमीटर के बीच के दायरे में लगे जिंको बाइलोबा के छह पेड़ उन चंद जीवित वस्तुओं में से थे, जो उस क्षेत्र में हुए विस्फोट के बावजूद बचे रहे। विस्फोट से उस क्षेत्र के लगभग सभी अन्य पौधे और जानवर नष्ट हो गए थे। हालांकि परमाणु विस्फोट से जिंको बाइलोबा के पेड़ भी जल गए थे, लेकिन वे बच गए और जल्द ही फिर से हरे हो गए। हिरोशिमा के ये पेड़ आज भी जीवित हैं।

सफल प्रयोग

फैक्ट फाइल

- वर्ष 1977 में 19 साल की उम्र में पहली बार भारत आए रूडेल।
- वर्ष 1980 में दूसरी बार भारत लौटे, पगड़ी पहनना शुरू की।
- जुलाई,1991 को आनंदपुर साहिब में अमृतपान कर सिख बने।
- वर्ष 1997 में 40 साल की उम्र में मालविंदर कौर से शादी की।
- वर्ष 1998 में वह नूरपुर बेदी के कांगड़ में फार्म की पहल।

फ्रांस से भारत आकर सिख बने दर्शन सिंह रुडेल ने पंजाब को दिया जैविक खेती का मॉडल

पंजाब के नूरपुर बेदी का कांगड़ गांव मशहूर गोरे बाबे का ऑरगेनिक फार्म

डॉ. अरूण चंदन, क्षेत्रीय निदेशक, आरसीएफसी जोगिंद्रनगर

फ्रांस के मोंटपेलियर में रोमन कैथोलिक परिवार में पैदा हुए माइकल जीन लुईस रुडेल जन्म से ही अध्यात्म की ओर आकर्षित थे। फ्रांसीसी समाज में सामान्य तौर पर प्रचलित बीयर पीना, धुम्रपान और मांसाहार भी उन्हें कतई पसंद नहीं था। हालांकि फ्रांस के समाज से ऐसा न करने पर व्यक्ति को असभ्य समझा जाता है, लेकिन जिन रीति- रिवाजों और परंपराओं को फ्रांस में रहते हुए देखा था, उन्होंने एक किशोर को नास्तिक बना डाला। 16 साल की उम्र तक ईश्वर में विश्वास नहीं था। अपने शुरुआती जीवन में उन्हें भारत

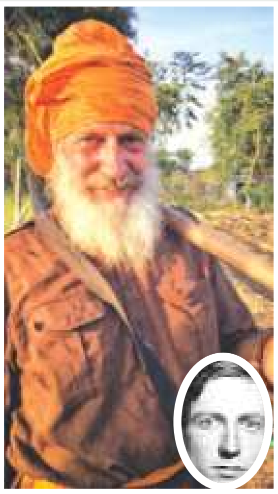

के बारे में सिर्फ इतना सा पता था कि यहां महात्मा गांधी का जन्म हुआ था और बौद्ध धर्म की स्थापना हुई थी। वे सिख धर्म के बारे में कुछ भी नहीं जानते थे। उन्हें चित्रकला में गहरी रूचि थी, जिसकी गहराईयों में उतरने के लिए उन्होंने कई देशों में यात्राएं कीं। वर्ष 1977 में जब वे भारत आए तो19 साल के नवयुवक थे। नौ माह के भारत भ्रमण के दौरान वे सिखों व सिख धर्म के संपर्क में आए। गुरुद्वारा दरबार साहिब (स्वर्ण मंदिर), अमृतसर और सिख धर्म के साथ संपर्क ने उनके भगवान के प्रति विश्वास को बहाल किया। बेशक पंजाबी नहीं जानते थे और अंग्रेजी ही बोल पाते थे, लेकिन वे सिखों के व्यक्तित्व और दयालुता से बहुत प्रभावित थे। वह अमृतसर के दरबार साहिब के पास गुरु रामदास गेस्ट हाउस में कुछ समय के लिए रहे। गुरुद्वारा दरबार साहिब में कीर्तन सुनने से बहुत प्रभावित हुए। यहां सब उनसे प्यार करते थे। उन्हें लंगर की अवधारणा बहुत पसंद आई, जिसमें हर कोई जाति या पंथ के बिना किसी भेदभाव के भोजन करता है। नौ माह पूरे होने पर भारी मन से भारत से गए, लेकिन वापस लौटने के वादे के साथ। वह अपने साथ सिख धर्म के बारे में ज्ञान का खजाना ले गए। भारत छोड़ने के बाद उन्होंने यूनान,

स्विटजरलैंड और फ्रांस में काम किया। वर्ष 1980 में वे भारत लौटे आए। अब उनके लंबे बाल थे। उन्होंने वर्ष 1980 के बाद पगड़ी पहनना शुरू कर दी और पूरे भारत में विभिन्न गुरुद्वारों का भ्रमण किया। वर्ष1983 में वह पंजाब लौट आए। उस समय पंजाब में तनाव का माहौल था। वह ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड गए और वहां कुछ सिखों से मिले और खेतों पर काम किया, फिर इंग्लैंड पहुंच गए। यहां डॉ. त्रिलोचन सिंह के संपर्क में आए, जिन्होंने अंग्रेजी और पंजाबी सीखने में उनकी मदद की। रूडेल वर्ष1991 में फिर से भारत लौटे। फिर से भारत के विभिन्न गुरुद्वारों का भ्रमण किया और10 जुलाई,1991 को आनंदपुर साहिब में खालसा का अमृतपान करके दर्शन सिंह रूडेल बन गए। वह आनंदपुर साहिब में अपना पुनर्जन्म मानते हैं। वर्ष1997 में 40 साल की उम्र में चंडीगढ़ के सेक्टर 34 के गुरुद्वारा में मालविंदर कौर से शादी कर ली। वर्ष 1998 में वह नूरपुर बेदी के कांगड़ गांव में आ गए। यहां बंजर जमीन खरीद कर उस पर ऑरगेनिक खेती की शुरूआत की।

तीन गुणा कीमत पर खेत में ही बिक जाते हैं उत्पाद

नूरपुर बेदी के कांगड़ गांव में 12 एकड़ का एक फार्म जैविक खेती को लेकर सारे पंजाब में अपनी खास पहचान रखता है। इस फार्म के गुणवतायुक्त उत्पाद जहां तिगुने दामों पर खरीदने में ग्राहकों में होड़ रहती है, वहीं इस फार्म के कई उत्पादों के लिए अग्रिम बुकिंग होती है। इस फार्म को 'अंग्रेज का फार्म' अथवा 'गोरे बाबे का फार्म' के नाम से जाना जाता है। यह फार्म ऑर्गेनिक खेती के लिए पिछले दो दशक से मशहूर है। यहां गेंहू, हल्दी, किन्नू, सोयाबीन, देसी मक्की, गन्ना, ब्रोक्ली और आलू सहित हर उत्पाद ऑर्गेनिक तरीके से पैदा किया जाता हैं।

बंजर जमीन पर उम्मीदों का फार्म

दर्शन सिंह रुडेल ने वर्ष 1998 में जब इस गांव मे बंजर जमीन खरीदी थी तो अधिकतर लोग कहते थे कि यहां पर कुछ हासिल नहीं होगा। तब किसी को यकीन नहीं था कि एक दिन यह फार्म ऑरगेनिक खेती को लेकर अपनी खास पहचान बना लेगा। दर्शन सिंह रुडेल ने कड़ी मेहनत कर बंजर जमीन को एक ऑरगेनिक फार्म में बदल दिया और यहां के उत्पाद हाथों- हाथ बिकने लगे। उनको देखते हुए अब क्षेत्र के कई किसान ऑरगेनिक खेती व औषधीय पौधों की खेती की ओर आकर्षित हो रहे हैं। अब उनके पास ऑर्गेनिक खेती के गुर सीखने दूर- दराज से कई किसान आते हैं। वह भी फार्मर टीचर के तौर पर पंजाब सहित देश के कई भागों में किसानों को जैविक खेती के गुर सिखाने जाते हैं।

रासायनिक खादों से खतरा

दर्शन सिंह रुडेल कहते हैं कि ज्यादा उत्पादन के लालच में कई किसान ज्यादा रासायनिक खाद व दवाई का इस्तेमाल कर फसलों के साथ जमीन का पानी भी खराब कर रहे हैं। इसके चलते ही कैंसर की बीमारी लगातार अपने पैर पसार रही है। उनको चिंता है कि ऐसा ही हाल रहा तो यहां की जमीनें बंजर हो जाएंगी। वे कहते हैं कि ज्यादातर लोग ऑर्गेनिक खेती की आड़ में रसायनिक खादों का इस्तेमाल करके फसलों का उत्पादन बढ़ा कर मात्र पैसा कमाने तक ही सीमित रहते हैं, लेकिन जमीन की उत्पादकता और उत्पाद की गुणवता को लेकर लापरवाह बने रहते हैं।

पेंटिंग्स में झलकता मिट्टी से प्यार

दर्शन सिंह रूडेल एक बेहतरीन चित्रकार हैं। उन्होंने पेंटिंग की गहराईयों को सीखा है और कई बेहतरीन पेंटिंग्स और कलाकृतियां बनाई हैं। चीनी शैली की पेंटिंग और मार्शल आर्ट सीखने के लिए ताइवान गए, जबकि जापानी लैंडस्केप गार्डनिंग सीखने के लिए जापान गए थे। वे मिट्टी से प्यार करने वाले कलाकार हैं, ऐसा उनकी कलाकृतियों में साफ झलकता है। उनकी बनाई पेंटिंग्स कुदरत और वाहेगुरु के साथ हमेशा मेल खाती हैं और प्रकृति और ईश्वर के प्रति प्रेम प्रदर्शित करती हैं। उन्होंने कभी मांस नहीं खाया और बचपन से ही जानवरों की हत्या के खिलाफ रहे। चूंकि बाइबल का एक वाक्यांश मासूमों को मारने से रोकता है, इसलिए उन्होंने माना कि इसे जानवरों पर भी लागू होना चाहिए। वह जैविक खेती में रुचि रखते हैं, ताकि धरती को कीटनाशकों और उर्वरकों से बचाया जा सके। उन्होंने बंजर भूमि का चयन कर उसे न केवल खेती योग्य उपजाऊ फार्म में बदलने का करिश्मा कर दिखाया, बल्कि पंजाब के किसानों के आगे एक मिसाल भी कायम की है कि खेत कैसे सोना उगलते है।

अगले चार साल तक जैविक गेहूं खरीद के लिए एडवांस बुकिंग

पिछले साल 'गोरे बाबे का फार्म' उस समय मीडिया की चर्चा में आया जब उनके फार्म में तैयार हुई ऑरगेनिक गेहूं को 3700 रुपए प्रति क्विंटल के रेट मिला। बता दें कि उस दौरान पंजाब की सरकारी गैर सरकारी गेहूं मंडियों में गेहूं 1400 रुपए प्रति क्विंटल के हिसाब से खरीदी गई। इस बार दर्शन सिंह रुडेल ने अपने फार्म में पैदा होने वाली जैविक गेहूं का मूल्य 3900 रुपए निर्धारित किया है। हैरानी की बात यह है कि भारी मूल्य होने के बावजूद उत्पाद की गुणवता के चलते उनके पास अगले चार साल तक की गेहूं की खरीद की एडवांस बुकिंग है। वे कहते हैं कि उनके फार्म में पैदा होने वाली गेहूं के लिए डिमांड को बहुत है, लेकिन इतनी आपूर्ति संभव नहीं है।

हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिला के शाहपुर क्षेत्र के आरएस गुलेरिया ने डेढ़ दशक में स्थापित किया ब्रांड

कांगड़ा हर्ब्स : जड़ी-बूटियों की खेती, आयुर्वेदिक दवा निर्माण, हर्बल फूड व थैरेपी और हर्बल टूअर

डॉ. ममता, आयुर्वेदिक चिकित्सक

हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिला के शाहपुर क्षेत्र के चड़ी गांव के आरएस गुलेरिया देश के उन गिने-चुने उद्यमियों में शुमार हैं, जिन्होंने उस समय हिमालयी क्षेत्र की दिव्य जड़ी-बूटियों के प्रयोग से आयुर्वेद दवा निर्माण की नींव रखी, जब बहुत थोड़े से लोग इस क्षेत्र में निवेश करने का जोखिम उठा रहे थे। आम घर में पैदा हुए गुलेरिया ने अपनी प्रतिभा के दम पर उद्योग जगत में अपना नाम स्थापित किया है। एक वैज्ञानिक के तौर पर खुद को साबित करने वाली पहाड़ की इस प्रतिभा को विज्ञान जगत की दी गई दो अलग-अलग खोजों के लिए देश के दो राष्ट्रपतियों ने सम्मानित किया है। गुलेरिया ने गांव के स्थानीय स्कूल से मिडल तक पढ़ाई करने के बाद आगे की शिक्षा दिल्ली से हासिल की। विज्ञान में स्नातक की डिग्री लेने वाले गुलेरिया ने वर्ष 1990 में

इंसूलेटेड मैट की खोज की, जिसके प्रयोग से 33 हजार वोल्टेज का करंट लगने के बाद भी इंसान की मृत्यु नहीं हो सकती। इस अनूठी तकनीक की खोज पर 17 साल उनका एकाधिकार रहा और उनके उत्पाद ने देश-दुनिया में खूब धूम मचाई। इस खोज के लिए उन्हें तत्कालीन राष्ट्रपति आर वेंकैटरमन के हाथों सम्मानित किया गया। आरएस गुलेरिया ने दिल्ली के उद्योग जगत में शिखर छूने के बाद वर्ष 2003 में घर वापसी की और जड़ी- बूटियों के उत्पादन और आयुर्वेदिक दवा निर्माण के क्षेत्र में कदम रखा। उन्होंने हर्बल गार्डन स्थापित किया और आयुर्वेद दवा निर्माण इकाई स्थापित की। उन्होंने सैंकड़ों स्थानीय किसानों को हर्बल व जैविक खेती की ओर मोड़ा। उन्होंने कांगड़ा हर्ब्स के ब्रांड नेम से अपने आयुर्वेद दवा, हर्बल कॉस्मेटिक व हर्बल फूड उत्पादों को बाजार में उतारा। कांगड़ा हर्ब्स वर्तमान में जड़ी-बूटियों की खेती, जैविक खेती, आयुर्वेदिक दवाईयों का उत्पादन, हर्बल कॉस्मेटिक, हर्बल फूड निर्माण और हर्बल थैरेपी सेंटर व हर्बल हैल्थ टूअर सेंटर का संचालन करने वाला देश का एक बड़ा स्थापित ब्रांड है। कांगड़ा हर्ब्स के उत्पादों की गुणवत्ता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि क्षेत्र में किए गए उनके बेहतरीन प्रयासों के लिए 17 जून 2016 को तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया है। कांगड़ा हर्ब्स कई असाध्य बिमारियों के उपचार की दवाईयों का निर्माण करता है और कांगड़ा और दिल्ली में स्थित अपने ऑफिसों के जरिये अपने उत्पादों की ऑफ व ऑनलाइन सेल करती है। कांगड़ा हर्ब्स के हर्बल थैरेपी सेंटर में देश- विदेश से लोग थैरेपी करवाने पहुंचते हैं।

हजारों किसानों को हर्बल खेती की ओर मोड़ा, सैंकड़ों युवाओं को उपलब्ध करवाया रोजगार

100 एकड़ हरित भूमि पर स्वामित्व, 55 हजार वर्गफुट में फैक्टरी

शाहपुर के दरगेला गांव में पड़ी कांगड़ा हर्ब्स की नींव

कांगड़ा हर्ब्स की स्थापना 13 अप्रैल 2003 को हुई। धौलाधार के आंचल में बसे कांगड़ा जिला के शाहपुर क्षेत्र में कांगड़ा हर्ब्स का 100 एकड़ हरित भूमि पर स्वामित्व है। यहां कांगड़ा हर्ब्स ने हाईटेक ग्रीन हाउस स्थापित किया है। यह कंपनी दस हजार एकड़ भूमि पर अपने वेंडर्स के जरिये पिछले एक दशक से भी ज्यादा समय से ऑरगेनिक खेती और जड़ी- बूटियों की खेती कर रही है। कंपनी इन उत्पादों का प्रयोग अपनी फैक्टरी में बनने वाले कई तरह के उत्पादों में करती है। कांगड़ा हर्ब्स की फैक्टरी 55 हजार वर्गफुट क्षेत्र में फैली है। फैक्टरी में अत्याधुनिक मशीनें स्थापित की गई हैं। यहां प्रोसेसिंग, दवा उत्पादन, कॉस्मेटिक प्रोडक्ट्स और हर्बल फूड प्रोडक्ट्स का उत्पादन किया जाता है। दरगेला गांव में स्थित कांगड़ा हर्ब्स के परिसर में हर्बल गार्डन, ड्रग्स मैनूफेक्चिरिंग यूनिट व हर्बल हेल्थ सेंटर स्थापित किया गया है। वर्ष 2007 से कांगड़ा हर्ब्स आयुर्वेदिक दवा, कॉस्मेटिक प्रोडक्ट्स और हर्बल फूड का उत्पादन कर रही है। कांगड़ा हर्ब्स आम बीमारियों के लिए दवाईयां बनाने के अलावा मस्कुलर डिस्ट्रोफी, पार्किनसंन, स्किन सुराइसिस, लीवर सुराईसिस, तीसरे चरण के कैंसर, एचआईबी एड्स संक्रमित व्यक्ति की एम्युनिटी पावर बढ़ाने और थैलोसीमिया जैसी बिमारियों के उपचार के लिए भी दवाइयां तैयार करती है। कांगड़ा हर्ब्स के आयुर्वेदिक उत्पादों की देश भर में मांग है। कांगड़ा हर्ब्स हिमालय की दिव्य जड़ी-बूटियों से निर्मित उत्पाद ही तैयार करती है और यहां की तमाम दवाइयों का कोई साइड इफेक्ट नहीं है। आरएस गुलेरिया कहते हैं कि कांगड़ा हर्ब्स ने कई असाध्य बीमारियों के उपचार आयुर्वेद से करने में सफलता हसिल की है। कांगड़ा हर्ब्स के विशेषज्ञों के गहन के शोध के बाद आयुर्वेद में अपनी पहचान बनाई है।

बाजार में उतारे 75 उत्पाद

पिछले दस साल के सफर में कांगड़ा हर्ब्स के 75 उत्पाद दवा और कॉस्मेटिक बाजार में अपनी विशेष पहचान बनाने में कामयाब रहे हैं। अब कांगड़ा हर्ब्स हर्बल थैरेपी के लिए कई तरह के हर्बल तेल बनाने के अलावा हर्बल चाय, हर्बल मसाले, हर्बल टूथपेस्ट व हर्बल हैल्थ ड्रिंक्स भी बना रही है। कंपनी के उत्पाद ऑफ लाइन और ऑनलाइन उपलब्ध हैं। वर्तमान में चार सौ से ज्यादा लोग प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार हासिल कर रहे हैं। कांगड़ा हर्ब्स के बारे में ज्यादा जानकारी के लिए आप कांगड़ा हर्ब्स के सोशल मीडिया पेज अथवा यू टयूब चैनल को विजिट कर सकते हैं। आरएस गुलेरिया का कहना है कि कांगड़ा हर्ब्स अपनी प्रोडक्ट्स रेंज बढ़ाने के लिए काम कर रहा है और जल्द ही कंपनी के कई नए उत्पाद बाजार में उतारे जाने की तैयारी की जा रही है।

हेल्थ टूरिज्म में रखा कदम

हर्बल खेती, आयुर्वेद दवा, कॉस्मेटिक प्रोडक्ट्स व हर्बल फूड बनाने वाली कांगड़ा हर्ब्स आयुर्वेदिक चिकित्सा विधि से रोगियों का उपचार भी करती है। कांगड़ा हर्ब्स हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला शहर और राजधानी दिल्ली में दो हर्बल क्लीनिक का संचालन कर रही है। यह कंपनी कांगड़ा में तीन हर्बल सेंटर, एक मॉडल हर्बल वेलनैस सेंटर और एक हर्बल एजुकेशन सेंटर का भी संचालन कर रही है। यहां देश- विदेश से लोग उपचार करवाने पहुंचते है। कांगड़ा हर्ब्स हैल्थ टूरिज्म के क्षेत्र में भी नए प्रयोग कर रही है। कांगड़ा हर्ब्स इको फ्रेंडली हर्बल रिसोर्ट में कांगड़ा हेल्थ टूअर सेंटर का संचालन करती है। इस सेंटर में दक्षकर्मा, किडनी स्टोन, ब्लड प्रेशर, माइग्रेन, रीढ़ की हड्डी, जोड़ों का दर्द, वजन घटाना, अपच दूर करना, बालों का गिरना

रोकना, मस्कुलर डिस्ट्रोफी, पाइलस, कैंसर व एचआईवी के उपचार की सुविधा प्रदान की जाती है। कांगड़ा हर्ब्स के सीईओ आरएस गुलरिया कहते हैं कि कांगड़ा हर्ब्स ने न केवल स्थानीय लोगों को ऑरगेनिक व हर्बल खेती करने के लिए प्रेरित किया है, बल्कि उनके उत्पादों के लिए घर के पास मार्केट का प्रबंध भी किया है। वह कहते हैं कि यहां की जड़ी- बूटियां गुणवता की दृष्टि से दुनिया में सर्वोत्तम हैं, यही कारण है कि कांगड़ा हर्ब्स ने आयुर्वेदिक दवा निर्माण में अपनी खास ब्रांड वैल्यू बनाई है। वे कहते हैं कि दुनिया भर में नेचुरल हैल्थ की अवधारणा तेजी से विकसित हो रही है और लोगों का आयुर्वेद के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है। आयुर्वद के क्षेत्र में विस्तार की असीम संभावनाएं हैं। हिमाचल प्रदेश अपने औषधीय खजाने के चलते हैल्थ टूरिज्म में नई ऊंचाईयां छू सकता है। वे कहते हैं कि कांगड़ा हर्ब्स भविष्य में हिमाचल प्रदेश के हर टूरिस्ट डेस्टिनेशन पर हर्बल हेल्थ सेंटर खोलने की योजना पर काम कर रही है। ऐसे सेंटरों के खोलने से जहां प्रदेश में रोजगार के नए अवसर उपलब्ध होंगे, वहीं इन डेस्टिनेशन पर आने वाले सैलानियों को हर्बल हेल्थ और हर्बल फूड उपलब्ध होगा। कांगड़ा हर्ब्स अपनी इन्हीं विस्तार योजनाओं को अमलीजामा पहनाने की तैयारियों में जुटी है।

डॉ. अरुण चंदन
लेखक, क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तर भारत, जोगिंद्रनगर के क्षेत्रीय निदेशक हैं।

जैव विविधिता के संरक्षण व जड़ी- बूटियों की मूल्य श्रृखंला को मजबूत करने के लिए सबसे पहले तो आयुष विभाग के साथ वन, स्वास्थ्य, कृषि व बागवानी, राजस्व और सहकारिता जैसे कई विभागों को एकजुट होकर सांझा प्रयास करने होंगे। इसमें दो राय नहीं कि किसानों की कृषि आय को दोगुणा करना संभव है, लेकिन इसके लिए उन्हें औषधीय पौधों की खेती की ओर मोड़ना होगा। किसान इस तरफ मुड़ेंगे तभी जब उन्हें लगेगा कि उनके लिए फायदे का सौदा है। आखिर में इतना ही कहूंगा कि पहले खोजिए हल, तभी होगा सुनहरा कल।

पहले खोजिए हल, तभी सुनहरा कल

औषधीय पौधों की खेती से आजीविका सृजन की सोच तभी हकीकत की जमीन पर उग सकती है, जब इसकी खेती की राह में आने वाली बुनियादी अड़चनों की पड़ताल कर प्राथमिकता से उनके हल खोजे जाएं। इस विजन में कोई शक नहीं कि औषधीय पौधों की खेती न केवल भारत की कृषि आर्थिकी का चेहरा बदल कर रोजगार एवं आजीविका सृजन के लिए वरदान साबित हो सकती है, बल्कि आयुर्वेद में भारत को दुनिया का सिरमौर बना सकती है। असीम संभावनाएं के इस आकाश में ऊंची उड़ान तभी भरी जा सकती है,जब धरातल की जमीन पर पूरी तैयारी हो।

वर्तमान में आलम यह है कि जड़ी- बूटियों की खेती के लिए उदार वित्तीय अनुदान तो दिया जा रहा है, लेकिन अगर बात बीज व क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल की हो तो हमारे हाथ खाली हैं। हम बीज और पौध का प्रबंध करना भूल गए हैं। जिन औषधीय पौधों की बाजार में मांग है, उनकी वैल्यू एडिशन के लिए उपकरणों की व्यवस्था भी अभी तक दूर की कौड़ी है। पोस्ट हार्वेटिंग तकनीकों की कमी यहां साफ खलती है। अगर कोई किसान जड़ी- बूटियों की खेती करने की पहल करे भी तो उत्पाद को बेचने की व्यवस्था इतनी लचर है कि उसे बेचारा बनना पड़ता है। अभी तक न जड़ी- बूटियों के न्यूनतम मूल्य घोषित करने के प्रस्ताव सिरे चढ़े हैं और न इन उत्पादों की ब्रिकी के लिए विशेष मंडियों अथवा कलेक्शन सेंटर की कोई व्यवस्था हो पाई है। ऐसे में जड़ी- बूटियों के उत्पादकों को बिचौलियों के हाथों लुटने को मजबूर होना पड़ रहा है। आयुर्वेद दवाईयां बनाने वाली कंपनियां भी किसानों की उपज को न्यूनतम मूल्य पर खरीद कर उनके शोषण में कहीं पीछे नहीं हैं।

पहाड़ों से लुप्त और लुप्तप्राय हो रहे दिव्य औषधीय पौधों के संरक्षण और उनकी खेती करने में अलग तरह की समस्याएं हैं। यहां लीगल प्रिक्योरमेंट सार्टिफिकेट की बाध्यता की शर्त किसानों की राह की सबसे बड़ी रूकावट है। जड़ी- बूटियों की खेती का जिम्मा तो आयुष विभाग के पास है, लेकिन लीगल प्रिक्योरमेंट सार्टिफिकेट वन विभाग की ओर से जारी किया जाता है। यह किसी से छुपा नहीं है कि इन दोनों विभागों में आपसी तालमेल के अभाव में यह सार्टिफिकेट हासिल करना किसानों के लिए कितनी टेढ़ी खीर है।

हिमालयी क्षेत्र जहां उच्च मूल्य वाले औषधीय पौधों की खेती हो सकती है, वहां के किसानों का दुखड़ा दूसरा है। इन क्षेत्रों में जहां ज्यादातर भूमि वन भूमि है, वहीं किसानों के पास छोटी भू जोतें हैं। वन भूमि पर जड़ी- बूटियों की खेती के लिए स्थानीय लोगों को अधिकार देने जैसे पेचीदा मुद्दों के हल खोजना अभी तक बाकि हैं।

बेशक आयुर्वेद का बाजार तेजी से आकार ले रहा है व जड़ी-बूटियों की मांग तेजी से बढ़ रही है। हिमालय की दिव्य औषधियां अपनी गुणवता के चलते आयुर्वेद उद्योग की पहली पंसद बन चुकी हैं, लेकिन जड़ी- बूटियों की वैल्यू चेन की पहली पायदान पर खड़े किसान के सामने समस्याओं का पहाड़ खड़ा है। अगर इस वैल्यू चेन की नींव ही खोखली है तो फिर इस पर आयुर्वेद उद्योग की बुलंद इमारत कैसे खड़ी हो सकती है? किसान को नजरअंदाज करना आयुर्वेद उद्योग के भविष्य के लिए संकट की बात है। जड़ी-बूटियों की खेती से लेकर उनके विपणन की व्यवस्था में किसान के हितों की पैरवी किए बिना आगे की सोचना कपोल कल्पना ही होगी।

जैव विविधिता के संरक्षण व जड़ी- बूटियों की मूल्य श्रृखंला को मजबूत करने के लिए सबसे पहले तो आयुष विभाग के साथ वन, स्वास्थ्य, कृषि व बागवानी, राजस्व और सहकारिता जैसे कई विभागों को एकजुट होकर सांझा प्रयास करने होंगे। इसमें दो राय नहीं कि किसानों की कृषि आय को दोगुणा करना संभव है, लेकिन इसके लिए उन्हें औषधीय पौधों की खेती की ओर मोड़ना होगा। किसान इस तरफ मुड़ेंगे तभी, जब उन्हें लगेगा कि उनके लिए फायदे का सौदा है। आखिर में इतना ही कहूंगा कि पहले खोजिए हल, तभी होगा सुनहरा कल।

सम्पादक
डॉ. अरूण चंदन

हम ऑनलाईन उपलब्ध हैं
pdf यहां से डाऊनलाड करें।
www.rcfcnorth.in/download

लेखकों से आग्रह
यदि आप विषय से संबंधित कोई लेख/अनुभव/जानकारी प्रकाशनार्थ भेजना चाहें तो निसंकोच भेजें। छपने योग्य होने पर अवश्य प्रकाशित किया जाएगा।
सम्पादक

हमसे संपर्क करें
क्षेत्रीय निदेशक / सम्पादक
ई- चरक
जड़ी- बूटी बाजार
क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र
राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड
आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान
जोगिंद्रनगर, मंडी, हिमाचल प्रदेश।
पिन : 175015
हेल्पलाईन : 8544734206
दूरभाष : 01908 222333
वैबसाइट : www.rcfcnorth.in
मेल: rcfcnorth@gmail.com

हिमाचल में उगेगा उन्नत किस्म का ब्यूल

डॉ. एचसी शर्मा
लेखक डॉ. वाईएस परमार उद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी के कुलपति हैं।

विश्वविद्यालय की ओर से तैयार किया गया ब्यूल का पौधा प्राकृतिक रूप से उगने वाले पौधे के मुकाबले जल्द व ज्यादा चारा देने वाला होगा। इससे हरे चारे की समस्या का समाधान होगा।

हिमाचल में पाया जाने वाला चमत्कारिक पौधा ब्यूल आने वाले सालों में हिमाचल प्रदेश में हरे चारे के प्रबंधन में अहम भूमिका अदा करेगा। हिमाचल प्रदेश के डॉ. वाईएस परमार उद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौणी ब्यूल की उन्नत किस्में पैदा कर प्रदेश के किसानों को इस पौधे की खेती के लिए प्रेरित करने जा रहे हैं। नेशनल मिशन ऑन हिमालय स्टडीज की ओर से विश्वविद्यालय को अगले पांच साल के लिए यह अहम परियोजना आबंटित की गई है। इस परियोजना को अमलीजामा पहनाने के लिए विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने जेनेटिक विधि से नर्सरी में उन्नत किस्म के हजारों पौधे तैयार कर लिए हैं। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक वन विभाग से मिलकर बरसात के मौसम में कांगड़ा, हमीरपुर व ऊना के किसानों को ब्यूल के पौधे आबंटित करेंगे। विश्वविद्यालय की ओर से तैयार किया गया ब्यूल का पौधा प्राकृतिक रूप से उगने वाले पौधे के मुकाबले जल्द व ज्यादा चारा देने वाला होगा और इसके उत्पादन से प्रदेश में हरे चारे की समस्या का समाधान होगा। यह चमत्कारिक पौधा पहाड़ पर दूध उत्पादन में अहम भूमिका अदा कर पहाड़ की आर्थिकी बदलने का काम करेगा।

हिमाचल प्रदेश के अधिकतर जिलों में बहुतयात पाया जाने वाला ब्यूल अपने चमत्कारिक गुणों की वजह से ख़ास पहचान रखता है। ब्यूल एक जंगली पौधा है, जो आमतौर पर उच्च हिमालयी क्षेत्र में पाया जाता है। यह पौधा 02 डिग्री से 38 डिग्री सेंटीग्रेट के तापमान तक में यह खुद को पाले रख सकता है। ब्यूल का वानस्पतिक नाम ग्रिविया ऑप्टिवा है। धमन, ब्यूंग, ब्यूल, ब्हीयूल, विवाल, विहेल इसके दूसरे स्थानीय नाम हैं। प्राकृतिक तौर पर 15-25

फीट ऊंचाई तक जाने वाला यह पौधा कई गुणों की खान है। इन्हीं गुणों की वजह से यह पौधा पर्वतीय क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की जिंदगी में तीज-त्योहारों की तरह रचा-बसा हुआ है।

ब्यूल की छाल का इस्तेमाल नहाने के लिए किया जाता है। कहते हैं, इसकी छाल से नहाने वाले व्यक्ति के शरीर में कभी कोई चर्म रोग नहीं होता। बालों में लगाते ही शैंपू की तरह झाग बन जाता है। बुढ़ापे तक बाल काले-घने और लंबे रहते हैं। ब्यूल की पत्तियां दुधारू पशुओं को चारे के रूप में दी जाती हैं। ये दूध बढ़ाने में मदद करती हैं। इसकी छड़ियों को काटकर गड्डर बनाकर चलते पानी में डाल दिया जाता है। एक माह बाद जब छाल सड़ जाती है, तो उसे डंडियों से अलग कर दिया जाता है। फिर इसी छाल से मजबूत रस्सी, कपड़े, चटाई, जैसी कई चीजें बनाई जाती हैं। पकने के बाद इसके काले रंग के फल चिड़ियों का विशेष आहार बनते हैं। ब्यूल की छाल अलग करने के बाद जो लकड़िया बचती हैं वे जलाने के काम आती हैं।

हिमालय वन अनुसंधान संस्थान शिमला

मई 1977 में अनुसंधान केंद्र के रूप में एक कमरे में स्थापना। 1978 में यूएस क्लब में स्वतंत्र भवन आवंटित। 8 सितम्बर 1998 हिमाचल प्रदेश व जम्मू- कश्मीर के लिए हिमालय वन अनुसंधान संस्थान का दर्जा।

संस्थान

कृषि वानिकी को लोकप्रिय बना रहा है हिमालय वन अनुसंधान संस्थान शिमला

आरसीएफसी नॉर्थ फीचर सर्विस

हिमालय वन अनुसंधान संस्थान शिमला की स्थापना मई 1977 में उच्च स्तर शंकु वृक्ष राई व तोष के प्राकृतिक पुनर्जनन की समस्या के समाधान के लिए अनुसंधान केंद्र के तौर पर हुई थी। 'केनेडी हाउस' के एक कमरे से शुरू हुए इस संस्थान को वर्ष 1978 में अनुसंधान गतिविधियों के लिए यूएस क्लब के समीप एक स्वतंत्र भवन प्रैसविला आवंटित किया गया। शीत मरूस्थल एवं खदान क्षेत्रों का पारिस्थितिक पुनर्वास तथा शीतोषण क्षेत्रों के शंकु वृक्षों व चौड़े पत्तीदार वनों के पुनर्जनन के साथ अल्पाइन क्षेत्रों का प्रबंधन इस संस्थान की जिम्मेदारी है। भारतीय वानिकी अनुसंधान संस्थान एवं शिक्षा परिषद ने वर्ष1998 में वनोकरण शोध के लिए इस संस्थान को उच्च अध्ययन केंद्र घोषित किया। 8 सितम्बर 1998 को इसे भारतीय वानिकी अनुसंधान संस्थान एवं शिक्षा परिषद ने हिमाचल प्रदेश व जम्मू- कश्मीर राज्यों की वानिकी शोध की जिम्मेवारियों के लिए हिमालय वन अनुसंधान संस्थान शिमला दर्जा दिया है। वर्ष 2007 में इस संस्थान में वानिकी से सम्बन्धित और क्षेत्रों की जिम्मेदारी दी गई। अब शीतोष्ण वनों व एल्पाइन क्षेत्रों में कीट एवं रोग प्रबंधन के साथ वानिकी अनुसंधान, खदान क्षेत्रों व शीत मरू भूमियों के पारिस्थितिक पुनर्वास, शंकु वृक्षों व चौड़े पत्तीदार वनों के पुनर्जनन के कृषि वानिकी को लोकप्रिय बनाना इस संस्थान के मुख्य कार्य हैं।

पंजाब के मैदानों से लेकर द्रास तक

हिमालय वन अनुसंधान संस्थान शिमला हिमाचल प्रदेश व जम्मू कश्मीर राज्यों के वानिकी अनुसंधान में जुटा है। इस क्षेत्र की समुद्रतल से ऊंचाई 300 मीटर से 8000 मीटर के बीच है। इस संस्थान का अधिकार क्षेत्र पंजाब के मैदानों से शुरू होकर लद्दाख के द्रास हिमालय क्षेत्रों तक फैला है। इन क्षेत्रों में 4500 मीटर की ऊंचाई जहां हिमरेखा है, वहां तक वनस्पति पाई जाती है। इस संस्थान के अधीन आने वाला भौगोलिक क्षेत्रफल 2,77,908 वर्ग किलोमीटर (हिमाचल प्रदेश 55,673 वर्ग कि.मी. तथा जम्मू व कश्मीर 2,22,235 वर्ग कि.मी.) है।

आईटी सैल, पांच रिसर्च डिविजन

संस्थान का एक आईटी सैल है और पांच रिसर्च डिविजन हैं। आईटी सैल उपलब्ध तकनीकों को कर्मचारियों को उपलब्ध करवाने, आई.टी. से संबंधित समस्याओ का कम लागत पर उचित समाधान प्रदान करने, विभिन्न अनुसंधानों सबंधित जानकारी का प्रसार करने और नियमित रूप से संस्थान की वेवसाइट का नवीनीकरण करता है। संस्थान के पुस्तकालय में वानिकी से संबंधित 3500 पुस्तकें, 210 जर्नल व अन्य प्रासंगिक विषयों का सर्वोतम संकलन है। यह संस्थान फॉरेस्ट इक्कोलॉजी एंड क्लाइमेट चेंज, फॉरेस्ट प्रोटक्शन, जेनेटिक एंड ट्री इम्प्रूवमेंट, सिलविकल्चर एंड फॉरेस्ट मेनेजमेंट व एक्सटेंशन पांच रिसर्च डिविजन के जरिये अपने कार्य को अंजाम देता है। विस्तार गतिविधियों के लिए वन विज्ञान केंद्र जगतसुख, वन विज्ञान केंद्र, जानीपुर, क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्र नागबनी, सह-वन विज्ञान केंद्र, लेह, तथा प्रदर्शन गांव, लानाबाका, सिरमौर स्थापित किए हैं।

हिमाचल व जम्मू-कश्मीर के वनों को बचाने में अहम रोल

डॉ. वीपी तिवारी
निदेशक, हिमालय वन अनुसंधान संस्थान।

संस्थान के निदेशक डॉ वीपी तिवारी बताते हैं कि संस्थान ने सिल्वर फर एवं स्प्रूस के कृत्रिम पुनरुत्पादन कार्य करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया गया है। उनके बीज, नर्सरी तरीकों तथा पौधरोपण तकनीकों के अनुसंधान कार्य किए गए। देवदार, टैक्सस, चील, कैल तथा इनके चौड़ी पत्तियों वाले सहायक जैसे बर्डचेरी, ओक, मेपल, पॉप्लर तथा शीत मरुस्थल क्षेत्र की स्थानीय प्रजातियों का नर्सरी एवं पौधरोपण तकनीकों का विकास किया गया है। संस्थान ने हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर के शीत मरुस्थल में पाई जाने वाली वनस्पति के प्रलेखीकरण के साथ नर्सरी तकनीकों के मानकीकरण पर महत्वपूर्ण कार्य किया गया है। संस्थान ने देवदार, शीशम, चील, कैल, सिरिस, बान और विल्लो पर कीटों से होने वाले रोगों की जांच की और उनकी रोकथाम के लिए राज्य वन विभाग हिमाचल प्रदेश और जम्मू-कश्मीर को उपाय सुझाए हैं। शीतोष्ण क्षेत्रों के औषधीय पौधों की कृषि तकनीकों के मानकीकरण से संस्थान हिमाचल प्रदेश एवं जम्मू-कश्मीर के अति-संवेदनशील वन पारिस्थितिकी प्रणालियों के सुधार में वैज्ञानिक प्रबंधन करके अपना योगदान दे रहा है

हिमालय वन अनुसंधान संस्थान के नाम जुड़ी उपलब्धियां

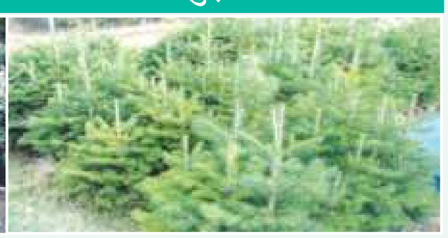

लाहौल में विल्लो पेड़ को बचाने के लिए पारिस्थितिकीय रूप से व्यवहारय और सामाजिक व आर्थिक रूप से स्वीकार्य एकीकृत मॉडल का विकास।
किन्नौर के रकछ- छितुकल वन्य अभ्यरण्य में पौध विविधता का अध्ययन।
बिलासपुर में कोल-डैम जल विद्युत परियोजना के अन्तर्गत आने वाले वन क्षेत्रों का पारिस्थितिकीय आंकलन।
पहाड़ी बांस की उत्कृष्ट प्रजातियों का पारिस्थितीकीय आंकलन, एकत्रण गुणन व क्लोनल बैंक की स्थापना।
औषधीय पौधों की प्रजातियों का व्यापक प्रसार करने के लिए नर्सरी तकनीक का मानकीकरण।
शंकुधारी एवं चौड़ी पत्तियों वाले पौधे तैयार करने को नर्सरी तकनीकों का मानकीकरण।
विभिन्न पारिस्थितिक जलवायु क्षेत्रों में स्थानीय स्तर पर उपलब्ध कच्चे माल से खाद बनाने के उन्नत तरीकों का विकास।
महत्वपूर्ण वृक्ष प्रजातियों के बीज एकत्रण, रखरखाव, भंडारण, परीक्षण तथा बीज प्रमाणीकरण के तरीकों का मानकीकरण।
देवदार में पौध रोपण स्टॉक सुधार कार्यक्रम।
हिमाचल प्रदेश में कृषि वानिकी के लिए शुरुआत, प्रयोग व परीक्षण।
हिमाचल प्रदेश के मध्य और उच्च पहाड़ियों में मौजूदा कृषि वानिकी प्रणालियों का सर्वेक्षण एवं मूल्यांकन।
हिमाचल प्रदेश में स्थानीय और संस्थागत सहभाग प्रबंधन का अध्ययन।
हमीरपुर में मिट्टी की उर्वरता स्थिति और महत्वपूर्ण स्थानीय कृषि वानिकी, वृक्ष प्रजातियों से पोषक-तत्व वापसी का मूल्यांकन।

कई परियोजनाओं पर काम कर रहा हिमालय अनुसंधान संस्थान

लाहौल घाटी में चल रही भूमि उपयोग प्रणालियों का कार्बन क्षमता का अध्ययन।
शिमला जिला कीआल्पीय चारागाहों का पारिस्थितिकीय अध्ययन।
चीड वनों में नियंत्रित दोहन द्वारा पौध व मृदा अभिलक्षणों पर प्रभाव का विश्लेषण।
मंडी के शिकारी देवी वन्य जीव अभयारण्य में पादप विविधता का अध्ययन।
शिमला जल अधिग्रहण अभयारण्य में पौध विविधता का पारिस्थितिकीय आंकलन।
हिमाचल प्रदेश के हिमालयी क्षेत्रों में प्रौद्योगिकीय हस्तक्षेप एवं प्रसार।
हिमाचल प्रदेश में ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों का आकलन करने के लिए दीर्घकालिक अध्ययन।
लद्दाख के शीत रेगिस्तान में संरक्षण स्थिति, जर्मप्लाज्म संग्रह और औषधीय पौधों के संसाधन बढ़ाना।

संसाधन मूल्यांकन और महत्वपूर्ण वन प्रजातियों का सतत प्रबंधन।
महत्वपूर्ण वन एवं वन क्षेत्र से बाहर की प्रजातियों की नर्सरी एवं वृक्षारोपण तकनीक।
वानिकी प्रजातियों के बीजों की तकनीक (संग्रह, प्रसंस्करण, जीवन क्षमता, भंडारण व प्रमाणीकरण।
खरपतवार व इनवेसिव प्रजातियों का प्रबंधन और नियंत्रण।
वन अर्थशास्त्र और बायोमैट्रिक्स के मॉडल के लिए अध्ययन।
काष्ठ और गैर-काष्ठ आधारित वन उद्योगों की मांग, आपूर्ति के साथ वानिकी उत्पादों का विपणन।
कृषि- वानिकी की प्रजातियों के लिए अनुसंधान और तकनीकी सहायता व मॉडल विकसित करना।
हिमाल प्रदेश व जम्मू कश्मीर की कम ज्ञात प्रजातियों का संरक्षण।
विकास व जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के दीर्घकालीन अध्ययन के लिए सैम्पल भूखंडों की स्थापना।
गैर-काष्ठ उत्पादों के लिए उचित खेती की तकनीक का विकास करना।
जंगलों में लगने वाली आग पर अनुसंधान और जंगल बचाने से के लिए ज्ञान प्रबंधन।
शंकुधारी व उसके साथ उगने वाली चौड़ी- पत्ती वाली प्रजातियों के पुनर्जनन को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन करना।
उत्तर- पश्चिमी हिमालय की महत्वपूर्ण वानिकी प्रजातियों की नर्सरी, बीज़ व रोपण तकनीक का मानकीकरण करना।
कृषि- वानिकी प्रणाली का अध्ययन और उत्पादकता वृद्धि के लिए उपयुक्त कृषि- वानिकी मॉडल विकसित करना।
स्थानीय लोगों की आजीविका के लिए शीतोषण पौधों की खेती की तकनीक विकसित करना।
औषधीय पौधों की खेती के लिए लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए तकनीक व मॉडल विकसित करना।

हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिला की तहसील निरमंड के बेहद पिछड़े क्षेत्र की पंचायत खरगा के रहने वाले देव भारद्वाज ने सूचना तकनीक के दम पर देश की कृषि समस्याओं का हल निकाला है।

रूस में मेडीकल पढ़ने वाले बाबू सागर ने प्रोफेशन की जगह अपने पैशन को प्राथमिकता

केरल के डॉक्टर का मनाली में ऑरगेनिक फार्म, विदेशी भी करते यहां खेतों में काम

मदन पंवार, वनस्पति वैज्ञानिक आयुर्वेद अनुसंधान केंद्र जोगिंदनगर

केरल के कोझिकोड में जिला के कोइलांडी गांव के किशोर बाबू सागर हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिला के वशिष्ठ में ऑरगेनिक खेती कर एक सफल किसान के तौर पर अपनी पहचान बनाने में कामयाब रहे हैं। सागर बाबू अपने फार्महाउस में जैविक सब्जियों का उत्पादन करते हैं। उनके फार्म में कई तरह के फल भी पैदा होते हैं। सागर बाबू ने अपने फार्महाउस में गाय और घोड़ों सहित कई मवेशी भी रखे हैं। वह अपने खेतों में खाद के तौर पर सिर्फ गाय के गोबर का प्रयोग करते हैं। वह अपने फार्महाउस में होने वाला घास स्थानीय पशुपालकों को दे देते हैं, बदले में स्थानीय गांव वाले उनके फार्महाउस के लिए गाय के गोबर की खाद उपलब्ध करवाते हैं। सागर बाबू ने अपने फार्महाउस में 13 नेपाली मजदूरों को रोजगार उपलब्ध करवाया है। सागर बाबू अपने फार्महाउस में न केवल सब्जी और फल उगाते हैं, बल्कि दूध उत्पादन का काम करते हैं। उन्होंने अपने फार्महाउस का नाम 'बाबुशका परमकल्चर फार्महाउस' रखा है। सागर बाबू ने अपने फार्म हाउस का शानदार प्रबंधन किया है। मनाली घूमने आने वाले देसी- विदेशी पर्यटक उनके फार्महाउस को देखने पहुंचने लगे हैं। सागर बाबू यहां आने वाले पर्यटकों को ऑरगेनिक फार्मिंग के गुर सिखाते हैं। एसे पर्यटक फार्महाउस के काम में भी हाथ बंटाते हैं। सागर बाबू कहते हैं कि यहां आने वाले पर्यटक जब तक उनके साथ काम करना चाहते हैं, तब तक वे यहां रह सकते हैं। इसके बदले में पर्यटकों को एक निश्चित राशि का भुगतान करना होता है। सागर बाबू बताते हैं कि उनके फार्म हाउस में हर साल कई विदेशी ठहरते हैं, जो उनके खेत में काम भी करते हैं और अच्छा भुगतान भी करते हैं। चिकित्सा जैसे पेशे को छोड़ कर कृषि के क्षेत्र में अपने करियर को सही ठहराते हुए सागर बाबू कहते हैं कि एक चिकित्सक कृषि के क्षेत्र में भी चिकित्सक की भूमिका अदा कर सकता है। चिकित्सक ऐसी खेती कर सकता है, ताकि उसका सेवन करने वाले को चिकित्सक तक जाने की जरूरत न पड़े।

हर्बल खेती से हेल्दी हेल्थ की खुराक देने वाले डॉक्टर

डॉक्टरों के परिवार से संबंध रखने वाले केरल के सागर बाबू ने जब रूस से डॉक्टरी की पढ़ाई पूरी करने के बाद अपने शौक को जिंदा रखने के लिए मनाली जाकर किसान बनने का फैसला लिया था तो उनके कई अपनों ने ही पागल करार दे दिया था। परिजनों के प्रखर विरोध के बावजूद सागर बाबू ने अपने चिकित्सक के करियर के बजाये अपने किसान बनने के सपने के साथ जीने का फैसला किया। सागर बाबू ने अपने सपनों में मेहनत के ऐसे रंग भरे कि आज वही लोग उसे सफल आदमी कहते हैं। आज बाबू मनाली के वशिष्ठ में न केवल एक फार्महाउस के मालिक है, बल्कि एक रेस्टरांट भी चला रहे हैं। पहाड़ के सम्मोहन में बंधे केरल के युवा सागर बाबू की कामयाबी की यह प्रेरककथा में रोमांच और साहस की खुशबू शामिल है।

केरल से बाइक पर लद्दाख

1990 के दशक में केरल के कोझिकोड में जिला के कोइलांडी गांव के किशोर सागर बाबू को एक पर्यटन पत्रिका से लद्दाख की यात्रा के रोमांच को पढ़ने का अवसर मिला। लद्दाख ने उस किशोर को कुछ इस तरह से अपने मोहपाश में बांध लिया कि बाइक से लद्दाख पहुंचने की ठान की। यह वह दौर था जब सूचना क्रांति अभी अपने शैशवकाल में थी और लद्दाख तक बाइकिंग करना बेहद चुनौती वाला टॉस्क था, लेकिन धुन के पक्के सागर बाबू ने केरल से लद्दाख और वापसी की बाइक राइड कर अपने परिजनों को हैरत में डाल दिया।

रूस से डाक्टरी की पढ़ाई

लद्दाख और राइडिंग के लिए अब उसके दिल में जुनून पैदा हो चुका था। बंगलुरू में कॉलेज में पढ़ाई के दौरन एक बार फिर से सागर बाबू अपने आरएक्स 100 बाइक से लद्दाख की राइड पर निकले। सागर बाबू पर जहां पहाड़ों ने जादू कर दिया था, वहीं दूसरी ओर उसके परिजन चाहते थे कि वह पारिवारिक परम्परा को कायम रखते हुए डॉक्टरी की पढ़ाई करे। जब सागर बाबू वापिस अपने घर पहुंचे तो परिजनों ने चिकित्सक की पढ़ाई करने के लिए रूस भेज दिया, लेकिन विदेश में पढ़ाई भी पहाड़ों के प्रति बाबू के प्रेम की राह का रोड़ा नहीं बन पाई।

डॉक्टर बना किसान

सेंट पीटर्सबर्ग में आठ साल तक पढ़ाई की, लेकिन इस दौरान भी सागर बाबू अपने परिजनों को बताए बिना कई बार रूस से सीधे कुल्लू, मनाली की ओर निकल आते। ऐसे ही एक बार जब वह परिजनों को सूचित किए बिना हिमाचल में घूमने निकले तो खराब मौसम के चलते वशिष्ठ के एक फार्महाउस में कई दिन रहना पड़ा। इस फार्महाउस में रहते हुए सागर बाबू को जीवन के असली आनंद का आभास हुआ। लम्बे अर्से के लिए यहां रहने की योजना का विचार यहीं आया और पढ़ाई के बाद अपने विचार को हकीकत में बदल दिया।

विदेशियों को ऑरगेनिक खेती करने का अवसर

मनाली घूमने आने वाले देसी- विदेशी पर्यटक सागर बाबू के फार्महाउस को देखने पहुंचने लगे हैं। वे यहां आने वाले पर्यटकों को ऑरगेनिक फार्मिंग के गुर सिखाते हैं। एसे पर्यटक फार्महाउस के काम में भी हाथ बंटाते हैं। सागर बाबू कहते हैं कि यहां आने वाले पर्यटक उनके खेतों में काम भी करते हैं और इसके बदले में एक निश्चित राशि का भुगतान भी करते हैं। वे कहते हैं कि उनके फार्महाउस में आने वाले पर्यटकों की संख्या साल दर साल बढ़ रही है और वे अपने फार्महाउस की विस्तार योजनाओं पर काम कर रहे हैं।

'बाबुशका' और 'केरिवाडा मक्कले'

सागर बाबू के परिवार के अधिकतर सदस्य डॉक्टर हैं और वे चाहते थे कि वह भी चिकित्सा के पेशे में अपना करियर बनाए। परिवार के तमाम विरोध के बीच डॉक्टरी की पढ़ाई करने के बावजूद सागर बाबू ने अपने शौक को जिंदा रखने के लिए किसान बनने का फैसला किया। वह मनाली आ गया। बाबू ने 'बाबुशका' (बाबुशका का अर्थ है रूसी में दादी) नाम से एक छोटा रेस्टोरेंट खोला, लेकिन वह हर पल यहां खेती करने के बार में सोच रहे थे। कुछ सालों बाद सागर बाबू ने उसी फार्महाउस जहां कभी वे ठहरे थे, में से कुछ खेत खरीद कर अपने किसान बनने के सपने को पूरा कर दिखाया। किसान बने सागर बाबू रेस्तरां भी चला रहा है। सागर बाबू ने अपने फार्महाउस में बने अपने कुटीर में 'केरिवाडा मक्कले' (आओ, बच्चों) का मलयाली में साइनबोर्ड लगा रहा है।

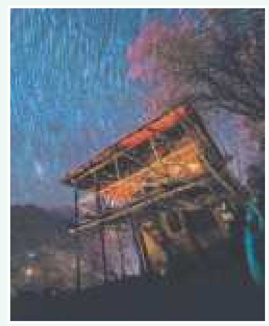

बांस की झोपडियों और कृत्रिम गुफाओं

बाबू का फार्महाउस यहां आने वाले पर्यटकों के लिए जो पैकेज प्रदान करता है, उसमें योग कक्षाएं, ट्रेकिंग, खाना पकाना और खेती करना आदि शामिल है। इन दिनों बाबू अपने फार्महाउस में बांस की झोपडियों और कृत्रिम गुफाओं का निर्माण कर अपने कॉटेज के विस्तार में व्यस्त हैं। अपने सपनों के रास्ते चल कर लीक से हट कर खुद का मुकाम बनाने वाले सागर बाबू सच में एक यात्री, दार्शनिक और दयालु व्यक्ति हैं। सागर बाबू एक सुलझे हुए मेजबाज हैं और वे यहां आने वाले सैलानियों से पूरी तरह से घुल- मिल जाते हैं। सागर बाबू मलयाली टूरिस्टों के लिए यहां मुफ्त रहने और भोजन की व्यवस्था करते हैं।

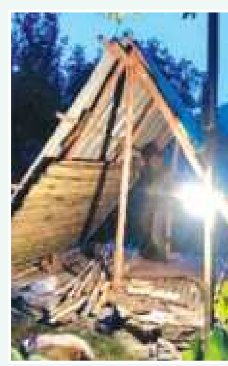

बढ़ रहा बाजार

विश्व में 62 हजार करोड़ रुपए वाली मेडिशनल प्लांट आधारित इंडस्ट्री 17 प्रतिशत की वार्षिक दर से बढ़ रही है। भारत में इसका व्यापार करीब पांच हजार करोड़ रुपए का है। भारत 600 करोड़ रुपए की जड़ी- बूटियों का निर्यात करता है।

आयुर्वेद कंपनियों से करार कर जड़ी- बूटियों की अनुबंध खेती की राह पर देश के हजारों किसान

जड़ी-बूटियों के किसानों को उद्योग के साथ सीधा जोड़ने के मिशन पर सीमैप

आरसीएफसी नॉर्थ फीचर डेस्क

बीते कुछ सालों से सरकार, कृषि वैज्ञानिक और खेती के जानकार लगातार पारंपारिक खेती के साथ ऑरगेनिक सब्जी, औषधीय व सुगंधित पौधों की खेती पर जोर दे रहे हैं। इसी का नतीजा है कि देश के कई राज्यों में औषधीय फसलों का रकबा तेजी से बढ़ा है और उत्पादन में भी बढ़ोतरी हुई। तक किसानों के सामने समस्या आई कि वह जो उगा रहे हैं, उसे बेचा कहां जाए। भारत करीब 600 करोड़ रुपए की जड़ी बूटियों और हर्ब्स का निर्यात करता है। हालांकि भारत की विशेषताओं को देखते हुए काफी कम है, लेकिन आने वाले दिनों में इसमें बहुत संभावनाएं है। यही वजह है कि वर्ष 2022 तक किसानों की आमदनी दोगुनी करने की घोषणा के देश में एरोमा मिशन की शुरूआत हुई है और औषधीय और सुगंधित खेती और इससे जुड़ी इंडस्ट्री को बढ़ावा दिया जा रहा है। जड़ी- बूटियों की मांग बढ़ने से किसानों को अच्छे रेट भी मिल रहे हैं। सतावर, कालमेघ, अश्वगंधा, मेंथा, पिपरमिंट, लेमनग्रास, पामारोजा, तुलसी, जिरेनियम और सिट्रोनेला जैसी फसलों की सबसे ज्यादा मांग है। इस तरह की खेती और इंडस्ट्री को नई प्रौद्योगिकी उपलब्ध कराने और किसानों को संबंधी पौध और खेती के तरीके बताने का जिम्मा सीमैप कुछ वर्षों में बखूबी निभा रहा है। एक आकंलन के अनुसार विश्व में 62 हजार करोड़ रुपए वाले मेडिशनल और एरोमैटिक प्लांट आधारित इंडस्ट्री 17 प्रतिशत की वार्षिक दर से बढ़ रही है। सीमैप के अनुसार भारत में इसका व्यापार करीब पांच हजार करोड़ रुपए का है। देश के हजारों किसान कंपनियों से करार कर अनुबंध खेती कर रहे हैं। पतंजलि, डाबर, वैद्यनाथ, इंडिया हर्ब, इपका लैब समेत कई बड़ी कंपनियां सतावर एलोवेरा, अश्वगंधा भूमि आंवला आदि की खेती करवा रही हैं। दिल्ली का खारी बावली, यूपी में बरेली, लखनऊ का सहादतगंज की जड़ी-बूटी मंडी, चंदौसी और बाराबंकी समेत कई इलाकों में बड़े पैमाने पर ऐसी फसलों की खरीद हो रही है। सीमैप के हेड ऑफ मार्केटिंग डॉ. संजय कुमार के मुताबिक मेडिशनल और एरोमैटिक प्रोडक्ट की मांग तेजी से बढ़ी है। भारत के किसान और इंडस्ट्री दोनों लोगों के लिए अच्छा अवसर है। सीमैप भी लगातार कोशिश में रहता है कि कैसे किसान और उद्योग के बीच सीधा संवाद हो, जिससे उपज बेचने में दिक्कत न हो।

आयुर्वेद इंडस्ट्री में जड़ी- बूटियों की तेजी से बढ़ रही मांग, किसान यहां भी बेच सकते हैं अपने उत्पाद

डाबर इंडिया लिमिटेड
8/3, आसफअली रोड, नई दिल्ली 110002, फोन नं- 0120-3962100

एके जैन (आर्यन इंटरनेशनल)
डी- 184 फीडम फाइटर इंक्लेव नबी सराय, नई दिल्ली फोन
फोन न- 011-26659020
मोबइल - 98113000884,
फैक्स- 011-26659022

रासिक लाल हिमानी एजेन्सीज लि.
508, खारी बावली, दिल्ली-110006 फोन नं- 011-23273875, 23273926

साई ट्रेडिंग कंपनी (गौरव गुप्ता)
1/2249, 3 लोर-2 स्ट्रीट नंबर-12 निकट शांति आप्टिकल्स, सुभाष रोड, रामनगर -शाहदरा दिल्ली 110032]
मोबाइल- 8447518302, 9891067409, 9891340865
shrisaivwxyz@yahoo.co.in

गुलाब सिंह जौहरी माल (मुकुल)
302, दरीबा कलां, चांदनी चौक, नई दिल्ली। फोन - 011-23263743, 23271345
मोबाइल- 9811131890

रासिक लाल हिमानी एजेंसीज लि.
प्रथम तल, सब हाउस 3/8 आसफ अली रोड नई दिल्ली
फोन- 011-23273875, मोबाइल-9971113565

विराट एक्सपोर्टर्स
23/3, ईस्ट पटेल नगर नई दिल्ली-110008, फोन-011-2576182

गुलाब एंड कंपनी
मातादीन रोड सआदतगंज, लखनऊ, फोन- 0522-2649101, 2649102 मो. 9415108206

पंचशील ट्रेडर्स
सआदतगंज, लखनऊ
फोन नं- 0522-2649619,2649054

ए.एस शारदा इंटरप्राइजेज
नेहरू मार्ग, टनकपुर- 272309
फोन- 9897737133, 9897638133

महावीर ट्रेडिंग कंपनी
पासरत्ता गली, सआदतगंज, लखनऊ
फोन- 0522-2649389,
मो. 9415026388,

पुण्य ट्रेडिंग कंपनी
सआदतगंज, लखनऊ, मोबाइल नंबर- 9450009431

पीयूश ट्रेडर्स कंपनी
सआदतगंज, लखनऊ, मोबाइल-9335242927

गुप्ता ट्रेडिंग कंपनी
सआदतगंज, लखनऊ- मोबाइल-9336011458

गंभीर चंद जैन किराना स्टोर
अन्नपूर्णा मंदिर के बगल में, सआदतगंज, लखनऊ
फोन- 0522-2649114, 2649115
मोबाइल- 9415023623, 9415087294

कन्हैया लाल, अशोक कुमार
252/6 रकाबगंज, लखनऊ-3
मोबइल- 9750200186, 9750299185

आनंद ट्रेडिंग एंड मैनुफेक्चरिंग कंपनी 133/148 ब्लाक ओ. किदवाईनगर कानपुर- 208023
मोबइल- 9455511783, इमेल-ajpltdw|@gmail.com

मेंता एंड एलाइड केमिकल्स
रामपुर, ब्लाक आफिस बाराबंकी
फोन- 05248-224094, 223508
मो. नं.- 9839174125, 9712718425 ईमेल-raj_sriz@rediffmail.com

परफ्यूमर्स एंड एसेन्सियल आयल
47 48, न्यू मार्केट पीओ बॉक्स-165 कैसरबाग लखनऊ, फोन- 0522-2612309

सुगंध व्यापार
7 कामर्स हाउस, हबीबुल्ला स्टेट, हजरतगंज, लखनऊ
फोन- 0522-3019045, मोबाइल-09415029776

नैचुरल कान्सेप्ट्स इंडिया
सीपी-12, आवास विकास, निकट ओबीसी, रुद्रपुर 263153
मोबाइल- 9810202915, 9216447232

शैव इंडस्ट्रीज
साकेत पल्ली, नरही लखनऊ-226001
फोन- 0522-2288134, 2239152

लखनऊ किराना कंपनी
88, शुभाष मार्ग लखनऊ फोन-0522-2265961

बबलू जैन किराना आढ़ती
मातादीन रोड छोटा चौराहा, सआदतगंज, लखनऊ-3 फोन- 0522-2648226, मो-9935367206

पद्मावती हर्ब्स
35-बी/ 2माडल टाउन, बरेली, उत्तर प्रदेश, फोन- 0581-3959932
मोबाइल- 9837003601

टेकचंद
बी/566, लखपेड़ाबाग, बाराबंकी
मो. 9838078627
ashriflavours@gmail.com

अनिल कुमार बनरवाल
के 64/गोलादीना नाथ, कबीर लोरा वाराणसी मो. 9415201873

निशांत अग्रवाल सुगंध एरोमेटिक
536/268 इंदिरा नगर बरेली-243122, मोबाइल- 9758876700,
sugandharomatics@rediffmail.com

हिंदुस्तान मिंट एंड एग्रो प्रोडक्टस लि
चंदौसी, मुरादाबाद- 244412
फोन- 05921-250540-251900
hindustan@sancharnet.in

भज्जामल छंगामल
पुराना देशी दवाखाना, बजाजा, फैजाबाद
मोबाइल- 9415719455

जगत एरोमा आयल्स डिस्टीलेशन
कन्नौज- 05694-2344041

एलो नेचरलस
20/1 लाइट इंड्रस्ट्रीय एरिया जोधपुर-342003 राजस्थान मो. 992861199
infao@aloenatural.co.in

के.एस. एरोमा एंड कंपनी
स्वांक मंडी, अमृतसर , पंजाब 143001,

ओरिएटंल ट्रेडर्स
615/6 बाग झंडा सिंह, फर्स्ट लोर, अमृतसर- 143001

आदित्य प्रकाश अग्रवाल
पैथ पराओ, रामनगर जिला-नैनीताल-224715, फोन- 05942-251596

अग्रवाल ट्रेडिंग कंपनी
जीबी पंत, मार्ग, टनकपुर, जिला चंपावत, फोन- 05942-251596

आनंद ट्रेडिंग कंपनी
निंबूवाला, देहरादून कैंट, उत्तराखंड 0135-248003

आर्य वस्तु भंडार
एबीसी हाउस 46, डिस्पेंसरी रोड देहरादून-248001
फोन- 0135-2654884, 2654994

बनारसीदास छन्नामल
मेन बाजार, काशीपुर, उधमसिंहनगर-244713 फोन- 274839

दीनदयाल राधेश्याम
सी-11 न्यू गल्ला मंडी, हल्दवानी, नैनीताल- 247515, फोन- 253165

उत्तरांचल डिस्ट्रीब्यूटर्स
पो. आ. गुरुकुल कांगडी- 249404 जिला हरिद्वार, उत्तराखंड, फोन-9837027196

जेना बायो हर्बल प्राइवेट लिमिटेड
मकान नंबर- 3-6-294 हैदरगुडा, हैदराबाद- 500029
फोन- 040-65166568,
मोबाइल- 7053127949

एम.एम अब्दुल हमीद एंड संस
एसेन्सियल आयल एक्सोर्टर, पीवी-बाक्स- 12, अशोकापुरा, आल्वे-683101, फोन- 0484-2624014

एन. सुंदर जेरेनियम प्लांटर
पुडुमुंड, ऊटी- मोबाइल- 944302377

राज एड कंपनी
काटजू बाजार के पीछे, नीमच मध्य प्रदेश
फोन- 07423-221600, मो. 9826021601

परफेक्ट हर्बल्स एंड आयल
एच- 401 अशोका हाईट्स, मोवा रायपुर- 492007 छत्तीसगढ़
फोन- 0771-4055495,

जसेको न्यूट्री फूड्स
अपोजिट सी- 21 माल, एबी रोड इंदौर, मध्य प्रदेश मो- 9893000009 फोन-0731- 2576009

शान्ती फार्म
पोस्ट- बिंडा, तालुका मानडुई
जिला कच्छ, गुजरात- 370001
मो- 9757218555, 9687890372

एम.एम यूनिलिंक कैमिकल्स प्राइवेट लिमिटेड
हर्बल डिविजन 384, तृतीत मंजिल, टावर- ए, एटलान्टीस सेंट्रल साराभाई मेन रोड, वडोदरा- 390007
फोन- 091-265-6544871, 2311146
मोबाइल- 9601184006

केटीसी इंटरनेशनल
ई-1 प्रेम ज्योति टावर ए-वन स्कूल के सामने, निकट सुभाष चौक- मेमनगर अहमदाबाद, गुजरात- 380052,
फोन- 9998732033, 9426065076

वैद्यनाथ
आयुर्वेद भवन प्रावेट लिमिटेड
वैद्यनाथ भवन रोड, लादीनगर पटना, 800001,फोन- 0612-2368571
baibyanathsales@rediffmail.com

आशा ग्रामोद्योग संस्थान
647 बी/सी,144/ 1 (पी-18)
जानकीपुरम गार्डेन, नियर नावेल सीटी एकेडमी, लखनऊ- 226021, मोबाइल-9415753154
ashagramodyog@gmail.com

नियो फेगरेंस
बध्व नरेश कुमार कनौजियां कटरा, बहादुर कन्नौज, फोन- 945301753, 9695803408
neofragrance@yahoo.in

एरोमेड हर्बल्स
मकान नंबर- 41, सेक्टर- 25
इंदिरानगर लखनऊ- 226016
फोन- 0522-402227

रीवा हर्बल्स
126/136 इंड्रस्ट्रीय एरिया, चोरहता, रीवा मध्य प्रदेश, फोन- 07662-22972503, मो- 9336814123

नोट- उपरोक्त सभी कंपनियों के नाम और पते सीमैप की वार्षिक पत्रिका औस झान्या से साभार लिए गए हैं।

सफल प्रयोग

फैक्ट शीट

डॉ. चिरणजीत परमार ने वर्ष 2008 में www.fruitipedia.com होस्ट की। इस वेबसाइट को अब तक 3.2 मिलियन से अधिक लोग देख चुके हैं और रोज दिन 1000 से 1500 हिट्स मिलते हैं।

सभी महादीपों में काम किया।
हर एग्रोजोन में काम का अनुभव।
34 देशों में सेवांए प्रदान की।
कर्नाटक में सेब क्रांति के जनक।
मंडी में वोटेनिकल गार्ड की सोच।

www.fruitipedia.com के संचालक, कर्नाटक में सेब उगाने के बाद मंडी में बोटेनिकल गार्डन की पहल

अस्सी साल के डॉ. चिरणजीत परमार, जिंदा कर रहे जंगली फलों का संसार

डॉ. अरुण चंदन, क्षेत्रीय निदेशक, क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र जोगिंद्रनगर।

हिमालय में सैंकड़ों प्रजातियों के जंगली फल, नट्स और खाद्य पौधे पाए जाते हैं। ये न केवल खाने में स्वादिष्ट होते हैं, बल्कि अपनी मेडिसनल वैल्यू के चलते इनकी आयुर्वेद उद्योग में भी खासी मांग रहती है। कम होते जंगलों के आकार और जंगली फलों, नट्स और जंगली खाद्य पौधों के अत्याधिक अवैज्ञानिक दोहन के चलते इनके वजूद पर ही गंभीर संकट पैदा हो गया है। अस्सी साल के फल वैज्ञानिक डॉ. चिरणजीत परमार ऐसे ही जंगली फलों, नट्स और खाद्य पौधों के संरक्षण में जुटे हैं। मंडी शहर के डॉ. चिरणजीत की देख-रेख में आईआईटी मंडी के कमांद कैंपस में तीन हैक्टेयर भूमि पर बोटेनिकल गार्डन विकसित किया जा रहा है। इस गार्डन में करीब डेढ़ सौ किस्मों के जंगली फलों, नट्स व खाद्य पौधों को विकसित कर वैज्ञानिक तरीके से इनकी व्यवसायिक खेती व बागवानी की संभावनाओं पर काम कर रहे हैं। डॉ. चिरणजीत परमार का अधिकांश शोध जंगली फलों और उन फलों के बारे में है, जिनके बारे में लोग बहुत कम जानते हैं। उन्होंने हिमालयी क्षेत्र में पैदा होने वाले जंगली फलों को लेकर गहरा अध्ययन किया है। जंगली फलों के व्यवसायिक उत्पादन से प्रदेश की आर्थिक की संभावनाओं पर भी उन्होंने अध्ययन किया है। उन्होंने हिमालयी क्षेत्र में पैदा हाने वाले जंगली फलों, जंगली नट्स और जंगलों में कुदरती तौर पर पैदा होने वाले खाद्य पौधों पर शोधपरक ई बुक लिखी है। इस ई बुक में उन्होंने 30 जंगली फलों, 11 जंगली नट्स और 10 जंगली खाद्य पौधों के बारे में सचित्र बुनियादी जानकारी दी है। यह किताब हिमालय में पैदा होने वाले जंगली फलों के बारे में अहम दस्तावेज है। हिमालयी जंगली फलों पर किए गहन अध्ययन के लिए उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति मिली है। डॉ. परमार ने वर्ष 2008 में फलों पर आधारित दो सौ पर लेखों के साथ www.fruitipedia.com होस्ट की। तभी से वह नियमित तौर पर विभिन्न फलों पर आधारित कंटेट से इसे अपडेट करते आ रहे हैं। उनकी इस वेबसाइट को अब तक 3.2 मिलियन से अधिक लोग देख चुके हैं और रोज दिन 1000 से 1500 हिट्स मिलते हैं। डॉ. परमार का सपना है कि फ्रूटपीडिया में दुनिया के सभी फलों के बारे में परिचयात्मक जानकारी होनी चाहिए। इसी मिशन को पूरा करने में जुटे हैं। कर्नाटक में सेब की सफल बागवानी का संभव करने को लेकर राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय सुर्खियां बटोर चुके डॉ. परमार जंगली फलों की व्यसायिक खेती की वकालत करते हैं।

सभी महादीपों में, सभी एग्रो जोन व दुनिया के 34 देशों के विश्वविद्यालयों व कंपनियों में काम करने का लंबा अनुभव

लेखक, ब्लॉगर, फोटोग्राफर और पत्रकार के रोल में परमार

फल वैज्ञानिक होने के साथ डॉ. चिरणजीत परमार लेखक, ब्लॉगर, फोटोग्राफर और पत्रकार के तौर पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान रखते हैं। वह भारतीय और विदेशी पत्रिकाओं व समाचार पत्रों में फलों पर आधारित नियमित लेखन करते आ रहे हैं। प्रतिष्ठित अंग्रेजी दैनिक 'द टिब्यून' में उनकी कार्टून स्ट्रिप 'फ्रूट्स फैक्टस' तीन साल तक नियमित प्रकाशित होती रही है, जिसमें विभिन्न फलों के बारे में बहुत रोचक तथ्य होते थे। फलों के अलावा डॉ. परमार ने विशेषकर अपने विदेश प्रवास व यात्राओं के दौरान हुए विभिन्न अनुभवों को अपने ब्लॉग में रोचक ढंग से प्रकाशित करते आ रहे हैं। उनके ब्लॉग का नाम 'AROUND THE SEARCH OF SEARCH OF FRUITS, FRIDDS AND NEW EXPERIENCES' है। इन दिनों वे अंग्रेजी में लिखे अपने ब्लॉग्स को हिंदी में किताब के रूप में पाठकों के सामने लाने में जुटे हैं। अंग्रेजी व हिंदी दोनों भाषाओं पर पूरी कमांड है और दोनों भाषाओं में लेखन करते हैं। इसी के साथ वे कुछ शोधार्थियों के रिसर्च वर्क में गाइड की भूमिका में हैं। फलों के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए कई संस्थाएं उनको सम्मानित कर चुकी हैं।

भारत में सबसे ज्यादा यात्रा करने वाले फल वैज्ञानिक

वर्ष 1939 को हिमाचल प्रदेश के मंडी शहर में पैदा हुए चिरणजीत परमार ने आरंभिक पढ़ाई मंडी से करने के बाद वर्ष 1972 में उदयपुर विश्वविद्यालय से बागवानी में पीएचडी की। उन्होंने फल वैज्ञानिक के तौर पर भारत और विदेशों में कई विश्वविद्यालयों में अध्ययन और कई निजी कंपनियों में काम किया है। डॉ. परमार देश के ऐसे फल वैज्ञानिक हैं, जिन्हें दुनिया के सभी जलवायु क्षेत्रों में काम करने का अनुभव है। वे सभी महाद्वीपों में 34 देशों में विशेषज्ञ फल वैज्ञानिक के तौर पर अपनी सेवाएं प्रदान कर चुके हैं। इतना ही नहीं, डॉ. परमार भारत में सबसे ज्यादा यात्रा करने वाले फल वैज्ञानिक हैं। वर्तमान में वे जेल रोड़ मंडी में रहते हैं। कुछ साल पहले कर्नाटक जैसे गर्म क्षेत्र में सेब पैदा करने का सफल प्रयोग कर चुके डॉ. परमार इन दिनों आईआईटी मंडी के साथ मिल कर जंगली फलों के संरक्षण की दिशा में काम कर रहे हैं। वह लम्बे अर्से से मेडिसलन यूज के लिए हिमाचल प्रदेश में भांग की खेती की वकालत करते आ रहे हैं। उनका कहना है कि ऐसा करने से प्रदेश की अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलेगी।

Website : www.fruitipedia.com
Blog:http://fruitipedia.blogspot.com/
Email : parmarch@gmail.com
Phone:(+91) 94181-81323

लोअर हाइट्स में सेब पैदा करने का सपना किया सच

डॉ. चिरणजीत परमार ने कर्नाटक में सेब उत्पादन की संभावनाओं को नए पंख लगा दिए हैं। उन्होंने कर्नाटक के गर्म क्षेत्र के बागवानो के साथ मिल कर सेब के बगीचे विकसित करने में ऐतिहासिक कामयाबी हासिल कर लोअर हाइट्स में सेब उत्पादन की असीम संभावनाओं को बल दिया है। डॉ. परमार की देखरेख में कर्नाटक में कई सेब बगीचे लगाए गए हैं और अब कई बागवान सेब उत्पादन करने लगे हैं। सेब उत्पादन के सफल प्रयोग को लेकर देश भर के मीडिया की सुर्खियों में रहे डॉ. परमार अब आईआईटी मंडी की ओर से स्थापित किए जा रहे बोटेनिकल गार्डन को लेकर चर्चा में हैं। डॉ. परमार की देखरेख में विकसित हो रहे इस बोटेनिकल गार्डन में हिमालय के कई तरह के जंगली फलों की व्यवसायिक खेती की संभावनाएं पैदा हो रही हैं। वह पहले से वकालत करते रहे हैं कि जंगली फल हिमाचल की बागवानी की दिशा और दशा बदल सकते हैं, इसलिए इनकी व्यवसायिक खेती होनी चाहिए। आईआईटी मंडी के सहयोग से उनके प्रयास रंग लाते दिख रहे हैं। अब वे दिन दूर नहीं हैं, जब लोग अपने बगीचों में विभिन्न तरह के जंगली फल उगा सकेंगे। यह सब संभव होगा डॉ. परमार की सोच और प्रयास से।

हिमालय के जंगली फलों को बचाने की अनूठी पहल

आईआईटी मंडी हिमालय के जंगली फलों को बचाने के लिए आगे आई है। आईआईटी मंडी के कमांद कैंपस में तीन हैक्टेयर भूमि पर बोटेनिकल गार्डन तैयार किया जा रहा है। इस गार्डन में 134 किस्मों के हिमालयी जंगली फलों के जीवन को नई सांसें देने की तैयारी चल रही है। फल वैज्ञानिक डॉ. चिरणजीत परमार की देखरेख में विकसित किए जा रहे इस गार्डन में बहुत से जंगली फूड प्लांट्स, और नट्स के पौधे भी विकसित किए जा रहे हैं। इस गार्डन में पीले आक्खों के अतिरिक्त हल्के जामुनी और गहरे जामुनी रंग के आक्खे जो अपेक्षाकृत ऊंचे स्थानों पर होते हैं, के पौधे भी तैयार किए जा रहे हैं। यहां काफल के पेड़ भी तैयार किए जा रहे है। फलों के अलावा यहां पर खाए जाने वाले जंगली कंद तरड़ी व दरेघल भी विकसित किए जा रहे हैं। इस गार्डन के विकसित होने पर इन जंगली फलों को लोग अपने किचन गार्डन में भी उगा सकेंगे और इन फलों की व्यवसायिक बागवानी भी संभव होंगी। डॉ. परमार मानते हैं कि एक समय था जब जंगली फल हिमाचल के बहुतायत होते थे, लेकिन पिछले कुछ दशक में जंगली फलों के वजूद पर संकट पर पैदा हो गया है। उनका कहना है कि आईआईटी मंडी के कैंपस में स्थापित किया जा रहा वोटेनिकल गार्डन जंगली फलों को बचाने और उनके संरक्षण में अहम भूमिका अदा करेगा और जंगली फलों की व्यवसायिक खेती की दिशा में नई पहल का गवाह बनेगा।

E-Charak

जड़ी-बूटी बाजार

पंजाब विशेषांक

www.rcfcnorth.in ■ कुल पृष्ठ : 8 ■ वर्ष 2, अंक 2 ■ 1 फरवरी से 28 फरवरी 2019

क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तर भारत, आयुष मंत्रालय भारत सरकार, पिन-175015, दूरभाष-01908-222970 (टेलीफैक्स), 9418010624 (मोबाइल) email:rcfcnorth@gmail.com

पंजाब वन विभाग और क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तरी भारत की ओर से आयोजित कार्यशाला से जगी उम्मीद

अमृतसर की लर्निंग से और स्ट्रॉन्ग होगी मेडिसनल प्लांट्स की वैल्यू चेन

औषधीय पौधों की खेती की ओर किसान तभी आकर्षित होंगे, जब उनको जड़ी-बूटियों की खेती के गुणतापरक बीज व प्लांटेशन मैटीरियल, कृषि तकनीक व इन उत्पादों को प्रोसेस कर वैल्यू एडिशन करने वाली प्रोसेसिंग मशीनरी उपलब्ध होगी। किसानों के उत्पादों के विपणन के लिए ऐसी व्यवस्था बनानी होगी, जहां किसान सीधे बाजार अथवा उद्योग से करार कर बिचौलियों के पास अपना उत्पाद बेचने को मजबूर न हो। आयुर्वेद दवा निर्माता उद्योग व फूड इंडस्ट्री को को अपनी जरूरत के औषधीय पौधों की खेती के लिए किसानों से सीधे करार करने होंगे। सामाजिक उद्यमिता और फार्म टू फैक्टरी मॉडल की पहल इस दिशा में कारगर साबित हो सकती है। अमृतसर के सतगुरू हरकिशन इंटरनेशनल स्कूल के खालसा दिवान ऑडिटोरियम में आयोजित 'वैल्यू चेन ऑफ मेडिकल प्लांट सेक्टर- इश्यू एंड चैलेंजिज' पर आधारित दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के पहले दिन के तीन सत्रों से ऐसा ही कुछ निकल कर सामने आया। पंजाब वन विभाग और आशुष विभाग के क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तरी भारत जोगिंदनगर की ओर से आयोजित कार्यशाला की अध्यक्षता पंजाब सरकार के वन विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव रोशन सनकारिया ने की। पंजाब वन विभाग के प्रधान मुख्य वन अरण्यपाल जितेंद्र शर्मा, हिमाचल वन विभाग के सेवानिवृत्त प्रधान मुख्य अरण्यपाल डॉ. जीएस गौराया व आयुष मंत्रालय के नेशनल मेडिसन प्लांट बोर्ड की अधिकारी डॉ. कविता त्यागी ने औषधीय पौधों के कृषिकरण, प्रोसेसिंग और विपणन को लेकर विस्तृत चर्चा की। इस कार्यशाला में औषधीय पौधों की खेती करने वाले कई प्रगतिशील किसान, सेल्फ हेल्प ग्रुप, स्टूडेंट्स ग्रुप व फार्मर प्रोड्यूसर कंपनियां भाग ले रहीं हैं। इस अवसर पर औषधीय पौधे से बने उत्पादों की प्रदर्शनियां भी आयोजित की गई हैं। मेडीसनल प्लांट बोर्ड के आरसीएफसी नॉर्थ के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. अरूण चंदन ने बताया कि इस कार्यशाला का उद्देश्य औषधीय पौधों की वैल्यू चेन के गैप ढूंढ कर उनके समाधान खोजना है, ताकि जड़ी- बूटियों की खेती को सतत जीविका का मॉडल बनाया जा सके। उन्होंने उम्मीद जताई कि अमृतसर की इस लर्निंग से मेडिसनल प्लाट्स की वैल्यू चेन स्ट्रॉन्ग होगी और जड़ी- बूटियों की खेती को बल मिलेगा।

पहली बार जड़ी बूटियों की वेल्यू चेन पर चर्चा

फोकस एरिया

- उत्पादकों को गुणवत्तापरक प्लांटिंग मैटीरियल की सुविधा मिले।
- जड़ी- बूटियों के विक्रेताओं-क्रेताओं के बीच करार करवाना।
- तकनीक के प्रयोग से जड़ी- बूटियों के कारोबार में मूल्यवर्धन करना।
- गुणवत्तापरक प्लांटिंग मैटीरियल के लिए टिशू कल्चर लैब की स्थापना।
- जड़ी- बूटियों के रखरखाव के लिए स्टोर हाउस की व्यवस्था करना।
- जड़ी- बूटियों के विपणन के लिए आउटलैट स्थापित करने पर जोर।
- जड़ी- बूटियों की खेती को बढ़ावा और वैज्ञानिक दोहन के प्रयास ।
- जड़ी- बूटियों की खेती से रोजगार सृजन और ग्रामीण आर्थिकी को मजबूत करना।
- जड़ी बूटियों की वेल्यू चेन के गैप ढूढ कर उनके समाधान ढूंढना।
- फार्म टू फैक्टरी के मॉडल को विकसित करने के लिए प्रयास करना।

योजनाओं पर चर्चा

- नेशनल मेडिसन प्लांट बोर्ड की ओर से जड़ी- बूटियों के संरक्षण और उत्पादन के लिए चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं और इसके लिए वितीय अनुदान के बारे में चर्चा हुई।
- डा. कविता त्यागी ने जैव विविधिता के विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि न औषधीय पौधों की खेती के लिए सरकार अनुदान दे रही है, बल्कि फसल बीमा योजना शुरू की गई है। ।
- डा. जी.एस. गौराया ने औषधीय पौधों के कच्चे माल के सप्लाई मैकानिज्म पर विस्तार से प्रकाश डाला और औषधय पौधों की खेती में असीम संभावनाओं के बारे में बताया।
- पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना के एग्रोनॉमी के प्रोफेसर डा. रजिंद्र कुमार ने महत्वपूर्ण औषधीय पौधों के कृषिकरण और प्रोसेसिंग के बारे में जानकारी दी।
- सत्र के बाद खुली चर्चा में जड़ी- बूटियों की खेती करने वाले किसानों के समक्ष आने वाली चुनौतियां पर चर्चा।

व्यवसायिकरण व विपणन

- दूसरे सत्र में औषधीय पौधों के व्यावसायिक कृषिकरण और उनके विपणन पर चर्चा की गई और इस क्षेत्र की चुनातियों पर बात करते हुए समाधान ढूंढने पर चर्चा की।
- पठानकोट फोरेस्ट डिवीजन के उप अरण्यपाल डॉ. संजीव तिवारी ने पंजाब के पठानकोट क्षेत्र में औषधीय पौधों के सतत प्रोत्साहन के बारे में अनुभव सांझा किए। उन्होंने संयुक्त वन प्रबंधन से आजीविका उपार्जन पर भी बात की।
- वाई.एस. परमार यूनिवर्सिटी नौणी के डिपार्टमेंट ऑफ फोरेस्ट के हैड डा. कुलवंत राय शर्मा ने औषधीय पौधों के क्वालिटी प्लांटिंग को लेकर चर्चा करते हुए बताया कि जड़ी- बूटियों की खेती में गुणवता वाले बीज व पौध एक चुनौती है।
- आयुष मंत्रालय के आर.सी.एफ.सी नॉर्थ के क्षेत्रीय निदेशक डा. अरूण चंदन ने उत्तरी भारत में औषधीय पौधों की खेती को प्रोत्साहित करने के बारे में जानकारी दी।

फार्म टू फैक्टरी मॉडल

- तीसरे सत्र में सामाजिक उद्यमिता और औषधीय पौधों के फॉर्म टू फैक्टरी मॉडल पर गहन चर्चा की गई। इक्को क्लब चंडीगढ़ के ओम प्रकाश ने उत्तरी भारत में महत्वपूर्ण औषधीय पौधों के कृषिकरण पर चर्चा की।
- उन्नति सहकारी मार्केटिंग व प्रोसैसिंग सोसायटी के महाप्रबंधक ज्योतिस्वरूप ने औषधीय पौधों की खेती प्रोसैसिंग से जीविका उपार्जन के मॉडल पर चर्चा की।
- कफरो सोसायटी तलवाड़ा की रेखा शर्मा ने पंजाब वन विभाग की ओर से स्थापित की गई वन सभाओं के अनुभवों पर विस्तार से जानकारी दी।
- टर्मिक मैन ऑफ हिमाचल प्रदेश कर्नल पीसी राणा ने हिमाचल प्रदेश में हल्दी की खेती व पंजाब के रोपड़ जिला के नूरपूर बेदी कस्बे के कांगड़ गांव की सुहावी फॉर्मर प्रोड्यूसर कंपनी के नरेश कुमार और उनकी टीम ने अपने अनुभव सांझा किए।

सफल प्रयोग

फैक्ट फाइल

- वर्ष 1977 में 19 साल की उम्र में पहली बार भारत आए रुडेल।
- वर्ष 1980 में दूसरी भारत लौटे आए, पगड़ी पहनना शुरू की।
- जुलाई,1991 को आनंदपुर साहिब में अमृतपान कर सिख बने।
- वर्ष 1997 में 40 साल की उम्र में मालविंदर कौर से शादी की।
- वर्ष 1998 में वह नूरपुर बेदी के कांगड़ में फार्म की पहल।

फ्रांस से भारत आकर सिख बने दर्शन सिंह रुडेल ने पंजाब को दिया जैविक खेती का मॉडल

पंजाब के नूरपुर बेदी का कांगड़ गांव मशहूर गोरे बाबे का ऑरगेनिक फार्म

डॉ. अरूण चंदन, क्षेत्रीय निदेशक, आरसीएफसी जोगिंद्रनगर

फ्रांस के मोंटपेलियर में रोमन कैथोलिक परिवार में पैदा हुए माइकल जीन लुईस रुडेल जन्म से ही अध्यात्म की ओर आकर्षित थे। फ्रांसीसी समाज में सामान्य तौर पर प्रचलित बीयर पीना, धुम्रपान करना और मांसाहार भी उन्हें कतई पसंद नहीं था। हालांकि फ्रांस के समाज से ऐसा न करने पर व्यक्ति को असभ्य समझा जाता है। उन्होंने जिन रीति-रिवाजों और परंपराओं को फ्रांस में रहते हुए देखा, एक किशोर को नास्तिक बना डाला। रुडेल को 16 साल की उम्र तक ईश्वर में विश्वास नहीं था। अपने शुरुआती जीवन में उन्हें भारत के बारे में सिर्फ इतना सा पता था कि यहां महात्मा गांधी का जन्म हुआ था और बौद्ध धर्म की स्थापना हुई थी। वे सिख धर्म के बारे में कुछ भी नहीं जानते थे। उन्हें चित्रकला में गहरी रूचि थी, जिसकी गहराईयों में उतरने के लिए उन्होंने कई देशों की यात्राएं कीं। वर्ष 1977 में जब वे भारत आए तो19 साल के नवयुवक थे। नौ माह के भारत भ्रमण के दौरान वे सिखों व सिख धर्म के संपर्क में आए। गुरुद्वारा दरबार साहिब (स्वर्ण मंदिर) अमृतसर और सिख धर्म के साथ संपर्क ने उनके भगवान के प्रति विश्वास को बहाल किया। बेशक वे पंजाबी नहीं जानते थे और अंग्रेजी ही बोल पाते थे, लेकिन सिखों के व्यक्तित्व और दयालुता से बहुत प्रभावित थे। वह अमृतसर के दरबार साहिब के पास गुरु रामदास गेस्ट हाउस में कुछ समय के लिए रहे। गुरुद्वारा दरबार साहिब में कीर्तन सुनने से बहुत प्रभावित हुए। यहां सब उनसे प्यार करते थे। उन्हें लंगर की अवधारणा बहुत पसंद आई, जिसमें हर कोई जाति या पंथ के बिना किसी भेदभाव के भोजन करता है। नौ माह पूरे होने पर भारी मन से भारत से गए, लेकिन वापस लौटने के वादे के साथ। वह अपने साथ सिख धर्म के बारे में ज्ञान का खजाना ले गए। भारत छोड़ने के बाद उन्होंने युनान, स्विटजरलैंड और फ्रांस में काम किया। वर्ष 1980 में वे भारत लौटे आए। अब उनके लंबे बाल थे। उन्होंने वर्ष 1980 के बाद पगड़ी पहनना शुरू कर दी और पूरे भारत में विभिन्न गुरुद्वारों का भ्रमण किया। वर्ष1983 में पंजाब लौट आए। उस समय पंजाब में तनाव का माहौल था। यहां से वह ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड गए और वहां कुछ सिखों से मिले और खेतों पर काम किया, फिर इंग्लैंड पहुंच गए। यहां डॉ. त्रिलोचन सिंह के संपर्क में आए, जिन्होंने अंग्रेजी और पंजाबी सीखने में उनकी मदद की। रूडेल वर्ष1991 में फिर से भारत लौटे। फिर से भारत के विभिन्न गुरुद्वारों का भ्रमण किया और10 जुलाई,1991 को आनंदपुर साहिब में खालसा का अमृतपान करके दर्शन सिंह रूडेल बन गए। वह आनंदपुर साहिब में अपना पुनर्जन्म मानते हैं। वर्ष1997 में 40 साल की उम्र में चंडीगढ़ के सेक्टर 34 के गुरुद्वारा में मालविंदर कौर से शादी कर ली। वर्ष 1998 में वह नूरपुर बेदी के कांगड़ गांव में आ गए। यहां बंजर जमीन खरीद कर उस पर ऑरगेनिक खेती की शुरूआत की।

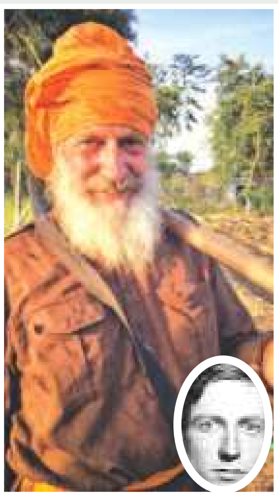

तीन गुणा कीमत पर खेत में ही बिक जाते हैं उत्पाद

नूरपुर बेदी के कांगड़ गांव में 12 एकड़ का एक फार्म जैविक खेती को लेकर सारे पंजाब में अपनी खास पहचान रखता है। इस फार्म के गुणवतायुक्त उत्पाद जहां तिगुने दामों पर खरीदने के लिए ग्राहकों में होड़ रहती है, वहीं इस फार्म के कई उत्पादों के लिए अग्रिम बुकिंग होती है। इस फार्म को 'अंग्रेज का फार्म' अथवा 'गोरे बाबे का फार्म' के नाम से जाना जाता है। यह फार्म ऑर्गेनिक खेती के लिए पिछले दो दशक से मशहूर है। इस फार्म में गेंहू, हल्दी, किन्नू, सोयाबीन, देसी मक्की, गन्ना, ब्रोकली और आलू सहित हर उत्पाद ऑर्गेनिक तरीके से पैदा किया जाता हैं।

रासायनिक खादों से खतरा

दर्शन सिंह रुडेल कहते हैं कि ज्यादा उत्पादन के लालच में कई किसान ज्यादा रासायनिक खाद व दवाई का इस्तेमाल कर फसलों के साथ जमीन का पानी भी खराब कर रहे हैं। इसके चलते ही कैंसर की बीमारी लगातार अपने पैर पसार रही है। उनको चिंता है कि ऐसा ही हाल रहा तो यहां की जमीनें बंजर हो जाएंगी। वे कहते हैं कि ज्यादातर लोग ऑर्गेनिक खेती की आड़ में रसायनिक खादों का इस्तेमाल करके फसलों का उत्पादन बढ़ा कर मात्र पैसा कमाने तक ही सीमित रहते हैं, लेकिन जमीन की उत्पादकता और उत्पाद की गुणवता को लेकर लापरवाह बने रहते हैं।

बंजर जमीन पर उम्मीदों का फार्म

दर्शन सिंह रुडेल ने वर्ष 1998 में जब इस गांव मे बंजर जमीन खरीदी थी तो अधिकतर लोग कहते थे कि यहां पर कुछ हासिल नहीं होगा। तब किसी को यकीन नहीं था कि एक दिन यह फार्म ऑरगेनिक खेती को लेकर अपनी खास पहचान बना लेगा। दर्शन सिंह रुडेल ने कड़ी मेहनत कर बंजर जमीन को एक ऑरगेनिक फार्म में बदल दिया और यहां के उत्पाद हाथों- हाथ बिकने लगे। उनको देखते हुए अब क्षेत्र के कई किसान ऑरगेनिक खेती व औषधीय पौधों की खेती की ओर आकर्षित हो रहे हैं। अब उनके पास ऑरगेनिक खेती के गुर सीखने दूर-दराज से कई किसान आते हैं। वह भी फार्मर टीचर के तौर पर पंजाब सहित देश के कई भागों में किसानों को जैविक खेती के गुर सिखाने जाते हैं।

पेंटिंग्स में झलकता मिट्टी से प्यार

दर्शन सिंह रुडेल एक बेहतरीन चित्रकार हैं। उन्होंने पेंटिंग की गहराईयों को सीखा है और कई बेहतरीन पेंटिंग्स और कलाकृतियां बनाई हैं। चीनी शैली की पेंटिंग और मार्शल आर्ट सीखने के लिए ताइवान गए, जबकि जापानी लैंडस्केप गार्डनिंग सीखने के लिए जापान गए । वे मिट्टी से प्यार करने वाले कलाकार हैं। उनकी कलाकृतियों में ऐसा साफ झलकता है। उनकी बनाईं पेंटिंग्स कुदरत और वाहेगुरु के साथ हमेशा मेल खाती हैं और प्रकृति और ईश्वर के प्रति गहरे प्रेम प्रदर्शित करती हैं। उन्होंने कभी मांस नहीं खाया और बचपन से ही जानवरों की हत्या के खिलाफ रहे। चूंकि बाइबल का एक वाक्यांश मासूमों को मारने से रोकता है, इसलिए उन्होंने माना कि इसे जानवरों पर भी लागू होना चाहिए। वह जैविक खेती में रुचि रखते हैं, ताकि धरती को कीटनाशकों और उर्वरकों से बचाया जा सके। उन्होंने बंजर भूमि का चयन कर उसे न केवल खेती योग्य उपजाऊ फार्म में बदलने का करिश्मा कर दिखाया, बल्कि पंजाब के किसानों के आगे एक मिसाल भी कायम की है कि खेत कैसे सोना उगलते हैं।

अगले चार साल तक जैविक गेहूं खरीद के लिए एडवांस बुकिंग

पिछले साल 'गोरे बाबे का फार्म' का फार्म उस समय चर्चा में आया जब उनके फार्म में तैयार हुई ऑरगेनिक गेहूं को 3700 रुपए प्रति क्विंटल के रेट मिला। बता दें कि उस दौरान पंजाब की सरकारी गैर सरकारी गेहूं मंडियों में गेहूं 1400 रुपए प्रति क्विंटल के हिसाब से खरीदी गई। इस बार दर्शन सिंह रुडेल ने अपने फार्म में पैदा होने वाली जैविक गेहूं का मूल्य 3900 रुपए निर्धारित किया है। हैरानी की बात यह है कि भारी मूल्य होने के बावजूद उत्पाद की गुणवता के चलते उनके पास अगले चार साल तक की गेहूं की खरीद की एडवांस बुकिंग है। वे कहते हैं कि उनके फार्म में पैदा होने वाली गेहूं के लिए डिमांड तो बहुत है, लेकिन इतनी आपूर्ति संभव नहीं है।

गणतंत्र दिवस की शाम को पद्म पुरस्कारों की घोषणा हुई और बीते दिनों राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने पद्म पुरस्कार प्रदान किए। खेती से जुड़े देश के विभिन्न हिस्सों के 12 किसानों को भी इन पुरस्कारों में शामिल किया गया।

भारत में खेती का चेहरा बदल कर समाज के लिए मिसाल कायम करने वाले किसानों से मिलिए

मिट्टी से सोना पैदा करने वाले हैं ये किसान राष्ट्रपति के हाथों में मिला है पद्मश्री सम्मान

ऐसे में जबकि देश में खेती को घाटे के सौदे के तौर पर देखा जा रहा है और देश के कई हिस्सों से किसानों के कर्जदार होकर आत्महत्या की खबरें सुर्खियां बटोर रही हैं, देश के कुछ किसान लीक से हट कर मिट्टी से सोना उगाने का चमत्कार कर रहे हैं। गणतंत्र दिवस की शाम को पद्म पुरस्कारों की घोषणा हुई और बीते दिनों राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने पद्म पुरस्कार प्रदान किए। खेती से जुड़े देश के एक बड़े वर्ग के लिए खुशी की बात यह है कि देश के विभिन्न हिस्सों के 12 किसानों को भी इन पुरस्कारों में शामिल किया गया। इन किसानों ने कृषि को एक नया रूप प्रदान किया और समाज के लिए एक मिसाल कायम की है।

खेती से महिला सशक्तिकरण

राज कुमारी देवी बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के आनंदपुर गांव की रहने वाली हैं। मिट्टी की गुणवत्ता का आकलन करने और किसानों को लाभदायक वन प्राप्त करने में काफी कुशल बना दिया है। वह गांवों में ऑरगेनिक खेती के बारे में सुझाव देती हैं और महिलाओं को स्वयं सहायता समूह बनाने के लिए प्रेरित करती हैं। राज कुमारी ने एक गैर-लाभकारी संगठन भी बनाया है, जो न केवल महिला स्वयं सहायता समूहों की ओर से संचालित खेतों से ताजा प्रोडक्ट्स उठाता है, बल्कि बाजार में बेचने की व्यवस्था भी करता है। उन्होंने कई महिलाओं को खेती से अजीविका के लिए सक्षम कर रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाएं हैं।

चौहान की मसरूम व बेबी कॉन से पहचान

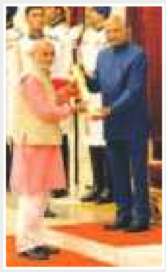

हरियाणा के अनंतना से, कंवल सिंह को मशरूम और बेबी कॉर्न की खेती के लिए जाना जाता है। वह एक प्रशिक्षित वकील भी हैं, पर वह अदालत की अपेक्षा खेतों में काम करना अधिक पसंद करते हैं। कंवल सिंह ने पिता के देहांत के बाद 15 साल की उम्र में खेती करनी शुरू कर दी थी। वर्ष 1998 में परंपरागत खेती को छोड़कर मशरूम और बेबी कॉर्न की खेती शुरू की थी। बाद में अन्य किसानों को अपने साथ जोड़कर जागरूक करने लगे। वर्ष 2009 में फूड प्रोसेसिंग यूनिट लगा दी। इस यूनिट में आठ तरह के उत्पाद तैयार किए जाते हैं। इस यूनिट से करीब डेढ़ टन बेबी कॉर्न व अन्य उत्पाद इंग्लैंड व अमेरिका में निर्यात होता है। वे 200 लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार भी दिया जा रहा है।

हुकुम के उत्पाद के विदेशी कायल

हुकुम चंद पाटीदार राजस्थान के झालावाड़ में जैविक खेती करते हैं। वर्ष 2004 में उन्होंने उस समय जैविक खेती शुरू की थी, जब बहुत थोड़े से किसान जैविक खेती की दिशा में कदम बढ़ा रहे थे। डेढ़ दशक के समय में अपने सफल कृषि मॉडल के चलते अब वह कई लोगों के लिए प्रेरणा बन चुके हैं। उनके खेत पर विभिन्न फसलों के साथ प्रयोग किए जाते हैं। उनके खेतों में प्रमुख रूप से गेहूं, जौ, चना, मेथी, धनिया, लहसुन उनके खेत में उगाए जाते हैं। भारत के अलावा उनकी कृषि उपज ऑस्ट्रेलिया, जापान, न्यूजीलैंड, जर्मनी, फ्रांस और कोरिया जैसे देशों को निर्यात की जाती है। सैंकड़ों लोगों को उनकी वजह से रोजगार मिला है।

फूलगोभी उगाने का वर्ल्ड रिकॉर्ड

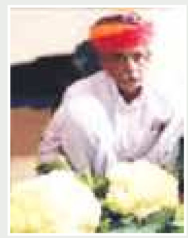

राजस्थान के सीकर जिले के रहने वाले जगदीश प्रसाद फूलगोभी की जैविक खेती के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने कई सब्जियों की पैदावार बढ़ाने की दिशा में प्रयोग किए और 15 किलो की फूलगोभी उगाकर लोगों को चकित कर दिया था। उनके इस कारनामे को वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज किया गया। इस रिकॉर्ड के साथ वह देश भर के किसानों की नजर में चढ़ गए। उनकी इस किस्म के विकसित होने से जहां फूलगोभी के उत्पादन में जबरदस्त बढ़ोतरी होने लगी बल्कि कई किसान इसकी खेती के लिए आगे आने लगे। वर्ष 2001 में उन्हें 'अजीतगढ़ चयन' फूलगोभी की एक किस्म विकसित करने के लिए प्रथम राष्ट्रीय ग्रासरूट इनोवेशन अवार्ड मिला है।

धान संरक्षण से बनाई पहचान

ओडिशा के कोटापुर जिले की आदिवासी कमला पुजारी धान की स्थानीय किस्मों के संरक्षण के लिए प्रसिद्ध है। उन्होंने धान की कई किस्मों को सहेजा है। वह अपने क्षेत्र में ग्रामीणों को जैविक खेती प्रथाओं को अपनाने के लिए राजी करने के लिए भी जानी जाती हैं। उन्होंने रासायनिक खादों के प्रयोग को रोकने में कामयाबी हासिल की है और उनकी वजह से हजारों किसान जैविक खेती की ओर अग्रसर हुए हैं। खेती को लेकर किए गए बेहतरीन प्रयासों के लिए हाल ही में उन्हें ओडिशा के राज्य योजना बोर्ड में शामिल किया है। ओडिशा के किसानों में अब वे एक फार्मर टीचर के तौर पर अपनी पहचान रखती हैं।

जैविक खेती के अग्रदूत हैं त्यागी

दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक भारत भूषण त्यागी जैविक खेती के अग्रदूतों में से एक हैं। उन्होंने उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर के अपने पैतृक गांव में कला अनुसंधान और प्रशिक्षण केंद्र विकसित किया और जैविक खेती की पहल की। उन्हें प्रधानमंत्री के हाथों प्रगतिशील किसान पुरस्कार सहित कई मुख्यमंत्री के हाथों पुरस्कार भी मिले हैं। भारत भूषण के फार्म हाउस में अलसी, हल्दी, मक्का गन्ना, गेहूं, चना व मेथी की खेती जैविक विधि से की जा रही है। उनकी प्रेरणा से कई किसान जैविक खेती की ओर मुड़े हैं। जैविक खेती के क्षेत्र में उनकी उपलब्धियों और किसानों को को देखते हुए उन्हें उत्तर प्रदेश में मतदान जागरूकता के लिए चुनाव आयोग ने अपना ब्रांड अम्बेसडर बनाया है।

राम शरण वर्मा

उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जिले के दौलतपुर गांव में रहकर राम शरण वर्मा ने अपनी खुद की हाइब्रिड और टिशू कल्चर तकनीक तैयार की है। वह दौलतपुर गांव में 'हाई-टेक कृषि और परामर्श' केंद्र चलाते हैं। उन्होंने हजारों किसानों को आधुनिक तकनीकों से कृषकों को शिक्षित किया है। प्रौद्योगिकी, गुणवत्ता और फसल रोटेशन इस किसान का तीन गुना मंत्र है। वह विभिन्न प्रकार की ऑरगेनिक फसलें प्रमुख रूप से केला, आलू, टमाटर और गेहूं उगाते हैं। क्षेत्र के हजारों किसान उनसे प्रेरणा लेकर उन्नत प्रौद्योगिकी, गुणवत्ता और फसल रोटेशन से अपने खेतों से आजीविका कमाने में कामयाब हुए हैं। वे किसान शिक्षक के रूप में भी जाने जाते हैं।

डेयरी से लिख दी कामयाबी की कथा

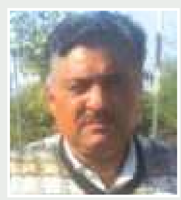

हरियाणा के पानीपत के इसराना गांव से संबंध रखने वाले नरेंद्र सिंह ने डेयरी उद्योग में रोजगार व आजीविका की नई संभावनाओं को जन्म दिया है। उन्होंने कड़ी मेहनत से डेयरी उद्योग में अपनी पहचान बनाई है। उनके फार्म में लगभग 150 मवेशी हैं। नरेंद्र सिंह ने 20 साल पहले केवल 10 दुधारू जानवरों के साथ डेयरी फार्म की शुरुआत की थी। उनके डेयरी प फार्म के झोटे अपनी खास पहचान रखते हैं और जिनका मूल्य करोड़ों में आंका जाता है। हरियाणा में होने वाले मुकाबलों में उनके पशुओं ने कई पुरस्कार हासिल किए हैं। यही कारण है कि आज दुनिया भर के लोग उनके डेयरी फार्म के बारे में जानने के लिए उनके पास जाते हैं। वह अपने क्षेत्र में कई किसानों के लिए प्रेरणादायक बने हैं।

जिंदगी का सार, पेड़ों से किया प्यार

कर्नाटक की सालूमराडा थिमक्का को देखकर आप को लगेगा कि वह साधारण सी महिला हैं पर 105 साल की इस महिला को इस साल बीबीसी की 100 सबसे प्रभावशाली और प्रेरणादायक महिलाओं की सूची में जगह मिली है। उन्होंने 80 साल में 8000 से ज्यादा पेड़ लगाए हैं।वे रामनगर जिले में हुलुकल और कुदूर के बीच राष्ट्रीय राजमार्ग के दोनों तरफ 384 बरगद के पेड़ लगा चुकी हैं। वर्ष 1995 में उन्हें नेशनल सिटीजन्स अवार्ड, वर्ष 1997 में इन्दिरा प्रियदर्शिनी वृक्ष मित्र अवार्ड, वर्ष 2006 में कल्पवल्ली अवार्ड और वर्ष 2010 में गॉडफ्रे फिलिप्स ब्रेवरी अवार्ड से सम्मानित किया गया था।

सुल्तान की मछली उत्पादन में पहचान

हरियाणा के नीलोखेड़ी के बुटाना गांव के निवासी सुल्तान सिंह को विपरीत परिस्थितियों में मछली उत्पादन के लिए जाना जाता है। उन्होंने खेती में पुनःसंचार जलीय कृषि तकनीक जैसी कई तकनीकों को अपनाया है। उन्होंने कैटफ़िश का प्रजनन शुरू किया और प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों में झींगा को पालने में कामयाबी हासिल कर मछली उत्पादन में नई संभावनाओं के दरवाजे खोल दिए और कई किसानों के लिए प्रेरक बन गए। उन्होंने कई युवाओं को घर के पास ही रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाए हैं। उन्हें उनकी हाई-टेक और अत्यधिक लाभदायक मछली पालन विधियों के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।

वल्लभभाई वसरामभाई मारवानिया

वल्लभ भाई वीरभाई जूनागढ़, गुजरात के निवासी हैं। उन्होंने 13 साल की उम्र से खेती करना शुरू किया और अपना जीवन खेतों को ही समर्पित कर दिया। उन्होंने अपने खेतों में तरह- तरह के प्रयोग किए और गाजर उगाने में महारथ हासिल है। उन्हें गुजतरात में गाजर क्रांति के दूत के तौर पर देखा जाता है। उन्हें गाजर की उत्तम किस्म विकसित करने के लिए कई सम्मान मिले हैं। वर्ष 2017 में उन्हें 'मधुवन गाजर- बेहतर गाजर विविधता' के लिए नौवें राष्ट्रीय ग्रासरूट इनोवेशन अवार्ड्स से भी नवाजा जा चुका है। गाजर के क्षेत्र में किए गए उनके प्रयासों के चलते इस क्षेत्र के किसान गाजर उत्पादन में अग्रणी बने हैं।

बाबूलाल दहिया

मध्यप्रदेश के 74 वर्षीय बाबूलाल दहिया पर देसी बीज बचाने का जूनून कुछ इस तरह से सवार है कि उनके पास देसी धान की 130 किस्में हैं। इन बीजों को इकट्ठा करने के लिए उन्होंने मध्यप्रदेश के 40 जिलों में यात्राएं की और धान सहित 200 किस्मों के देसी बीज एकत्रित किए। मध्यप्रदेश के सतना जिले से 12 किलोमीटर दूर पिथौराबाद गांव में रहने वाले बाबूलाल दहिया ने विलुप्त होते जा रहे देसी बीज के संरक्षण के लिए वर्ष 2007 से काम शुरू किया। इसके लिए उन्होंने राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों की यात्राएं की। वे हजारों किसानों से मिले और उन्हें अपने मिशन से जोड़ कर धान सहित 200 प्रकार के देसी बीजों के संरक्षण में कामयाब रहे।

डॉ. अरुण चंदन

लेखक, क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तर भारत, जोगिंद्रनगर के क्षेत्रीय निदेशक हैं।

वर्तमान में वन से रोजी कमाने का हुनर पंजाब से सीखा जा सकता है। तत्कालीन वन मंडल अधिकारी जितेंद्र शर्मा के प्रयासों से यहां के 32000 हैक्टेयर वन क्षेत्र को ऑरगेनिक घोषित किया गया। संयुक्त वन प्रबंधन के बेहतरीन प्रयासों के चलते तलवाड़ा के वन सैंकड़ों स्थानीय परिवारों की सतत् आजीविका का आधार बन गए और औषधीय पौधों व जंगली उत्पादों से कई ऑरगेनिक प्रोडक्ट्स का निर्माण करने वाली उन्नति सहकारी सभा की बुनियाद पड़ी। उन्नति हजारों लोगों को रोजगार उपलब्ध करवा रही है और सलाना 25 हजार करोड़ का टर्नओवर है।

पंजाब से सीखिए वनों से रोजी का हुनर

भारत में भूमि उपयोग की दृष्टि से कृषि के बाद दूसरा स्थान वानिकी का है। देश के 7,74,770 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में वन हैं, जो कुल भूमि उपयोग का 23.57 प्रतिशत हैं। देश के सकल घरेलू उत्पाद में बेशक वन क्षेत्र का योगदान महज एक प्रतिशत से कुछ अधिक हो पर पारिस्थितिकी संरक्षण में योगदान कई गुणा अधिक है।

भारत में करीब 27.5 करोड़ ग्रामीण निर्धन अपनी आजीविका के लिए आंशिक रूप से वनों पर निर्भर हैं। 8.9 करोड़ जनजातीय आबादी और 47.1 करोड़ मवेशियों के वनों में रहने और 30 करोड़ घनमीटर ईंधन की लकड़ी वनों से निकाले जाने के कारण वनों पर भारी जीवीय दबाव है। ग्रामीण लोग ईंधन की लकड़ी, चारा और अनेक गैर-इमारती वन उत्पादों, जैसे फल, फूल और औषधीय पौधों के लिए वनों पर निर्भर हैं।

मानव और वनों का संबंध सदियों पुराना है। वर्तमान परिस्थितियों में वनों के संरक्षण के लिए सक्षम प्रबंधन एवं प्रभावकारी योजना तैयार करना समय की मांग है। हरियाणा में सुखोमाझड़ी और चुहापुर हर्बल नेचर पार्क, कर्नाटक में चित्रदुर्ग रेंज में जोगीमाटी आरक्षित वनक्षेत्र, उड़ीसा में अंगुल घुम्सर और भांजानगर वन क्षेत्र, राजस्थान में चंदेलकलां और भानपुरकलां के जंगल, उत्तरांचल में चोपड़ा गांव, कर्नाटक में बीदर, छत्तीसगढ़ में कटांडीह वन परियोजनाओं की कामयाबी के बाद संयुक्त वन प्रबंधन की जरूरत महसूस हुई।

अस्सी के दशक में सामाजिक वानिकी के अनुभवों से वन प्रबंधन में स्थानीय लोगों की भूमिका को औपचारिक रूप से समझा गया और देखभाल एवं हिस्सेदारी के सिद्वात पर आधारित वन प्रबंधन की शुरूआत हुई। वर्ष1988 में राष्ट्रीय वन नीति को संशोधित कर वन प्रबंधन के लक्ष्यों में बड़े बदलाव किए गए। वर्ष1990 में राज्य वन विभागों को निर्देश दिए गए कि वे वन प्रबंधन व्यवस्थाओं में स्थानीय समुदायों को प्रत्यक्ष रूप से शामिल करें। इसे ही संयुक्त वन प्रबंधन का रूप दिया गया। सबसे अहम बात यह हुई कि वन भूमि पर औषधीय पौधों के रोपण पर बल देने पर जोर दिया गया।

सभी राज्य सरकारों और संघ शासित प्रदेशों ने केंद्रीय रणनीति के रूप में संयुक्त वन प्रबंधन की नीति को अपनाया है। वन विभागों और ग्राम समितियों को ग्रामीण स्तर पर संयुक्त वन प्रबंधन समितियों में भागीदार बनाया गया है। देश में आज 16,000 संयुक्त वन प्रबंधन समितियां हैं, जो 2.2 करोड़ हैक्टेयर वन क्षेत्र का प्रबंधन करती हैं। संयुक्त वन प्रबंधन संरक्षण, वनरोपण, नर्सरी तैयार करने, मृदा एवं नमी संरक्षण कार्य, आजीविका सुधार ओर वनों के विकास जैसी कई गतिविधियों का संचालन करती है। संयुक्त वन प्रबंधन से बड़े पैमाने पर लोगों को अनेक लाभ हुए हैं। इससे रोजगार के अवसर बड़े हैं और आजीविका के विकल्प उपलब्ध हुए है। संयुक्त वन प्रबंधन से आजीविका सुरक्षित करने में मदद मिलती है।

वर्तमान में वनों से रोजी कमाने का हुनर पंजाब से सीखा जा सकता है। तत्कालीन वन मंडल अधिकारी जितेंद्र शर्मा के प्रयासों से यहां के 32000 हैक्टेयर के वन क्षेत्र को ऑरगेनिक घोषित किया गया। संयुक्त वन प्रबंधन के बेहतरीन प्रयासों के चलते पंजाब की शिवालिक पहाड़ियों में स्थित तलवाड़ा के वन यहां के सैंकड़ों स्थानीय परिवारों की सतत अजीविका का आधार बन गए और औषधीय पौधों व जंगली उत्पादों से कई तरफ के ऑरगेनिक प्रोडक्ट्स का निर्माण करने वाली तलवाड़ा स्थित उन्नति सहकारी सभा की बुनियाद पड़ी है। उन्नति वर्तमान में क्षेत्र के हजारों लोगों को प्रत्यक्ष व प्रोक्ष रूप में रोजगार उपलब्ध करवा रही है और सलाना 25 करोड़ का कारोबार कर रही है। केंद्र के आयुष विभाग में विभिन्न शीर्ष पदों पर रहते हुए वनों के प्रबंधन से आजीविका सुरक्षित की कई योजनाओं में अहम भूमिका अदा की है। वर्तमान में वे पंजाब वन विभाग के मुखिया के तौर वनों के प्रबंधन से आजीविका सृजन को लेकर विस्तृत योजना पर काम कर रहे हैं। उनके इस मॉडल को अपनाकर अन्य प्रदेश भी आजीविका सृजन में बेहतरीन कर सकते हैं।

सम्पादक
डॉ. अरूण चंदन

हम ऑनलाईन उपलब्ध हैं
pdf यहां से डाऊनलाड करें।
www.rcfcnorth.in/download

लेखकों से आग्रह
यदि आप विषय से संबंधित कोई लेख/अनुभव/जानकारी प्रकाशनार्थ भेजना चाहें तो निसंकोच भेजें। छपने योग्य होने पर अवश्य प्रकाशित किया जाएगा।
सम्पादक

हमसे संपर्क करें
क्षेत्रीय निदेशक / सम्पादक
ई- चरक
जड़ी- बूटी बाजार
क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र
राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड
आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान
जोगिंद्रनगर, मंडी, हिमाचल प्रदेश।
पिन : 175015
हेल्पलाईन : 8544734206
दूरभाष : 01908 222333
वैबसाइट : www.rcfcnorth.in
मेल: rcfcnorth@gmail.com

मॉन्क फ्रूट से बनेंगे शूगर फ्री स्वीटनर्स

डॉ. संजय शर्मा

लेखक, सीएसआईआर-आईएचबीटी पालमपुर के निदेशक हैं।

सीएसआईआर-आईएचबीटी व कांउसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रीयल रिसर्च लैब मिलकर इस फल से बने स्वीटनर्स को मार्केट में लाने की तैयारी कर रहे हैं।

सीएसआईआर-आईएचबीटी पालमपुर के वैज्ञानिकों की टीम ने चीनी मॉन्क फल को उगाने में सफलता हासिल की है। हालांकि मॉन्क फल को उगाने के लिए अलग कृषि-तकनीक के साथ उपयुक्त पौध और वैज्ञानिक तकनीक की जरूरत होती है। इस फल को व्यवसायिक तौर पर उत्पादन अभी तक केवल चीन में रहा है और दुनिया के किसी अन्य देश में कहीं भी इस फल की व्यवसायिक खेती नहीं होती है। सीएसआईआर-आईएचबीटी पालमपुर के वैज्ञानिकों को इस फल को उगाने में मिली कामयाबी के बाद इस फल की व्यवसायिक खेती की संभावनाओं को नए पंख लग गए हैं। कम कैलोरी वाला यह फल स्वीटजर्स की दुनिया में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकता है। डायबिटीज से पीड़ित रोगियों के लिए यह शूगर फ्री फल बड़ा वरदान साबित हो सकता है।

सीएसआईआर-आईएचबीटी के वैज्ञानिकों ने इस फल को उगाने में जो प्रयोग किए हैं वे सफल रहे हैं। अब संस्थान चीनी मॉन्क की व्यवसायिक खेती करने की योजना पर काम कर रहा है। इस फल को उगाने के लिए आधुनिक कृषि तकनीक, गुणवतापरक पौध और वैज्ञानिक तकनीक विकसित की जा रही है। इस फल की खेती करने के लिए अब संस्थान किसानों को बड़े स्तर पर प्रोत्साहित प्रशिक्षित करेगा, ताकि बड़े पैमाने पर इस फल का उत्पादन किया जा सके।

सीएसआईआर-आईएचबीटी व कांउसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंड्स्ट्रीयल रिसर्च लैब मिलकर इस फल से स्वीटनर्स बनाने के काम में जुटी है और इसको मार्केट में लाने की तैयारी कर रहे हैं। उम्मीद की जा रही है कि बहुत जल्द इस फल से बने शूगर फ्री स्वीटनर्स बाजार में मिलने शुरू हो जाएंगे।

भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा चीनी उत्पादक देश है। मीठा खाना और खिलाना भारतीय संस्कृति का एक हिस्सा माना जाता है। इसका मतलब है कि हमें मीठे से होने वाला खतरा भी और लोगों के मुकाबले ज्यादा है। मीठे के लिए चीनी के प्रयोग के खतरे साफ दिखने लगे हैं। इंटरनेशनल डायबिटीज फेडरेशन की रिपोर्ट के अनुसार भारत में करीब 62.4 मिलियन लोग डायबिटीज से पीड़ित हैं। डायबिटीज के रोगियों की निरंतर बढ़ती संख्या देश के लिए बड़े खतरे की घंटी है।

सीएसआईआर-आईएचबीटी पालमपुर के वैज्ञानिक शूगर फ्री स्वीटनर बनाने की दिशा में लम्बे अर्से से काम कर रहे हैं। स्टीविया जैसे शूगर फ्री स्वीटनर पर सफल काम के बाद अब वैज्ञानिकों ने मॉन्क फ्रूट के शूगर फ्री स्वीटनर बनाने पर काम शुरू किया है। संस्थान के वैज्ञानिक मॉन्क फ्रूट को उगाने में कामयाब रहे हैं। अब इसके स्वीटनर बनाने का काम चल रहा है। स्वीटनर के अलावा मॉन्क फ्रूट का प्रयोग गैर कैलोरी उत्पादों के निर्माण में भी होगा।

गुड़ की केंडी बनाकर गन्ना उत्पादकों की जिंदगी में मिठास भरने का स्टार्टअप

चंडीगढ़ से कमलजीत, जग्गीक के नॉलेज बैंक

विज्ञापन और विपणन के क्षेत्र में विभिन्न इंटरनेशनल ब्रांडों के लिए काम करने के बाद तीन साल पहले जब भूपेश सैनी जापान से भारत लौटे तो उनके मन में एक आइडिया था कि गुड़ की केंडी बनाकर गन्ना उत्पादकों की जिंदगी में मिठास घोली जाए। दुनिया के बड़े ब्रांडों के साथ काम करते हुए उन्हें एहसास हुआ कि गुड़ भारतीय खाद्य संस्कृति का एक अभिन्न हिस्सा रहा है। 36 साल के भूपेश ने स्थानीय किसानों के साथ संबंध स्थापित कर गुड़ को अधिक उपभोग करने वाले अंदाज में बाजार में उतारने की योजना पर काम शुरू किया। इस आइडिया ने उन्हें किसानों के साथ काम करने को प्रेरित किया। अपने सोशल स्टार्टअप के लिए उन्होंने ऐसे गन्ना उत्पादकों की तलाश शुरू की जो गन्ने की जैविक खेती कर रहे थे। इसी मुहिम के दौरान उनकी मुलाकात पंजाब के होशियारपुर के नीला नलोया गांव के रिटायर्ड स्कूल प्रिंसिपल एवं जैविक खेती करने वाले तरसेम सिंह से हुई। वर्ष 2008 में स्कूल प्रिंसिपल के पद से सेवानिवृत्त होने के बाद तरसेम सिंह पूर्णकालिक किसान बन गए थे। वे नीला नलोया गांव में 17 एकड़ भूमि में से 3 एकड़ कृषि भूमि पर जैविक गन्ने की खेती कर ऑर्गेनिक गुड़ और शक्कर (पाउडर) बना रहे थे। अक्टूबर 2016 जब भूपेश सैनी ने उनसे मुलाकात कर अपने सोशल स्टार्टअप की चर्चा की तो तरसेम सिंह उनके साथ काम करने को तैयार हो गए। 15 साल बाद वतन लौटे भूपेश सैनी किसानों के साथ काम कर खेत में ही उत्पादित, प्रसंस्कृत और पैक्ड उत्पादों का निर्माण करना चाहता थे। उन्होंने तरसेम सिंह के खेत में पांच सौ वर्ग फुट क्षेत्र में केंडी के उत्पादन और पैकिंग के लिए एक छोटी इकाई लगाने के लिए प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम के तहत 25 लाख रुपए की वित्तीय सहायता का लाभ उठाया। एक साल की मेहनत से गुड़ केंडी बनाने का सपना सच हुआ। बीते वर्ष नवंबर से शुरू हुए गन्ने के सीजन के दौरान केंडी का उत्पादन शुरू कर दिया गया। इस तरह जग्गीक ब्रांड के नाम से गुड़ से केंडी बनाने की शुरूआत हुई। जग्गीक ब्रांड ने हल्दी, अदरक, लेमनग्रास और सौंफ फ्लेवर्स में गुड़ की केंडी बनानी शुरू की। वर्तमान में जग्गीक के 11 उत्पाद बाजार में हैं। भूपेश सैनी ने नवदीप खेड़ा के साथ मिलकर अपने उत्पाद के विपणन की योजना बनाई। इसी साल 18 जनवरी को जग्गीक ने अपने उत्पाद को औपचारिक तौर पर लॉन्च कर दिया। जग्गीक ने अब उत्तर प्रदेश के सहारनपुर क्षेत्र के ताकीपुर गांव के गन्ना उत्पादक राहुल कंबोज से भी करार किया है। राहुल कंबोज जग्गीक के लिए गन्ने से जैविक शक्कर का उत्पादन कर रहे है। जग्गीक ने अपने उत्पादों की ऑनलाइन शॉपिंग के लिए अमेजन से करार किया है। जग्गीक के उत्पाद खरीदने के लिए उसकी वेबसाइट और फेसबुक पेज से भी ऑनलाइन ऑर्डर भेजा जा सकता है। जग्गीक अपनी विस्तार योजनाओं पर काम कर रहा है, ताकि देश भर के गन्ना उत्पादकों के साथ काम कर सकें।

खेवट न. 19 मौलीजागरण, पोस्ट ऑफिस
दरिया, चंडीगढ़ 160101
web : jaggic.com
Email : info@jaggic.com
Phone : 99881-12217

जापान से भारत लौटे भूपेश सैनी का आइडिया चंडीगढ़ का 'जग्गीक'

ब्रेकअप विद शूगर

भूपेश सैनी के जग्गीक के आइडिया को हकीकत की जमीन पर उतारने के लिए इम्लीमेंटर नवदीप खेड़ा, नॉलेज बैंक कमलजीत और फार्मिंग पार्टनर राहुल कम्बोज व तरसेम सिंह की भूमिका है। 18 जनवरी को उत्पाद को औपचारिक रूप से लॉन्च किया गया। जज्गीक के उत्पाद ऑनलाइन शॉपिंग के जरिए अमेजन पर भी उपलब्ध हैं।

जग्गीक के उत्पादों की विशेषता यह है कि उत्पाद जैविक और गैर रासायनिक हैं। भूपेश सैनी कहते हैं कि जग्गीक के साथ जुड़े किसान जैविक व प्राकृतिक खेती करते हैं। वे कहते हैं कि गन्ने से गुड़ बनाने के लिए पारंपरिक तरीकों का प्रयोग किया जाता है और गन्ने के रस को साफ करने के लिए किसी भी रसायन का इस्तेमाल नहीं किया जाता है। न तो स्वाद बढ़ाने वाले पदार्थों का प्रयोग होता है और न ही रंगों का भी प्रयोग नहीं किया जाता है। उनका कहना है कि जग्गीक के उत्पाद हाइजेनिक विनिर्माण और पैकिंग सुविधाओं वाली इकाई में बनते हैं। जग्गीक ब्रांड की गुड़ की कैंडी होशियारपुर के नीला नालोया गांव में तैयार और पैक की जाती है और किसान सभा मौली जागरण इसका विपणन करती है। भूपेश सैनी कहते हैं कि पहले साल मार्केट से जो रिस्पॉन्स मिला है, उसको देखते हुए जग्गीक ऑरगेनिक गन्ने के कई उत्पाद बाजार में उतारने की योजना पर काम कर रहा है। अपनी विस्तार योजनाओ के चलते ही जग्गीक ने उत्तर प्रदेश के किसान राहुल कंबोज के साथ करार किया। ऑरगेनिक गन्ने की खेती करने वाले राहुल कंबोज जग्गीक के लिए 5 ग्राम हर्बल गुड़ (शक्कर) का पाउच बना रहे हैं। भूपेश सैनी कहते हैं कि निकट भविष्य में देश भर के गन्ना उत्पादकों के जीवन में मिठास घोलने की योजना पर काम कर रहे हैं और जग्गीक अपनी विस्तार योजनाओं को अमलीजामा पहनाने में जुटी है।

किसान बनेगा उद्यमी

भूपेश सैनी कहते हैं कि किसानों और खरीदारों के बीच एक सहयोगी विपणन रणनीति की आवश्यकता है। भारत में जैविक खेती का अवगुण है कि किसान अपनी उपज का विपणन करना नहीं जानते हैं। जग्गीक किसान को उद्यमी बनाने के लिए प्रयासरत है। जग्गीक का उउद्देश्य भारतीय किसानों की स्थिति में सुधार करना और सभी के लिए सुरक्षित भोजन का उत्पादन करना है। जग्गीक जैविक खेती, टिकाऊ कृषि, मिट्टी संरक्षण तथा ऑरगेनिक गुड़ के उत्पाद तैयार करने की दिशा में काम कर रही है।

गुणकारी गुड़

गुड़ के कई चिकित्सीय गुण हैं, जो शरीर के लिए चमत्कार करते हैं। गुड़ खनिजों का एक अच्छा स्रोत है, जो शरीर में इलेक्ट्रोलाइट संतुलन बनाए रखने में मदद करता है। गुड़ मांसपेशियों के निर्माण में मदद करता है, जिससे वजन कम होता है। गुड़ इम्यूनिटी को भी बढ़ाता है और रक्त संबंधी कई समस्याओं को रोकने में मदद करता है। गुड़ यकृत को शुद्ध करने और वजन प्रबंधन में भी मदद करता है। गुड़ का सेवन करने से ब्रोंकाइटिस और अस्थमा जैसी विभिन्न श्वास संबंधी बीमारियों को रोकने में मदद मिल सकती है। गुड़ पाचन एंजाइम के स्राव को उत्तेजित करके पाचन की प्रक्रिया को गति देने में मदद करता है। गुड़ कब्ज और पेट फूलने जैसे पाचन से जुड़े रोगों को रोकने के लिए एक आदर्श विकल्प बन सकता है। गुड़ चीनी की तुलना में धीमे पचता है और धीरे- धीरे ऊर्जा जारी करता है। गन्ने से गुड़ लोहे के बर्तन में तैयार किया जाता है। गुड़ में आयरन सेहत के लिए भी अच्छा है, खासकर उन लोगों के लिए जो एनीमिक हैं या जिनमें आयरन की कमी है। गुड़ एक सफाई एजेंट के रूप में बहुत अच्छा है। यह फेफड़े, पेट व आंतों को साफ करता है। जिन लोगों को अपने दैनिक जीवन में धूल का सामना करना पड़ता है, उन्हें गुड़ की दैनिक खुराक लेने की सलाह दी जाती है। गुड़ उन्हें अस्थमा, खांसी, जुकाम और सीने में जमाव से सुरक्षित रखा जा सकता है।

पचास हजार से ज्यादा किसान फार्मर फ्रेंड में अपना पंजीकरण करा चुके हैं। पांच सौ होटल व पांच हजार लोग किसानों से डायरेक्ट खरीद रहे हैं अनाज, दूध, पॉल्ट्री उत्पाद व सब्ज़ियां।

फार्मर फ्रेंड: पांच सौ होटल व पांच हजार लोग किसानों से खरीदते हैं अनाज, दूध, पॉल्ट्री उत्पाद व सब्जियां

विदेशों से लौटे दो भाईयों का चमत्कार, खेतों तक पहुंच रहे फसल के खरीददार

डॉ. सौरभ शर्मा,उपनिदेशक
आरसीएफसी जोगिंदनगर

विदेश से लौटे पंजाब के अमृतसर के दो भाईयों ने तकनीक के दम पर ऐसा चमत्कार किया है कि फसल के खरीददार सीधे खेत तक पहुंचा दिए हैं। 'फार्मर फ्रेंड' ने पचास हजार सीमांत किसानों के जीवन में सामाजिक-आर्थिक बदलाव की कहानी लिख कर खेत से खुशहाली पैदा करने में कामयाबी हासिल की है। पवित्र सिंह और हरजप सिंह ने www.farmerfriend.in शुरू की है, जिससे जरिये किसान सीधे उपभोक्ताओं से जुड़ सकते हैं। उन्होंने कुछ उत्पाद मंडी से खरीदने के बजाय सीधे किसानों से खरीदने के लिए कई रेस्टोरेंट्स और होटलों से बात की। 'फार्मर फ्रेंड' के जरिये आज पांच सौ से ज्यादा होटल और पांच हजार से ज़्यादा उपभोक्ता से सीधे किसानों से अनाज, दूध, पॉल्ट्री उत्पाद और सब्ज़ियां खरीदते हैं। यह उपभोक्ताओं और किसान दोनों पक्षों के लिए फायदे का सौदा है। इस प्लेटफार्म के जरिये किसान अपने उपभोक्ताओं को ऐसा कुछ नहीं बेच सकता जो उनकी सेहत के लिए हानिकारक हो। बिचौलिये का खेल खत्म होने से उपभोक्ताओं को भी अपने उचित दाम में सामान मिल जाता है और किसानों को सही कीमत।

अपना रेस्टोरेंट छोड़ खेत में पहल

अमृतसर के पवित्र पाल सिंह एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर हैं। उन्होंने कुछ साल विदेश में काम किया और फिर नीदरलैंड व बेल्जियम में अपने परिवार के रेस्टोरेंट बिजनेस को संभाल लिया। पवित्र सिंह के चाचा का बेटा हरजप सिंह भी विदेश में काम कर रहा था। चार साल पहले किसानों के जीवन में खुशहाली लाने के लिए पवित्र सिंह ने विदेश छोड़ने का फैसला किया। उसने अपने आइडिया को अपने चचेरे भाई हरदीप सिंह से शेयर किया। हरदीप सिंह ने भाई के कंधे से कंधा मिलाकर काम करने के लिए विदेश छोड़ दिया।

दो किसान सेवा केंद्रों से मदद

उन्होंने 20 लोगों की एक टीम बनाई और गांव-गांव जाकर वहां के प्रधानों को इस योजना के बारे में बारे में समझाया गया, जिसके चलते किसान सीधे उपभोक्ताओं से जुड़ सकें। पंचायतों का विश्वास जीतने के बाद किसानों को इस अभियान का हिस्सा बनाने के लिए उनका पंजीकरण शुरू हुआ। 'फार्मर फ्रेंड'ने हरियाणा व पंजाब में दो किसान सेवा केंद्र खोले हैं, जहां किसानों को उनकी समस्याओं से जुड़े सवालों के जवाब मिलते हैं। साढ़े तीन साल के सफर में पचास हजार से ज्यादा किसान 'फार्मर फ्रेंड' में अपना पंजीकरण करा कर बिचौलियों के हाथों लुटने से बच कर उपज के सही दाम पा रहे हैं।

किसान से सीधे जुड़ रहे उपभोक्ता

फौजी का संघर्ष

बलकार सिंह संधू ने 32 साल इंडियन आर्मी में सर्विस की। वर्ष 2008 में सूबेदार के पद से सेवानिवृत होने के बाद उन्होंने अमृतसर आकर अपनी पुश्तैनी ज़मीन में खेती करना शुरू की। 40 एकड़ खेती के मालिक होने के कारण उनका परिवार क्षेत्र का काफी खुशहाल परिवार था, लेकिन उनके इलाके के छोटे किसानों को बिचौलिए बुरी तरह से ठग रहे थे। कुछ

किसान परिवार तो कई पीढ़ियों से लगातार कर्ज़ में डूबे हुए थे। सीमा पर देश की सुरक्षा के लिए मुस्तैद रहने वाले एफ फौजी से किसानों का यह शोषण देखा नहीं गया। उन्होंने किसानों के अधिकारों के लिए लड़ने का फैसला किया। उनकी बुलंद आवाज के चलते उन्हें अमृतसर और तरनतारन जिलों की किसान संघर्ष समिति का क्षेत्रीय प्रमुख बना दिया गया। किसानों के एक विरोध प्रदर्शन के दौरान लगातार तीन दिन रेल की पटरी पर बैठने के कारण एक किसान की मौत हो गई। इस घटना से उन्हें अंदर तक आहत कर दिया। देश के लिए अन्न उगान वाले किसान के जीवन में कैसे खुशहाली आए, इस पर अपने बेटे से मशविरा मांगा।

पिता के संघर्ष को बेटे का सहयोग

विदेश में रह रहे पवित्र सिंह को अपने पिता से जब किसानों की दुर्दशा के बारे में पता लगा तो उन्होंने भारत लौट कर किसानों के लिए पिता के संघर्ष में शामिल होने का फैसला किया। पवित्र सिंह ने विदेश में रह रहे अपने चचेरे भाई हरजप सिंह को भी इसके लिए तैयार किया। एक किसान परिवार में जन्म लेने और अपने परिवार में होने वाली खेती- किसानी की बातों को सुनकर बड़े हुए पवित्र सिंह को भारतीय कृषि की अच्छाइयों और बुराइयों, दोनों के बारे में अच्छी तरह पता था। भारत लौट कर दोनों भाइयों ने डेढ़ साल तक देश के तमाम हिस्सों में घूमकर किसानों से मुलाकात कर उनकी परेशानियों को समझा। वे देश के हजारों किसानों से मिले। अधिकतर किसानों से मिलकर उन्हें यह पता चला कि किन कारणों से किसान कर्ज में दबे हैं और किस कारण से खुदकुशी करने को मजबूर है। उन्हें समझ आ गई कि किसानों के कर्ज़ लेने के पीछे दो कारण हैं। पहला यह कि वे अपने उत्पाद की कीमत खुद तय नहीं कर सकते। दूसरा कारण यह कि किसानों को अपनी फसल बिचौलियों को बेचनी पड़ती है। ऐसे में किसान के उत्पाद की सही कीमत नहीं मिलती और किसान मेहनत करने के बावजूद कर्जदार होता जाता है। किसानों की इन मुश्किलों का समाधान निकालने के लिए ऐसे ग्लोबल प्लेटफार्म की जरूरत महसूस हुई जो किसानों और उपभोक्ताओं को सीधा कनेक्ट करे, कृषि उत्पाद का मोल तय करने का अवसर किसान को मिले और बिचौलिए की भूमिका खत्म हो। इसी बात को सामने रखते हुए उन्होंने 'फार्मर फ्रेंड' योजना शुरु की। बीस लोगों की एक प्रशिक्षित टीम तैयार की गई और सबसे पहले

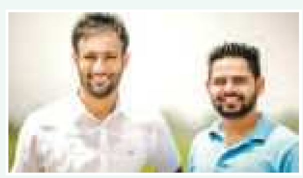

पंचायतों के प्रतिनिधियों को विश्वास में लेकर इस योजना की खूबियां गिनाई गईं। इसके लिए कई कार्यशालाओं और बैठकों के आयोजन किए गए। इसके बाद 'फार्मर फ्रेंड' पर देश भर के किसानों का पंजीकरण शुरू किया गया। 'फार्मर फ्रेंड' एक ऐसा प्लेटफार्म बन गया, जिसने हजारों किसानों की पहुंच को ग्लोबल बना दिया। इस प्लेटफार्म पर किसान अपने उत्पाद को सीधा उपभोक्ता को बेच सकता है। 'फार्मर फ्रेंड' की बदौलत देश के हजारों किसानों को अपने उत्पाद का उचित दाम मिल रहा है, वहीं उपभोक्त ाओं को गुणवत्ता वाले उत्पाद सीधे खेत से उपलब्ध हो रहे हैं।

रेस्टोरेंट से शुरूआत, फिर खेती में

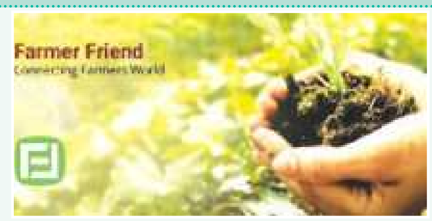

पवित्र सिंह और हरजप सिंह ने www.farmerfriend.in शुरू की है। इस प्लेटफार्म के जरिये किसान सीधे उपभोक्ताओं से जुड़ सकते हैं। बीज खरीदने से लेकर उत्पाद को बेचने तक किसानों को जागरूक करने के लिए 'फार्मर फ्रेंड' हरियाणा व पंजाब में दो किसान सेवा केंद्रों का संचालन कर रहा है। इन केंद्रों पर विशेषज्ञ किसानों को उनकी समस्याओं से जुड़े सवालों के जवाब देते हैं। यह उनकी मेहनत का ही फल है कि साढ़े तीन साल के सफर में पचास हजार से ज्यादा किसान फार्मर फ्रेंड में अपना पंजीकरण करा चुके हैं। www.farmerfriend.in तीन को साइन अप कर किसान अपना पंजीकरण करवा सकते हैं और उत्पाद बेच- खरीद सकते हैं। इस प्लेटफार्म पर

उपभोक्ता सीधे किसान से जुड़ सकते हैं और उत्पाद खरीद सकते हैं। इस प्लेटफार्म पर बीज, फसल, कृषि औजार, पशु, ट्राली- ट्रैक्टर खरीदे- बेचे जा सकते हैं। 'फार्मर फ्रेंड' के फेसबुक पेज को 55 हजार से ज्यादा यूजर्स लाइक करते हैं और 55 हजार से ज्यादा यूजर्स फॉलो करते हैं। इस पेज के जरिये भी अहम जानकारियां किसानों को उपलब्ध करवाई जाती हैं। पवित्र सिंह और हरजप सिंह का कहना है कि 'फार्मर फ्रेंड' देश भर के सीमांत किसानों को दुनिया के साथ कनेक्ट करने के लिए ग्लोबल प्लेटफार्म उपलब्ध करवा रहा है। 'फार्मर फ्रेंड' किसानों को गुणवत्ता वाले बीजों, आधुनिक कृषि तकनीकों और कृषि औजारों के बारे में भी हर जानकारी उपलब्ध करवाता है, वहीं मौसम से सम्बन्धित जानकारी भी किसानों को उपलब्ध करवाई जाती है। किसान कार्यशालाओं और किसान टूअर्स के जरिये 'फार्मर फ्रेंड' भारत में कृषि के प्रचार- प्रसार में जुटा है। 'फार्मर फ्रेंड' किसानों को जैविक खेती और जड़ी बूटियों की खेती के लिए भी प्रेरित कर रहा है, ताकि किसानों को उनके उत्पाद का सही दाम मिले और उनके उत्पादों की पहुंच ग्लोबल हो। इन दोनों भाईयों का कहना है कि उनका यह प्रयास है कि अन्न उगाने वाले किसान के जीवन में खुशहाली हो।

कुल्लू के देव भारद्वाज ने सूचना तकनीक के दम पर निकाला देश की कृषि समस्याओं का हल

किसान मंच : किसानों को रिमांइडर, इवेंट इनविटेशन, मौसम अलर्ट के अपडेट

डॉ. नरेश कुमावत, आयुर्वेद अनुसंधान अधिकारी

इंडियन एग्रीकल्चर रिसर्च इंस्टीच्यूट (आईएआरआई) नई दिल्ली की ओर से आयोजित अराईज-2016 में आधिकारिक स्टार्टअप के लिए शामिल देशभर की कृषि और डेयरी क्षेत्र की 650 परियोजनाओं में से एग्रो फार्म वेंचर्स प्राइवेट लिमिटेड कंपनी की किसान मंच परियोजना का चयन हिमाचल के हुनर की एक चमकदार झलक है। कृषि फार्म वेंचर्स प्राइवेट लिमिटेड के नए बिजनेस आइडिया ने आईएआरआई की सिफारिश के बाद केंद्र सरकार के डिपार्टमेंट ऑफ इंडस्ट्रीयल पोलिसी एंड प्रमोशन के तहत आधिकारिक स्टार्टअप के रूप में मान्यता प्राप्त कर ली। किसान मंच परियोजना को इससे पहले एक्शन फॉर इंडिया की ओर से दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में देश के शीर्ष-100 सामाजिक उद्यमों के बीच 36वां स्थान हासिल हुआ। जिद और जुनून के दम पर भारतीय कृषि में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने वाले इस स्टार्टअप के नायक हैं हिमाचल प्रदेश के युवा देव भारद्वाज जो कुल्लू जिला के अंतर्गत निरमंड तहसील के बेहद पिछड़े क्षेत्र की पंचायत खरगा के रहने वाले हैं। पिता शिक्षा विभाग में कार्यरत थे। जब देव भारद्वाज दसवीं में पढ़ रहे थे तो पिता का निधन हो गया। हालांकि उनकी माता को अनुकंपा के आधार पर पिता की नौकरी मिल गई, लेकिन तभी से देव भारद्वाज के मन में संघर्ष के दम पर कुछ हासिल करने की धुन सवार हो गई। जमा दो तक की पढ़ाई झाकड़ी स्कूल से करने के बाद देव ने रामपुर कॉलेज से 1998 में बीए की पढ़ाई कर पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ में पब्लिक मैनेजमेंट में एमए में एडमिशन ले ली। पढ़ाई के दौरान ही उन्होंने चंडीगढ़ में इवेंट मेनेजमेंट कंपनी देव प्रोमोशन्स शुरू कर दी और यूनाइटेड ब्रुअरीज, शॉ वलास, कोका कोला इंडिया, अमरटेक्स, बीपीएल जैसी कंपनियों के लिए कई इवेंट करवाए। कैंपस प्लेसमेंट से देव को स्पाइस टेलीकॉम में नौकरी मिल गई। उन्होने कंपनी की बिजनेस प्रमोशन सहित एयरटेल, रिलाइंस इंफोकॉम में भी कई इवेंट्स व सेल्स कंपेन किए। देव ने दो साल बाद फिर देव प्रोमोशन्स को शुरू किया और कई बड़े ब्रांड्स की एडवरटाइजिंग, स्टार नाइट्स फैशन शोज़ स्पोर्ट्स इवेंट्स और फिल्म स्क्रीनिंग इवेटंस करवाए। साल 2004 में देव भरद्वाज को बड़ा घाटा हुआ और ऐसे में उन्हें अपनी कंपनी को बंद करना पड़ा।

तकनीक को खेत तक लाने का प्रयास ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म

देव भारद्वाज ने बताया कि किसान मंच का मोबाइल ई कॉमर्स प्लेटफॉर्म ग्रामीण भारत की जरूरत के मुताबिक कृषि फसलों में उत्पादकता, आय बढ़ाने और कृषि पेशे में पारदर्शिता लाने के लिए तकनीक को खेत तक लाने का प्रयास है। भारत अपनी इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी और सॉफ्टवेर डेवलपमेंट के लिए विश्व में विख्यात है मगर भारत का कृषि क्षेत्र अभी इस से अछूता ही रहा है। किसान मंच के मोबाइल एप्प में किसानों के लिए डिजिटल कलेंडर उपलब्ध करवाया गया है जो फसल प्रबंधन व फसल चक्र की विस्तृत जानकारी फसल वृद्धि अवस्थाओं के अनुरूप चित्रात्मक शैली में देने के साथ बीजों की सूचना, फसलों की बिजाई- कटाई, प्टांलिंग मैटीरियल वे खेती के तरीकों की जानकारी देता है। देश के दस राज्यों के एग्रो क्लाइमेटिक ज़ोन्स की 109 फसलों और 9 पशुपालन प्रजातियों की सूचना प्रदान करता है।

दोस्तों का साथ, करोड़ों का निवेश

सन 2013 में देव ने कॉलेज के दो साथियों के साथ मिलकर एग्रो फार्म वेंचर्स प्राइवेट लिमिटेड के बैनर तले www.kisanmanch.com पोर्टल पर काम शुरू किया।

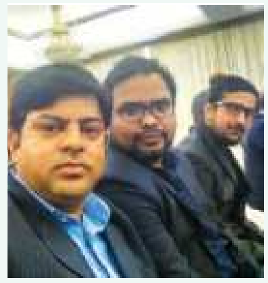

इसके लिए देव ने हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर, उत्तराखंड, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा राजस्थान के कृषकों, कृषक संस्थाओं, कृषि कारोबारियों से व्यक्तिगत तौर पर मिलकर कृषि कारोबार से सबंधित डाटा जुटाया। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कई तकनीकी परियोजनाओं में कार्य करने के तुजुर्बे ने देव को अपने जीवन के सबसे कठिन डाटाबेस प्रोजेट्स किसान मंच पोर्टल और मोबाइल एप्प बनाने का कार्य करने के लिए प्रेरित किया। देव इस ड्रीम प्रोजेक्ट पर अब तक 2.5 करोड़ और 5 साल निवेश कर चुके हैं।

कृषि आधारित अलर्ट और नोटिफिकेशन

किसान मंच के एप्प में कृषि आधारित अलर्ट और नोटिफिकेशन सिस्टम है, जिसके जरिये किसान मंच पर पंजीकृत होने वाले किसानों को कहीं भी, कभी भी संदेश भेजा सकता है। एप्प किसानों को रिमांइडर, इवेंट इनविटेशन, मौसम अलर्ट और फसल से संबंधित कई अपडेट प्रदान करता है। कृषि से संबधित ज्ञान को शेयर करने के लिए एप्प में कृषि विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, कृषि विशेषज्ञों व कृषि वैज्ञानियों को जोड़ा गया है। एप्प में कृषि से संबंधित 1000 वीडियो 22 भाषाओं में तैयार किए जा रहे हैं, ताकि किसानों को स्थानीय भाषा में कृषि से संबधित ज्ञान को पहुंचाया जा सके। यहां किसानों और कृषि पेशे से जुड़े कारोबारियों के लिए मार्केट लिंक्स उपलब्ध हैं। ऑन लाईन पेमेंट के लिए यह एप्प यूजर्स को पेमेंट मैकेनिज्म भी उपलब्ध करवाता है। एप्प पर कृषि वित व कृषि बीमा से सबंधित सूचना भी उपलब्ध होगी।

भविष्य की योजना

भविष्य में इस एप्प पर कृषि वित्त और कृषि बीमा से सबंधित जानकारियां भी किसानों को उपलब्ध होंगी। देव भारद्वाज कहते हैं कि जल्द ही किसान मंच का वीटा वर्सन लान्च किया जा रहा है। इस एप्प को एप्पल एप्प स्टोर अथवा गूगल एंड्रायड से डाउनलोड किया जा सकेगा।

संघर्ष के वो दिन...

टर्निंग प्वाइंट : इंटरग्लोब टेक्नोलॉजी

वर्ष 2005, जिस समय भारत में बिज़नेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग चरम पर था , देव ने अपनी प्रतिभा निखारने के लिए इंटरग्लोब टेक्नोलॉजी में कस्टमर केयर एग्जीक्यूटिव के तौर पर काम करना उनकी जिन्दगी का टर्निंग पॉइंट साबित हुआ। गुडगांव में इंटरग्लोब टेक्नोलॉजी में करते हुए उन्हें इंटरनेशनल कस्टमर से संवाद करना होता था। यहां दो साल की जॉब में उन्होंने अपनी कम्युनिकेशन और प्रजेंटेशन स्किल और डाटाबेस मैनेजमेंट में महारत हासिल की। पदोन्नति होने पर कंपनी की अंतरराष्ट्रीय परियोजनाओं में श्रीलंका व इंडोनेशिया सहित कई देशों में काम करने का अवसर मिला।

जॉब छोड़ी, खुद की कंपनी खोली

अगस्त 2010 में देव ने जॉब छोड़ दी और श्रीखंड टेक्नोलॉजी के नाम से खुद की कंपनी खोली। कंपनी शिक्षा की गुणवता के क्षेत्र में सूचना तकनीक के दम पर एनालिटिक स्कोर कार्ड बनाकर जन्मजात प्रतिभाओं को उनकी क्षमताओं के हिसाब से उनके लिए बेस्ट स्टडी ऑप्सन देती थी। शुरू में कंपनी को बहुत अच्छा रिस्पांस मिला, लेकिन बाद में स्थिति ऐसी आई कि इस प्रोजेक्ट को बीच में ही रोकना पड़ा। इसके बाद उन्होंने वर्ष 2012 में रामपुर बुशहर नगर परिषद में टेक्नोलॉजी इनेबल्ड सॉलिड वेस्ट मैनेजमेंट का प्रोजेक्ट किया। अब वे उत्तर प्रदेश में कई कृषि परियोजनाओं में शामिल हैं।

किसान एक्सपर्ट कनेक्शन

चीन में हर 200 किसानों के लिए एक कृषि विस्तारक कर्मचारी है, मगर भारत में कृषि विस्तार बिलकुल नगण्य ही है। हिमाचल प्रदेश में ब्लॉक स्तर पर तैनात एडीओ पर 50 हजार किसानों का जिम्मा है। जिला स्तर पर भारत सरकार कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से यह कार्य करती है, मगर ग्रामीण स्तर पर कृषि विस्तारक सेवारत नहीं है। किसान मंच इसी कमी को दूर कर किसानों व विशेषज्ञों को डायरेक्ट कनेक्ट करता है।

क्वालिटी प्रोडक्ट्स की परचेज

किसानों को कई बार स्थानीय बाजार में उच्च गुणवत्ता वाले कृषि उत्पाद नहीं मिलते। यानी कृषि उत्पादों के कारोबार में जुटी सभी कंपनियां राज्यों सरकारों के लाईसेंस की औपचारिकताओं के चलते सभी राज्यों में अपना डिस्ट्रीब्यूशन और रिटेल नेटवर्क नहीं बनाती। किसान मंच किसानों को विभिन्न कंपनियों के उत्तम गुणवत्ता वाले कृषि उत्पाद खरीदने की सहूलियत प्रदान करना है।

'दूरदर्शन किसान' नेटवर्क

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 26 मई 2015 को दूरदर्शन किसान की शुरुआत की। साढ़े तीन साल के सफर में देश के एक करोड़ किसानों तक सीधी पहुंच। हैलो किसान के जरिये लाइव चैनल से जुड़ सकते हैं किसान।

साढ़े तीन साल के सफर में भारत के एक करोड़ किसानों तक पहुंच बनाने में कामयाब 'दूरदर्शन किसान' चैनल

'दूरदर्शन किसान': खेत से बाजार तक, उत्पादक से खरीददार तक सूचनातंत्र

आरसीएफसी नार्थ फीचर सर्विस

भारत में कृषि की परंपरा हजारों वर्ष पुरानी रही है। कृषि ही भारतीय संस्कृति का आधार बनी और नदियों के किनारे पनपीं इस सभ्यता ने पूरे विश्व पर छाप छोड़ी है। कृषि इससे जुड़े उद्योग-धंधों तीज-त्यौहरों ने ही भारत को सांस्कृतिक आर्थिक और सामाजिक रूप से संपन्न और समृद्ध बनाया। हल के पीछे चलता व्यक्ति ही देश को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने में अहम रहा है। देश की आत्मा को समझने की शुरूआत भारत के गांव-देहात, यहां के किसानों के जीवन से शुरू होती है। देश के किसानों, कारीगरों, बुनकरों, हस्तशिल्पकारों, दस्तकारों, बुनकरों व महिला किसानों के लिए डीडी किसान की शुरूआत की गई। दूरदर्शन किसान किसानों को कृषि लागत में कमी करने के उपाय, जैविक व पर्यावरण मित्र खेती करने के साथ उन्नत तकनीकों व नई-नई प्रासंगिक खोजों की जानकारी प्रदान करता है। यह चैनल मौसम की सामयिक जानकारी और मंडी के भाव के बारे में भी किसानों को अपडेट रखता है। यह चैनल अपने आप में दुनिया का पहला ऐसा टीवी चैनल है जो पूरी तरह ग्रामीण भारत खासकर किसानों को समर्पित है। दूरदर्शन किसान देश के किसानों खेत-मजदूरों व कामगारों का मंच है। दूरदर्शन किसान किसानों को सरकारी नीतियों से तो अवगत करवा ही है, साथ ही नीतियों की दिशा तय करने में भी अहम भूमिका निभा रहा है। किसान चैनल ने साढ़े तीन साल के सफर में देश के ग्रामीण क्षेत्र के करोड़ों दर्शकों तक अपनी पहुंच बनाई है। भारतीय खेती का चेहरा बदलने में दूरदर्शन किसान चैनल के सभी कार्यक्रम अहम भूमिका अदा कर रहे हैं।

24 घंटे का टीवी चैनल, अमिताभ हैं ब्रांड अम्बेसडर

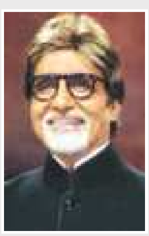

डीडी किसान भारतीय कृषि सम्बंधित 24 घंटे का टेलीविजन चैनल है, जो दूरदर्शन के स्वामित्व में है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 26 मई 2015 को दूरदर्शन किसान की शुरूआत की। अब स्मार्टफोन पर भी डीडी किसान चैनल को देखा जा सकता है। इस चैनल के प्रति किसान आकर्षित हों , इसलिए इसका ब्रांड अम्बेसडर मशहूर सीने अभिनेता अमिताभ बच्चन को बनाया गया। यह चैनल खास तौर पर देश के किसानों और ग्रामीण समुदाय के लिए पूरी तरह समर्पित है। किसान चैनल किसानों को न सिर्फ कृषि आधारित जानकारी उपलब्ध कराता है, बल्कि शिक्षा, कुटीर उधोगों, बैंकिग और संस्कृति से जुड़ी हर जानकारी भी देता रहता है। मंडियों की जानकारी उपलब्ध करवाकर यह चैनल किसान को अपने उत्पाद को बेचने के लिए बाजार के साथ जोड़ने में भी खास भूमिका अदा करता है। दूरदर्शन किसान चैलन दूरदर्शन के क्षेत्रीय चैनलों से मिल कर किसानों को क्षेत्र विशेष के लिए जरूरी कृषि जानकारियां प्रदान करता है।

करोड़ों में है डीडी किसान की दर्शक संख्या

इस चैनल की पहुंच देश के काफी दूर दराज इलाकों तक है। चैनल की दर्शक संख्या करोड़ों में पहुंच चुकी है। इस चैनल के खेत-खेलिहान, फूलों की खेती, किसान, पर्यावरण की ओर, लोक रंग जैसे कार्यक्रम काफी पसंद किए जा रहे है। इस चैनल के जरिये सूचना के साथ मनोरंजक कार्यक्रमों के जरिये किसानों का ज्ञानवर्धन किया जाता है। चैनल पर पहली बार कृषि कवि गोष्ठी के माध्यम से कृषि विज्ञान की जानकारी किसानों की दी जाती है। चैनल पर फिक्शन सीरियल, नॉन फिक्शन सीरियल भी किसानों और उनके परिवार के लिए बनाए जाते है। कई बार सीरियलों के माध्यम से किसानो को वैज्ञानिक जानकारी उपलब्ध कराई जाती है।

अब क्षेत्रीय भाषाओं और बोलियों में दिखेंगे प्रोग्राम

डीडी किसान हिंदी चैनल के रूप मे स्थापित होने के बाद दूसरे चरण में इसमें क्षेत्रीय भाषाओं और बोलियों को सम्मिलत करने के लिए क्षेत्रीय केंद्रों की मदद कर ली जा रही है। देश के करीब पचास से ज्यादा केंद्र अपनी-अपनी क्षेत्रीय भाषाओं मे कृषि का कार्यक्रम दिखाते है। किसान चैनल का इन तमाम केंद्रों से लगातार तालमेल बना रहता है। क्षेत्र विशेष से सम्बन्धित अच्छे कार्यक्रमों को क्षेत्रीय भाषाओं मे डबिंग करके दर्शकों तक पहुंचाया जाता है। चैनल में आदिवासी समाज, आर्टस और कल्चर को ध्यान मे रखकर कई प्रोग्राम जोड़े जा रहे हैं। डीडी स्पोर्टस चैनल के साथ मिलकर स्वदेशी खेल, ट्राईबल गेम और इनोवेशन पर कार्यक्रम तैयार किए जा रहे हैं।

देश की महिला किसानों की प्रेरककथाओं का प्रसारण

दूरदर्शन किसान पर देश भर की उन महिलाओं की प्रेरककथाओं का प्रसारण किया जा रहा, जिन्होंने कृषि क्षेत्र में शानदार सफलता हासिल कर अपनी पहचान बनाई है। इस कार्यक्रम में लीक से हट कर कृषि को सतत जीविका का आधार बनाने वाली महिलाओं को शामिल किया गया है।

'हैलो किसान' : अपने मोबाइल से दूरदर्शन किसान के लाइव प्रोग्राम से जुड़िये

डीडी किसान चैनल पर रोज फोन-इन कार्यक्रम के माध्यम से किसानों की समस्या का निदान किया जाता है। किसान किसी भी समय फोन करके अपना सवाल रिकॉर्ड कर सकते हैं। वैज्ञानिक उन सभी सवालों का जवाब समय-समय पर देते रहते हैं। कई बार किसानों और वैज्ञानिकों के बीच मार्डरेटर का इस्तेमाल भी किया जाता है, जिससे सही और सटीक जानकारी किसानों तक पहुंचाई जा सके। खेत-खलिहान प्रोग्राम में किसानों को आज या अभी क्या करना है, इस बारे में बताया जाता है। इस प्रोग्राम के माध्यम से किसानों को ताजा जानकारी सुबह-सुबह दी जाती है। शाम को 'हैलो किसान' लाइव प्रोग्राम है। जिसमें किसान फोन पर चैनल से जुड़ सकते हैं।

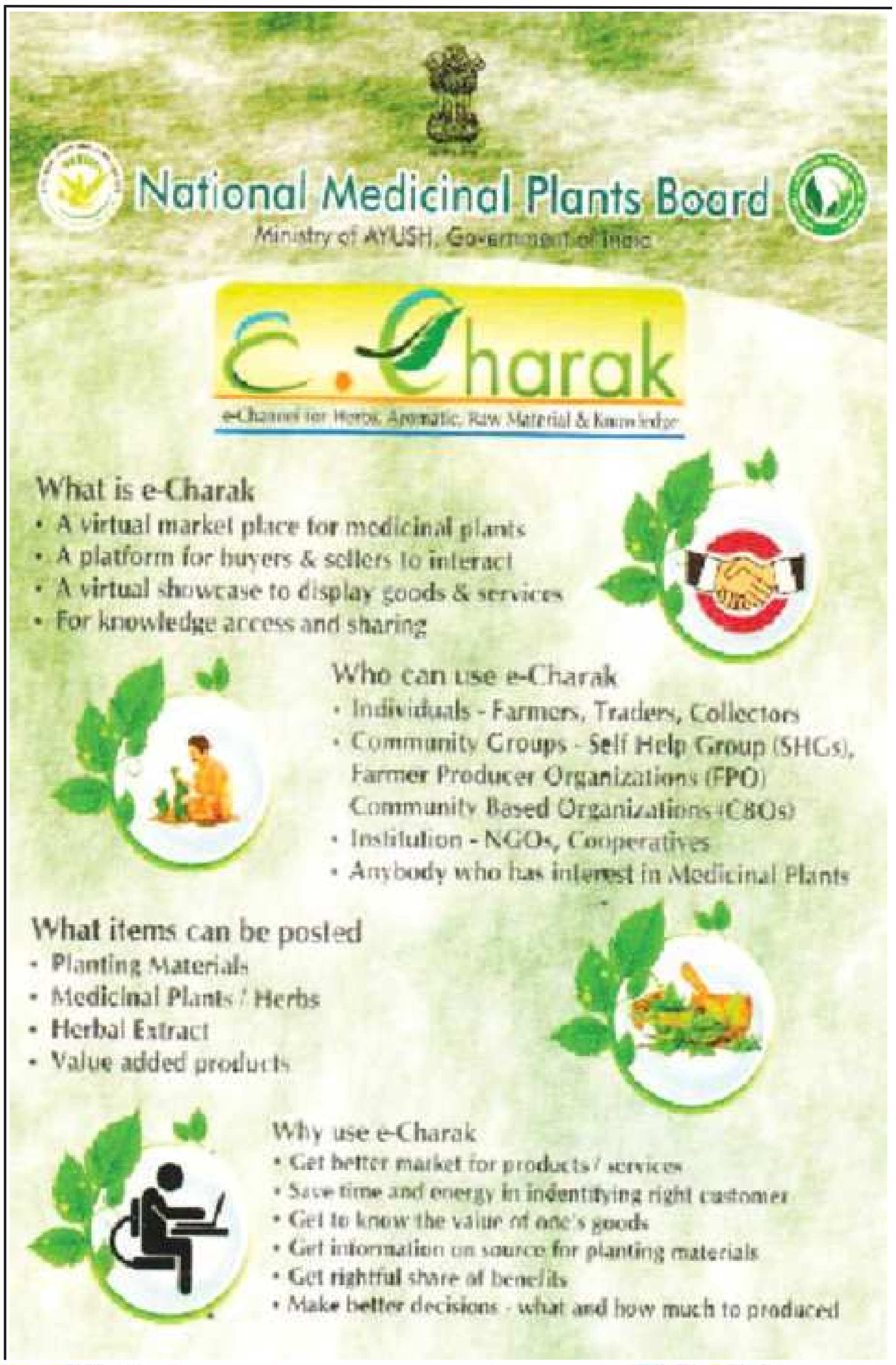

NATIONAL MEDICINAL PLANTS BOARD
Plants For Health & Prosperity

E-Charak
e-Channel for Herbs, Aromatic, Raw Material & Knowledge

जड़ी-बूटी बाजार

उत्तर प्रदेश विशेषांक

www.rcfcnorth.in ■ कुल पृष्ठ : 8 ■ वर्ष 2, अंक 3 ■ 1 मार्च से 31 मार्च 2019

क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तर भारत, आयुष मंत्रालय भारत सरकार, पिन-175015, दूरभाष-01908-222970 (टेलीफैक्स), 9418010624 (मोबाइल) email:rcfcnorth@gmail.com

अमृत के समान गुणों वाली गिलोय के राष्ट्रव्यापी कृषिकरण के नेशनल मेडिसिनल प्लांट बोर्ड की अनूठी पहल

'अमृता फॉर लाइफ': हर घर गिलोय, घर- घर गिलोय के लिए नेशनल मिशन

डॉ. अरूण चंदन क्षेत्रीय निदेशक, आरसीएफएसी जोगिद्रंनगर

भारत सरकार के आयुष मंत्रालय तहत आने वाले नेशनल मेडिसिनल प्लांट्स बोर्ड ने गिलोय के कृषिकरण को हर घर तक पंहुचाने के लिए 'अमृता फॉर लाइफ' राष्ट्रीय अभियान की शुरूआत की है। इस राष्ट्रीय अभियान की शुरूआत गिलोय पर दिल्ली में आयोजित नेशनल कॉन्फ्रेंस में किया गया। यह पहला अवसर है, जब गुणों की खान के रूप में प्रचलित अमृता कही जाने वाली गिलोय यानी गुडूची के कृषिकरण के लिए राष्ट्रव्यापी अभियान चलाया जा रहा है। 'अमृता फॉर लाइफ' का लक्ष्य आमला और ग्वारपाठे की तरह लोग देश के लोगों को गिलोय के गुणों से परिचित करवाने के साथ गिलोय के कृषिकरण को घर-घर तक पहुंचाना है। इस ऐतिहासिक अभियान को कामयाब बनाने के लिए आयोजित सम्मेलन में देशभर से आयुर्वेद, फॉरेस्ट, कृषि, पर्यावरण व फार्मास्युटिकल विशेषज्ञ जुटे। आयुष मंत्रालय के सचिव पद्मश्री वैध राजेश कोटेचा, संयुक्त सचिव रोशन जग्गी, नेशनल मेडिसिनल प्लांट्स बोर्ड के पूर्व मुख्य कार्यकारी अधिकारी बीएस सजवान, मुख्य कार्यकारी अधिकारी प्रोफेसर तनुजा मनोज नेसरी व डिप्टी सीईओ पदमप्रिया बालाकृष्णन की उपस्थिति में इस अभियान की शुरूआत की गई। इस अवसर पर विशेषज्ञों ने गिलोय के औषधीय गुणों के बारे में विस्तार से चर्चा की और आयुर्वेद दवा निर्माण बाजार में गिलोये की बढ़ती मांग के चलते इस पौधे के कृषिकरण के लिए राष्ट्रीय अभियान शुरू करने के लिए कार्ययोजना को मूर्तरूप दिया। 'अमृता फॉर लाइफ'अभियान के शुभारंभ पर लोगो, ब्रोशर और ऑनलाइन सबमिशन पोर्टल लांच किए गए। नेशनल मेडिसिनल प्लांट्स बोर्ड की कार्यकारी अधिकारी तनुजा मनोज नेसरी ने बताया कि हमारे देश में सदियों से गिलोय का प्रयोग हो रहा है। गिलोय का उपयोग त्रिदोष हरने वाली, रक्तशोधक, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाली, ज्वरनाशक, खांसी मिटाने वाली प्राकृतिक औषधि के रूप होता आ रहा है। गिलोय रोगों से लड़ने, उन्हें मिटाने और रोगी में शक्ति के संचरण में यह विशिष्ट भूमिका निभाती है। उन्होंने बताया कि नेशनल मेडिसिनल प्लांट्स बोर्ड के सभी क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र, सभी प्रदेशों के राज्य मेडिसनल बोर्ड और राज्य आयुर्वेद विभाग इस अभियान को सफल बनाने के लिए काम कर रहे हैं। 'अमृता फॉर लाइफ'को सफल बनाने के लिए साल भर देश भर में कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे।

गलोय कंपेन का लोगो, ब्रोशर और ऑनलाइन सबमिशन पोर्टल की लॉन्चिंग

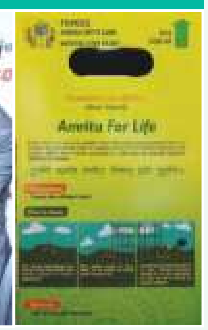

'अमृता फॉर लाइफ'

दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में 'अमृता फॉर लाइफ' अभियान के शुभारंभ के अवसर पर गिलोय कंपेन का लोगो, ब्रोशर और ऑनलाइन सबमिशन पोर्टल लांच किया गया। आयुष मंत्रालय के सचिव पद्मश्री वैध राजेश कोटेचा, संयुक्त सविच रोशन जग्गी, नेशनल मेडिसिनल प्लांट्स बोर्ड के पूर्व मुख्य कार्यकारी अधिकारी बीएस सजवान , मुख्य कार्यकारी अधिकारी प्रोफेसर तनुजा मनोज नेसरी, डिप्टी सीईओ पदमप्रिया बालाकृष्णन ने गिलोय के औषधीय गुणों, विभिन्न रोगों के उपचार में इस पौधे के प्रयोग और आयुर्वेद बाजार में इस पौधे की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए बड़े पैमाने पर इसके कृषिकरण की बात कही। उन्होंने उम्मीद जताई कि राष्ट्रीय अभियान से न केवल देश भर के लोगों को गिलोय के औषधीय गुणों के बारे में जानकारी मिलेगी, बल्कि इससे कृषिकरण को भी बल मिलेगा।

अमृत जैसे गुणों के चलते गिलोय को कहा जाता है अमृता, कई रोगों की रामबाण औषधि

सदियों से भारत में हो रहा प्रयोग

हमारे देश में सदियों से गिलोय का प्रयोग होता आया है। त्रिदोष हरने वाली, रक्तशोधक, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाली, ज्वरनाशक, खांसी मिटाने वाली प्राकृतिक औषधि के रूप में गिलोय का खूब उपयोग किया जाता रहा है। टाइफायड, मलेरिया, कफ, पीलिया, यकृत निष्क्रियता, तिल्ली बढ़ना, सिफलिस, एलर्जी सहित त्वचा विकार, झाइयां, झुर्रियां, कुष्ठ आदि रोगों के उपचार में गिलोय का सेवन आश्चर्यजनक परिणाम देता है। इसे दुधारू पशुओं के आहार में शामिल किया जाता है, जिससे उनमें दूध देने की क्षमता बढ़ती है।

शक्ति संचरण में सहायक गिलोय

गिलोय को गडूची और गुल्वेल नामों से भी जाना जाता है। आयुर्वेद में इसका खास महत्व है। आचार्य चरक ने गिलोय को वात दोष हरने वाली श्रेष्ठ औषधि माना है। यह शरीर में इंसुलिन उत्पादन क्षमता बढ़ाती है। रोगों से लड़ने, उन्हें मिटाने और रोगी में शक्ति के संचरण में यह अपनी विशिष्ट भूमिका निभाती है। गिलोय का नियमित प्रयोग सभी प्रकार के बुखार, फ्लू, पेट कृमि, रक्त विकार, निम्न रक्तचाप, हृदय रोग, मूत्र रोग, एलर्जी, उदर रोग, चर्म रोग आदि अनेक व्याधियों से बचाता है।

वैज्ञानिक शोधों से गुणों का पता

गिलोय के अमृत तुल्य गुणों के कारण इसे अमृता कहा जाता है। वैज्ञानिक शोधों से अब यह साबित हो चुका है कि गिलोय एक श्रेष्ठ इम्मुनोमोमोदुलेटर औषधि है और शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाती है। गिलोय में ग्लुकोसाइन, गिलोइन, गिलोइनिन, गिलोस्तेराल तथा बर्बेरिन नामक एल्केलाइड पाए जाते हैं। हाल ही में अमेरिका में एक पेटेंट स्वीकृत हुआ है, जिसके अनुसार गिलोय का उपयोग एक विधि द्वारा एड्स, फ्लू, राजयक्ष्मा (टीबी) व क्षीण रोग प्रतिरोधकता के लिए किया गया है।

सारे देश में होती है गिलोय

गिलोय की जड़, फल तथा पत्ती का उपयोग औषधीय रूप में किया जाता है, लेकिन इसके तने का सबसे ज्यादा प्रयोग किया जाता है। खेतों की मेंड़, घने जंगल, घर के बगीचे, मैदानों में लगे पेड़ों के सहारे कहीं भी गिलोय की बेल प्राकृतिक रूप से अपना घर बना लेती है। इसके पत्ते चिकने और पान की शक्ल के होते हैं । इसकी बेल पीले सफेद रंग की होती है। यह कभी सूखती या नष्ट नहीं होती है तथा इसे काट देने पर उसमें से फिर नई लता पैदा हो जाती है। पतझड़ में इसके पत्ते झड़ जाते हैं और बरसात में इस पर फिर से नए पत्ते आ जाते हैं। गिलोय पूरे भारतवर्ष में समुद्र तल से 900 मीटर की ऊंचाई तक प्राप्त होती है। इसकी जड़ सफेद रंग की होती है। यह मुलायम व रसयुक्त होती है तथा इसमें तेज एरोमैटिक गन्ध होती है। गिलोय के फूल कोंपल में लगे रहते हैं। जब पौधा पत्ती रहित होता है तभी इसमें फूल लगते हैं। फूलों का रंग पीला या हरा- पीला होता है। इसके पुष्प गुच्छों में लगे रहते हैं। इसके फल मटर के समान गोल या अंडाकार होते हैं। कच्चा फल हरा होता है, जबकि पकने पर यह लाल रंग लिए होता है। गिलोय का लिसलिसा पदार्थ सूखा हुआ भी मिलता है, इसे 'गिलोय सत्व' कहते हैं। आयुर्वेद दवा निर्माण में सत्व का प्रयोग बढ़ रहा है।

ई-चरक

उपयोगकर्ताओं की मदद

- उत्पादों, सेवाओं के लिए बेहतर बाजार।
- सही ग्राहक पहचाना और ऊर्जा की बचत।
- माल की सही कीमत जानना।
- लाभ में उचित हिस्सेदारी।
- क्या और कितना उत्पादन करने के लिए बेहतर निर्णय।

औषधीय फसल बेचने की राह हुई अब आसान, किसानों को ऑनलाइन मिल जाएगा फसल का खरीददार

ई-चरक : जड़ी-बूटियों की खरीदने-बेचने का ऑनलाइन प्लेटफार्म

डॉ. अरुण चंदन, क्षेत्रीय निदेशक, क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र जोगिंदनगर।

किसानों को औषधीय फसल को बेचने की समस्या का सामना भी नहीं करना पड़ेगा, क्योंकि अब उनकी फसल का खरीदार ऑनलाइन ही मिल जाएगे। किसान को औषधीय पौधों की फसल को बेचने के लिए न तो मंडियों में जाने की जरूरत पड़ेगी और न जानकारी के लिए नई योजनाओं की जानकारी के लिए विभाग के चक्कर काटने पड़ेंगे।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड ने औषधीय पौधों की खेती करने वाले किसानों के लिए 'ई-चरक' वेबसाइट तैयार की है, जिसमें किसान अपने फसल के बारे में पूरी जानकारी अपलोड करेगा और इसी वेबसाइट के माध्यम से किसान को खरीददार भी मिल जाएगा। इतना ही नहीं, बोर्ड ने इसके लिए मोबाइल एप भी तैयार किया है। औषधीय पौधों की खेती करने वाले किसान दोनों सुविधाओं का लाभ उठा सकते हैं। बोर्ड की ई चरक वेबसाइट को हिंदी, अंग्रेजी और कन्नड़ भाषा में तैयार किया गया है, जबकि मोबाइल एप में छह भाषाओं की सुविधा दी गई है। ई-चरक पर किसान औषधीय पौधों की फसल के बारे में जानकारी देने के साथ-साथ उसका खुद दाम तय करके अपलोड कर सकता है, जिससे देश में किसी कौने का व्यापारी अपनी सुविधा के अनुसार किसान की फसल खरीद सकता है। ई चरक में एग्रो तकनीक योजनाओं की पूरी जानकारी दी गई है।

औषधीय खेती की नई तकनीक

अब किसान औषधीय पौधों की खेती की नई तकनीक के बारे में भी जान सकेंगे। हिमाचल के किसानों को दूसरे राज्य के औषधीय पादप बोर्ड की ओर से की जा रही खेती और उनकी तकनीक के बारे में प्रशिक्षण देने के लिए राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड ने मंजूरी दी है।

औषधीय पौधों का प्लेटफार्म

ई-चरक चैनल जड़ी-बूटी, सुगंधित, कच्चे माल और उसकी जानकारी, औषधीय पौधों के क्षेत्र में शामिल विभिन्न हितधारकों के बीच जानकारी का आदान-प्रदान करने का एक मंच है। ई-चरक संयुक्त रूप से प्रगत संगणन विकास केंद्र (सी-डैक), राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड (NMPB), आयुष मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा विकसित किया गया है।

ई-चरक का उपयोग

- खरीदारों और औषधीय पौध क्षेत्र के विक्रेताओं में आपसी संपर्क बनाने के लिए एक वर्चुअल बाजार के रूप में कार्य।
- वर्चुअल शोकेस के रूप में औषधीय पौध क्षेत्र के उत्पाद और संबंधित सेवाओं को प्रदर्शित करने के लिए।
- प्रौद्योगिकी , बाजार की जानकारी और औषधीय पौध क्षेत्र के अन्य संसाधनों के ज्ञान भंडार के रूप में।

मुख्य पृष्ठ पर विषयवस्तु

एडवांस्ड सर्च विकल्प, जैसे : 'वानस्पतिक, व्यापार', 'श्रेणी वार-उत्पाद', राज्यवार विषयवस्तु, खरीद/बिक्री के लिए विषयवस्तु की खोज का इस्तेमाल किया जा सकता है।

रुचि व्यक्त करने के लिए

उपयोगकर्ता विषय वस्तु के साथ 'संपर्क करें' विकल्प का उपयोग कर सकते हैं।

पंजीकृत उपयोगकर्ताओं विषय वस्तु पोस्ट करने वाले उपयोगकर्ता का संपर्क विवरण देख सकते हैं और संदेश बोर्ड का भी उपयोग कर सकते हैं।

विषय वस्तु पोस्ट करने वाले को प्रतिक्रियाएं एसएमएस और ई-मेल दोनों माध्यम से प्राप्त होती हैं। एप्लिकेशन उपयोगकर्ताओं को अधिसूचना मिलती है।

विषयवस्तु पोस्ट करने के लिए

केवल पंजीकृत सदस्य बिक्री/खरीद के लिए विषयवस्तु पोस्ट कर सकते हैं।

पंजीकृत उपयोगकर्ता जहां बिक्री-खरीद के पोस्ट करना चाहते हैं, वहां श्रेणी, उप श्रेणी का विकल्प का चयन कर सकते हैं।

उपयोगकर्ता विषय वस्तु पोस्टिंग के साथ एक इमेज भी जोड़ सकते हैं। फार्म जमा करने पर विषय वस्तु लोगों के लिए प्रदर्शित होती है।

ई-चरक में ऐसे करें पंजीकरण

ई-चरक में पंजीकरण काफी सरल है। बस 2 सरल चरणों का पालन कर आप इस उपकरण द्वारा प्रदान किए गए कई लाभों का आनंद ले सकते हैं। इसके लिए निम्नलिखित चरण का उपयोग करें।

- होम पेज पर, नया उपयोगकर्ता (new user) क्लिक करें। अब आप http://e-charak.in/echarak/signUpBuyer.do पेज पर पहुंच जाएंगे।

- पंजीकरण फॉर्म भरें और पूरा पंजीकरण करें।
- एक बार सबमिट करने के बाद, आपको एक अधिसूचना मेल भेजा जाएगा। उपकरण में लॉग इन करें और सेवाओं का उपयोग शुरू करें।

बिक्री के लिए आइटम ऐसे करें पोस्ट

सामान बिक्री के लिए पोस्ट करने के लिए प्रक्रिया काफी सरल है। इन चरणों का पालन करें और आपका आइटम बिक्री के लिए तुरंत उपलब्ध हो जाएगा।

- ई-चरक प्लेटफार्म पर लॉग इन करने के बाद पोस्ट एन आइटम पर क्लिक करें।
- श्रेणी, उप-श्रेणी, उत्पाद का चयन करें, जहां आपका आइटम उचित रूप से प्रदर्शित किया जा सकता है।
- अपने आइटम के बारे में विवरण दें और सबमिट करें। आपका आइटम ई-चरक के होम पेज पर दिखाई देगा।

आइटम खरीदने के लिए दिखाएं रुचि

निम्नलिखित चरणों का पालन कर आप पसंद की आइटम खरीदने के लिए रुचि दिखा सकते हैं।

नए यूजर के लिए : पूरी जानकारी देखने के लिए अपनी पसंद के आइटम पर क्लिक करें।

अभी संपर्क करें पर क्लिक करें और जो आइटम आप खरीदना चाहते हैं उसके संबंध में जानकारी सबमिट करें। आपका संदेश उस उपयोगकर्ता के साथ सांझा किया जाएगा, जिसने उक्त आइटम ई-चरक पर पोस्ट किया था।

पंजीकृत उपयोगकर्ता के लिए: लॉगिन करने के बाद अपनी रुचि के आइटम पर क्लिक करें।

'एड रिस्पांस' सुविधा का उपयोग करें और अपना संदेश उस उपयोगकर्ता को पोस्ट करें, जिसने आइटम पोस्ट किया है।

अगर आप ऐसी जड़ी-बूटी का विक्रय करना चाहते हैं जो किसी उत्पाद-श्रेणी संरचना में फिट नहीं है तो व्यवस्थापक को उस आइटम का विवरण ईमेल करें। indg@cdac.in पर लिखें।

इस एप्प प्राप्त करने के लिए

इसे प्राप्त करने के लिए डाउनलोड लिंक
अपना मोबाइल नं दें :
+91-
जमा करें

इस क्यूआर कोड को स्कैन करें

ईचरक एप्प

GET IT ON Google Play

हमसे संपर्क करें

नेशनल मेडिसिनल प्लांट्स बोर्ड, कक्ष क्र. 309,
आयुष भवन, बी-ब्लॉक, जीपीओ कॉम्प्लेक्स
आईएनए, नई दिल्ली - 110023
ईमेल : info-nmpb@nic.in

'जीवनीय नेचुरल' का नेटवर्क

'जीवनीय सोसायटी' तीस सालों से पारम्परिक खेती के लिए किसानों को प्रेरित- प्रोत्साहित करने की दिशा में काम कर रही है। लखनऊ का पहला ऑरगेनिक सुपर स्टोर 'जीवनीय नेचुरल' उसका प्रतिफल है।

ऑरगेनिक खेती करने वाले किसानों के उत्पाद ग्राहकों तक पहुंचाने के लिए बाप- बेटी ने बनाई मजबूत सप्लाई चेन

लखनऊ का पहला ऑरगेनिक सुपर स्टोर 'जीवनीय नेचुरल'

'जीवनीय सोसायटी' के तीन दशक की मेहनत का प्रतिफल है 'जीवनीय नेचुरल'

लखनऊ से डॉ. अरूण चंदन

'जीवनीय नेचुरल' पारंपरिक स्वास्थ्य और कृषि प्रणालियों को बढ़ावा देने के काम में जुटी 'जीवनीय सोसायटी' के तीस सालों के प्रयासों का प्रतिफल है। डॉ. नरेंद्र नाथ मेहरोत्रा ने करीब तीन दशक पहले 'जीवनीय सोसायटी' की स्थापना की थी। इस गैर सरकारी संगठन ने पारंपरिक स्वास्थ्य, खेती और शिक्षा प्रणालियों के प्रचार के लिए सालों काम किया है। डॉ. मेहरोत्रा पारंपरिक कृषि के समर्थक हैं और किसानों को इस दिशा में काम करने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करते रहे हैं। जीवनीय सोसायटी ने देश भर में हजारों किसानों को पारंपरिक खेती के तरीके सिखाए हैं। देश के विभिन्न हिस्सों में एक हजार हेक्टेयर से ज्यादा भूमि पर हजारों किसानों को ऑरगेनिक खेती करने के लिए प्रशिक्षित किया है।

महिला सशक्तिकरण की पहल

जीवनीय सोसायटी महिलाओं में सामाजिक आर्थिक बदलाव लाने के लिए काम कर रही है। यह सोसायटी स्वयं सहायता समूहों के जरिये महिला उद्यमिता को विस्तार देने के प्रयास कर रही है। जीवनीय सोसायटी महिलाओं को पारम्परिक खेती, प्रोसेसिंग और पैकेजिंग में दक्ष करने के साथ ऑरगेनिक खेती के लिए प्रोत्साहित करने के लिए कार्यशालाओं का आयोजन करती है। यह सोसायटी सामुदायिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी काम कर रही है। जीवनीय सोसायटी स्वास्थ्य शिविर लगाने, परम्परागत व ऑरगेनिक खेती को बढ़ावा देने और औषधीय व सुगंधित पौधों की खेती करने व उनका उपयोग करने के लिए कई सरकारी और गैर सरकारी संगठनों के साथ काम कर रही है।

पिता- पुत्री की जोड़ी का कमाल

स्वास्थ्य और भोजन के प्रति जागरूक समाज के बीच ऑरगेनिक उत्पाद तेजी से मजबूत जगह बना रहे हैं, इसलिए ऐसे उत्पादों की मांग लगातार बढ़ रही है। डॉ. नरेंद्र नाथ मेहरोत्रा और उनकी बेटी दीप्ति मेहरोत्रा की जोड़ी ने ऑरगेनिक खेती करने वाले किसानों को उत्पादों के खरीदारों के साथ जोड़ने के लिए मजबूत सप्लाई चेन नेटवर्क तैयार किया है। जीवनीय सोसायटी से कई चिकित्सक, उद्यमी व मानव संसाधन परामर्शदाता जुड़े हुए हैं। लखनऊ का पहला ऑरगेनिक सुपर स्टोर 'जीवनीय नेचुरल' आज ग्राहकों को ऑरगेनिक उत्पाद उपलब्ध करवाने वाला भरोसे का ब्रांड है। भविष्य में इस ऑरगेनिक स्टोर का विस्तार करने की योजनाओं पर काम चल रहा है।

दिल्ली, बंगलुरू और हैदराबाद तक सेल, ग्राहकों में कई बड़े नाम

जीवनीय नेचुरल में ऑरगेनिक दालें, अनाज, , मसाले, जड़ी- बूटी, तेल, स्क्वैश, स्नैक्स, बायो डिग्रेडेबल ऑरगेनिक सैनिटरी नैपकिन, क्रॉकरी और बांस-आधारित उत्पाद उपलब्ध हैं। दिल्ली, बंगलुरू और हैदराबाद में तक उत्पाद बेचे जाते हैं। जीवनीय नेचुरल के ग्राहकों में कई बड़े नाम शामिल हो चुके हैं।

जीवनीय नेचुरल प्राइवेट लिमिटेड बी -17, सेक्टर जी, अलीगंज, पुराणिया पेट्रोल पंप के पास, रविंद्र गार्डन के विपरीत, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
संपर्क : 91907 670 1565, 1708 082 5825 deepti@jeevaniyanaturals.com

दीप्ति का स्टार्टअप 'जीवनीय नेचुरल'

'जीवनीय नेचुरल' लखनऊ का पहला ऑरगेनिक स्टोर है। यह स्टोर अपने ग्राहकों के लिए ऑरगेनिक खाद्यान्न, सब्जियां, दलहन, खाद्य तेल, घी, मसाले, पर्सनल केयर का सामान, स्क्वैश, स्नैक्स और ऑरगेनिक कपड़े उपलब्ध करवाता है। इस ऑरगेनिक सुपरस्टोर में बायोडिग्रेडेबल ऑरगेनिक सैनिटरी नैपकिन, क्रॉकरी और बांस-आधारित उत्पादों को भी शामिल किया है। इस सुपर स्टोर के उत्पाद दिल्ली, बंगलुरू और हैदराबाद के स्टोर्स पर भी उपलब्ध हैं। यह दीप्ति मेहरोत्रा का स्टार्टअप है। दीप्ति ने एक साल पहले हैदराबाद में कॉर्पोरेट की जॉब को छोड़ कर लखनऊ में 'जीवनी नेचुरल' की शुरूआत की और ऑरगेनिक खेती में जुटे किसानों के लिए मजबूत सप्लाई चेन नेटवर्क तैयार किया। दीप्ति का उद्यम ऑरगेनिक खेती करने वाले किसानों के नेटवर्क से उत्पादित वस्तुओं को सीधे खरीददारों तक पहुंचाता है। दीप्ति अब देश भर में ऑरगेनिक खेती करने वाले किसानों के लिए एक मजबूत सप्लाई चेन बनाने में जुटी हैं। 'जीवनीय नेचुरल' ऑरगेनिक उत्पादों के लिए खुद का एक ई कॉमर्स प्लेटफार्म भी बना रहा है तथा लखनऊ में ही दूसरा स्टोर खोलने की भी योजना है। 'जीवनीय नेचुरल' देश के विभिन्न शहरों में विभिन्न स्टोर्स पर अपने उत्पाद बेचने की योजना बना रहा है। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली से पीएडी करने वाली सामाजिक वैज्ञानिक एवं पीएमपी प्रमाणित प्रबंधन विशेषज्ञ दीप्ति मेहरोत्रा का जन्म ऐसे घर में हुआ जहां आयुर्वेद, खेती व ग्रामीण विकास पर चर्चा मुख्य विषय होते थे। वैज्ञानिक पिता और प्रतिभाशाली मां ने बेटी को उड़ान के लिए असीम आकाश दिया। देश की सामाजिक स्थिति और सांस्कृतिक विरासत को समझने के लिए दीप्ति ने न केवल पूरे भारत में यात्राएं की, बल्कि अमेरिका, ब्रिटेन, चीन, डेनमार्क और स्वीडन में भी धूमीं। दीप्ति हैदराबाद में कॉरपोरेट सेक्टर में आकर्षक सैलरी पैकेज वाली बड़ी पोस्ट पर काम कर रहीं थीं, लेकिन पिछले साल उन्होंने जॉब छोड़ पिता की तीन दशक पहले स्थापित की गई 'जीवनीय सोसायटी' को संभालने का बीड़ा उठाया। 'जीवनीय नेचुरल' के नाम से लखनऊ का पहला ऑरगेनिक सुपर स्टोर शुरू कर दीप्ति ने अपने स्टार्टअप की शुरूआत की। दीप्ति एक प्रशिक्षित कथक नर्तकी , चित्रकार, लेखक एवं फोटोग्राफर हैं और ट्रैवलिंग उनकी हॉबी है।

पते की बात

टिशू कल्चर से साल भर उगाएं लुंगडू

डॉ. संजय कुमार
लेखक, सीएसआईआर-आईएचबीटी पालमपुर के निदेशक हैं।

गर्मियों के मौसम में हिमाचल प्रदेश के पहाड़ों में प्राकृतिक रूप से उगने वाली इस सब्जी को यहां के लोग सदियों से खाते आ रहे हैं।लुंगडू पहाड़ों में जून से सितंबर माह तक होता है, लेकिन अब टिशू कल्चर के माध्यम से भी इसका उत्पादन होने लगा है, जो साल में कभी भी उगाया जा सकता है। सीएसआईआर-हिमालयन जैव संपदा प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर के वैज्ञानिकों ने लुंगडू को प्रयोगशाला में उगाने में सफलता हासिल की है। हिमालय के ऊपरी क्षेत्रों में अब साल भर लुंगडू की व्यवसायिक खेती की जा सकती है।

लुंगडू अथवा लिंगड़ हिमाचल प्रदेश में एक जानी पहचानी जंगली सब्जी है। गर्मियों के मौसम में हिमाचल प्रदेश के पहाड़ों में प्राकृतिक रूप से उगने वाली इस सब्जी को यहां के लोग सदियों से खाते आ रहे हैं। इसका आचार भी बनाया जाता है। लुंगडू जहां रसायनों से दूर प्रकृति के आगोश में पैदा होता है, वहीं सब्जी के रूप में यह बेहद स्वादिष्ट भी होता है। गर्मियों के मौसम में हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा, कुल्लू, चम्बा, मंडी व शिमला के बाजारों में लोग लुंगडू बेचते देखे जा सकते हैं। कांगड़ा में व्यवसायिक तौर पर लुंगडू का आचार भी उपलब्ध होता है।

लुंगडू पहाड़ों में जून से सितंबर माह तक होता है, लेकिन अब टिशू कल्चर के माध्यम से भी इसका उत्पादन होने लगा है, जो साल में कभी भी उगाया जा सकता है। सीएसआईआर-हिमालयन जैव संपदा प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर के वैज्ञानिकों ने लुंगडू को प्रयोगशाला में उगाने में सफलता हासिल की है। हिमालय के ऊपरी क्षेत्रों में अब साल भर लुंगडू की व्यवसायिक खेती की जा सकती है।

लुंगडू में विटामिन ए, विटामिन बी कॉम्प्लेक्स, पोटाशियम, कॉपर, आयरन, फैटी एसिड, सोडियम, फास्फोरस, मैगनीशियम, कैरोटिन और मिनरल्स भरपूर मात्रा में मौजूद हैं, जिसके चलते लुंगडू की सब्जी कई औषधीय गुणों से भरपूर है। सीएसआईआर-हिमालयन जैव संपदा प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर में कुछ साल पहले लुंगडू पर शुरू हुए प्रारंभिक शोधों में यह बात सामने आई है कि लुंगडू में कई औषधीय गुण मौजूद हैं। लुंगडू के गुणों की चर्चा संस्थान की राष्ट्रीय संगोष्ठी में हुई है। लुंगडू में मैग्नीशियम, कैल्शियम, नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटेशियम, आयरन और जिंक के कारण इसे कुपोषण से निपटने के लिए एक अच्छा स्रोत माना गया है। सीएसआईआर-हिमालयन जैव संपदा प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर में हुए शोध में पाया गया है कि लुंगडू चर्मरोग व मधुमेह रोग से काफी बचाव करता है और इससे सेवन से त्वचा अच्छी रहती है। शोध कहता है कि लुंगडू का सेवन दिल के मरीजों के लिए भी अच्छा है। लुंगडू में अन्य कौन-कौन सी और खतरनाक बीमारियों से लड़ने व जीतने की शक्ति है, संस्थान के वैज्ञानिक इस पर अब भी शोध कर रहे हैं।

लुंगडू का इतिहास काफी पुराना है। लुंगडू यानि डाप्लेज़ियम मैक्सिमम एक बड़े पत्तों का फर्न है, जोकि लाखों वर्षों से जीवित रहा है। यह हिमालयी क्षेत्रों में पाया जाने वाला एक महत्वपूर्ण पत्तेदार पौधा है, जिसका उपयोग सब्जी व आचार में हो सकता है। इसकेअत्यधिक नरम घुमावदार हिस्से (क्रोजियर) को मौसमी जून से सितंबर व्यंजन के रूप में खाया जाता है। वैसे कच्चा लुंगडू तीखापन या कसैलापन लिए होता है, पर इसे उबालने पर इसका कसैलापन दूर हो जाता है।

हिमालय की पर्वत श्रृंखलाओं व देश भर में लुंगडू की अभी तक 1200 प्रजातियों का पता लगाया गया है। सीएसआईआर-हिमालयन जैव संपदा प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर में हुए शोध में लुंगडू पर हुए शोध से पता चला है कि इसमें वे गुण हैं जो मधुमेह आदि बीमारियों से बचाव करते हैं। यह प्रकृति रूप से एंटीआक्सीडेंट होता है। इसमें ओमेगा 3 और ओमेगा 6 प्रचूर मात्रा में मिलता है। यह आयरन और फाइबर का बड़ा स्रोत है।

हिमालयी क्षेत्रों में पाया जाने वाला लुंगडू कुपोषण सहित अन्य कई बीमारियों के लिए बेहतर सब्जी है। इस पर किए गए शोध से पता चला है कि इसमें विभिन्न पोषक तत्व भरपूर मात्रा में हैं। लुंगडू उत्तराखंड में भी लिंगडा के नाम से जाना जाता है। दार्जिलिंग और सिक्किम क्षेत्र में इसे नियुरो, असम में इसे धेकिया झाक, वहीं जम्मू कश्मीर में इस कसरोड कहते हैं। दुनिया के कई देशों में अलग-अलग नाम से यह रसोई का हिस्सा है। अमेरिका जैसे देशों में भी लोग इसका उपयोग करते हैं।

सीएसआईआर- हिमालयन जैव संपदा प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर के प्रयासों से अब कुदरती तौर पर उगने वाले लुंगडू की व्यवसायिकखेती करना संभव हुआ है। बसंत के मौसम में इसकी खेती की जा सकती है। अपने औषधीय गुणों के कारण लुंगडू की बाजार में जबरदस्त मांग रहती है, जिससे इसकी अच्छी कीमत मिलती है।

गुणों का भंडार सहजन, फली, फूल व बीज हैं औषधि

डॉ. अरुण चंदन
लेखक, क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तर भारत, जोगिंद्रनगर के क्षेत्रीय निदेशक हैं।

मोरिंगा या ड्रमस्टिक ट्री कहा जाने सहजन लम्बी फलियों वाला एक पेड़ है, जो भारत के अलावा और कई देशों में उगाया जाता है। गौरव की बात है कि यह पेड़ मूल रूप से उत्तर भारत का पेड़ है और यहीं से से ही दुनिया भर में फैला है।

मोरिंगा या ड्रमस्टिक ट्री कहा जाने वाला सहजन लम्बी फलियों वाला एक पेड़ है, जो भारत के अलावा और कई देशों में उगाया जाता है। गौरव की बात है कि यह पेड़ मूल रूप से उत्तर भारत का पेड़ है और यहीं से ही यह दुनिया भर में फैला है। हिमाचल प्रदेश में स्थानीय बोली में इसे सूनणा कहा जाता है।

लोग सहजन की फली को सब्जी व अन्य प्रकार के भोजन के रूप में इस्तेमाल करते हैं। सहजन के फूलों का सलाद अथवा चटनी के रूप में भी सेवन किया जाता है। सहजन का पेड़ कहीं भी आसानी से लग जाता है और काफी तेजी से बढ़ता है। भोजन और उपचार के लिए अतिरिक्त सहजन का प्रयोग पानी साफ करने के लिए भी किया जा जाता है। सहजन की पत्ती में घी को गर्म करके प्रसूता स्त्री को दिए जाने का पुराना रिवाज है, इससे स्त्री को दूध की कमीं नहीं होती और जन्म के बाद कमजोरी व थकान का भी निवारण होता है।

विज्ञान प्रमाणित कर चुका है कि इस पेड़ का हर अंग स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है। इसकी पत्तियों में प्रोटीन विटामिन - बी 6, विटामिन सी, विटामिन ए, विटामिन ई, आयरन, मैग्नीशियम

पोटेशियम, जिंक जैसे तत्व पाए जाते हैं। इसकी फली में विटामिन ई प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। सहजन में एंटी ऑक्सिडेंट बायोएक्टिव प्लांट कंपाउंड होते हैं। इसकी पत्तियां प्रोटीन का भी अच्छा स्त्रोत हैं। सहजन में पाए जाने वाला कैल्शियम हाई ब्लड शुगर लेवल को कम करता है। कोलेस्ट्रॉल कम करने की वजह से यह हृदय के लिए अच्छा है। इन्सुलिन रेजिस्टेंस की वजह से होने वाली जलन और सूजन से सहजन राहत दिलाता है। इसकी फली, फूल बीज में भी यह गुण पाए जाते हैं। इसमें एंटी ऑक्सिडेंट तत्व पाए जाते हैं, जिसके चलते लीवर, फेफड़े और गर्भाश्य के कैंसर होने से सुरक्षा करता है। सहजन स्टोन नहीं बनने देता और यह किडनी स्टोन से होने वाले दर्द और जलन कम करता है। इसकी पत्तियों की चाय यूरिन इन्फेक्शन, सर्दी जुकाम के लिए ठीक रहती है। सहजन अनिद्रा हाइपरटेंशन, एनिमिया और आंत का अल्सर भी ठीक करता है। इससे घाव जल्दी भरता है। सहजन पानी साफ करने में भी कारगार है। इसके बीजों को कूटकर पानी में मिलाने से हानिकारक शैवाल और प्रदुषक तत्व अलग हो जाते हैं। सहजन के चारे से दूध देने वाले जानवर अधिक दूध देते है और मांस के लिए पाले जाने वाले मवेशी खूब स्वस्थ रहते हैं।

सहजन का तेल परफ्यूम बनाने में उपयोग किया जाता है। त्वचा के लिए उपयोगी विटामिनों व एंटी ऑक्सिडेंट गुणों से भरपूर यह तेल चेहरे की झुर्रियों और महीन लकीरें दूर करता है। सहजन का तेल सोरायसिस व एक्जिमा रोग में लगाने से लाभ होता है। इसकी कली से मिलने वाले बीज में पाया जाने वाला बेन ऑयल बाल लम्बे और घने रखता है।

सहजन के प्रयोग से व्यक्ति की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। सहजन पेट साफ करता है व कब्ज दूर करता है। इसकी जड़ का पाउडर पेट में पाए जाने वाले राउंड वार्म को खत्म करता है। सहजन में डाईयुरेटिक गुण शरीर की कोशिकाओं में अनावश्यक जल को कम करते हैं और सहजन के एन्टी इन्फलेमेटोरी गुण शरीर की सूजन को कम करते हैं।

राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान लखनऊ

1800 ईस्वी में नवाब सआदत अली खान ने 'सिकंदर बाग' को शाही बाग बनाया। सन 1858 में ब्रिटिश शासन में सरकारी बागवानी उद्यान बना। वर्ष 1953 को वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद ने इसका अधिग्रहण कर लिया।

फूलों की प्रजातियों के विकास में कमाल होली उत्सव के लिए बनाया हर्बल गुलाल

डॉ. सौरभ शर्मा, उपनिदेशक

वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद के अधीन राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान लखनऊ में स्थित एक राष्ट्रीय संस्थान है। वर्तमान में संस्थान के पास लगभग 63 एकड़ भूमि पर वनस्पति उद्यान है, जिसमें संस्थान की प्रयोगशालाएं स्थापित हैं। इसके अतिरिक्त बंथरा में लगभग 260 एकड़ भूमि अनुसंधान के लिए उपलब्ध है। संस्थान के पास एक हर्बेरियम व एक पुस्तकालय है। यह संस्थान भारत की अग्रणी राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं में से एक है। यह संस्थान राष्ट्रीय वनस्पति उद्यान के रूप में उत्तर प्रदेश सरकार के अंतर्गत कार्यरत था, जिसे 13 अप्रैल, 1953 को वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद ने अधिग्रहित कर लिया। तब से लेकर यह संस्थान वनस्पति विज्ञान के क्षेत्र में परम्परागत अनुसंधान करता आ रहा है। समय के साथ इसमें नए-नए विषयों पर अनुसंधान कार्य किए गए, जिनमें पर्यावरण संबंधित व आनुवांशिक अध्ययन प्रमुख हैं। अनुसंधान के बढ़ते महत्व व बदलते स्वरूप को ध्यान में रखकर 25 अक्टूबर, 1978 को इसका नाम बदलकर राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान किया गया। वर्तमान में इस

संस्थान की छवि अंतरराष्ट्रीय स्तर के संस्थान के रूप में है, जो प्रतिवर्ष अनेक उत्पाद विकसित कर रहा है। यहां के विकसित उत्पादों को विभिन्न उद्योगिक घरानों की ओर से व्यावसायिक स्तर पर उत्पादित किया जा रहा है। संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित विभिन्न पुष्प प्रजातियां व गुलाल आज घर-घर में लोकप्रिय हैं। राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान का इतिहास बेहद पुराना है। यह संस्थान 'सिकंदर बाग' में स्थित है।1800 ईस्वी के आसपास नवाब सआदत अली खान ने सिकंदर बाग को शाही बाग के रूप में स्थापित किया था।1858 में ब्रिटिश शासन की स्थापना के बाद सिकंदर बाग के आसपास की कुछ अतिरिक्त भूमि को जोड़कर इसे आधिकारिक रूप से सरकारी बागवानी उद्यान का नाम दिया गया और बागवानी गतिविधियों का मुख्य केंद्र बन गया। आजादी के बाद यह संस्थान उत्तर प्रदेश की सरकार के अधीन काम करता रहा। वर्ष1953 को वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद ने इसका अधिग्रहण कर लिया। तब से यह संस्थान वनस्पति अनुसंधान प्रयोगशाला के रूप में कार्य कर रहा है। अक्टूबर 1978 में इसका नाम बदलकर राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान कर दिया गया। संस्थान देशी और विदेशी पौधों की खोज, परिचय, प्रसार, संरक्षण, आनुवंशिक उन्नयन और उनके उपयोग को लेकर अनुसंधान कार्य करता है। संस्थान के नाम कई उपलब्धियां हैं। वर्तमान में सरोज के बारिक संस्थान के निदेशक हैं।

अक्तूबर 2012 में संस्थान की डायमंड जुबली पर राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम थे मुख्यातिथि

विकसित प्रौद्योगिकियां

राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान ने कई प्रौद्योगिकियां विकसित की हैं, जिनमें हर्बल पोषकीय उत्पाद (हर्बल नबीरा-सौफ), हर्बल बियर का उत्पादन, हर्बल लिपिस्टिक लवस्टिक, अल्सर नियंत्रक, कफ नियंत्रक, गले को अच्छे लगने वाले हर्बल उत्पाद, जले व कटे के उपचार के लिए उत्पाद, सिगरेट मुक्ति के लिए तम्बाकूनाशक हर्बल उत्पाद न्यूट्री- जैम, जैव उर्वरक, जैव नियंत्रक एवं जैव कीटनाशक, ट्रांसजीनिक बीटी कपास व हर्बल गुलाल बनाने की प्रौद्योगिकियां शामिल हैं। इस संस्थान ने सामाजिक उत्थान के लिए पुष्प निर्जलीकरण तकनीक, उच्च गुणवत्ता वाली व कम लागत वाली नर्सरी प्रौद्योगिकी, सब्जियों, औषधीय पौधों व अन्य आर्थिक रूप से उत्तम आर्गेनिक खेती से संबंधित तकनीक, फूलों के उत्पादन संबंधित प्रौद्योगिकी, अफीम (पॉपी) व रामदाना की अधिक उत्पादन प्राप्त करने वाली किस्मों की कृषि प्रौद्योगिकी विकसित करने में अहम भूमिका अदा की है।

राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान में होने वाले अनुसंधान

पारजीनी पौधों का निर्माण, पौधों से संबंधित आणविक अध्ययन, फलों के पकने से संबंधित अध्ययन, विषाणुओं की पहचान, तकनीक से फसलों में फेरबदल, आनुवांशिक अभियांत्रिकी से कीटों व रोगों के प्रति प्रतिरोधी नई किस्मों का उन्नयन, सूक्ष्म जीवियों का निष्कर्षण, ग्रीन गैस उत्सर्जन का वृक्षों पर प्रभाव, जैव विविधता, जैव उर्वरकों व वृक्षों में प्रयुक्त सूक्ष्मजीवियों के अन्तरंग संबंधों का अध्ययन, विलुप्त हो रहे वृक्षों का सूक्ष्म प्रवर्धन, जैविक ईंधन तथा जैव नियन्त्रक, पर्यावरण लेखा प्रबन्धन, अफ़ीम की प्रजातियों का परम्परागत तथा आधुनिक प्रजनन तकनीकों से निर्माण, अधिक प्रोटीन वाले चौलाई तथा अलसी की प्रजातियों का आनुवांशिक उन्नयन विधियों से विकास, आयुर्वेदिक व हर्बल औषधियों का मानकीकरण एवं जांच, नए उत्पादों के विकास के लिए अनुसंधान, हर्बल उत्पादों का पायलट स्तर पर उत्पादन, वायरस जनित रोगों, यकृतदोष, डायबिटीज के नियन्त्रण व उपचार के लिए औषधीय पादपों और उनके सक्रिय घटकों का अध्ययन, तकनीकी एवं उत्पाद विकास, वाष्पीय तेलों, बीज, गोंद, रेज़िन, लिपिड, वसा व अन्य तेलों का पोषकता के लिए अध्ययन तथा हर्बल रंगों का सौन्दर्य प्रसाधनों, कपड़ों व खाद्यान्न के लिए विकास, विदेशी एवं स्थानीय पौधों का संग्रहण, संरक्षण, अध्ययन एवं सत्यापन सहित विलुप्त हो रही प्रजातियों के प्रजनन, संरक्षण, मूल संवर्धन, संरचना एवं विकास संबंधित अनुसंधान का कार्य राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान कर रहा है।

फूलों की कई नई किस्मों का विकास

राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान ने अमैरिलिस, एन्टीराइनम, बागेनवीलिया, गुलदाउदी, डेलिया, ग्लैडिओलस, गेंदा, गुलाब व रजनीगंधा पौधों की नई किस्मों का विकास किया गया है। नेत्रहीनों तथा बधिरों के लिए उद्यान का विकास, महिलाओं के लिए पोषण उद्यान का विकास, भारत के विभिन्न प्रांतों की जैव विविधता का अध्ययन एवं संरक्षण, जैव विविधता का आणविक सत्यापन तथा रोग की समयबद्ध सूचना का कार्य यह संस्थान कर रहा है। संस्थान के बंथरा अनुसंधान केन्द्र पर प्राकृतिक रंजक, औषधीय तथा सुगन्ध पौधों का विकास, केले व टमाटर की शीघ्र न पकने वाली प्रजातियों का आणविक तकनीक से विकास, कपास व अन्य फसलों के ट्रांसजीनी पौधों का निर्माण, वनस्पति जनित इन्जेक्शन, अफीम की नई प्रजातियों का विकास, चौलाई की अधिक प्रोटीनयुक्त किस्मों का विकास, जैव नियंत्रकों का विकास हर्बल औषधियों का मानकीकरण एवं विकास कार्य किया जा रहा है। इसके अलावा राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान पौधों का सत्यापन, आर्थिक रूप से उत्तम पौधों का उत्पादन एवं विकास, पौधों में जैव रसायनों का अध्ययन, हर्बल औषधियों के सत्यापन की सुविधा, स्वचलित डीएनए सीक्वेन्सर, पर्यावरण सुधार एवं रख- रखाव के लिए महिलाओं व बच्चों के कार्यक्रम जैसी कई अन्य तकनीकी सेवाएं प्रदान कर रहा है।

वनस्पति उद्यान में सैंकड़ों प्रजातियों के फूल, पुस्कालय में हजारों बहुमूल्य पुस्तकें

राष्ट्रीय वनस्पति अनुसंधान संस्थान के वनस्पति उद्यान में वृक्षों की 400 प्रजातियां, टेरिडोफाइटा की 65 प्रजातियां, गृह सज्जा में प्रयोग होने वाले पौधों की 500 प्रजातियां, कैक्टस की 350 प्रजातियां, पाम की 70 प्रजातियां, औषधीय पौधों की 300 प्रजातियां, साइकेड की 45 प्रजातियां, बोगेनवीलिया की 200 प्रजातियां, गुलदाऊदी की 250 प्रजातियां तथा चौलाई की 250 किस्में उपलब्ध हैं। वनस्पति उद्यान विभाग उद्यमियों को पुष्प कृषि, पुष्प निर्जलीकरण व भू दृश्यावली निर्माण इत्यादि के लिए प्रशिक्षण प्रदान करता है। संस्थान पुष्प व विज्ञान प्रदर्शनियों का आयोजन करता है और पुष्पीय व गृहसज्जा के पौधों के बीजों एवं पौधों की बिक्री करता है। संस्थान त्रैमासिक संकलन एवं प्रकाशन, वार्षिक प्रतिवेदन का संकलन, संस्थान द्वारा प्रकाशित वैज्ञानिक प्रकाशनों का सम्पादन, प्रकाशन तथा उनकी बिक्री के लिए प्रबंधन करता है। संस्थान के पुस्तकालय में लगभग 56,500 बहुमूल्य पुस्तकों एवं जरनल का संकलन उपलब्ध है। संस्थान अपनी वेबसाइट के संचालन के अलावा अपने वैज्ञानिकों के लिए इंटरनेट सेवा का प्रबंधन करता है। संस्थान द्वारा विकसित तकनीकों का उद्यमियों को स्थानान्तरण, स्टूडेंट्स को प्रशिक्षण का समन्वयन, बौद्धिक सम्पदा अधिकारों का समन्वयन, संस्थान द्वारा विकसित तकनीकी का जन-सम्प्रेषण तथा प्रदर्शनियों के लिए पांच केंद्रों का संचालन यह संस्थान करता है।

जड़ी- बूटियों की खेती में किसानों को प्रोत्साहित कर रहा गोरखपुर का शबला सेवा संस्थान

औषधीय कृषिकरण की ओर मुड़ा युवा पत्रकार, दो हजार किसानों को साथ जोड़ा

आरसीएफसी नॉर्थ फीचर सर्विस

उत्तर प्रदेश के गोरखपुर के एक युवा किसान अविनाश कुमार औषधीय पौधों की खेती से हजारों किसानों की आर्थिकी को मजबूत करने में जुटे हुए हैं। उन्होंने वर्ष 2016 में गोरखपुर में शबला सेवा संस्थान की स्थापना कर औषधीय पौधों की खेती करने वाले किसानों को संस्था के साथ जोड़ना शुरू किया। आज संस्था के साथ प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष तौर पर दो हजार किसान जुड़ कर औषधीय पौधों की खेती कर रहे है। यह संस्था किसानों को औषधीय पौधों की खेती के प्रति जागरूक करती है, उन्हें ट्रेनिंग देती है, बीज व पौध का प्रबंध करवाती है और जब उनका उत्पाद तैयार हो जाता है तो उनको बाजार मुहैया करवाती है। संस्था की ओर से औषधीय कृषिकरण से सम्बन्धित सरकारी योजनाओं की जानकारी भी किसानों तक पहुंचाई जाती है। अब संस्था खुद का एक प्रोसेसिंग यूनिट लगाकर उत्पादों में वैल्यू एडिशन के साथ किसानों के उत्पाद को घर के पास खरीददार उपलब्ध करवाने की योजनाओं में जुटी है। इस संस्था के साथ बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ के दो हजार किसान जुड़े हुए हैं। अविनाश कुमार कई क्षेत्रों का भ्रमण करके औषधीय पौधों की खेती की संभावनाएं तलाश करते हैं और किसानों को औषधीय कृषिकरण के लिए प्रेरित और प्रशिक्षित करते हैं। उनके प्रयासों के चलते किसान परम्परागत खेती को छोड़ औषधीय पौधों की खेती की ओर मुड़ने लगे हैं और उनकी आर्थिकी में भी सुधार हो रहा है। संस्था की ओर से सीमांत किसानों को साथ जोड़ कर औषधीय कृषिकरण से उनकी कृषि आय को बढ़ाने के प्रयास हो रहे हैं। अविनाश कुमार कहते हैं कि संस्था का अगला कदम अपने उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय बाजार में पहुंचाना है। निर्यात से सम्बंधित तमाम औपचारिकताएं पूरी हो चुकी हैं और इसी साल से यहां के उत्पादों को विदेश में बेचने की तैयारी है। ऑस्ट्रेलिया से इस संस्था के उत्पादों को खरीदने का ऑफर है। अविनाश कुमार को मलाल है कि एक तरफ तो औषधीय कृषिकरण को लेकर सरकारें अनुदान दे रहीं हैं, लेकिन दूसरी ओर औषधियों का न्यूनतम मूल्य घोषित न होने के कारण औषधीय कृषिकरण में जुटे किसान को उनके उत्पाद का उचित दाम नहीं मिल पा रहा है।

बिहार के अविनाश उत्तर प्रदेश में लिख रहे सफलता की कहानी

अर्जुन के पेड़ से मिली सीख

अविनाश कुमार मूल रूप से बिहार के मधुबनी जिले के हैं, लेकिन पिता की नौकरी के कारण उनका पालन- पोषण तथा शिक्षा गोरखपुर में हुई। अविनाश कुमार ने एमए करने के साथ-साथ पत्रकारिता में डिप्लोमा किया। कुछ अलग करने की चाहत ने उन्हें औषधीय कृषिकरण की ओर मोड़ दिया। वर्ष 2013 में उन्होंने अपनी जमीन पर अर्जुन के पौधे लगाए। जब उन्होंने अर्जुन के पौधे लगाए थे, उस वक्त उन्हें अर्जुन के औषधीय गुणों के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। अर्जुन एक बहुत उपयोगी औषधि है, जब इस बारे में उन्हें पता चला तो उन्होंने औषधीय पौधों की खेती करने की पहल की।

खेती से पहले अध्ययन

अविनाश कुमार ने औषधीय कृषिकरण की बरीकियों को जानने के लिए देश के कई कृषि विश्वविद्यालयों और अन्य कृषि संस्थानों का भ्रमण किया और वहां औषधीय पौधों की खेती पर हो रहे कामों का गहन अध्ययन किया। बेंगलुरु स्थित इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ हॉर्टिकल्चर रिसर्च के वैज्ञानिकों ने उन्हें इस दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित किया।

ब्राह्मी की खेती से शुरूआत

अविनाश कुमार ने औषधीय कृषिकरण की शुरुआत दो एकड़ जमीन में ब्राह्मी की खेती के साथ की। ब्राह्मी हिमालय के तराई की जड़ी- बूटी है, और मधुबनी का वातावरण इसकी खेती के लिए बहुत ही अच्छा है। दो एकड़ में ब्राह्मी लगाने की लागत तीन हजार रूपए आई। ब्राह्मी एक ऐसी फसल है जिसे कम देखरेख की जरूरत होती है। चार महीने बाद अविनाश के खेत में जब फसल तैयार हुई तो सात क्विंटल ब्राह्मी का उत्पादन हुआ, जिसे उसने तीन हजार रुपए प्रति क्विंटल के हिसाब से बेच दिया। चार महीने के अंदर अविनाश कुमार को 18 हजार रुपये की आमदनी हुई।

पहली फसल ने खोल दी आंखें

पहली ही फसल ने अविनाश कुमार की आंखें खोल दीं। उसे यह बात समझ आ गई कि इतनी आमदनी परंपरागत खेती से तो कतई नहीं हो सकती। अविनाश कुमार को औषधीय कृषिकरण की नई राह मिल गई। उन्होंने अपने खेतों में तुलसी, आंवला, कौंच, ब्राह्मी, बच और शालपर्णी की खेती करनी शुरू कर दी। अविनाश कुमार को देखते हुए गांव के कई और किसान भी उनसे जुड़ते गए और उनके साथ औषधीय पौधों की खेती करने लगे।

किसान बढ़े तो बनाई संस्था

औषधीय पौधों की खेती की ओर किसानों के बढ़ते रूझान को देखते हुए अविनाश कुमार ने संस्था का गठन कर उनको प्रशिक्षित करना और उनके कच्चे माल के लिए बाजार का प्रबंध करना शुरू कर दिया। संस्था के साथ बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ के दो हजार किसान जुड़े हुए हैं। संस्था प्रोसेसिंग व एक्सपोर्ट की तैयारियों में जुटी हुई है।

करोड़ों के टर्नओवर वाला दो भाईयों को स्टार्टअप 'एग्रीप्लास्ट'

इजरायली टेक्नॉलिजी से करते है विदेशों में डिमांड वाले फूलों- सब्जियों की खेती

साल 2011 में लखनऊ के देवां रोड पर 3 एकड़ किराये की जमीन पर 'एग्रीप्लास्ट' के नाम से एग्रो स्टार्टअप की शुरूआत हुई। प्रति एकड़ एक लाख रुपए सालाना किराया तय हुआ। यह अपनी तरह का पहला स्टार्टअप था, जिसे एमबीए और इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर आकर्षक सैलरी पैकेज वाले जॉब ऑफर को ठुकराने वाले दो भाईयों अभिषेक भट्ट और शशांक भट्ट ने शुरू किया। हालांकि शुरू में किसी ने कल्पना नहीं की थी कि लखनऊ के दो भाईयों का यह स्टार्टअप जल्द ही करोड़ों के सलाना टर्नओवर वाला बन जाएगा। तकनीक के दम पर कुछ सालों की मेहनत के बाद ही 'एग्रीप्लास्ट' दस करोड़ का टर्नओवर पार कर गया। 'एग्रीप्लास्ट' फार्म में इजराइली टेक्नॉलिजी से फूल और सब्जियां उगाई जाती हैं, विदेशों में जिनकी डिमांड होती है। साल 2017-18 में एग्रीप्लास्ट का टर्नओवर 11 करोड़ का रहा।

शिमला मिर्च की खेती

'एग्रीप्लास्ट' शुरूआत शिमला मिर्च की खेती से हुई। उसके बाद अन्य सब्जियां उगाने लगे। छोटे व्यापारी फार्म में सब्जियां खरीदने आने लगे। तीन साल तक शिमला मिर्च की खेती की। पहले साल तीन लाख का शुद्ध लाभ हुआ तो दूसरे साल सात लाख और तीसरे साल 12 लाख का लाभ हुआ। लाभ से मिले पैसे से और जमीनें किराए पर लीं गईं और उन पर भी खेती शुरू कर दी।

बंगलुरू, महाराष्ट्र से स्टडी

अभिषेक भट्ट बताते हैं कि साल 2011 में उन्होंने मैकेनिकल इंजीनियरिंग की डिग्री हासिल की, जबकि उनके भाई ने एमबीए किया। पासआउट होते ही दोनों भाईयों को अच्छे पैकेज की जॉब ऑफर हुई लेकिन वे सिर्फ जॉब के भरोसे नहीं रहना चाहते थे। बंगलुरू में उनके अंकल किराए पर जमीन लेकर शिमला मिर्च की खेती करते थे, जिससे उनको लाखों की इनकम हो रही थी। वहीं से उन्हें खेती करने का आइडिया आया और दोनों भाइयों ने एग्रीकल्चर बिजनेस की बारीकियां सीखीं। इसके बाद महाराष्ट्र गए और वहां के किसानों के खेती करने का तरीका और उससे होने वाले बिजनेस को समझा। अभिषेक ने टेक्निकल काम और खेती पर फोकस किया और शशांक ने उसकी ब्रांडिग और मार्केटिंग का काम संभाला। विदेशी बाजार में भारी डिमांड वाली सब्जियों और फूलों की खेती की दिशा में कदम बढ़ाए और स्टार्टअप को नए पंख लग गए। चार साल में ही 'एग्रीप्लास्ट' का टर्नओवर करोड़ का आंकड़ा पार कर गया।

ग्लेडियोलस के फूलों से आई अंकित के जीवन में बहार

उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले के अंकित कुमार ने प्लांट ब्रिडिंग में एमएससी की है। एग्री क्लिनिक एंड एग्री बिजनेस का कोर्स करने के बाद अंकित ने कृषि के क्षेत्र में उतरने की पहल की। मेरठ में गन्ने की खेती सबसे ज्यादा होती है, लेकिन इसमें पेमेंट की दिक्कत ज्यादा है। अंकित कुछ ऐसा उगाना चाहते थे, जिसे बेचकर हाथों-हाथ पैसे मिल सके। ग्लेडियोलस एक वेलकम ट्रेडमार्क के रूप में फेमस फूल है। ग्लेडियोलस के फूलों का उपयोग साज-सज्जा में किया जाता है, इसलिए अंकित ने ग्लेडियोलस की खेती शुरू की। खेती की शुरूआत दो एकड़ से हुई। जुलाई से अगस्त के दौरान ग्लेडियोलस की खेती होती है। इसकी चार किस्में अमेरिकन ब्यूटी, समर सनसाइन, कैंडी मैन और व्हाइट प्रॉस्पेरिटी शामिल है। अंकित को शुरूआत में सीड्स मिलने में परेशानी हुई। ग्लेडियोलस की खेती से अंकित सालाना दस लाख रुपए का कारोबार कर रहे हैं। फूलों को बेच कर पैसा भी हाथों हाथ मिल रहा है।

कृषि संकट के दौर में जैविक व मिश्रित खेती के दम पर किसानों की तकदीर बदलने वाले चेहरे

मिट्टी से सोना पैदा करने वाले पद्मश्री से सम्मानित उत्तर प्रदेश के दो किसान

भरत भूषण त्यागी जैविक सब्जियों संग उगाते फल, प्रोसेस कर बेचते उत्पाद

कुछ लोगों को मिट्टी से सोना पैदा करने का हुनर आता है। ऐसे में जबकि किसानों की बदहाली के किस्से अखबारों की सुर्खियां बन रहे हैं, उत्तर प्रदेश के एक किसान ने कृषि के क्षेत्र में कुछ ऐसा कर दिखाया है कि उनके काम की सारे देश में चर्चा हो रही है। उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर के बीटा गांव में रहने वाले भरत भूषण त्यागी ने जैविक व मिश्रित खेती से कामयाबी की प्रेरककथा लिख कर अपने गांव को पूरे देश में एक अलग पहचान दिलाई है। त्यागी ने साल 1975 में स्नातक करने के बाद पारंपरिक खेती शुरू की, लेकिन इसमें लागत ज्यादा और मुनाफा कम होने के कारण यह उन्हें घाटे का सौदा लगा। उन्होंने कृषि वैज्ञानिकों की सलाह से अपने खेतों में जैविक खेती की शुरूआत की। वे अपने खेत में एक समय में अनाज और सब्जियों के साथ फलों का उत्पादन भी करने लगे। इसी के साथ उन्होंने अपने उत्पादों की वैल्यू एडिशन के लिए उत्पादों की प्रोसेसिंग का काम भी शुरू कर दिया। उनका यह आइडिया हिट रहा और उनके इस मॉडल का कई किसान अनुसरण करने लगे। त्यागी के फार्म हाउस में अलसी, हल्दी, मक्का, गन्ना, गेहूं, चना व मेथी की खेती जैविक विधि से की जा रही है। जैविक और मिश्रित खेती को लाभकारी बनाने वाले यह किसान प्रति एकड़ तीन से चार लाख रुपए कमा रहे हैं। त्यागी किसानों को जैविक खेती के लिए प्रेरित करने के लिए प्रशिक्षण देते हैं और खेती के गुर भी सिखाते हैं। वह कहते हैं कि जैविक खेती से किसान तभी लाभ अर्जित कर सकते हैं, जब वे अपने उत्पाद को प्रोसेस कर बेचें। उत्पाद का प्रमाणीकरण भी जरूरी है। जैविक व औषधीय कृषिकरण किसानों की दशा और दिशा बदल सकते हैं।

मिट्टी से सोना उगाने वाले त्यागी को पद्मश्री

जैविक खेती के दम पर ग्रामीण आर्थिकी की नई इबारत लिखने वाले भरत भूषण त्यागी को कृषि के क्षेत्र में किए गए उनके शानदार काम के लिए इस साल राष्ट्रपति रामनाथ कोविद ने देश के प्रतिष्ठित पद्मश्री सम्मान से सम्मानित किया है। यह पहला मौका नहीं है कि उनको खेतों में सोना पैदा करने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया गया हो, इससे पहले भी उन्हें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सम्मानित कर चुके हैं। पद्मश्री मिलने के बाद वह किसानों के आइकन बन गए हैं। जिला प्रशासन ने भारत भूषण त्यागी को इस बार लोकसभा चुनाव में मतदाता जागरूक अभियान का ब्रांड एंबेसडर बनाया है। गोविंद बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय उत्तराखंड के 32वें दीक्षांत समारोह में उत्तराखंड की राज्यपाल बेबी रानी मौर्य व वाइस चांसलर डॉ. तेज प्रताप ने उन्हें डॉ. ऑफ सांइस की उपाधि देकर सम्मानित किया है। विभिन्न राज्यों की कई संस्थाएं उन्हें सम्मानित कर चुकी हैं।

150 एकड़ खेती, 50 हजार किसान जोड़े 15 हजार को रोजगार दे रहे रामशरण

उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जनपद के हरख ब्लॉक के दौलतपुर गांव के रहने वाले रामशरण वर्मा को इस साल देश के प्रतिष्ठित पद्मश्री सम्मान से सम्मानित किया गया है। जब किसान खेती छोड़कर अधिक लाभ के लोभ में शहरों की तरफ पलायन कर रहे थे, उस समय हाईस्कूल फेल रामशरण वर्मा खेतों से हरा सोना पैदा करने का सपना देख रहे थे। उन्होंने वर्ष 1986 में करीब 6 एकड़ से खेती की शुरूआत की। चार साल बाद वर्ष 1990 में उन्होंने हाईटेक खेती शुरू की। टमाटर, केला, मेंथा और आलू की खेती में रामशरण ने नई क्रांति लाने का काम किया। उन्होंने विभिन्न प्रयोग कर कम लागत में ज्यादा उत्पादन का तरीका खोजा। अब वह 150 एकड़ जमीन पर खेती कर रहे हैं। उनके साथ क्षेत्र के 50 हजार किसान उनके साथ जुड़े हैं और 15 हजार लोगों को रोजगार दे रहे हैं। आज उनका टर्नओवर करोड़ों में है। रामशरण ने अपने छोटे से गांव में रहकर कृषि के क्षेत्र में जो कामयाबी हासिल की है, उसका आज न केवल देश कायल है, बल्कि विदेशी भी उनके हुनर को देखने उनके गांव पहुंचने लगे है। उत्तर प्रदेश के कई जिलों में हजारों किसान रामशरण मॉडल पर खेती कर सफलता की कहानियां लिख रहे हैं। हाईटेक खेती सिखा कर उन्होंने प्रदेश में पांच हजार से अधिक मजदूरों को प्रगतिशील किसान बना दिया है। कृषि के क्षेत्र में एक साधारण किसान के बेहतरीन प्रयोगों को देखते हुए इस साल राष्ट्रपति रामनाथ कोविद ने उन्हें देश के प्रतिष्ठित पद्मश्री सम्मान से सम्मानित किया है।

हाईटेक एग्रोफार्म, करोड़ों में टर्नओवर

एक वह भी वक्त था जब कड़ी मेहनत के बावजूद रामशरण के परिवार के लोग अपने खेतों से साल भर के लिए अनाज पैदा नहीं कर पाते थे, आज उन्हीं खेतों से करोड़ों की आय हो रही है। रामशरण ने हाईटेक खेती चमत्कार कर दिखाया है। यह उनके प्रयासों का ही परिणाम है कि आज बाराबंकी जिले का दौलतपुर गांव तो पूरी तरह हाईटेक खेती ही कर रहा है। गांव के मजदूरी करने वाले लोग अब जमीनें खरीदने में लगे हैं। रामशरण के हाईटेक खेती के तरीके को आदर्श मान केंद्र सरकार ने उन्हें वर्ष 2007 में जगजीवन राम राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया। इसके बाद वह हाईटेक खेती गुरू बन गए। वह किसानों के खेतों में जाकर तकनीक का प्रयोग सिखाते हैं। उनकी पहल के चलते जिले के लगभग 125 गांवों के हजारों किसान अब हाईटेक खेती कर रहे हैं। रामशरण ने उत्तर प्रदेश के हर जिला के किसानों को हाईटेक खेती के गुर सिखाए हैं। उत्तर प्रदेश में पांच हजार किसान उनके सिखाए रास्ते पर चल कर खेती से अपनी आर्थिकी को मजबूत कर रहे हैं। इस साल पद्मश्री मिलने के बाद रामशरण का कृषि के क्षेत्र में किया गया काम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्च में आ गया है।

हरियाली सीड्स

डॉ. प्रभाकर राव ने 142 संकटग्रस्त प्रजातियों के बीजों को भारतीय जलवायु के अनुकूल करने में सफलता पाई और इन्हीं बीजों की मदद से उन्होंने 'हरियाली सीड्स' नाम की कंपनी की शुरूआत की।

हरियाली सीड्स टीम : वरूण प्रभाकर सेल्ज, अर्जुन पुलुकोलु बिजनेस डपलपमेंट, अक्षय सरीन मार्केटिंग व अदिति सरीन डिजायन का काम देखते हैं।

इंटरनेशनल सीड सेवर्स एक्सचेंज से जुड़ कर दुर्लभ बीजों के वजूद को बचाने में जुटे बंगलुरू के डॉ. प्रभाकर राव

हरियाली सीड्स : सब्जियों के दुर्लभ बीजों को बचाने की अनूठी पहल

आरसीएफसी नॉर्थ फीचर सर्विस

बंगलुरू के डॉ. प्रभाकर राव दुनिया भर के दुर्लभ बीजों के वजूद को बचाने में जुटे हैं। वे 'हरियाली सीड्स' के नाम से ऐसे दुर्लभ बीजों को किसानों तक पहुंचाने में जुटे हुए हैं। वनस्पति प्रजनन और आनुवांशिकी में पीएचडी डॉ. राव ने दशकों तक दुनिया भर के कई देशों में घूम कर सब्जियों के संकटग्रस्त एवं दुर्लभ किस्म के बीजों को एकत्रित किया। सन 2011 में सेवानिवृति के बाद डॉ. राव दुबई से भारत लौटे और बंगलुरू में अढ़ाई एकड़ के फार्म की नींव रखी। उनके इस फार्म में गोल खीरा दोसाकाई, जापान में पाया जाने वाला बैंगनी रंग का कामो, यूरोप में पाई जाने वाली जड़ी- बूटी, मीठी गोल मिर्च, गुलाबी भिंडी, नीली मूंगफली, सहित लुप्तप्राय हो चुके 560 सब्जियों व वनस्पतियों के बीजों का भंडार उपलब्ध है। इस फार्म में मौजूद वनस्पतियों में से आधिकांश अब भारत में उपलब्ध नहीं हैं। डॉ. राव ने 142 संकटग्रस्त प्रजातियों के बीजों को भारतीय जलवायु के अनुकूल करने में सफलता पाई और इन बीजों की मदद से उन्होंने 'हरियाली सीड्स' नाम की कंपनी की शुरूआत की। पांच लोगों की टीम हरियाली सीड्स को किसानों तक पहुंचाती है। डॉ. राव के अलावा उनका बेटा वरूण प्रभाकर सेल्ज, अर्जुन पुलुकोलु बिजनेस डपलपमेंट, अक्षय सरीन मार्केटिंग व अदिति सरीन डिजायन का काम देखते हैं। 'हरियाली सीड्स' दुनिया भर से विलुप्तप्राय प्रजातियों के बीज इकट्ठा करके उन्हें किसानों को उपलब्ध कराता है। हरियाली में उपलब्ध बीजों में से अधिकांश विदेशी नस्ल के हैं। आज डॉ. राव अपने फार्म पर आने वाले लोगों को बीजों के बारे में बताते हैं और इन बीजों की खेती की तकनीक से उन्हें परिचित करवाते हैं। वे किसानों को वैदिक फार्मिंग के गुर भी सिखाते हैं। डॉ. राव कहते हैं कि देसी बीजों की खेती कर उसे सीधे किसानों तक पहुंचाना ही अब लक्ष्य है, ताकि आने वाली पीढ़ियों को हर तरह के पौधे देखने को मिलें।

डॉ राव से सीधे बीज खरीदने के लिए farmer@hariyaleeseeds.com पर उन्हें सम्पर्क कर सकते हैं।

दुनिया भर से विलुप्तप्राय बीजों को इकट्ठा कर किसानों तक पहुंचाना

डॉ. प्रभाकर राव ने अंतरराष्ट्रीय संस्था इंटरनेशनल सीड सेवर्स एक्सचेंज के साथ मिलकर बीजों पर आए संकट से निपटने के मुहिम शुरू की है। इंटरनेशनल सीड सेवर्स एक्सचेंज दुनिया भर के ऐसे लोगों का एक स्वैच्छिक निकाय है, जो दुनिया भर के विभिन्न हिस्सों से लुप्तप्राय सब्जियों के बीज इकट्ठा करता है और आपस में साझा करता है। डॉ. राव इस संस्था के साथ मिल कर देसी बीज उपलब्ध करवाने के साथ बंगलुरू स्थित अपने फार्म में किसानों को वैदिक खेती करने के गुर भी सिखाते हैं।

142 संकटग्रस्त प्रजातियों के बीज भारतीय जलवायु में उगाने में सफलता

दुनिया भर से जुटाए बीज

डॉ. प्रभाकर राव कहते हैं कि दुनिया में कुछ ही जगहें ऐसी हैं, जहां से इस तरह के पुराने बीज प्राप्त किए सकते हैं। उनके मुताबिक मध्य एशिया, दक्षिण अमेरिका, मलेशिया, दक्षिणपूर्वी एशियाई देश और चीन के कुछ दूरस्थ इलाकों के कुछ किसानों के पास पुराने बीज उपलब्ध होते है। इन जगहों पर पहुंचना और पुरानी पीढ़ी के उन किसानों को खोजना होता है, जिनके पास विशिष्ट प्रकार के बीज हों। डॉ. राव ने भारत लौटने के बाद दुनिया भर के कई देशों से अपने पास जमा किए गए बीजों को भारतीय परिस्थितियों में उगाकर उन बीजों का परीक्षण करना शुरू किया, ताकि यह पता चल सके कि इकट्ठा किए गए बीजों में से कितने बीज भारतीय परिस्थितियों में खेती के अनुकूल हैं। उन्होंने अपने फार्म में 142 संकटग्रस्त प्रजातियों के बीजों को भारतीय जलवायु के अनुकूल पैदा करने में सफलता पाई। इन्हीं बीजों की मदद से उन्होंने 'हरियाली सीड्स' कंपनी की शुरूआत की। वे कहते हैं कि पुराने व दुर्लभ बीज देश भर के किसानों तक पहुंच सकें, यहीं उनका लक्ष्य है।

किसान खुद तैयार कर सकता है बीज

डॉ. राव बताते हैं कि 'हरियाली सीड्स' में उपलब्ध बीजों में से अधिकांश बीज विदेशी नस्ल के हैं और आमतौर पर उत्पाद के तौर पर ये बाजार में उपलब्ध नहीं हैं। डॉ. राव ने शुरूआत के कुछ साल तक बीजों से स्वयं उत्पादन कर उनका स्टॉक अपने पास बढ़ाया ताकि वे इन बीजों को किसानों को बेच सके। प्रयोग के लिए उन्होंने कुछ किसानों को ये बीज मुफ्त उपलब्ध करवाए। वे कहते हैं कि अगर इन बीजों को किचन गार्डन में भी लगाया जा सके तो विलुप्त होने के खतरे से बीजों को बचाया जा सकता है। डॉ. राव कहते हैं कि पारंपरिक बीजों का संरक्षण कर उन्हें किसानों तक सीधे पहुंचाना ही 'हरियाली सीड्स' का लक्ष्य है। वे कहते हैं कि 'हरियाली सीड्स' से किसी भी किसान को बीज एक बार ही खरीदना होता है, क्योंकि अगली बार के लिए बीज का उत्पादन किसान स्वयं कर सकता है। डॉ. राव बताते हैं कि देशी प्रजातियों की वनस्पतियां हमारे जीवन में अहम भूमिका निभा सकती हैं। ये प्रजातियां जलवायु परिवर्तन का मुकाबला कर सकती हैं, सूखे के हालात, रोग और कीटों से स्वयं लड़ने में सक्षम हैं। सबसे बढ़कर बीजों की ये प्रजाति जैविक खेती पद्धति के अनुकूल हैं। इनको लेकर इनसे संकरित बीज या आनुवांशिक रूप से प्रसंस्कृत बीज तैयार करने की बजाए बुद्धिमता यह होगी कि हम इनकी खेती फिर से शुरू करें।

NATIONAL MEDICINAL PLANTS BOARD
Plants For Health & Prosperity

E-Charak
e-Channel for Herbs, Aromatic, Raw Material & Knowledge

जड़ी-बूटी बाजार

हर माह प्रकाशित/प्रसारित

www.rcfcnorth.in ■ कुल पृष्ठ : 8 ■ वर्ष 2, अंक 6 ■ 1 जून से 30 जून 2019

क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तर भारत, आयुष मंत्रालय भारत सरकार, पिन-175015, दूरभाष-01908-222970 (टेलीफैक्स), 9418010624 (मोबाइल) email:rcfcnorth@gmail.com

महिलाओं को वाइल्ड कलेक्शन ट्रेनिंग व नर्सरी तकनीक के लिए कोर्स करवाएगा नेशनल मेडिसनल प्लांट बोर्ड

देश की औषधीय सम्पदा की बागडोर महिलाओं के हाथ सौंपने की वकालत

आरसीएफसी उत्तरी भारत, जोगेंद्रनगर फीचर

नेशनल मेडिसनल प्लांट बोर्ड की कार्यकारी अधिकारी डॉ. तनुजा नेसरी ने कहा कि अगर औषधीय वनस्पति की चाबी महिलाओं के हाथ दी जाए तो जड़ी- बूटियों का उत्पादन कई गुणा बढ़ सकता है। औषधीय पौधों की खेती से लेकर हॉर्वेस्टिंग तक का सारा काम नारी शक्ति के हाथ में हो तो इस क्षेत्र में चमत्कार किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि नेशनल मेडिसनल प्लांट बोर्ड ने वाइल्ड कलेक्शन ट्रेनिंग व नर्सरी तकनीक के लिए कोर्स तैयार किया है। इस कोर्स के तहत सबसे पहले प्रशिक्षक ट्रेंड किए जाएंगे जो गांव स्तर तक महिलाओं को प्रशिक्षण देंगे। उन्होंने कहा कि जिस तरह कृषि में बीमा व सबसिडी की सुविधा मिलती है, औषधीय कृषिकरण में भी ऐसी सुविधा मिले, इसके लिए बोर्ड प्रयास कर रहा है। उन्होंने कहा कि बोर्ड जड़ी- बूटियों की प्रोसेसिंग और उन्हें संरक्षित कर वैल्यू एडिसन अर्थात कल्टीवेशन से मार्केटिंग तक की सारी अधोसंरचना जिला स्तर पर विकसित करने की दिशा में काम कर रहा है। डॉ. नेसरी ने कहा कि भारत ऐसे एग्रो क्लाइमेट जोन में आता है, जहां जड़ी- बूटियों से दस गुणा मुनाफा कमाया जा सकता है। देश का पश्चिमी घाट और हिमालयी क्षेत्र औषधीय सम्पदा का हॉट स्पॉट हैं। आयुर्वेद में प्रयोग होने वाली 2200 से ज्यादा औषधियां यहां पाई जाती हैं। उन्होंने बताया कि वर्ष 2050 तक जड़ी- बूटियों की मांग 5 ट्रिलियन डॉलर की होगी। ऐसे में भविष्य में औषध कृषिकरण में असीम संभावनाओं के दरवाजे खुलेंगे। राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड की ओर से राज्य औषधीय पादप बोर्ड के सहयोग से मेडिसनल प्लांट सेक्टर के हितधारकों के लिए हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला शहर के डी पोलो रिसोर्ट में आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय बैठक की अध्यक्षता करते हुए डॉ. नेसरी ने इंटीग्रेटड फार्मिंग पर जोर देते हुए कहा कि किसान जो खेती कर रहा है, उसी के साथ औषधीय पौधों की खेती भी कर सकता है। कॉन्ट्रेक्ट फार्मिंग के जरिये किसान कलस्टर बनाकर उन्हीं जड़ी- बूटियों का उत्पादन करें, जिनकी दवा उद्योग में मांग है। कॉन्ट्रेक्ट फार्मिंग के लिए उद्योग को आगे आना होगा। किसान भी फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी बनाकर उद्योग से करार करें।

बेटियां संभाल सकती 'दादी' का खजाना

धर्मशाला के होटल डी पोलो में आयोजित औषधीय पौधों के हितधारकों की बैठक में नेशनल मेडिसनल प्लांट बोर्ड की कार्यकारी अधिकारी डॉ तनुजा नेसरी ने औषधीय कृषिकरण की कमान महिलाओं को संभालने का आह्वान किया।

कंडी के इस ग्रुप में अब 300 महिलाएं, मिली डेढ़ करोड़ की ग्रांट

पंजाब के कंडी क्षेत्र की दस महिलाओं ने औषधीय पौधों की कलेक्शन व खेती से उत्पाद तैयार करने का जो कार्य शुरू किया था, आज उसमें 300 महिलाएं शामिल हो चुकी हैं। यह महिलाएं जड़ी- बूटियों से कई प्रकार के उत्पाद तैयार करती हैं। औषधीय खेती से महिला सशक्तिकरण की अनूठी मिसाल पेश करने वाले इस ग्रुप को केंद्र सरकार की ओर से 1.45 करोड़ की ग्रांट प्रदान की गई है। 6 साखाओं के जरिये यह ग्रुप अपने उत्पाद बेचता है और अब हिमाचल प्रदेश को भी अपने कारोबार को विस्तार देने जा रहा है। इस ग्रुप ने लेंटाना से सीट बनाने की पहल की है, जिससे कैरी बैग आदि बनाए जा सकते हैं। औषधीय पौधों के हितधारकों की बैठक में पहुंची इस सभा की प्रतिनिधि ने बताया कि जल्द ही हम लेंटाना के उत्पाद तैयार करने जा रहे हैं। इसके चलते जंगलों व खेतों को लेंटाना के प्रकोप से राहत मिलेगी।

पथरीली जमीन पर नर्सरी

रीवा सूद की काममयाबी की कहानी बेहद दिलचस्प है। रीवा सूद हिमाचल की बहू हैं। उन्होंने ऊना के ऐसे पत्थरीले क्षेत्र में जहां सिंचाई सुविधाओं का भी अभाव है, पचास एकड़ में सर्पगंधा की नर्सरी तैयार करने में कामयाबी हासिल की है। उन्होंने सतावरी का क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल तैयार किया है। इतना ही नहीं, उन्होंने बंदरों के आतंक वाले क्षेत्र में ड्रैगन फल की सफल बागवानी की है। धर्मशाला में आयोजित औषधीय पौधों के हितधारकों की बैठक में रीवा सूद ने बताया कि उन्होंने अपने मिशन में गांव के किसानों को जोड़ना शुरू किया है और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से भी सहयोग ले रहीं हैं। पदमश्री डॉ. क्षमा मैत्रे व नेशनल मेडीसनल प्लांट बोर्ड की कार्यकारी अधिकारी डॉ. तनुजा नेसरी ने क्वालिटी प्लांटिंग तैयार करने के लिए बधाई देते हुए कहा कि उनके प्रयासों से स्थानीय किसान भी प्रेरित होंगे और औषधीय कृषिकरण को बढ़ावा मिलेगा।

डॉ. दीदी की दलील

कोर्ड संस्था की राष्ट्रीय निदेशक डॉ. क्षमा मैत्रे जिन्हें डॉ. दीदी के नाम से भी जाना जाता है, ने कहा कि उनकी संस्था प्रदेश के साठ हजार किसानों के साथ काम करती हैं। ये सभी किसान सीमांत किसान हैं और इनमें भी ज्यादातर महिलाएं हैं। औषधीय पौधों के हितधारकों की बैठक में बतौर विशेष अतिथि पहुंची डॉ. दीदी ने कहा कि नेशनल मेडीसनल प्लांट बोर्ड की स्कीमों का लाभ बड़े किसान ही ले सकते हैं और उन्हें लेना भी चाहिए, लेकिन इस बात पर भी सोचा जाना जरूरी है कि बोर्ड छोटे और सीमांत किसानों खासकर महिला कृषकों के लिए बोर्ड क्या कर सकता है। किसानों का यह वर्ग औषधीय खेती में अहम भूमिका अदा कर सकता है। छोटे किसान औषधीय खेती करने से घबराते हैं, ऐसे में ऐसी स्कीमों व प्रोत्साहनों की जरूरत है जिससे छोटे किसान औषधीय पौधों के कृषिकरण की ओर मुड़ें।

प्राचीन भारतीय चिकित्सा विद्या विश्व की सब चिकित्सा पद्धतियों में प्राचीनतम एवं अत्यंत विकसित ज्ञान रही है। समस्त भारतीय विद्याओं की परम्पराओं का मूल स्रोत आध्यात्मिक विद्या ही है। इसलिए चिकित्सा विद्या भी आध्यात्मिक विद्या के आधार पर ही विकसित हुई है। एतएव काय और चित्त दोनों ही स्वस्थ रहने का उपाय बताते हैं। इस विद्या में रोगों के मूल कारण को पहचान कर उनके निवारण के माध्यम से आरोग्य को प्राप्त करने के गंभीर एवं विस्तृत उपाय निर्दिष्ट हैं। भोट देश में आचार्य नागार्जुन आदि भारतीय विद्वानों द्वारा रचित अनेक आयुर्वेद ग्रंथों का अपनी भाषा में अनुवाद करके इस अध्ययन परम्परा का विकास हुआ, जिसके साथ मूल भोट चिकित्सा विद्या, यूनानी, चीनी आदि की परम्पराओं को समन्वित करके सोमराज एवं चतुर्शतंत्र आदि ग्रंथों की रचना हुई और जिसके माध्यम से भोट सोवा रिगपा नामक एक अनोखी चिकित्सा विद्या विकसित हुई, जो आज भी उन शास्त्रों का अध्ययन एवं प्रयोग पूर्ण रूप से संचालित करती है और लोक कल्याण के कार्य में सफलता प्राप्त कर रही है। यह विद्या आधुनिक विज्ञान की सभी कसौटियों पर खरा उतरती है। इस पद्धति में कायिक संरचना, रोग निदान, औषधि निर्माण एवं सेवन विधि, शोधन एवं शल्य आदि अन्य उपचार भी उपलब्ध हैं।

भारत सरकार के आयुष मंत्रालय ने भोट सोवा रिगपा को मान्यता प्रदान करके भारतीय चिकित्सा विद्या को और अधिक समृद्ध किया है। जोगेंद्रनगर स्थित क्षेत्रीय केंद्र के माध्यम से औषधीय पौधों के संरक्षण एवं संवर्धन का कार्य सफलता पूर्वक संचालित हो रहा है, जो स्तुत्य है। इस महत्वपूर्ण कार्य में निरन्तर सफलता प्राप्त होती ऐसी मेरी शुभकामना है!

दलाई लामा

हरड़ की उन्नत किस्म

- **ग्राफ्टिंग** विधि से तैयार किया क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल।
- **दो** साल में फल देने लगता है उत्तम किस्म का पौधा।
- **पौधे** पर लगते हैं बड़े आकार के फल।
- **इस** किस्म के फलों की भारी मांग, अच्छी कीमत।
- 6 जिलों के पांच सौ के करीब किसान कर रहे खेती।

डॉ. वाईएस परमार विश्वविद्यालय के नेरी कॉलेज के डॉ. कमल शर्मा ने तैयार की हरड़ की उन्नत किस्म

अब गमलों में उगाइए हरड़ के पौधे, दो साल में देगी फल, आकार भी बड़ा

आरसीएफसी नॉर्थ जोगेंद्रनगर, फीचर सर्विस

शास्त्रों में माता कही जाने वाली 'की ऑफ मेडीसन' के नाम से मशहूर हरड़ का फल आने में 12 से 15 साल का लम्बा अर्सा लगता था। यही कारण था कि हरड़ की खेती को लेकर किसान ज्यादा उत्साह नहीं दिखाते थे। एक तरफ जहां हरड़ के औषधीय गुणों के कारण इसकी मांग बढती रही, वहीं दूसरी ओर हरड़ का उत्पादन कम होता गया। ऐसे में यह महसूस किया गया कि हरड़ का ऐसा क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल विकसित किया जाए, जिससे न केवल फल जल्दी आए बल्कि फल आकर में भी फल बड़ा हो। इस दिशा में कई प्रयास शुरू हुए और 25 साल के लम्बे शोध के बाद हिमाचल प्रदेश के वैज्ञानिक हरड़ की ऐसी उन्नत किस्में विकसित करने में कामयाब रहे हैं। यह हरड़ की ऐसी किस्में हैं जिनके पौधे गमलों में भी उगाए जा सकते हैं। डॉ. यशवंत सिंह परमार विश्वविद्यालय के नेरी हमीरपुर कॉलेज के वैज्ञानिक डॉ. कमल शर्मा और उनकी टीम ने पहली बार हरड़ की ऐसी उन्नत किस्में तैयार करने में सफलता हासिल की है जो दो साल में फल देने लगती हैं और फल भी आकार में बड़ा होता है।

ग्राफ्टिंग से तैयार किए पौधे

डॉ. कमल शर्मा ने बताया कि उन्होंने हरड़ के नई किस्म के पौधों को ग्राफ्टिंग विधि से तैयार करने की तकनीक विकसित की है। इन पौधों में दो साल में फल आना शुरू हो जाता है, जबकि बीज से उत्पन्न हरड़ के पौधों में फल आने में 10-12 साल लगते हैं और उनकी गुणवत्ता भी सुनिश्चित नहीं की जा सकती है। डॉ. कमल शर्मा कहते हैं कि बीज से विकसित हरड़ के पौधें में 10 से 50 ग्राम वजन के फल आते हैं जबकि उनके विकसित किए उन्नत पौधों में 100-150 ग्राम वजन के फल आते हैं। ग्राफ्टिंग से तैयार हरड़ के पौधों के फल गुणवता की दृष्टि से अच्छे होते हैं और उनका बाजार मूल्य बहुत अधिक मिलता है।

देश भर में बांटे हरड़ के पौधे

डा. शर्मा और उनकी टीम के इस शोध को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के कई मंचों पर सराहा गया है। उन्होंने राज्य कृषि विभाग, बागवानी विभाग, वन विभाग, कृषि विश्वविद्यालय पालमपुर, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद पंजाब, कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना, शेर-ए-कश्मीर कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जम्मू, हरियाणा वन विभाग, केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, अरुणाचल और नवसारी कृषि विश्वविद्यालय गुजरात को भी पौधे दिए हैं। इतना ही नहीं, डॉ. शर्मा ने हिमाचल प्रदेश के कई सरकारी विभागों के कर्मचारियों को हरड़ के उन्नत किस्म के पौधे तैयार करने की ट्रेनिंग दी है। डॉ. शर्मा कहते हैं कि उन्होंने हरड़ की खेती करने के लिए किसानों के लिए मददगार मुद्रित सामग्री आसान भाषा में उपलब्ध करवाई है। इसके अलावा वे रेडियो और टेलिविजन पर किसानों को हरड़ की खेती करने के सम्बन्ध में हर तरह की तकनीकी जानकारी प्रदान करते हैं।

पहले हरड़ के फल को आने में 12 साल लगते थे अब 2 साल में तैयार

ग्राफ्टिंग से हरड़ तैयार, नर्सरी का इंतजार

डॉ. कमल शर्मा ने धर्मशाला में आयोजित औषधीय पौधों के हितधारकों की बैठक के दौरान हरड़ की उन्नत किस्म के बारे में किए गए अपने शोध की पावर प्रजेंटेशन दी। उन्होंने बताया कि उनकी टीम ने अढ़ाई दशक के अथक शोध के बाद पहली बार हरड़ की ऐसी उन्नत किस्म तैयार करने में सफलता हासिल की है जो दो साल में फल देने शुरू कर देती है और फल का आकार भी बड़ा होता है। इस किस्म के पौधे के फल में गुठली भी छोटी है और इसकी बाजार में सबसे अच्छी कीमत मिलती है। उन्होंने बताया कि पहले हरड़ के बारे में यह कहावत प्रचलित थी कि हरड़ को दादा लगाए और पोता खाए, लेकिन उन्होंने इस कहावत को बदल दिया है। अब नई कहावत यह है कि हरड़ को लगाकर दादा भी खाए, पोता भी खाए और अगली कई पीढ़ियां भी खाएं। उन्होंने बताया कि हरड़ के पौधे की उम्र सौ से डेढ़ सौ साल होती है। बेशक इस शोध के बाद डॉ. कमल शर्मा को 'हरड़ मैन ऑफ'इंडिया के नाम से जाना जाता हो, लेकिन सच यह भी है कि उनके इस गंभीर प्रयासों को लेकर सरकारी स्तर पर उदासीनता का आलम है। वर्ना ऐसी कोई वजह नहीं है कि उन्हें हरड़ का क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल तैयार करने के लिए संसाधनों के अभाव का सामना करना पड़ता। बैठक में इस बात का पता चला कि हरड़ का क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल तैयार करने के संसाधन ही मौजूद नहीं हैं। पंजाब का फोरेस्ट विभाग हरड़ के दो लाख पौधे खरीदने को तैयार है, लेकिन हरड़ की ऐसी उन्नत किस्म के पौधे उपलब्ध नहीं हैं। मेडिसनल प्लांट बोर्ड के क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तर भारत, जोगेंद्रनगर के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. अरूण चंदन का ने कहा कि हरड़ की उन्नत किस्म के पौधों की नर्सरी स्थापित करने के प्रयास किए जाएंगे।

पाकिस्तान तक बाजार में डिमांड

हिमाचल प्रदेश की हरड़ के लिए पाकिस्तान के बाजार में भारी मांग रहती है। सिरमौर जिला में पैदा होने वाली हरड़ का निर्यात पाकिस्तान को होता है। हिमाचल के हरड़ उत्पादक अपना उत्पाद पंजाब में बेचते हैं, जहां से इसकी सप्लाई पाकिस्तान व अन्य देशों को होती है। सिरमौर जिला में कई क्षेत्रों में हरड़ का उत्पादन होता है। पच्छाद के हरड़ उत्पादक अमृतसर व होशियारपुर मंडियों में हरड़ बेचते हैं। डॉ. कमल शर्मा के शोध के बाद अब प्रदेश के छह जिलों में हरड़ का उत्पादन होने लगा है। डॉ. शर्मा कहते हैं कि उन्होंने हिमाचल प्रदेश में विस्तृत सर्वे किया कि हरड़ कहां- कहां पाई जाती है और किस- किस किस्म की हरड़ की मांग बाजार में सबसे ज्यादा रहती है। उन्होंने बताया कि हिमाचल के ढलानदार जंगलों, कांगड़ा व बिलासुपर में अच्छी किस्म की हरड़ पाई गई। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों से हरड़ की वैरायटी जुटाई। उनका कहना है कि प्रदेश में कई किस्मों की हरड़ पाई जाती है। यह बात भी सामने आई कि हरड़ के छोटे आकार के फल की मांग व कीमत दोनों कम हैं, जबकि बड़े आकार के फल हरड़ की मांग भी ज्यादा है और बाजार में कीमत भी अच्छी है। ग्राफ्टिंग तकनीक से डॉ. शर्मा ने हरड़ की उन्नत किस्म की पौध तैयार की। हमीरपुर के नेरी में किए गए आरंभिक प्रयोगों में आशातीत सफलता मिलने के बाद हरड़ की उन्नत नस्लों की नर्सरी स्थापित करने की पहल हुई। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और ग्रामीण विकास मंत्रालय ने डॉ. शर्मा के शोध को खूब सराहा है। हरड़ की खेती में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने वाले डॉ. शर्मा के इस शोध को किसानों तक पहुंचाने के लिए ग्रामीण विकास मंत्रालय ने डॉ. कमल शर्मा को 72.50 लाख रुपए की परियोजना स्वीकार की। डॉ. शर्मा कहते हैं कि इस परियोजना के तहत उन्होंने हिमाचल प्रदेश के 6 जिलों के 485 किसानों को उन्नत हरड़ की किस्मों के बीस हजार से ज्यादा पौधे मुफ्त वितरित किए हैं। अब ये पौधे फल देने लगे हैं। इन उत्तम किस्मों के पौधों के फलों का आकार भी बड़ा है और गुणवता में भी अव्वल आंके गए हैं, इसी के चलते इन किस्मों के फलों की बाजार में भारी मांग है और किसानों को इसका मूल्य भी अच्छा मिल रहा है। इन किस्मों की खेती बंदरों से प्रभावित और कोहरा ग्रसित क्षेत्रों में सफलता से की जा रही है।

निचले हिमालय क्षेत्र में रावी तट से लेकर पूर्व बंगाल-आसाम तक हरड़

हरड़ निचले हिमालय क्षेत्र में रावी तट से लेकर पूर्व बंगाल-आसाम तक पांच हजार फुट की ऊंचाई पर पाया जाता है। आयुर्वेद में इसे अमृता, प्राणदा, कायस्था, विजया, मेध्या आदि नामों से जाना जाता है। जंगलों में पाए जाने वाले हरड़ का वृक्ष 60 से 80 फुट तक ऊंचा होता है। इसकी छाल गहरे भूरे रंग की होती है। पत्ते वासा के पत्र के समान होते हैं। फूल छोटे, पीताभ श्वेत लंबी मंजरियों में होते हैं। फल एक से तीन इंच तक लंबे और अंडाकार होते हैं। कच्चे फल हरे तथा पकने पर पीले धूमिल होते हैं। हर फल में एक बीज होता है। अप्रैल-मई में नए पल्लव आते हैं। फल शीतकाल में लगते हैं। पके फलों का संग्रह जनवरी से अप्रैल के मध्य किया जाता है।

स्टेट इनोवेशन अवार्ड से सम्मानित

डॉ. कमल शर्मा को हरड़ के ऊपर किए गए उनके शानदार शोध के लिए कई पुरस्कार मिले हैं। तत्कालीन मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह ने उन्हें हरड़ पर किए गए शोध कार्य के लिए स्टेट इनोवेशन अवार्ड से सम्मानित किया। सरकार के अलावा कई सामाजिक संस्थाओं ने उन्हें इस कार्य के लिए सम्मानित किया है।

मेडीसनल प्लांट सेक्टर की मूल्य श्रृंखला को मजबूत करने के लिए हिमाचल प्रदेश में अनूठी पहल

धर्मशाला में कई उद्योगों ने जड़ी- बूटियां खरीदने के लिए किसानों से किए करार

आरसीएफ नॉर्थ, जोगेंद्रनगर फीचर सर्विस

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड की ओर से राज्य औषधीय पादप बोर्ड के सहयोग से मेडिसनल प्लांट सेक्टर के सभी हितधारकों के लिए धर्मशाला के डी. पोलो रिसोर्ट में आयोजित एक दिवसीय नेशनल बैठक उत्तरी भारत में जड़ी- बूटियों की खेती करने वाले किसानों के लिए उद्योग से जुड़ने का एक शानदार अवसर साबित हुई। बैठक के दौरान औषध कृषिकरण में जुटे किसानों और आयुर्वेद उद्योगों के बीच जुड़ी- बूटियों की खरीद के लिए कई एमओयू साइन किए गए। मशहूर आयुर्वेद निर्माता कंपनी 'आयुष हर्ब्स' ने कुटकी और सर्पगंधा, खरीदने के लिए किसानों से एमओयू किया तो 'समृद्धि हर्ब्स' ने सर्पगंधा और सतावरी खरीद का करार किया। 'दैविक हर्ब्स' ने किसानों से सर्पगंधा की खरीद के लिए समझौता किया तो 'विनायक हर्ब्स' ने किसानों से अमलतास खरीदने के लिए एमओयू साइन किया। इस दौरान क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तरी भारत, जोगेंद्रनगर ने प्रिक्योरमेंट मेनेजमेंट और मार्केटिंग के विषय में शिक्षण संस्थाओं व विशेषज्ञों की मदद हासिल करने के लिए पहल की। इटरनल विश्वविद्यालय से क्वालिटी प्रिक्योरमेंट प्रबंधन के लिए 'रिशीकांता सोसायटी' पर अनुसंधान के लिए, डॉ. मुधलिका व उनकी टीम के साथ जड़ी- बूटियों के मंडी रेट उपलब्ध करवाने के लिए और करियर प्वांयट विश्वविद्यालय के साथ हमीरपुर की सहकारी सभाओं के लिए एमओयू साइन किए गए।

प्रोसेसिंग मशीनरी को अनुदान

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए नेशनल मेडिसनल प्लांट बोर्ड की कार्यकारी अधिकारी डॉ. तनुजा नेसरी ने बताया कि किसानों को जड़ी- बूटियां बेचने के लिए परेशान न होना पड़े, इसके लिए नेशनल मेडिसनल प्लांट बोर्ड जिला स्तर पर जड़ी- बूटी कलेक्शन सेंटर खोलने जा रहा है। उन्होंने कहा कि बोर्ड खेती के लिए वित्तीय सहायता देने के साथ प्रोसेसिंग के लिए मशीनरी की खरीद करने के लिए भी अनुदान दे रहा है। इसके लिए नेशनल मेडिसनल प्लांट बोर्ड ने एमएसएमई के साथ एमओयू किया है। उन्होंने कहा कि जड़ी- बूटियों की कलेक्शन और कल्टीवेशन के सम्बन्ध में लीगल प्रिक्योरमेंट को लेकर वन विभाग और बायो डायवर्सिटी बोर्ड से सम्बन्धित कुछ मुद्दे हैं, जिन्हें सुलझाने के लिए पॉलिसी मेकिंग लेवल पर प्रयास किए जा रहे हैं। औषधीय कृषिकरण में किसानों को आने वाली कठिनाईयों व उनके सुझावों पर अमल करते हुए नेशनल मेडीसनल प्लांट बोर्ड अपनी योजनाओं में परिवर्तन करेगा, ताकि किसानों को ज्यादा से ज्यादा लाभ मिल सके।

किसानों को उद्योगों के साथ जोड़ने के लिए वरदान बनी बैठक

'जड़ी- बूटी बाजार' का विमोचन

क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तरी भारत, जोगेंद्रनगर की ओर से प्रकाशित की जाने वाले मासिक पत्रिका 'जड़ी बूटी बाजार' के चौथे व पांचवे अंक का विमोचन नेशनल मेडिसनल प्लांट बोर्ड की कार्यकारी अधिकारी डॉ. तनुजा नेसरी के कर कमलों से हुआ। क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तरी की विवरणिका का भी विमोचन किया गया। मुख्यातिथि ने इस अवसर पर औषधीय पौधों से कामयाबी की प्रेरककथाएं लिखने वाले किसानों पर आधारित पुस्तक 'मिट्टी से सोना' का भी विमोचन किया। उन्होंने कहा कि क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र जोगेंद्रनगर के प्रकाशन और प्रचार- प्रसार के ऐसे प्रयास न केवल किसानों को औषधीय पौधों की खेती की ओर प्रेरित व प्रोत्साहित करने का काम कर रहे हैं, बल्कि इस क्षेत्र से जुड़ी तमाम सुचनाएं भी किसानों तक पहुंच रही हैं।

व्हट्सअप ग्रुप की कामयाबी

नेशनल मेडिसनल प्लांट बोर्ड के क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तरी भारत, जोगेंद्रनगर के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. अरूण चंदन ने कहा कि औषधीय पौधों की खेती की वैल्यू चेन को मजबूत करने के लिए उनका संस्थान सोशल मीडिया का प्रयोग भी कर रहा है, जिसके शानदार परिणाम मिल रहे हैं। उन्होंने बताया कि क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तरी भारत, जोगेंद्रनगर देश से दो सौ लोगों का व्हट्सअप ग्रुप संचालित कर रहा है। इस ग्रुप में औषधीय पौधों की वैल्यू चेन से जुड़े किसान, शोधकर्ता, प्रोसेसिंग, मार्केटिंग व उद्योग के विशेषज्ञ शामिल हैं। उन्होंने बताया कि हर रोज इस ग्रुप पर ग्रुप के सदस्य औषधीय पौधों के सेक्टर से सम्बन्धित नई से नई जानकारी देते हैं। उन्होंने बताया कि हाल ही में इस ग्रुप के जरिये क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तरी भारत के प्रयासों से महाराष्ट्र के शिरडी में 1200 एकड़ में स्टीविया की खेती करने के लिए सिंगापुर और पंजाब की कंपनियों के बीच करार हुआ है। बता दें कि शिरडी में 1200 एकड में प्राइवेट सेक्टर का पहला बड़ा सोलर पावर प्लांट स्थापित किया जा रहा है। इसी सोलर पैनल के नीचे स्टीविया की खेती की जाएगी। उन्होंने बताया कि नेशनल मेडिसनल प्लांट बोर्ड ने उत्तरी भारत के हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, चंडीगढ़ व दिल्ली सहित सात राज्यों के लिए जोगिंद्रनगर में क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र स्थापित किया गया। औषधीय पौधों की खेती की वैल्यू चेन को मजबूत करने के लिए यह केंद्र कई तरह की गतिविधियां संचालित कर रहा है।

सीकर से पंजाब में कांटेक्ट

इस बैठक में राजस्थान के सीकर के राकेश चौधरी ने भाग लिया। राकेश चौधरी राजस्थान में तीन सौ किसानों के साथ कॉन्ट्रेक्ट फार्मिंग के जरिये औषधीय पौधों की खेती कर रहे हैं। आरसीएफसी के प्रयासों से राकेश चौधरी पंजाब की एक फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी के साथ सौ एकड़ में अश्वगंधा व सतावरी की खेती के लिए एमओयू करने वाले हैं। उन्होंने बैठक में अपने सम्बोधन में कहा कि वह राजस्थान जैसे सूखे क्षेत्र में विपरीत परिस्थितियों में जड़ी- बूटियों की खेती कर रहे हैं, जबकि उत्तरी भारत में जलवायु इस खेती के अनुकूल है।

चार सत्रों में हुई चर्चा

चार सत्रों में आयोजित इस बैठक में औषधीय पौधों की खेती करने वाले किसानों, इस क्षेत्र में शोध कर रहे विशेषज्ञों, प्रोसेसिंग व दवा उद्योग सहित मेडिसनल प्लांट सेक्टर के सभी हितधारतकों ने भाग लिया। हिमाचल प्रदेश में अपनी तरह की इस पहली बैठक में मेडीसनल प्लांट सेक्टर की मूल्य श्रृंखला को मजबूत करने के लिए औषधीय पौधों की खेती, वन समृद्धि जन समृद्धि- योजना, क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल की उपलब्धता, नर्सरी तैयार करने की तकनीक, पोस्ट हार्वेस्ट प्रबंधन व मार्केटिंग के मुद्दों पर चर्चा हुई।

समस्याओं के होंगे समाधान

नेशनल मेडीसनल प्लांट बोर्ड की कार्यकारी अधिकारी डॉ. तनुजा नेसरी ने सभी हितधारकों को यकीन दिलवाया कि बैठक में जो मुद्दे व समस्याएं सामने आई हैं, उनके समाधान करना बोर्ड की प्राथमिकता होगी। उन्होंने बताया कि उत्तरी भारत के राज्यों के मेडिसनल प्लांट सेक्टर के विभिन्न मुद्दों के समाधान करने के लिए भारतीय चिकित्सा अनुसंधान संस्थान जोगिंद्रनगर में क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र स्थापित किया है। इस केंद्र को खोलने का उद्देश्य उत्तरी भारत में औषधीय खेती करने वालों की समस्याओं के समाधान करना है।

इन्होंने दिए सवालों के जवाब

नेशनल मेडिसनल बोर्ड की अध्यक्ष डॉ. तनुजा नेसरी, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ आयुर्वेदा की प्रो. मीता कोटेचा, पदम श्री क्षमा मैत्रे, केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के राज कुमार, नेशनल मेडिसनल बोर्ड से कविता त्यागी, डॉ. पदम कुमार, क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तर भारत, जोगेंद्रनगर के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. अरूण चंदन, उपनिदेशक डॉ. सौरभ शर्मा, सीएसआईआर- हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान पालमपुर से डॉ. शशी, ओएसडी आयुर्वेदा डॉ. के. के शर्मा ने कार्यक्रम की चर्चा में भाग लेकर सवालों के जवाब दिए।

हिमालय की लोक स्वास्थ्य परम्पराएं

डॉ. अरुण चंदन

लेखक, क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तर भारत, जोगिंद्रनगर के क्षेत्रीय निदेशक हैं।

विद्वानों का मानना है कि मनुष्य का दिमाग स्वयं से कुछ भी लिख सकता है। यह आवश्यक नही कि वो सत्य ही हो, परन्तु वेदों का ज्ञान सच्चाई है।मान्यता है इस धरती में सबसे पहले हरीतकी (हरड) पैदा हुई। इंद्र देवता जब अमृतपान कर रहे थे, उस समय अमृत की एक बूंद पृथ्वी पर गिरने से हरड़ की उत्पत्ति हुई। हिमालय में उत्पन्न होने वाली चेतकी नामक हरड़ प्रमेह रोग में चूर्ण बना कर ग्रहण करने के लिए श्रेष्ठ कही गई है और यह सत्य भी है किसी भी परिस्थिति में शुद्ध हरीतकी का प्रयोग शरीर पर दुष्प्रभाव नहीं डालता, इसीलिए हरीतकी को माता तुल्य माना गया है।

पर्वतीय समाज में महिलाओं के स्वास्थ्य सम्बन्धी ज्ञान चाहे वह रसोई के मसालों द्वारा हो या सर्व-सुलभ जड़ी- बूटियों के द्वारा हो, गंभीर रूप से उपेक्षित रहा है। किसी भी बीमारी की स्थिति में दादी-नानी से लेकर युवा महिलाओं द्वारा तक इस ज्ञान के जरिये ही रोग की प्राथमिक चिकित्सा के प्रयास किये जाते हैं। चाहे वह काढ़े पिलाना हो या देवी-देवता का पूजन हो, भले ही ये ज्ञान आज के वैज्ञानिकों को अंधविश्वास या अवैज्ञानिक लगता हो लेकिन लोक-स्वास्थ्य परम्पराओं के वाहक समाज के इतने बड़े हिस्से को शिक्षित करने की संभावना इसी ज्ञान में अंतर्निहित है, क्या सही क्या गलत है, समाज को बताना ये हम वैज्ञानिकों का ही तो दायित्व है। देवताओं के पूजन एवं मन्त्र-चिकित्सा इत्यादि विश्लेषण का विषय तो हैं ही, क्योंकि सदिव्रत के पालन न करने से उत्पन्न होने वाले रोगों की चिकित्सा को आयुर्वेद देवव्यापाश्र्य चिकित्सा में लेता है।

अहंकार, लोभ, ईर्ष्या मनुष्य के वो शत्रु हैं, जो आचार-रसायन में आयुर्वेद में सदिव्रत में आदर्श व्यवहार न करने पर विभिन्न मानसिक रोगों के उत्पन्न होने के कारण माने हैं। हमारी मान्यता है ईश्वर का अस्तित्व है। आदर्श जीवन जीने के लिए वेद संविधान स्वरुप हैं। आयुर्वेद अथर्ववेद का उपवेद है। वेदों का ज्ञान ईश्वर के श्रीमुख से प्रस्फुटित हुआ। विद्वानों का मानना है कि मनुष्य का दिमाग स्वयं से कुछ भी लिख सकता है। यह आवश्यक नही कि वो सत्य ही हो, परन्तु वेदों का ज्ञान सच्चाई है। मान्यता है इस धरती में सबसे पहले हरीतकी (हरड) पैदा हुई। इंद्र देवता जब अमृतपान कर रहे थे, उस समय अमृत की एक बूंद पृथ्वी पर गिरने से हरड़ की उत्पत्ति हुई। हिमालय में उत्पन्न होने वाली चेतकी नामक हरड़ प्रमेह रोग में चूर्ण बना कर ग्रहण करने के लिए श्रेष्ठ कही गई है और यह सत्य भी है किसी भी परिस्थिति में शुद्ध हरीतकी का प्रयोग शरीर पर दुष्प्रभाव नहीं डालता, इसीलिए हरीतकी को माता तुल्य माना गया है।

मुआछ परंपरा : विशेष कारणों से बंध्त्व का शिकार हो जाने के मामलों में मुआछ प्रक्रिया के तहत कांगड़ा का एक विशेष परिवार जिनके पास पीढ़ी दर पीढ़ी यह ज्ञान चला रहा है, के अंतर्गत एक विशेष पौधे को निमंत्रण देने के बाद रोगी जोड़े को सुबह एक विशेष विधि के द्वारा खिलाया जाता है, जिसके परिणाम 90 प्रतिशत से ज्यादा सफल हुए दिखते हैं। उबरसाही, कब्ज के लिए

नाभि पर हींग का उपयोग, यात्रा के दौरान वमन के लिए नाभि पर औषधयुक्त लेप, सर्प-दंश के उपचार की परम्परा, हड्डी जोड़ने वाले, पीलिया, बवासीर, अधरंग का उपचार, दाईओं के ज्ञान का पिटारा, गुदा द्वार के रोग का वर्णन करना इसलिए अनिवार्य है क्योंकि यह ज्ञान उन की भाषा और संस्कृति का अभिन्न अंग बन चुका है। यही नहीं, द्रिढें (नागबला) नामक पौधे को जिला कांगडा का एक विशेष समुदाय जो खेती के कार्यों के कारण ज्यादातर समय पानी के साथ कार्य करता है, गुड के साथ सर्दियां शुरू होने से पहले पूरे परिवार को खिला करके व्याधिक्षमत्व प्राप्त करता है।

लोक-आयुर्वेद दूर-दराज में बसे लोगों की जीवन संस्कृति का अभिन्न अंग रहा है। इसे चाहे स्वास्थ्य सुविधाओं तक उनकी पहुंच न होना कारण माना जाए या वंशानुगत परंपरा से पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित हो रहे इस प्रभावशाली ज्ञान की ताकत कहें।

धुवली, अंगूरी, लुगड़ी. छांग, बहमी आयुर्वेदिक सुरा : पहाड़ के विभिन्न क्षेत्रों में धुवली, अंगूरी, लुगड़ी. छांग, बहमी आयुर्वेदिक सुरा बनाने का पारम्परिक ज्ञान मौजूद है। आश्चर्य है कि इन सब पारम्परिक विधाओं की अनदेखी करके एप्पल साइडर विनेगर उत्पाद तथाकथित तरीके से वर्ग-विशेष द्वारा विपणन किये जा रहे हैं, जबकि यूरोप के कुछ देशों में विनियार्ड यानी अंगूर के बगीचे के पास वाइन बनाने की परम्परा हमारी उपरोक्त परम्परा से मिलती है जो कि गुणवत्ता और शोध और प्रशासनिक हस्तक्षेप से मुख्यधारा में आ सकती है और लाखों रूपये के राजस्व का लाभ वापिस ग्रामीण समुदाय के पास जा सकता है।

सम्पादक
डॉ. अरूण चंदन

हम ऑनलाईन उपलब्ध हैं
pdf यहां से डाऊनलाड करें।
www.rcfcnorth.in/download

लेखकों से आग्रह

यदि आप विषय से संबंधित कोई लेख/अनुभव/जानकारी प्रकाशनार्थ भेजना चाहें तो निसंकोच भेजें। छपने योग्य होने पर अवश्य प्रकाशित किया जाएगा।
सम्पादक

हमसे संपर्क करें

क्षेत्रीय निदेशक / सम्पादक
ई- चरक
जड़ी- बूटी बाजार
क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र
राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड
आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान
जोगिंद्रनगर, मंडी, हिमाचल प्रदेश।
पिन : 175015
हेल्पलाईन : 8544734206
दूरभाष : 01908 222333
वैबसाइट : www.rcfcnorth.in
मेल: rcfcnorth@gmail.com

वैज्ञानिकों- किसानों के सहयोग से 'उन्नति'

ज्योति प्राकश

एमडी एवं संस्थापक सदस्य उन्नति कॉपरेटिव मार्केटिंग, प्रोसेसिंग सोसायटी।

उन्नति का टर्नओवर पहले साल केवल 35 हजार रुपए था, लेकिन वर्तमान में इस सोसायटी का टर्नओवर 25 करोड़ सलाना की सीमा पार कर चुका है।

वर्ष 2003 में बायो टेक्नोलॉजी, एग्रोनॉमी, प्लांट पैथोलॉजी, सॉयल साइंस व आयुर्वेद के माहिर पंजाब के कंडी क्षेत्र के 14 साइंटिस्टों ने उन्नति कॉपरेटिव मार्केटिंग कम प्रोसेसिंग सोसायाटी रजिस्टर्ड करवाई। वे यहां मौजूद नेचुरल हर्बल बायो रिसोर्सिस से अपने हुनर और स्थानीय लोगों की मदद से क्षेत्र में रोजगार सृजन और ग्रामीण आर्थिकी को मजबूत कर सामाजिक-आर्थिक बदलाव का सपना देख रहे थे। सोसायटी के सदस्यों ने सबसे पहले पंजाब स्टेट कांउसिल फॉर साइंस एंड टेक्नोलॉजी से संपर्क किया। एक साल बाद पंजाब स्टेट कांउसिल फॉर साइंस एंड टेक्नोलॉजी की मदद से उन्नति को भारत सरकार से पहाड़ी जड़ी-बूटियों और फलों को प्रोसेस कर इस्तेमाल करने का प्रोजेक्ट मिला था। सबसे पहले क्षेत्र के उन 40 गांवों की निशानदेही की, जहां से इन नेचुरल रिसोर्सिस को लाया जाना था। इन गांवों के 800 परिवारों को साथ जोड़ा गया। उन्नति का टर्नओवर पहले साल केवल 35 हजार रुपए था, लेकिन वर्तमान में इस सोसायटी का टर्नओवर 25 करोड़ सलाना की सीमा पार कर चुका है। उन्नति की फैक्टरी में कई तरह के जूस, जैम व उन्य उत्पाद तैयार किए जा रहे हैं। इस सोसायटी के उत्पाद देश-विदेश में सुपरहिट हैं। अपोलो, फार्मास्यूटिकल हैदराबाद, यूडिस, एमएचएस व मार्कफैड जैसी कंपनियां उन्नति की ग्राहक हैं। सोसायटी पंजाब स्टेट साइंस एंड टैक्नोलॉजी के बायोटेक्नोलॉजी विभाग की ओर से वित्त पोषित परियोजना के अंतर्गत गैर लकड़ी वन उपज के प्रस्संकरण से स्थानीय समुदायों की आय बढ़ाने में जुटी है। यह सोसायटी विश्व बैंक सहायता प्राप्त कार्यक्रम के तहत पंजाब स्टेट काउंसिल फॉर साइंस

एंड टैक्नोलॉजी,, गुरु अंगददेव पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय और पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के सहयोग से औषधीय और सुगंधित पौधों की खेती और प्रसंस्करण की परियोजना चला रही है।

बांस मिशन के तहत उन्नति लेंटाना प्रभावित भूमि को बांस की खेती पर जोर दे रही है। बांस से हस्तशिल्प, फर्नीचर और खाद्य उत्पादों का निर्माण किया जा रहा है। सोसाइटी भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के सहयोग से गन्ना किसानों को लाभांवित करने के लिए उच्च गुणवता के गुड़ का निर्माण कर रही है। जामुन के फल एकत्र करने के लिए गरीब लोगों को शामिल कर उनकी आय में बढ़ोतरी कर रही है। उत्साही और दूरदर्शी वैज्ञानिकों ने सहकारिता के क्षेत्र में शिवालिक पहाड़ियों में मौजूद वनस्पति के वैज्ञानिक दोहन और प्रोसेसिंग का एक मॉडल विकसित किया, जिससे आत्मनिर्भरता, सतत् रोजगार और महिला सशक्तिकरण की अवधारणा को तलबाड़ा में सच कर दिखाया है।

धर्मशाला में आयोजित औषधीय पौधों के हितधारकों की बैठक में किसानों ने बताई अपने मन की बात

क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल का प्रबंध किए बिना मुश्किल औषधीय कृषिकरण

आरसीएफसी नॉर्थ जोगेंद्रनगर, फीचर सर्विस

आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माण के लिए कच्चे माल के तौर पर भरत में औषधीय पौधों की मांग बढ़ रही है। वर्ष 1999-2000 में इसकी अनुमानित मांग 2,34,675 मीट्रिक टन थी जो 2014-15 में बढ़कर 5,12,000 मीट्रिक टन हो गई। इस दौरान 134 मीट्रिक टन औषधीय पौधों का निर्यात किया गया। औषधीय पौधों की 242 प्रजातियों का उच्च वार्षिक व्यापार दर्ज हुआ, जिनमें से 114 प्रजातियां जंगलों में पैदा होने वाली हैं। बंजर भूमि की 59, जबकि खेतों में उगाई जाने वाली 54 प्रजातियां शामिल हैं। लभगग 72 प्रतिशत जंगली प्रजातियों और 22 प्रतिशत खेतों में उगाई जाने वाली जड़ी-बूटियों के लिए बड़ी मांग है। बाजार में भारी मांग होने के बावजूद औषधीय पौधे उगाने के लिए क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल की कमी औषधीय कृषिकरण की राह में सबसे बड़ी अड़चन है। जड़ी- बूटियों की खेती के लिए किसानों को उदार वित्तीय अनुदान तो दिया जा रहा है, लेकिन गुणवता वाले बीज व क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल उपलब्ध करवाने के प्रयास अभी तक नाकाफी हैं। धर्मशाला में आयोजित औषधीय पौधों के हितधारकों की बैठक में किसानों ने कहा कि जब गुणवतापूरक बीज और प्लांटिंग मैटीरियल मिलना ही मुश्किल हो फिर औषधीय कृषिकरण के बारे में किसान कैसे अपने कदम बढ़ा सकता है। किसानों का कहना है कि उन्नत किस्म के बीज और पौधों की आसान व नजदीक उपलब्धता होगी, तभी किसान इस तरफ कदम बढ़ाएगा। बैठक में यह मुद्दा प्रमुखता से उभर कर सामने आया। बैठक में मौजूद नेशनल मेडिसनल प्लांट बोर्ड के विशेषज्ञों ने भी माना कि इस दिशा में गंभीर प्रयास करने की जरूरत है। विशेषज्ञों ने कहा कि औषधीय पौधों की खेती से आजीविका सृजन की सोच तभी हकीकत की जमीन पर उग सकती है, जब इसकी खेती की राह में आने वाली बुनियादी अड़चनों की पड़ताल कर प्राथमिकता से उनके हल खोजे जाएं। उन्नत किस्म के बीज व पौध किसानों को उपलब्ध करवाने के लिए नेशनल मेडिसनल प्लांट बोर्ड गंभीरता से काम कर रहा है। नेशनल मेडिसनल प्लांट बोर्ड नर्सरी प्रबंधन के लिए किसानों को प्रशिक्षत करने के लिए ट्रेनिंग कोर्स शुरू करने जा रहा है, वहीं टिशू कल्चर लैब और मॉडल नर्सरियां स्थापित करने के लिए कदम बढ़ा रहा है। विशेषज्ञों ने किसानों को यकीन दिलाया कि उनके सुझावों पर अमल करते हुए नेशनल मेडिसनल प्लांट बोर्ड प्राथमिकता से इसका समाधान करेगा।

बीज व पौध के लिए आसान नहीं किसानों की राहें

नर्सरी के लिए मिले ट्रेनिंग

चंबा के ट्राइबल क्षेत्र भरमौर में औषधीय पौधों की खेती कर रही संस्था के साथ आए डॉ. रियाज ने कहा कि हाई एल्टीट्यूड पर उगने वाली जड़ी-बूटियों के क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल की कमी के चलते किसानों को कई दिक्कतें आ रहीं हैं। उन्होंने कहा कि गुणवता वाले बीज और पौधे औषधीय खेती की दिशा में पहला कदम है और इस पहले कदम को मजबूत करने की जरूरत है।उन्नत बीज व पौधे मिलें तो उनका उत्पादन भी अच्छा होगा और वे इस दिशा में काम करने को प्रेरित होंगे। नर्सरी उगाने के लिए किसानों को ट्रेंड किए जाने की जरूरत है।

हरड़ की उन्नत पौध नहीं

बागवानी विश्वविद्यालय सोलन के नेरी कॉलेज के वैज्ञानिक डॉ. कमल शर्मा ने ग्राफिटंग से हरड़ का उन्नत पौधा विकसित करने में कामयाबी हासिल की है, पर सच यह है कि हरड़ के पौधों की स्थाई नर्सरी विकसित करने के लिए संसाधनों का अभाव है और बड़े स्तर पर खेती करने के लिए उन्नत पौध की कमी है। पंजाब का वन विभाग हरड़ के दो लाख पौधों की मांग कर रहा है, लेकिन पौध ही उपलब्ध नहीं है।

आंध्र से हल्दी का बीज

हल्दी की खेती को लेकर सुर्खियां बटोर रहे कांगड़ा के कर्नल पीसी राणा को ऑरगेनिक हल्दी का बीज डपलप करवाने के लिए आंध्र प्रदेश का रूख करना पड़ा। बीज के लिए जहां उन्होंने खासी राशि खर्च की, वहीं दो साल तक बीज तैयार होने का इंतजार भी करना पड़ा। उन्हें प्रदेश में ऑरगेनिक हल्दी का बीज नहीं मिला। हालांकि अब कर्नल राणा कांगड़ा में ऑरगेनिक हल्दी का उत्तम बीज तैयार कर किसानों को हल्दी की खेती के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

आरसीएफसी का रोल

नेशनल मेडिसनल प्लांट बोर्ड की कार्यकारी अधिकारी डॉ. तनुजा नेसरी ने कहा कि नेशनल मेडिसनल प्लांट बोर्ड की योजनाओं को जनता तक पहुंचाने के लिए देश में 36 स्टेट मेडिसनल प्लांट बोर्ड बनाए गए, इसके बावजूद औषधीय पौधों की खेती से जुड़ी गई स्कीमें कई राज्यों में सिर्फ कागजों तक ही सिमट कर रह जाती थीं। उन्होंने कहा कि इसी को देखते हुए नेशनल मेडिसनल प्लांट बोर्ड ने वर्ष 2017 में भारत के विभिन्न भागों में 6 क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र स्थापित किए, ताकि केंद्र व राज्यों के बीच समन्वय स्थापित हो। नेशनल मेडिसनल प्लांट बोर्ड की योजनाओं के कियान्वयन में देरी न हो और औषधीय पौधों के क्षेत्र में जुड़े लोगो को लाभांवित किया जा सके। इन केंद्रों के खुलने के बाद नेशनल मेडिसनल प्लांट बोर्ड की योजनाओं के नतीजे शानदार रहे हैं। उन्होंने कहा कि औषधीय पौधों के हितधारकों की समस्याओं के समाधान के लिए नेशनल मडीसनल प्लांट बोर्ड अपने क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्रों के जरिये काम कर रहा है।

समस्या का निकलेगा समाधान

जिला स्तर पर नोडल ऑफिर

हिमाचल प्रदेश आयुर्वेद विभाग के ओएसडी डॉ. के के शर्मा ने कहा कि विभाग प्रदेश में औषधीय कृषिकरण को लेकर बहुत गंभीर है और हर जिला में नोडल ऑफिसर तैनात किया गया है। यह नोडल ऑफिर पंचायत स्तर तक औषधीय कृषिकरण से सम्बन्धित सरकार की योजनाओं की जानकारी उपलब्ध करवा रहे हैं। उन्होंने कहा कि औषधीय पौधों की स्थाई नर्सरी स्थापित करने के लिए विभाग प्रयास कर रहा है।

नर्सरी विकसित करें किसान

नेशनल मेडिशल प्लांट बोर्ड दिल्ली की कविता त्यगी ने कहा कि बोर्ड किसानों के सुझावों पर अमल करते हुए अपनी योजनाएं तैयार कर रहा है। उन्होंने बताया कि पहले बोर्ड के वितीय अनुदान के लिए दो हेक्टेयर क्षेत्र की शर्त थी, लेकिन सीमांत किसानों को देखते हुए अब भूमि की इस सीमा को प्रदेश मेडिसनल प्लांट बोर्ड के हिसाब से निर्धारित करने का फैसला लिया है। उन्होंने कहा कि छोटे किसान ओषधीय पौधों की स्थाई नर्सरी स्थापित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि बोर्ड इसके लिए अनुदान प्रदान करेगा।

स्किल इंडिया के तहत ट्रेनिंग

नेशनल मेडिसनल प्लांट बोर्ड के क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. अरूण चंदन ने कहा कि क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल के लिए पंजाब व हिमाचल प्रदेश के किसानों को स्किल इंडिया के तहत नर्सरी लगाने की ट्रेनिंग देने के लिए सेंटर खोला जा रहा है, जहां पर दोनों राज्यों के एक- एक हजार किसानों को प्रशिक्षित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि पंजाब के कंडी क्षेत्र में शतावर, सर्पगंधा व मालकंगणी के लिए मॉडल नर्सरी स्थापित कर रहा है और इसके लिए ट्रेनिंग सेंटर खोलना प्रस्तावित है।

नर्सरी प्रबंधन की योजना

नेशनल मेडिसनल प्लांट बोर्ड की कार्यकारी अधिकारी डॉ. तनुजा नेसरी ने कहा कि बोर्ड नर्सरी तकनीक और प्रबंधन के लिए किसानों को प्रशिक्षित करने जा रहा है। बोर्ड ने इसके लिए एक योजना तैयार की है, जिसके तहत ग्रामीण स्तर तक किसानों को औषधीय पौधों की नर्सरी स्थापित करने के लिए मास्टर ट्रेनर तैयार किए जाएंगे, जो बाद में किसानों को प्रशिक्षित करेंगे। उन्होंने कहा कि किसानों की राह में आने वाली हर समस्या का बोर्ड समाधान करेगा।

यमुनानगर के धर्मवीर कम्बोज का कहना है कि हल्दी उत्पादन में कमाल करने वाले कर्नल पीसी राणा के लिए वह हल्दी से मोमबती बनाकर देंगे। उन्होंने हल्दी की प्रोसेसिंग में कर्नल राणा की मदद का भरोसा दिया।

कांगड़ा के कर्नल पीएस राणा और यमुनानगर के धर्मवीर की प्रतिभा ने बैठक में जमाए रंग

धर्मशाला की महफिल लूट कर ले गई 'हल्दी मैन' और 'मशीन मैन' की जोड़ी

धर्मशाला में आयोजित औषधीय पौधों के हितग्राहियों की एक दिवसीय बैठक के दौरान 'हल्दी मैन' और 'मशीन मैन' की जोड़ी ने महफिल को लूट लिया। हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिला से सम्बन्ध रखने वाले रिटायर्ड कर्नल पीसी राणा और हरियाणा के यमुनानगर के धर्मवीर की दोस्ती के सभी कायल हो गए। दरअसल नेशनल मेडीसनल प्लांट बोर्ड के श्रेत्रीय एवं सुगमता केंद्र की ओर से आयोजित एक कार्यक्रमों ने दोनों की मुलाकात हुई और पहली ही मुलाकात में दोनों एक दूसरे की प्रतिभा के कायल हो गए। धर्मशाला में आयोजित कार्यक्रम में अपने-अपने हुनर में माहिर इन दोनों की दोस्ती देखते ही बनती थी। दोनों ने अपने- अपने उत्पादों की प्रदर्शनी भी लगाई। कार्यक्रम में जहां दोनों ने अपनी- अपनी कामयाबी के अनुभव सांझा किए, वहीं एक- दूसरे की जम कर तारीफ की। कर्नल राणा ने जहां धर्मवीर को स्मृतिचिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया, वहीं धर्मवीर ने भी कर्नल राणा को स्मृतिचिन्ह प्रदान किया। धर्मवीर ने कर्नल राणा से वायदा किया कि वह उनके लिए हल्दी से बनी अगरबती तैयार करके देगा। हल्दी की खेती को लेकर सुर्खियां बटोर रहे कर्नल राणा को 'हल्दी मैन' के नाम से जाना जाता है, जबकि धर्मवीर को मशीन मैन' के तौर पर पहचान मिली है।

72 साल का कर्नल, 7 साल में बना हिमाचल का 'हल्दी मैन'

आरसीएफसी नॉर्थ जोगेंद्रनगर, फीचर सर्विस

हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिला के सोहरन गांव के रिटायर्ड कर्नल पीसी राणा की पहचान अब भारत के हल्दी मैन के तौर पर होती है। 72 साल की उम्र के कर्नल राणा ने हल्दी की उत्तम किस्म पर सात सालों तक काम किया आंध्र प्रदेश में ऑरगेनिक हल्दी की ऐसी किस्म विकसित करवाने में कामयाबी हासिल की है। यह हल्दी कम समय में तैयार होती है और गुणवता के मामले में भी उत्तम है। सेना के रिटायर्ड कर्नल राणा ने अपने मजबूत इरादों से जैविक विधि से हल्दी की खेती करने की दिशा में नई पहचान बनाई है। वे खुद की 80 कनाल भमि पर जैविक विधि से हल्दी की खेती कर रहे हैं, वहीं प्रदेश के 600 से ज्यादा किसानों को अपने साथ जोड़ कर प्रदेश में हल्दी की खेती को विस्तार देने में जुटे हैं। कर्नल राणा हल्दी को प्रोसेस कर विभिन्न उत्पाद तैयार कर रहे हैं। कर्नल राणा हल्दी की खेती के अलावा मछली पालन, मुर्गा पालन, गाय पालन, मसरूम उत्पादन और बागवानी भी करते हैं।

ऑर्गेनिक हल्दी का प्रमाण पत्र

कर्नल राणा की तैयार हल्दी को लैब परीक्षण कर ग्लोबल सर्टिफिकेशन सोसाइटी ने ऑर्गेनिक हल्दी का प्रमाण पत्र दिया है। कर्नल राणा ने हल्दी का जो बीज विकसित किया है, वह छह महीनों में फसल देता है और इसकी गुणवता में भी उच्च स्तरीय आंकी गई है। कर्नल राणा का कहना है कि उनका एक ही सपना है कि हिमाचल प्रदेश हल्दी उत्पादन में सिरमौर बने और थोड़े से पैसों वाली नौकरी के लिए शहर की तरफ जाने वाले युवा अपने खेतों में खुद का रोजगार हासिल करें और औरों को नोकरी देने वाले बनें।

खुद बीज देते हैं, उत्पाद खरीद लेते हैं

धर्मशाला में औषधीय पौधों की खेती के हितधारकों के लिए आयोजित बैठक में अपने उत्पादों की प्रदर्शनी सहित पहुंचे कर्नल राणा ने बताया कि उन्होंने आंध्र प्रदेश के प्रगतिशील किसान चंद्रशेखर से मिलकर हल्दी की खेती की पूरी जानकारी हासिल की और उसी किसान को ऑर्गेनिक बीज तैयार करने का काम दिया। उन्होंने बताया कि शुद्ध आर्गेनिक बीज को तैयार करने में दो साल का समय लगा। बीज तैयार होने पर15 क्विंटल बीज लेकर अपनी जमीन में हल्दी की खेती की शुरुआत की। नतीजे आशातीत रहने पर व न केवल खुद 80 कनाल भूमि हल्दी की खेती कर रहे हैं, बल्कि प्रदेश के किसानों को भी इस तरफ प्रेरित व प्रोत्साहित कर रहे हैं। कर्नल राणा ने बताया कि किसानों को वह हल्दी का बीज खुद उपलब्ध करवाते हैं और किसानों से हल्दी खरीदने के लिए करार भी करते हैं। उन्होंने बताया कि कांगड़ा, हमीरपुर, बिलासपुर, मंडी व ऊना के सैंकड़ों किसान उनके साथ हल्दी की खेती कर रहे हैं।

अहमदाबाद में बेची लाखों की हल्दी

कर्नल राणा कहते हैं कि पिछ्ले वर्ष तकरीबन एक टन हल्दी के बीज की बिजाई की थी, जिससे 7 महीने में 24 टन हल्दी की पैदावार हुई है। हल्दी को कर्नल राणा ने अहमदाबाद की मार्केट में बेचा , जहां इसका दाम 450 रुपये प्रतिकिलो के हिसाब से मिला है। कर्नल राणा का कहना है कि अगर प्रदेश में हल्दी की मार्केट तैयार हो जाती है तो किसानों के लिए हल्दी आय का साधन बन सकती है। वह हल्दी से तेल निकालने के लिए इसकी एक किस्म मेघा वन खेतों में उगा रहे हैं। इसका बीज भी तैयार किया जा रहा है। कर्नल राणा कहते हैं कि नौजवान खेती से जुड़ना नहीं चाहता। जो थोड़े से जुड़े हैं वे भी खेती छोड़ रहे हैं, क्योंकि ज्यादातर खेती वर्षा पर आधारित है। बन्दरों, जंगली जानवरों और आवारा पशुओं का आतंक है। ऐसे में उन्होंने हल्दी की की खेती के लिए किसानों को तैयार किया। उन्होंने बताया कि किसान हल्दी की खेती को लेकर उत्साहित हैं और उनका सपना है कि हिमाचल प्रदेश हल्दी उत्पादन के क्षेत्र में देश के सबसे बड़े उत्पादक के तौर पर अपनी पहचान बनाकर रहेगा।

8वीं पास जुगाड़ से मशीनें बना कर बना 'मशीन मैन'

हरियाणा के यमुनानगर जिले के दामला गांव के धर्मवीर कंबोज जुगाड़ से ऐसी मशीनें बनाईं जिन्होंने औषधीय पौधों के प्रसंस्करण की दिशा में क्रांतिकारी परिवर्तन किए व जड़ी-बूटियों को प्रोसेस कर बेचने से कमाई कई गुणा बढ़ गई। उन्होंने एक मल्टीपरपज प्रोसेसिंग मशीन बनाई है, जो तरह के उत्पादों की प्रोसेसिंग कर सकती है। मशीन से आंवला, अमरूद, स्ट्रॉबेरी, गाजर, अदरक, लहसुन की प्रोसेसिंग की जा सकती है और सब्जियों का छिलका उतारने, कटाई करने, उबालने और जूस बनाने का काम भी किया जाता है। मशीन का उन्होंने पेटेंट भी कराया है। वे अब तक ऐसी सैंकड़ों मशीनें बेच चुके हैं। अफ्रीका और नेपाल ने भी उनसे ऐसी मशीनें खरीदी हैं। उन्होंने एक वेजीटेबल कटर मशीन भी बनाई है जो एक घंटे में 250 किलो सब्जियों को काट सकती है। उन्होंने फलों, सब्जियों, इलायची और जड़ी-बूटियों को सुखाने वाली कम कीमत की एक मशीन भी बनाई है। धर्मवीर ने मोबाइल सिंचाई मशीन बनाई है। मशीन को राष्ट्रपति भवन में प्रदर्शित किया। इसको रेन टेंकर नाम दिया गया। उन्होंने सोलर बैटरी से चलने वाली झाडू मशीन तैयार की है। इस मशीन का निर्माण करने में घरेलू सामान का प्रयोग किया गया है। भविष्य में इस मशीन को गोबर उठाने के कार्य में भी प्रयोग किया जाएगा।

मशीनों ने दिलाई देश- विदेश में पहचान

औषधीय पौधों के हितधारकों की बैठक में अपनी बनाई मल्टीपर्पज मशीन के साथ पहुंचे धर्मवीर ने बताया कि उन्होंने सपने में भी नहीं सोचा था कि एक दिन उनकी बनाई मशीनें कृषि आर्थिकी का चेहरा बदलने में कारगर सिद्ध होंगी। वे कहते हैं कि इन मशीनों के निर्माण ने उन्हें न केवल देश, बल्कि देश से बाहर भी मान और सम्मान दिया है और वह एक कृषक टीचर के तौर पर पहचान बनाने में कामयाब रहे हैं। सफल उद्यमी, प्रगतिशील किसान, वैज्ञानिक और कृषि ट्रेनर के तौर पर देश- विदेश में अपनी पहचान रखते हैं। उनका खुद का कारोबार अब करोड़ों में पहुंच चुका है। वे जड़ी- बूटियों की खेती और उनकी प्रोसेसिंग से एक करोड़ रूपए तक सलाना कमा रहे हैं।

मशीनों के लिए मिले हैं कई सम्मान

धर्मवीर कंबोज ने बताया कि उन्हें वर्ष 2009 में कृषि क्षेत्र में उत्कृष्ठ कार्य के लिए राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल ने सम्मानित किया। वर्ष 2010 में केंद्रीय कृषि मंत्री शरद पवार ने फार्मर साइंटिस्ट का अवार्ड दिया। वर्ष 2013 में फूड प्रोसेसिंग मशीन बनाने पर नेशनल अवार्ड मिला। मल्टीपरपज मशीन बनाने पर वर्ष 2015 में जिम्बाब्वे के राष्ट्रपति रॉबर्ट मुगांबे ने उनको सम्मानित किया है। देश की कई सामाजिक व व्यापारिक संस्थाएं भी उन्हें सम्मानित कर चुकी हैं।

महिलाओं को प्रशिक्षण दे रहे धर्मवीर

धर्मवीर का कहना है कि अब फार्मर टीचर के रोल में हैं। वे सेल्फ हेल्प ग्रुप की महिलाओं को घरेलू स्तर पर फूड प्रोसेसिंग के लिए निशुल्क प्रशिक्षण देते हैं। वे देश के विभिन्न भागों में अब तक पांच हजार से ज्यादा महिलाओं को प्रशिक्षित कर चुके हैं। उनके खुद के कारोबार से 35 महिलाएं जुड़ी हैं। वे कहते हैं कि बचपन में मां को जड़ी-बूटियां उगाते देखा था। दिल्ली में ऑटो चलाने के दौरान जड़ी- बूटियों की मंडी में आना- जाना लगा रहता था। इसी वजह से मन में जड़ी- बूटियों की खेती करने को लेकर एक सोच थी।

प्रोसेसिंग से वैल्यू एडिशन करने में माहिर

धर्मवीर कम्बोज अपने खेतों में अकरकरा, अश्वगंधा, सफेद मूसली, ब्रह्मी, बच, एलोवेरा, कालमेघ, गिलोए, तुलसी व आंवला की खेती करने के साथ ही प्रोसेसिंग का काम करते है। अपनी फसल को प्रोसेसिंग कर तुलसी का तेल, सोयाबीन का दूध, हल्दी का अर्क, गुलाब जल, जीरे का तेल, पपीते और जामुन का जैम, अमरूद जूस, आइसक्रीम और टॉफी बनाते हैं।

प्रिक्योरमेंट सार्टिफिकेट में अड़चन

जड़ी- बूटियों की खेती का जिम्मा तो आयुष विभाग के पास है, लेकिन लीगल प्रिक्योरमेंट सार्टिफिकेट वन विभाग की जारी करता है। विभागों में आपसी तालमेल के अभाव में यह सार्टिफिकेट हासिल करना किसानों के लिए कठिन काम है।

वाइल्ड कलेक्शन की रॉयल्टी और लीगल प्रिक्योरमेंट सार्टिफिकेट से जुड़े मुद्दों के हों तत्काल समाधान

उद्योग जगत की चिंता, अब बहुत सी जड़ी- बूटियां बाजार में नहीं मिलती

आरसीएफसी नॉर्थ जोगेंद्रनगर, फीचर

आयुर्वेद उद्योग की सबसे बड़ी चिंता यह है कि बहुत सी जड़ी- बूटियां बाजार में नहीं मिलती हैं। धर्मशाला में आयोजित औषधीय पौधों के हितधारकों की बैठक में आयुष हर्ब्स के मालिक डॉ. जितेंद्र सोढ़ी ने कहा कि बीस हजार आयुर्वेद कंपनियों को कच्चे माल की जरूरत होती है, लेकिन यह कच्चा माल आसानी से उपलब्ध नहीं है। उन्होंने कहा कि ऐसी मंडियों का अभाव है, जहां जड़ी- बूटियां आसानी से उपलब्ध हों। उन्होंने कहा कि ऐसा कोई प्लेटफार्म नहीं है, जहां से दवा उत्पादक गुणवता वाली सभी प्रकार की जड़ी- बूटियां खरीद सकें। उन्होंने ऐसी मंडियों को समय की जरूरत बताते हुए जल्द खोलने की मांग की।

प्रिक्योरमेंट सार्टिफिकेट

डॉ. सोढ़ी ने कहा कि लीगल प्रिक्योरमेंट सार्टिफिकेट की बाध्यता की शर्त किसानों की राह की सबसे बड़ी रुकावट है। जड़ी- बूटियों की खेती का जिम्मा तो आयुष विभाग के पास है, लेकिन लीगल प्रिक्योरमेंट सार्टिफिकेट वन विभाग की ओर से जारी किया जाता है। दोनों विभागों में आपसी तालमेल के अभाव में यह सार्टिफिकेट हासिल करना किसानों के लिए कठिन काम है। वनों से कलेक्ट की जाने वाली जड़ी- बूटियों की वन विभाग को रॉयल्टी देने के बाद भी चक्कर खाने को मजबूर होना पड़ता हैं। उन्होंने सुझाव दिया कि रॉयल्टी नेशनल मेडिसनल प्लांट बोर्ड रॉयल्टी कलेक्ट करे।

पहाड़ के अपने मसले

डॉ. सोढ़ी ने कहा कि हिमालयी क्षेत्र जहां उच्च मूल्य वाले औषधीय पौधों की खेती हो सकती है, वहां के किसानों की अपनी समस्याएं हैं। इन क्षेत्रों में ज्यादातर भूमि वन भूमि है, वहीं किसानों के पास छोटी भू जोतें हैं। वन भूमि पर जड़ी- बूटियों की खेती के लिए स्थानीय लोगों को अधिकार देने जैसे पेचीदा मुद्दों के हल खोजना अभी तक बाकि हैं। आयुर्वेद का बाजार तेजी से आकार ले रहा है व जड़ी- बूटियों की मांग तेजी से बढ़ रही है, लेकिन विपणन की व्यवस्था न के बराबर है।

तालमेल की भारी कमी

डॉ. सोढ़ी ने कहा कि जैव विविधिता के संरक्षण व जड़ी- बूटियों की मूल्य श्रृखंला को मजबूत करने के लिए सबसे पहले तो आयुष विभाग को वन, स्वास्थ्य, कृषि, बागवानी, राजस्व और सहकारिता विभागों को साथ लाने की जरूरत है। विभागों में तालमेल की कमी भी एक बड़ा कारण है कि किसान की औषधीय पौधों की उपज बाजार तक नहीं पहुंच पाती है। उन्होंने कहा कि जब तक जड़ी- बूटियों को खरीदने- बेचने के लिए स्थानीय स्तर पर मंडिया विकसित नहीं होंगी, किसान और उद्योग को परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। नेशनल मेडिसनल बोर्ड को इस दिशा में गंभीर प्रयास करे।

विशेष मंडियां व कलेक्शन सेंटर खोलने की योजना

नेशनल मेडिसनल प्लांट बोर्ड की मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. तनुजा नेसरी ने बताया कि औषधीय फसल को बेचने के 'ई-चरक' वेबसाइट को हिंदी, अंग्रेजी और कन्नड़ भाषा में तैयार किया गया है और मोबाइल एप में छह भाषाओं की सुविधा दी गई है। किसी क्षेत्र का व्यापारी अपनी सुविधा के अनुसार किसान की फसल खरीद सकता है। विशेष मंडियां व कलेक्शन सेंटर खोलने की योजना पर काम चल रहा है। लीगल प्रिक्योरमेंट को लेकर वन विभाग और बायो डायवर्सिटी बोर्ड से सम्बन्धित कुछ मुद्दे हैं, जिन्हें सुलझाने के लिए पॉलिसी मेकिंग लेबल पर प्रयास किया जा रहा है।

सोवा- रिग्पा के अधिकांश सिद्धांत एवं अभ्यास आयुर्वेद के समान

तिब्बती चिकित्सा एवं ज्योतिष संस्थान, धर्मशाला के चिकित्सकों ने बैठक में जहां तिब्बती चिकित्सा पद्धति 'सोवा-रिग्पा' से जड़े साहित्य व उत्पादों की प्रदर्शनी आयोजित की, वहीं इस पद्धति को लेकर प्रेजेंटेशन भी दी। चिकित्सकों ने कहा कि कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों के सफल उपचार के चलते तिब्बती आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति को दुनिया भर में तेजी से अपनाया जाने लगा है।

अधिकृत चिकित्सा पद्धति

सदियों से चली आ रही प्राचीन तिब्बती चिकित्सा पद्धति आमची को भारतीय संसद ने कानून बनाकर 'सोवा-रिग्पा' के नाम से वैधानिक अस्तित्व दिया है। आयुर्वेद, योगा, नैचुरोपैथी, यूनानी एवं होम्योपैथी के बाद 'सोवा-रिग्पा' आयुष

विभाग की छठी अधिकृत चिकित्सा पद्धति बन गई है। वर्तमान में इसके अधीन 383 चिकित्सक और चार तिब्बती मेडिकल कॉलेज आते हैं। इस विधा में नब्ज, चेहरा, जीभ, आंखे और सुबह के यूरिन की जांच से रोग के लक्षणों का पता लगाया जाता है।

भारत में सिक्किम, अरूणाचल प्रदेश, पश्चिम बंगाल के दार्जलिंग, हिमाचल प्रदेश के लाहौल एवं स्पीति तथा जम्मू एवं कश्मीर के लद्दाख जैसे पहाड़ी क्षेत्रों में इस चिकित्सा पद्धति से अधिकतर रोगों का उपचार किया जाता है। बैठक में शामिल चिकित्सकों ने बताया कि सोवा- रिग्पा के अधिकांश सिद्धांत एवं अभ्यास आयुर्वेद के समान है। बौद्ध धर्म एवं अन्य तिब्बती कला व विज्ञान के साथ सोवा-रिग्पा का प्रभाव पड़ोसी हिमालयी क्षेत्रों में फैला। उन्होंने बताया कि 'सोवा-रिग्पा' के चिकित्सक देखकर, छूकर और पूछकर इलाज करते हैं। इलाज में जड़ी बूटियों का प्रयोग किया जाता है। इलाज लम्बा चलता है। मेडिनेशन भी इलाज का एक हिस्सा है।

एग्जीबीशन
पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने सोलर ड्रायर प्रदर्शित किया, जो कम समय में जड़ी- बूटियों को सुखाने में सहयोगी है। इससे गुणवत्ता में कोई फर्क नहीं पड़ता।

यमुनागर के धर्मवीर कम्बोज ने अपनी मल्टी पर्पज मशीन को प्रदर्शित किया, जो जूस बनाने के अलावा छिलका उतारने सहित कई काम करती है।

राष्ट्रीय पादप बोर्ड की कार्यकारी अधिकारी डॉ. तनुजा नेसरी ने हर स्टॉल पर जाकर हासिल की जानकारी

औषधीय पौधों के सभी हितधारकों ने प्रदर्शनी में दर्ज करवाई उपस्थिति

आरसीएफसी नॉर्थ जोगिंद्रनगर, फीचर सर्विस

उत्तरी भारत के औषधीय पौधों के हितधारकों के लिए धर्मशाला के होटल डी पोलो में आयोजित बैठक के दौरान होटल परिसर में औषधीय पौधों की वैल्यूचेन से जुड़ी प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी में औषधीय पौधों, प्रोसेसिंग में प्रयोग होने वाली मशीनरी व औषधीय पौधों से तैयार किए गए उत्पादों को प्रदर्शित किया गया। प्रदर्शनी का शुभारंभ नेशनल मेडीसनल प्लांट बोर्ड की मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. तनुजा नेसरी व राष्ट्रीय आयुर्वेदिक संस्थान की प्रोफेसर मीता कोटेचा ने किया। उन्होंने प्रदर्शनी के हर स्टॉल पर जाकर हर उत्पाद के बारे में जानकारी हासिल की। आयुर्वेद संस्थान जोगेंद्रनगर की ओर से हर्बल गार्डन व हरबेरियम को प्रदर्शित किया गया। प्रदर्शनी में तलबाड़ा की 'उन्नति' सोसायटी ने जड़ी- बूटियों से तैयार अपने उत्पाद प्रदर्शित किए तो कांगड़ा के कर्नल पीसी राणा ने ऑर्गेनिक हल्दी से तैयार अपने उत्पादों का स्टॉल लगाया। पंजाब के कंडी क्षेत्र की महिलाओं की ओर से जड़ी- बूटियों से बनाए गए उत्पाद भी प्रदर्शनी में खूब छाए रहे, वहीं हिमालय बक बीट से बने उत्पाद भी लोगों के आकर्षण का केंद्र रहे। रोहड़ू, चौतड़ा व भरमौर की सोसायटियों ने भी जड़ी- बूटियों से निर्मित अपने उत्पादों को प्रदर्शनी में पेश किया। प्रदर्शनी में जड़ी-बूटियों की प्रोसेसिंग ने सम्बन्धित मशीनरी भी प्रदर्शित की गई। यमुनानगर के धर्मवीर कम्बोज ने जड़ी- बूटियों से जूस बनाने वाली अपनी मल्टीपर्पज मशीन को प्रदर्शित किया तो पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक मनमोहन सिंह व उनके सहयोगी ने जड़ी- बूटियां सुखाने में काम आने वाले अपने सोलर ड्रायर को प्रदर्शित किया। इस प्रदर्शनी में तिब्बती चिकित्सा एवं ज्योतिष संस्थान, धर्मशाला के चिकित्सकों ने तिब्बती चिकित्सा पद्धति 'सोवा-रिग्पा' से जड़े साहित्य व उत्पादों की प्रदर्शनी आयोजित की। कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों के सफल उपचार के चलते तिब्बती आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धति को दुनिया भर में तेजी से अपनाया जाने लगा है। प्रदर्शनी में आए मेहमानों ने 'सोवा-रिग्पा' में खासी रूचि दिखाई। नेशनल मेडिसनल प्लांट बोर्ड के क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तरी भारत, जोगेंद्रनगर के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. अरूण चंदन ने कहा कि प्रदर्शनी में औषधीय पौधों के सेक्टर से जुड़े सभी हितधारकों से सम्बन्धित उत्पाद प्रदर्शित किये गए। नेशनल मेडीसनल प्लांट बोर्ड की कार्यकारी अधिकारी डॉ. तनुजा नेसरी ने कहा कि ऐसी प्रदर्शनियों से जहां हितधारकों को औषधीय खेती के क्षेत्र में हो रहे नवाचारों का पता चलता है, वहीं उनके उत्पादों को भी पहचान मिलती है। उन्होंने इस प्रदर्शनी के सफल आयोजन के लिए आयोजकों की पीठ थपथपाते हुए कहा कि भविष्य में ऐसे प्रयास जारी रहने चाहिए।

आयुर्वेद संस्थान जोगेंद्रनगर की ओर से लगाई गई हर्बल गार्डन एवं हरबेरियम की प्रदर्शनी का निरीक्षण करतीं नेशनल मेडिसनल प्लांट बोर्ड की मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. तनुजा नेसरी और राष्ट्रीय आयुर्वेदिक संस्थान की प्रोफेसर मीता कोटेचा। उन्होंने प्रदर्शनी को सराहते हुए विभाग के विजिटर रजिस्टर पर कमेंट्स भी किए।

पंजाब के तलवाड़ा में संचालित की जा रही 'उन्नति' सस्था की ओर से लगाई गई प्रदर्शनी में उनके उत्पादों की जानकारी लेतीं मुख्यातिथि।

यमुनानगर के धर्मवीर कम्बोज ने अपनी मल्टीपर्पज मशीन को प्रदर्शित किया और इससे फ्रैश जूस तैयार कर बताया।

हल्दी मैन के नाम से मशहूर कर्नल पीसी राणा ने हल्दी से बने उत्पादों को प्रदर्शित किया।

डॉ. नेसरी ने प्रदर्शनी में स्थापित तिब्बतियन मेडीसिन के स्टाल पर इस चिकित्सा पद्धति के बारे में जानकारी ली।

हिमालयन बक बीट से तैयार उत्पादों के बारे में जानकारी हासिल करतीं डॉ. तनुजा नेसरी व अन्य अतिथिगण।

प्रदर्शनी के दौरान आयुर्वेद का अध्ययन करने वाले स्टूडेंट्स ने भी हिस्सा लिया और वैल्यूचेन को समझने के प्रयास किए।

कंडी क्षेत्र में महिलाओं के संगठन की ओर से जड़ी बूटियों की खेती व उनसे उत्पाद बनाने के उनके प्रयासों को खूब सराहा। उन्होंने पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की ओर से तैयार किए गए सोलर ड्रायर के बारे में भी विस्तार से जानकारी हासिल की। उन्होंने कहा कि प्रोसेसिंग मशीनरी की खरीद पर भी नेशनल मेडिसनल प्लांट बोर्ड वित्तीय अनुदान दे रहा है।

NATIONAL MEDICINAL PLANTS BOARD
Plants For Health & Prosperity

E-Charak
e-Channel for Herbs, Aromatic, Raw Material & Knowledge

जड़ी-बूटी बाज़ार

हर माह प्रकाशित/प्रसारित

www.rcfcnorth.in ■ कुल पृष्ठ : 8 ■ वर्ष 2, अंक 9 ■ 1 सितंबर से 30 सितंबर 2019

क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तर भारत, आयुष मंत्रालय भारत सरकार, पिन-175015, दूरभाष-01908-222970 (टेलीफैक्स), 9418010624 (मोबाइल) email:rcfcnorth@gmail.com

क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र ने 6 औषधीय पौधों का क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल किसानों को उपलब्ध करवाया

उत्तरी भारत में पहली बार स्थापित हुई 'दिव्य' जड़ी-बूटियों की सात नर्सरियां

आरसीएफसी नार्थ जोगेंद्रनगर, फीचर सर्विस

नेशनल नेशनल मेडीसनल बोर्ड के क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तरी भारत,जोगेंद्रनगर के प्रयासों से उत्तरी भारत के किसानों ने जड़ी-बूटियों की नर्सरी लगाने की दिशा में कदम बढ़ाए हैं। यह पहला मौका है, जब उत्तरी भारत में विभिन्न तरह की जड़ी- बूटियों की गुणवता वाली पौध तैयार करने के लिए बड़े स्तर पर प्रयास हुए हैं। पहली बार मेडीसनल प्लांट्स के विशेषज्ञों की देख- रेख में जड़ी- बूटियों की सात नर्सरियां स्थापित हुई हैं और नर्सरी तकनीक व नर्सरी प्रबंधन के लिए किसान आगे आए हैं। न केवल किसानों को जड़ी- बूटियों की पौध तैयार के लिए प्रोत्साहित किया, बल्कि इसके लिए जरूरी इनपुट्स भी उपलब्ध करवाए हैं। विशेषज्ञों ने समय- समय पर नर्सरियों का निरीक्षण कर क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल तैयार किया है। इन नर्सरियों में उत्तरी भारत में पैदा होने वाली छह दिव्य औषधियों मोरिंगा, यलो शतावर, गिलोये, सम्मी, अतीस व सर्पगंधा के लाखों पौधे तैयार किए गए हैं।

प्लांटिंग मैटीरियल के लिए करार

ऐसा भी पहली ही बार हुआ है कि जो किसान, संस्थाएं अथवा फार्मर प्रोड्यूसर कंपनियां जड़ी-बूटियों की नर्सरी स्थापित के लिए आगे आए हैं, पौध बेचने के लिए किसानों से उनके करार भी करवाए गए हैं। क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तरी भारत, जोगेंद्रनगर के उपनिदेशक डॉ. सौरभ शर्मा कहते हैं कि बड़े पैमाने पर तैयार किया क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल रोपने के लिए हिमाचल, उत्तराखंड व उत्तर प्रदेश में भेजा जा चुका है। क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तरी भारत, जोगेंद्रनगर के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. अरूण चंदन का कहना है कि किसानों को गुणवता वाला प्लांटिंग मैटीरियल मिलेगा तो पैदावार अच्छी होगी और पैदावार अच्छी होने से किसान जड़ी- बूटियों की खेती की ओर अग्रसर होंगे। उन्होंने बताया कि नर्सरी प्रबंधन से ग्रामीण स्तर पर रोजगार के अवसर भी सृजित हुए हैं। वे कहते हैं कि स्किल इंडिया के तहत ट्रेनिंग सेंटर खोल कर किसानों को वाइल्ड कलेक्शन और नर्सरी तकनीक व प्रबंधन में दक्ष किया जाएगा। जिला स्तर पर जड़ी- बूटियों की खरीद- फरोख्त के लिए कलेक्शन सेंटर खुलना प्रस्तावित हैं।

सीमांत किसानों के लिए वरदान बन सकता है नर्सरी प्रबंधन

नर्सरी तैयार करने में जड़ी- बूटियों की बाजार में मांग, उनकी कीमत, क्षेत्र की जलवायु और औषधीय पौधों की मांग को ध्यान में रखा गया है। क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तरी भारत, जोगेंद्रनगर के वैज्ञानिकों ने जड़ी- बूटियों के पौधों में सबसे ज्यादा जोर सर्पगंधा को उगाने पर दिया गया है। उत्तराखंड के रूद्रपुर और हिमाचल प्रदेश के ऊना जिला के जसवां बेहड़ में अत्याधुनिक नर्सरियां स्थापित कर दोनों जगह सर्पगंधा की पौध तैयार की गई है। सर्पगंधा के दो लाख पौधे, यलो शतवार व सतावर के 65 हजार पौधे, मोरिंगा के पचास हजार पौधे, गिलोय के बीस हजार पौधे, सम्मी के पंद्रह हजार पौधे व अतीस के तीस हजार से ज्यादा पौधे किसानों को बांटे जा चुके हैं। क्षेत्रीय निदेशक डॉ. अरूण चंदन का कहना है कि किसानों को घर के पास क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल मिले, इसी को ध्यान में रखते हुए सात संस्थाओं को नर्सरी तकनीक एवं प्रबंधन के लिए तैयार किया। उन्हें गुणवता वाले बीज उपलब्ध करवा कर नर्सरी प्रबंधन में तकनीकी सहयोग प्रदान किया गया।

नर्सरी में चमका नाम

ऊना के बंजर कहे जाने वाले जसवां बेहड़ में अत्याधुनिक नर्सरी स्थापित कर इंडकेयर ट्रस्ट नई दिल्ली की ट्रस्टी रीवा सूद ने नर्सरी प्रबंधन में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। उन्होंने ऊना के ऐसे पत्थरीले क्षेत्र में, जहां सिंचाई सुविधाओं का अभाव है, बंदरों का आतंक है, सर्पगंधा की अत्याधुनिक नर्सरी तैयार करने में कामयाबी हासिल की है। उन्होंने कई औषधीय पौधों का क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल तैयार किया है। क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तरी भारत के सहयोग से उन्होंने सर्पगंधा का क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल पंजाब के रोपड़ क्षेत्र के किसानों को उप्लब्ध करवाया है। रीवा सूद का कहना है कि इंडकेयर ट्रस्ट नर्सरी प्रबंधन और औषधीय पौधों की खेती के लिए स्थानीय किसानों को अपने साथ जोड़ कर बड़े पैमाने से औषधीय कृषिकरण के लिए तैयार है।

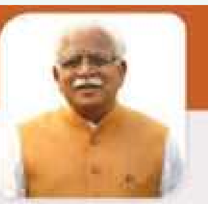

मनोहर लाल
मुख्यमंत्री हरियाणा,चंडीगढ़

यह हर्ष का विषय है कि भारतीय चिकित्सा पद्धति अनुसंधान संस्थान मंडी के क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तर भारत द्वारा गत एक वर्ष से नियमित रूप से मासिक पत्रिका 'जड़ी बूटी बाजार' का प्रकाशन किया जा रहा है और केंद्र द्वारा शीघ्र ही पत्रिका का नया अंक प्रकाशित किया जाएगा। किसान पारम्परिक खेती के साथ जड़ी- बूटियों और औषधीय पौधों की पैदावार करके अधिक आय अर्जित कर सकते हैं। पत्रिका 'जड़ी बूटी बाजार' का प्रकाशन देश के किसानों की आय को दोगुना करने और उन्हें फसल विविधिकरण के लिए प्रोत्साहित करने के लिए किए जा रहे प्रयासों को संबल प्रदान करेगी।

आशा है कि यह पत्रिका किसानों को जड़ी- बूटियों व औषधीय पौधों की खेती से जुड़े विविध पहलुओं और उनकी बिक्री के लिए उपलब्ध बाजार के बारे में व्यापक जानकारी उपलब्ध करवाएगी।

मैं मासिक पत्रिका 'जड़ी बूटी बाजार' के सफल प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

एमओयू

विनायक हर्बल

- पादप स्वयं सहायता समूह' ने 40 मीट्रिक टन सरपंखा बेची।
- पादप स्वयं सहायता समूह' को 6 लाख का शुद्ध लाभ
- 'राज हर्बल बायोटेक' ने 1 करोड़ रुपये का कारोबार किया।
- 'विनायक हर्बल' ने दो करोड़ रुपये का कारोबार किया।
- 2020 तक 50 करोड़ रुपयों के टर्न ओवर का सपना।

6 वर्षों में 12 जिलों में औषधीय पौधों की मूल्य श्रृंखला मजबूत करने के लिए 100 करोड़ रुपए का निवेश

राजस्थान की विनायक हर्बल जोड़ेगी हिमाचल में जड़ी-बूटियों की वैल्यूचेन

आरसीएफसी नार्थ जोगेंद्रनगर, फीचर सर्विस

देवभूमि हिमाचल प्रदेश के बहुमुखी विकास को मद्देनजर रखते हुए जयराम सरकार द्वारा नवम्बर में आयोजित की जाने वाली ग्लोबल इन्वेस्टर्स मीट से पहले मनाली में आयोजित मिनी कॉन्क्लेव में राजस्थान की हर्बल कंपनी विनायक हर्बल ने हिमाचल प्रदेश की वनौषधि संपदा के टिकाऊ उपयोग, उच्च हिमालय क्षेत्रों के पौधों के कृषिकरण, प्रसंस्करण, शोध, अनुसंधान एवं मूल्य संवर्द्धन की दिशा में एक महत्वकांक्षी योजना में निवेश की पहल की है। विनायक हर्बल के सीईओ राकेश चौधरी ने इस परियोजना के अनुबंध पर हस्ताक्षर किए। मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर ने विनायक हर्बल को सरकार की ओर से हर सम्भव सहयोग एवं सहायता का भरोसा जताया।

वैज्ञानिक प्रौद्योगिकियों पर जोर

इस एमओयू के बाद विनायक हर्बल आगामी 6 वर्षों में हिमाचल प्रदेश के 12 जिलों में औषधीय पौधों की मूल्य श्रृंखला को मजबूत करने के लिए 100 करोड़ रुपए का निवेश करेगी। मूल्य संवर्द्धन एवं प्रसंकरण में विनायक हर्बल द्वारा उच्च वैज्ञानिक प्रौद्योगिकियों जैसे फ्रिज डॉयिंग, स्प्रे डॉयिंग, सोलर तकनीक इत्यादि का उपयोग किया जाएगा। विनायक हर्बल की इस महत्वाकांक्षी योजना से न सिर्फ हिमाचल प्रदेश के एक हजार से अधिक किसानों के लिए रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे, बल्कि भारी मात्रा में राजस्व की भी प्राप्ति होगी।

रोपण सामग्री होगी उपलब्ध

राजस्थान के नागौर जिले के कुचामनसिटी के छोटे से गांव राजपुरा से निकली कंपनी विनायक हर्बल देश में वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई औषधीय पौधों की उच्च किस्मों की रोपण सामग्री हिमाचल प्रदेश के किसानों को उपलब्ध करवाएगी। इस अभियान के तहत कुटकी, कुठ, पुष्करमूल, सुगंधबाला, जटामासी, सालम पंजा, वायविडिंग, ज्योतिषमति सहित बहुमूल्य जड़ी- बूटियों पर कंपनी का फोकस रहेगा। कंपनी औषधीय पौधों के अनुसंधान के लिए देश के शीर्ष अनुसंधान संस्थानों एवं संबंधित विभागों के साथ भविष्य में अनुबंध भी करेगी और परियोजनाएं भी आमंत्रित करेगी। इस पहल से कंपनी से जुड़ी 70 से अधिक फार्मेसियों को उच्चकोटि की हिमालयी जड़ी-बूटियां उपलब्ध होंगी। राकेश चौधरी बताते हैं कि उन्होंने पंजाब के किसानों के साथ भी क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल व फसल खरीद के लिए करार किए हैं।

1000 से अधिक किसानों के लिए रोजगार के नए अवसरों का सृजन

छोटे कदमों से हासिल की बड़ी कामयाबी

साल 2007 में राकेश ने 'मारवाड़ औषधीय पादप स्वयं सहायता समूह' नाम से अपना स्वयं सहायता समूह गठित किया। एलोवेरा की सप्लाई के दौरान मुंबई की एक पार्टी संपर्क में आई और गांव में फैक्ट्री लगाने का ऑफर दिया। फैक्ट्री का काम शुरू हो गया। ये वो दौर था जब उनके पास 90 महिला कर्मचारी और 13 पुरुष काम करते थे। इस दौरान राकेश ने आंवला और अन्य किस्मों पर भी अपना ध्यान केंद्रित किया। स्वामी बाबा रामदेव की दिव्य योग फार्मेसी और पतंजलि आयुर्वेद को जड़ी- बूटियां सप्लाई कीं। हिमालय, एम्ब्रोसिया, गुरुकुल फार्मेसी तक कच्चा माल जाने लगा। आज 250 किसान परिवार सीधे तौर पर उनसे जुड़े हैं और 150 से ज्यादा से ज्यादा किसान अपनी उपज बेचने और दूसरी तकनीकी मदद के लिए उनके पास आते हैं। उनके प्रयासों से राजस्थान के 11 शुष्क जिलों के किसानों का अच्छा नेटवर्क विकसित हो चुका है, जो औषधीय पौधों की खेती करते हैं। राकेश चौधरी अश्वगंधा, एलोवेरा, गोखरू बड़ा, छोटा गोखरू, बड़ी कंटकारी, काकनाश (बिच्छूफल), अरडू, नीम, सहजन, रामा तुलसी, श्यामा तुलसी, शतावर, भूमि आंवला, गूगल, सरपूंखा (धमासा) की खेती कर रहे हैं। 'मारवाड़ औषधीय पादप स्वयं सहायता समूह ने 2017-18 में 40 मीट्रिक टन सरपंखा ड्रग कंपनी को बेचकर 6 लाख रुपए का शुद्ध मुनाफा कमाया। उनके बड़े भाई राजेश चौधरी की राज अर्बल बायोटेक ने 2016-17 में 1 करोड़ रुपये का कारोबार किया। राकेश की विनायक हर्बल ने 2017-18 में दो करोड़ रुपये का कारोबार किया। वर्ष 2020 तक उनका 50 करोड़ रुपयों के टर्न ओवर का सपना है। राकेश कहते हैं कि वह जड़ी- बूटियों की खेती में किसानों के बीच बिचैलियों और ट्रेडर्स का खात्मा चाहते हैं।

एक दशक की मेहनत का असर

राजस्थान की कुचामन सिटी के राजपुरा गांव में रहने वाले राकेश कुमार चौधरी राजस्थान में औषधीय खेती किंग हैं। 16 सितंबर 1983 को राजपुरा गांव में पैदा हुए राकेश ने गांव के सरकारी स्कूल पढ़ कर आगे चलकर बीएससी, बीसीए और बीएड किया, लेकिन पर्यावरण चेतना एवं शोध संस्थान के संस्थापक एवं मरुधर हर्बल सीड के संचालक डॉ. गोपाल चौधरी से संपर्क में आने के बाद औषधीय खेती व प्रोसेसिंग की ओर मुड़ गए। उन्होंने मेडिसिनल प्लांट बोर्ड कार्यालय में अपना पंजीकरण करवाकर काम शुरू किया। 2005 में उन्होंने अपने 14 जानकारों के परियोजना प्रस्ताव मेडीसनल प्लांट बोर्ड में जमा करवाए। कलिहारी, सफेद मुसली व स्टीविया की खेती की, लेकिन सारी फसलें चौपट हो गईं। फिर मुलैठी की खेती की जिसने बेहतरीन फसल दी और कामयाबी का स्वाद चखा। राकेश चौधरी ने वर्ष 2007 में किसानों से औषधीय पौधों की खेती करवाने व फार्मेसियों को बेचने पर काम शुरू किया। सबसे पहला फोकस एलोवेरा की खेती पर किया। पूरे राज्य में घूमने पर 20-22 किसान मिले, जिन्होंने एलोवेरा की खेती कर रखी थी। सब नुकसान में थे, क्योंकि कोई खरीददार नहीं था। ऐसे में क्वालिटी प्लांटिंग मैटेरियल खुद देकर और फसल खरीद के लिए करार कर राकेश ने किसानों को खेती के लिए तैयार किया। वर्ष 2007 तक उनके साथ 62 किसान जुड़ चुके थे। सहारनपुर के मनीष मित्तल एलोवेरा की खरीद में रुचि रखते हैं। उनसे संपर्क से नई राह खुली और मनीष मित्तल ही उनके उत्पादों के पहले ग्राहक बने। पूरे राजस्थान में डेढ़ महीने तक किसानों से जितना एलोवेरा मिल सका, खरीद कर आगे बेचा। एक किसान विद्याधर ढाका से मुलाकात हुई तो पता चला किसान ठगे गए थे, इसलिए एलोवेरा नहीं लगाना चाहते थे। राकेश चौधरी के कहने पर विद्याधर ने फिर से 30 बीघा खेत में एलोवेरा लगाया। एलोवेरा के मुनाफा कम जरूर था, पर काम की शुरुआत शानदार हो गई।

आयुर्वेद में विश्वगुरू हम

राकेश चौधरी कहते हैं कि हमें जड़ी-बूटियों की वैल्यू को समझना होगा। जड़ी-बूटियां अब जंगलों तक सीमित नहीं रहने वाली हैं। जड़ी- बूटियों की वजह से देश की तक़दीर संवरने का समय आ गया है। भारत आयुर्वेद में विश्वगुरु है और हमें विश्वगुरू वाली छवि को पुनर्जीवित करना होगा।

कारोबार के पक्के नियम

राकेश चौधरी 'गुड एग्रीकल्चर कलेक्शन प्रेक्टिस' के नियमों के तहत कार्य करते हैं। फसलों की हायजिन तरीके से कटाई व सस्टेनेबल हार्वेस्टिंग की जाती है। फसल काटने से लेकर सुखाने, पैकिंग की ट्रेनिंग देते हैं और किसानों को फसल कटाई की मशीनें मुहैया करवाते हैं।

अतिरिक्त आय की कोशिश

राकेश चौधरी कहते हैं कि एक हेक्टेयर में एलोवेरा की खेती से ही किसान को दो से अढ़ाई लाख रुपयों का शुद्ध मुनाफा हो रहा है। उन्होंने किसानों को खेतों की मेड़ पर गुड़मार, दमाबेल, कौंच बीज, गिलोय लगाने के लिए भी किसानों को प्रेरित किया, ताकि उनकी आय में अतिरिक्त वृद्धि हो।

वाइल्ड कलेक्शन में ट्रेंड

राकेश चौधरी ने बरसाती दिनों में अपने आप उगने वाली वनस्पतियों को संग्रहित करने की आदत भी स्थानीय किसानों में डाली है। वे कहते हैं कि मीठा नीम को पहले यहां कचरे के रूप में देखी जाता था, अब किसान उसे भी सहेजने लगे हैं,क्योंकि ये भी अतिरिक्तलाभ दे रही है।

हिमाचल प्रदेश, पंजाब व उत्तर प्रदेश में 25 एकड़ में सर्पगंधा की खेती की गई है। खेती के लिए नेशनल मेडीसनल प्लांट बोर्ड ने किसानों को अनुदान दिया है। उम्मीद है कि करीब एक करोड़ की उपज पैदा होगी।

क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तरी भारत, जोगेंद्रनगर ने किसानों को उपलब्ध करवाया प्लांटिंग मैटीरियल

पंजाब, हिमाचल प्रदेश और उत्तर प्रदेश में 25 एकड़ भूमि पर सर्पगंधा की खेती

आरसीएफसी नॉर्थ, जोगेंद्रनगर फीचर सर्विस

नेशनल मेडीसनल प्लांट बोर्ड के क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तरी भारत, जोगेंद्रनगर के प्रयासों से पहली बार हिमाचल प्रदेश, पंजाब व उत्तर प्रदेश में बड़े स्तर पर औषधीय पौधों की खेती के लिए किसान आगे आए हैं। हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा व शिमला, जबकि पंजाब के रोपड़ और उत्तर प्रदेश के सहारनपुर के किसानों को जड़ी- बूटियों की खेती के लिए क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तरी भारत, जोगेंद्रनगर की ओर से पहली बार किसानों को विशेषज्ञों की देख-रेख में तैयार हुआ क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल किसानों को उनके खेतों के पास उपलब्ध करवाया गया है। हिमाचल प्रदेश, पंजाब व उत्तर प्रदेश में 25 एकड़ में सर्पगंधा की खेती की गई है। क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तरी भारत, जोगेंद्रनगर के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. अरूण चंदन का कहना है कि यह सुखद है कि हिमाचल प्रदेश, पंजाब व उत्तर प्रदेश में किसानों ने जड़ी-बूटियों की खेती की ओर कदम बढ़ाए हैं। उन्होंने बताया कि नेशनल मेडीसनल प्लांट बोर्ड की स्कीमों के तहत कई जड़ी- बूटियों की खेती के लिए किसानों को अनुदान दिया जा रहा है। उन्होंने उम्मीद जताई कि क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल से किसानों की पैदावार अच्छी होगी और उनकी आमदम में भी बढ़ोतरी होगी। किसानों के उत्पाद को सही कीमत मिले, इसके लिए किसानों व उद्योग के बीच उत्पाद को खरीदने के करार करवाए गए हैं।

क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल

क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तरी भारत, जोगेंद्रनगर ने हिमाचल प्रदेश के ऊना के जसवां बेहड़ व उत्तराखंड के रूद्रपुर में सर्पगंधा का क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल तैयार करने के लिए नर्सरी स्थापित करवाईं हैं। इंडकेयर ट्रस्ट नई दिल्ली ऊना में जड़ी- बूटियों का क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल तैयार करने के लिए आगे आई है और जसवां बेहड़ में अत्याधुनिक नर्सरी स्थापित की है। पॉली हाउस तकनीक से सर्पगंधा के लाखों पौधे तैयार किए हैं, वहीं यलो स्तावर का भी बडे स्तर पर क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल तैयार किया है। उत्तराखंड के रूद्रपुर में समृद्ध हर्ब्स ने सर्पगंधा का क्वालिटी मैटीरियल तैयार करने की नर्सरी स्थापित की है। रोपड़ की सुहावी फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी मोरिंगा शतावर व गिलोय का क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल तैयार किया है। कुल्लू की श्री पराशर सोसायटी ने अतीश का, जबकि घमारवीं की रीति कांता नर्सरी ने मोरिंगा, यलो सतावर, गिलोय,शम्मी, तथा महिला मंडी ह्युमन फॉर रूरल मासेज एडवांसमेंट नरेटी व सुलह में भी क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल तैयार किया है।

नर्सरी से खेतों की ओर चले औषधीय पौधे, बड़े पैमाने पर हो रहा रोपण

सहारनपुर के डीएम ने बांटे पौधे

डीएम सहारनपुर अलोक कुमार पांडेय ने राष्ट्रीय आयुष मिशन के तहत जड़ी- बूटियों की खेती करने के लिए सहारनपुर फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी के किसानों को सर्पगंधा के एक लाख पौधे वितरित किए। यह क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल नेशनल मेडीसनल प्लांट बोर्ड के क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तरी भारत, जोगेंद्रनगर के प्रयासों से स्थापित नर्सरियों में तैयार किया गया है। नेशनल आयुष मिशन के तहत यूपी बायो एनर्जी डेवलपमेंट बोर्ड ने किसानों को पौध खरीद के लिए सब्सिडी दी गई है। डीएम ने कहा कि जड़ी- बूटियों की खेती से किसानों को ज्यादा लाभ होगा। फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी के निदेशक संजय सैनी ने समय पर पौधे उपलब्ध करवाने के लिए आरसीएफसी नॉर्थ, व सबसिडी के लिए यूपी बायो एनर्जी डेवलपमेंट बोर्ड का धन्यावाद किया।

बीबीएमबी की मदद

क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तरी भारत, जोगेंद्रनगर ने पंजाब, हिमाचल और उत्तर प्रदेश में 25 एकड़ भूमि पर सर्पगंधा की खेती को सफलतापूर्वक बढ़ावा दिया है। यहां की जलवायु सर्पगंधा के लिए उपयुक्त है। क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तरी भारत, जोगेंद्रनगर के क्षेत्रीय निदेशक डॉ अरूण चंदन का कहना है कि उत्पादन तकनीक, फसल की निगरानी और खेती के लिए किसानों का मार्गदर्शन करने के लिए विशेषज्ञों की सेवाएं ली जा रही हैं। उन्होंने बताया कि उनके केंद्र के विशेषज्ञों की देखरेख में तैयार शतावरी के लगभग दस लाख गुणवत्ता वाले पौधे भाखड़ा ब्यास प्रबंधन बोर्ड (बीबीएमबी) के माध्यम से हिमाचल और पंजाब किसानों को वितरित किए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि जिन किसानों ने जड़ी- बूटियों की खेती की है, उन्हें अपने उत्पाद को बेचने के लिए भटकना न पड़े व सही दाम मिलें, इसके लिए क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तरी भारत, जोगेंद्रनगर की ओर से किसानों व दवा उद्योग के बीच जड़ी- बूटियों की खरीद के लिए करार करवाए जा रहे हैं।

खेतों में रोप दिए पौधे

किसानों को सर्पगंधा के दो लाख पौधे, मोरिंगा के पचास हजार, यलो शतावर के 65 हजार, गिलोय के बीस हजार, अतीस के तीस हजार से ज्यादा व शम्मी के हजारों पौधे बांटे जा चुके हैं और किसानों ने अपने खेतों में बिजाई कर दी है। सहारनपुर की संघर्ष बायो एनर्जी फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी से जुड़े किसानों व रोपड़ की सुहावी फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी को सर्पगंधा के लाखों पौधे उपलब्ध करवाए हैं। कांगड़ा के किसानों को सर्पगंधा व शतावर, रोहड़ू के किसानों को अतीश का क्वालिटी मैटीरियल उपलब्ध करवाय गया है।

खेती के लिए अनुदान

राष्ट्रीय आयुष मिशन योजना के तहत भारत सरकार किसानों को अनुदान दे रही है, ताकि जड़ी-बूटियों और औषधीय पौधों की खेती को प्रोत्साहित किया जा सके। किसान औषधीय खेती करके अपनी आमदनी बढ़ा सकें, इसके लिए औषधीय खेती के लिए किसानों को अनुदान दिया जा रहा है। वित्तीय मदद क्लस्टर बनाकर प्राप्त की जा सकती है। क्लस्टर में न्यूनतम 2 हेक्टेयर भमि होना अनिवार्य है। जड़ी- बूटियों की खेती के लिए क्लस्टर में 15 किलोमीटर के भीतर के गांवों से किसान शामिल हो सकते हैं।

ऐसे मिलेगी वित्तिय मदद

क्लस्टर में शामिल प्रत्येक किसान की भूमि की स्थिति खसरा नंबर सहित रिपोर्ट, क्लस्टर में शामिल किसानों का एक संयुक्त आवेदन, स्टैंप पेपर पर एक हल्फनामा कि किसी अन्य एजेंसी से कोई अनुदान अथवा सब्सिडी नहीं ली है। संबंधित ग्राम पंचायत की सिफारिश-अनापति प्रमाणपत्र व खेती के लिए प्रस्तावित प्रत्येक किसान की भूमि के खसरा संख्या विवरण सहित आवेदन संबंधित जिला आयुर्वेदिक अधिकारी के पास करना होगा। वे उचित सत्यापन के बाद राज्य औषधीय संयंत्र बोर्ड को मामले की सिफारिश करेंगे।

इनकी खेती पर मिल रहा अनुदान

वर्तमान मे राष्ट्रीय आयुष मिशन के औषधीय संयंत्र घटक के तहत कई प्रजातियों की खेती के लिए वित्तीय सहायता उपलब्ध है। इनमें अतीश (Aconitum heterophyllum) कुटकी (Picrorhiza kurroa), कुठ (Saussureacostus), सुगंधवाला (Valeriana wallichi), अश्वगंधा (Withania somnifera), श्वेत मूसली (Chlorophytumborivillianum), सर्पगंधा (Rauwolfia serpentina) और तुलसी (Ocimum sanctum) की खेती के लिए मदद प्राप्त कर सकते हैं।

पते की बात

स्थानीय स्वास्थ्य परंपराओं को पुनर्जीवन

डा. अरूण चंदन

लेखक क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तर भारत, जोगिंद्रनगर के क्षेत्रीय निदेशक हैं।

देश भर में दस लाख से अधिक गांव आधारित सामुदायिक लोक चिकित्सक हैं, जो अपने ज्ञान और कौशल के आधार पर देश की ग्रामीण आबादी की प्राथमिक स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। सामुदायिक लोक चिकित्सा की पुरातन परम्परा के अनुसार ये उपचारकर्ता सेवा उन्मुख होते हैं और रोगियों को कोई शुल्क अनिवार्य नहीं होता। उपचार के बदले मरीज उन्हें नकद या वस्तु से भुगतान करते हैं। राष्ट्र को इस तरह की सेवा प्रदान करने के लिए प्रेरित करने के वाले लाखों चिकित्सकों को अभी तक अपने देश में मान्यता प्राप्त नहीं है।

वे सदियों से स्थानीय स्वास्थ्य प्रथाओं की परंपरा के आधार पर बीमारियों का इलाज करते आ रहे हैं, लेकिन हमारी स्वास्थ्य सेवा वितरण प्रणाली में उन्हें मान्यता प्राप्त नहीं है। देश भर में दस लाख से अधिक गांव आधारित सामुदायिक लोक चिकित्सक हैं, जो अपने ज्ञान और कौशल केआधार पर देश की ग्रामीण आबादी की प्राथमिक स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।

सामुदायिक लोक चिकित्सा की पुरातन परम्परा केअनुसार ये उपचारकर्ता सेवा उन्मुख होते हैं और रोगियों को कोई शुल्क अनिवार्य नहीं होता। उपचार के बदले मरीज उन्हें नकद या वस्तु से भुगतान करते हैं। राष्ट्र को इस तरह की सेवा प्रदान करने के लिए प्रेरित करने के वाले लाखों लोक चिकित्सकों को अभी तक अपने देश में मान्यता प्राप्त नहीं है।

स्थानीय स्वास्थ्य परंपराओं के पुनर्जीवन के लिए दो साल पहले राष्ट्रीय स्तर पर पहल हुई है। क्वालिटी कांउसिल ऑफ इंडिया (क्यूसीआई) ने फांउडेशन फॉर रेविटालाइजेशन ऑफ लोकल हैल्थ ट्रिडिसन (एफआरएलएचटी) के साथ सांझेदारी कर ग्राम वैद्य अथवा लोक हीलर कहे जाने वाले पारंपरिक सामुदायिक स्वास्थ्य चिकित्सकों के लिए स्वैच्छिक प्रमाणन योजना शुरू की गई है। यह योजना आत्मनिर्भर मोड पर संचालित की जा रही है। दरअसल, चिकित्सा परंपरा के प्राचीन ज्ञान को संरक्षित करने और पारंपरिक सामुदायिक स्वास्थ्य चिकित्सकों को पहचान देने के लिए क्यूसीआई ने वर्ष 2010 में इग्नू और एफएचटीएच के साथ इस पायलट प्रोजेक्ट पर काम शुरू किया था। सितंबर 2016 में प्रमाणन प्रक्रिया के लिए जरूरी आधारभूत ढांचा तैयार किया गया और 24 मार्च 2017 को त्रिवेंद्रम में 150 से अधिक पारंपरिक सामुदायिक स्वास्थ्य चिकित्सकों की उपस्थिति में इस योजना की शुरूआत हुई। कार्यक्रम में तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक और छत्तीसगढ़ के पारंपरिक सामुदायिक स्वास्थ्य चिकित्सकों के संघों के पदाधिकारी, केरल राज्य जैव विविधता बोर्ड के अध्यक्ष और जवाहरलाल नेहरू ट्रॉपिकल बॉटनिकल गार्डन एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट के अधिकारी भी शामिल हुए।

सामुदायिक लोक चिकित्सकों के प्रमाणन के लिए अंतरराष्ट्रीय मानक आईएसओ-17024 में निर्धारित अंतरराष्ट्रीय सर्वोत्तम प्रथाओं का अनुसरण किया गया है। यह योजना 6 तरह की चिकित्सा जैसे हड्डी की सेटिंग, जहर उतारना, पीलिया का उपचार, प्रसव करवाना, आम बीमारियों और आर्थराइटिस के उपचार करने वाले सामुदायिक लोक चिकित्सकों के प्रमाणन के साथ शुरू हुई है, जिसमें बाद में उन्य परम्परागत चिकित्सा अभ्यास भी शामिल किए जाएंगे।

क्यूसीआई के अध्यक्ष आदिल ज़ैनुलभाई कहते हैं कि क्यूसीआई ने देश के सामुदायिक स्वास्थ्य चिकित्सकों के लिए जो प्रमाणन योजना तैयार की है, उसके माध्यम से देश के नागरिकों खासकर ग्रामीण व कबायली क्षेत्रों में गुणवत्तापरक स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने के लिए हजारों ग्रामीणों को सशक्त बनाया जाएगा। एफआरएलएचटी के प्रबंध न्यासी दर्शन शंकर का कहना कि इस योजना से देश भर के दस लाख से अधिक सामुदायिक लोक चिकित्सकों को नई पहचान मिलेगी, जो ज्ञान और कौशल के आधार पर देश के ग्रामीण आबादी के प्राथमिक स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। क्यूसीआई के आरपीएससिंह कहते हैं कि यह अनूठी योजना अनिवार्य रूप से देश के ग्रामीण नागरिकों की मदद करेगी और हीलर की दक्षता और कौशल को उचित मान्यता प्रदान करेगी, जिससे राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत के संवर्धन और संरक्षण में मदद मिलेगी।

केरल राज्य जैव विविधता बोर्ड के अध्यक्ष प्रो. ओमन वी ओमेन का कहना है कि प्रमाणन की प्रक्रिया से विभिन्न राज्यों के स्थानीय जैव विविधता बोर्डों की पहल को मजबूत करने में मदद मिलेगी और जैव विविधता के प्रलेखन में वृद्धि होगी। इस योजना में प्रशिक्षण संस्थानों को मान्यता देने का भी प्रावधान है। इस योजना का अगला एजेंडा क्षेत्रीय भाषाओं में दस्तावेजों को समझने और संचार में आसानी के लिए उन्हें अनुवाद करना है।

इस बात में कोई शक नहीं है कि स्थानीय स्वास्थ्य परंपराओं के पुनर्जीवन के लिए राष्ट्रीय स्तर पर हुई यह अनूठी पहल सामुदायिक लोक चिकित्सकों को नई पहचान देगी। हमारा परम्परागत चिकित्सा ज्ञान चिकित्सा के क्षेत्र में नए क्रांतिकारी बलदाव लाने में वरदान साबित होगा। जरूरत यह है कि सभी राज्य इस महत्वपूर्ण योजना के मर्म को समझते हुए सामुदायिक लोक चिकित्सकों के प्रमाणन के लिए आगे आकर इस योजना को सफल बनाएं।

सम्पादक
डॉ. अरूण चंदन

हम ऑनलाईन उपलब्ध हैं
pdf **यहां से डाऊनलाड करें।**
www.rcfcnorth.in/download

लेखकों से आग्रह
यदि आप विषय से संबंधित कोई लेख/अनुभव/जानकारी प्रकाशनार्थ भेजना चाहें तो निसंकोच भेजें। छपने योग्य होने पर अवश्य प्रकाशित किया जाएगा।
सम्पादक

हमसे संपर्क करें

क्षेत्रीय निदेशक / सम्पादक
ई- चरक
जड़ी- बूटी बाजार
क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र
राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड
आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान
जोगिंद्रनगर, मंडी, हिमाचल प्रदेश।
पिन : 175015
हेल्पलाईन : 8544734206
दूरभाष : 01908 222333
बैवसाइट : www.rcfcnorth.in
मेल: rcfcnorth@gmail.com

शोध की शुद्धि के लिए अब 'शोधशुद्धि'

कमलतीज

कॉपोरेट अधिवक्ता एवं सुहाबी प्रोड्यूसर कंपनी पंबाज व सदौरा किसान प्रोड्यूसर कंपनी के मेंटर।

अनुसंधान एवं शोध में मूल विचारों एवं लेखों की मौलिकता सुनिश्चित करने के लिए विश्वविद्यालयों में साहित्यिक चोरी निरोधी सॉफ्टवेयर 'शोधशुद्धि' लागू होने जा रहा है।

कुछ ही समय हुआ कि फर्जी जर्नल में शोध प्रकाशित होने की खबर से हड़कंप मचा जब एक रिपोर्ट में बड़े पैमाने पर फर्जी जर्नल में शोध प्रकाशित होने की बात सामने आई। यह पहला मौका नहीं है, जब अनुसंधान एवं शोध में मूल विचारों एवं लेखों की मौलिकता पर सवाल उठाए गए हों। गाहे-बगाहे ऐसी सूचनाएं सार्वजनिक होती आई हैं कि अनुसंधान एवं शोध में साहित्यिक चोरी आम बात है। लम्बे समय से यह मांग उठती रही है कि कोई ऐसा उपाय हो, जिससे अनुसंधान व शोध में मूल विचारों की मौलिकता का पता लगाया जा सके। मानव संसाधन विकास मंत्रालय अनुसंधान एवं शोध में मूल विचारों एवं लेखों की मौलिकता सुनिश्चित करने के लिए विश्वविद्यालयों एवं उच्च शिक्षण संस्थानों में साहित्यिक चोरी निरोधी सॉफ्टवेयर 'शोधशुद्धि' लागू करने जा रहा है। इसे शोध एवं अनुसंधान में मूल विचारों की मौलिकता के लिए एक बड़ा कदम माना जा रहा है। यह सेवा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के एक इंटर यूनिवर्सिटी सेंटर आईयूसी-इंफमेंशन एंड लाइब्रेरी नेटवर्क द्वारा लागू की जा रही है। कहा जा रहा है कि साहित्यिक चोरी निरोधी सॉफ्टवेयर (पीडीएस) 'शोधशुद्धि' शोधार्थियों के मूल विचारों एवं लेखों की मौलिकता सुनिश्चित करते हुए अनुसंधान परिणाम की गुणवत्ता में सुधार लाने में काफी मदद करेगा। बताया जा रहा है कि बेशक शुरू में यह सेवा लगभग अभी एक हजार विश्वविद्यालयों, संस्थानों और राष्ट्रीय महत्व के संस्थानों को प्रदान की जा रही है और इनमें केंद्रीय विश्वविद्यालय, केंद्र द्वारा वित्तपोषित तकनीकी संस्थान, राज्यों के विश्वविद्यालय, डीम्ड विश्वविद्यालय, निजी विश्वविद्यालय और अंतर विश्वविद्यालय केंद्र शामिल हैं, लेकिन भविष्य में अन्य शिक्षण संस्थान भी इसमें शामिल हो सकते हैं। मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने साहित्यिक चोरी रोकने की यह पहल ऐसे समय में की है, जब हाल ही में एक रिपोर्ट में बड़े पैमाने पर फर्जी जर्नल में शोध प्रकाशित होने की बात सामने आई है। इसके चलते ही यूजीसी ने एमफिल-पीएचडी के नियमन में संशोधन प्रस्तावित किए हैं। इसमें प्रवेश परीक्षा को अनिवार्य बनाने की बात कही गई है, जिसमें पचास प्रतिशत अंक अनिवार्य होंगे।

टेस्ट में पचास प्रतिशत सवाल रिसर्च एप्टीट्यूड से होंगे, जबकि पचास प्रतिशत विषय के प्रश्न होंगे। आरक्षित वर्ग को टेस्ट में पांच प्रतिशत अंकों की छूट रहेगी। देखना रोचक होगा कि साहित्यिक चोरी निरोधी सॉफ्टवेयर (पीडीएस) 'शोधशुद्धि' शोध व अनुसंधान में विचारों की मौलिकता सुनिश्ति करने में कितना कामयाब रहता है। इतना तो कहा ही जा सकता है कि इस सॉफ्टवेयर के आने से रिसर्च व अनुसंधान में साहित्यिक चोरी की घटनाओं पर लगाम लगेगी।

दो दशक से पंजाब के गांव- गांव तक क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल उपलब्ध करवा रहे नरेंद्र सिंह नागरा

पंजाब में लाखों औषधीय पौधे लगवाए, लोगों को जड़ी- बूटियों के गुण बताये

आरसीएफसी नॉर्थ जोगेंद्रनगर, फीचर सर्विस

पंजाब के फरीदकोट के नरेंद्र सिंह नागरा का कभी खाद और ट्रासपोर्ट का अच्छा खासा, जमा-जमाया कारोबार था। कारोबारी सर्कल में उन का खासा नाम था और उनके कई बहुत अच्छे दोस्त थे। उन्हीं में कानूनगो शिव कुमार से उनकी सबसे गहरी पटती थी। अचानक शिव कुंमार को शूगर हो गई। उपचार पर लाखों खर्च करने के बावजूद स्थिति बिगड़ती गई। दोस्तों ने उनके इलाज के लिए कई जगह हाथ- पैर मारे, लेकिन वे उन्हें बचाने में कामयाब नहीं हो सके। इस घटना ने नरेंद्र सिंह नागरा के दिल पर गहरा असर किया। उन्होंने सोचा कि उन्हें कोई ऐसा काम करना चाहिए, जिससे अनमोल जिंदगियों को बचाया जा सके। नागरा की बचपन में वैद्य व हकीमों से संगत रही थी और कुछ घरेलू नुस्खों के बारे में भी समझ थी। उनका ध्यान इस ओर गया तो उन्होंने तय कर लिया कि वे न केवल औषधीय पौधों की खेती के लिए काम करेंगे, बल्कि इस पौधों से दवाई बनाने का हुनर भी सीखेंगे। उन्होंने कपूरथला के पास स्थित संत बाबा दयाल सिंह से आर्शीवाद लिया। टाहली साहब गुरूद्वारा के सिरमणि वैद्य मंडल से जड़ी- बूटियों के बारे में अध्ययन किया। मकसद सिर्फ इतना था कि ज्यादा से ज्यादा लोगों को इसके बारे में बताया जाए ताकि लोग खुद घरेलू वैद्य बन जाएं। नागरा का साल 2000 से शुरू हुआ औषधीय पौधे लगवाने का सिलसिला निरंतर जारी हैं। पंजाब के गांव- गांव में वे जड़ी- बूटियों का पौधारोण करते आ रहे हैं। वे अब तक विभिन्न प्रजातियों के लाखों औषधीय पौधे लगवा चुके हैं। अब वह संस्थाओं व संगठनों को साथ जोड़ कर हर्बल गार्डन स्थापित करने की दिशा में काम कर रहे हैं। नागरा सिर्प पौधे उपलब्ध ही नहीं करवाते हैं, बल्कि लोगों की कांउसलिंग भी करते हैं कि पेड़ की संभाल अपने जिगर के टुकड़े के बराबर करनी है। उन्होंने बिना किसी सरकारी मदद से अपने मिशन को जारी रखा हुआ है। इस बारे में पूछने पर वह तपाक से कहते हैं कि वह न तो मुफ्त पौधे खरीदते हैं और न ही मुफ्त पौधे किसी को देते हैं। अब अपने मिशन में उन्होंने अपने बेटे को भी साथ जोड़ लिया है। बाप- बेटे की जोड़ी पंजाब के लोगों को औषधीय खेती की ओर मोड़ने में जुटी है। नागरा का कहना है कि पंजाब के युवाओं को इस तरफ आना चाहिए, क्योंकि इस क्षेत्र में रोजगार की असीम संभावनाएं हैं। उनका कहना है कि जड़ी- बूटियों की खेती से न केवल आर्थिकी मजबूत हो सकती है, बल्कि बड़ा रोजगार सृजन भी हो सकता है।

उन्नत पौधे तैयार करने वाली हर नर्सरी तक पहुंच

नरेंद्र सिंह नागरा हिमाचल प्रदेश व उत्तराखंड में स्थित क्वालिटी मैटीरियल तैयार करने वाली नर्सरियों से विभिन्न औषधीय पौधों का क्वालिटी मैटीरियल खरीद कर पंजाब के किसानों को उनके घर के पास उपलब्ध करवाते हैं। वे हिमालयन जैव विविधता संस्थान पालमपुर, प्रदेश आयुर्वेद विभाग हिमाचल प्रदेश, वन विभाग हिमाचल प्रदेश व फारेस्ट इंस्टीच्यूट देहरादून से पौधे खरीद कर पंजाब में किसानों को उन की खेती करने के लिए प्रेरित करते हैं। वे उन्हें प्रशिक्षित करते हैं और उन्हें पेड़ों के औषधीय गुणों के बारे में जागरूक करते हैं। वे कई स्कूलों, कॉलेजों व कई धार्मिक संगठनों के परिसरों में औषधीय पौधे लगवा चुके हैं। उन्होंने बताया कि आर्मी कंट जालंधर में भी उन्होंने बड़े स्तर पर औषधीय पौधे लगवाए हैं। पंजाब में औषधीय पौधों की खेती के लिए जागरूकता बढ़ रही है और कई संस्थाएं इसके लिए आगे आ रही हैं। नागरा का कहना है कि पंजाब में ऐसे पौधों की भारी मांग है और लोग उत्सुक हैं, लेकिन सबसे बड़ी जरूरत है कि किसानों को उन्नत किस्म का प्लांटिंग मैटीरियल मिले और खेती के साथ किसानों की नियमित कांउसलिंग भी हो।

रोजगार की संभावनाएं

नरेंद्र सिंह नागरा का कहना है कि देश का दुर्भाग्य है कि किसान आत्महत्या करने को मजबूर है। किसानों को औषधीय पौधों की खेती की तरफ मोड़ कर न केवल देश की आर्थिकी मजबूत की जा सकती है, बल्कि रोजगार के नए अवसर भी तैयार होंगे। उनका कहना है कि किसानों को अगर क्वालिटी पलांटिंग मैटीरियल घर पर मिले और उनके उत्पाद के लिए घर के पास बाजार मिले तो औषधीय कृषिकरण की दिशा में विस्तार संभव है। उनका कहना है कि पंजाब में बहुत से किसान औषधीय पौधे उगाना चाहते हैं, लेकिन क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल ही नहीं मिल पाता है। लोगों को समय पर बढ़िया क्वालिटी मैटीरियल उपलब्ध करवाने को वह अपनी नैतिक जिम्मेदारी मान कर लोगों को पौधे उपलब्ध करवाते आ रहे हैं। उनका कहना है कि औषधीय पौधों की खेती अब पॉपुलर होने लगी है और किसान इसमें अपने सुनहरे भविष्य की तस्वीर देखने लगे हैं। इस क्षेत्र में रोजगार की बड़ी संभावनाएं हैं। ऐसे में समय की जरूरत है कि सरकारें इस क्षेत्र में निवेश के लिए वातावरण बनाने में सहयोग करें और किसानों को जड़ी- बूटियों की खेती के लिए प्रेरित करें।

फोक हीलर हैं नागरा

नरेंद्र सिंह नागरा न केवल औषधीय पौधों के उपलब्ध करवाने का काम करते हैं, बल्कि जड़ी- बूटियों से उपचार करने में भी उन्हें महारत हासिल है। वे अब तक जड़ी- बूटियों से हजारों लोगों के कई असाध्य रोगों का सफल उपचार कर चुके हैं। नागरा कहते हैं कि फिल्लौर के चमन लाल कपूर शूगर की बीमारी से पीड़ित थे। उनके उपचार पर बीस लाख के करीब राशि खर्च हो चुकी थी। बीमारी से बचने के लिए पीजीआई चंडीगढ़ के विशेषज्ञों ने पांव काटने की सलाह दी थी। वह अभी ऑपरेशन करवाने को लेकर संशय में ही थे कि किसी परिचित ने उन्हें मुझसे मिलने की सलाह दी। यह मुलाकात मानों उनके लिए नवजीवन का संदेश लेकर आई। रोगी का जड़ी- बूटियों से उपचार शुरू किया। दो साल में महज चंद हजार रूपये खर्च कर चमन लाल कपूर उन पांवों से चलने लग पड़े, जिन्हें डॉक्टर काटने की बात कर रहे थे।

फार्मर दुनिया का सबसे बड़ा डॉक्टर

नागरा कहते हैं कि दुनिया का सबसे बड़ा डॉक्टर किसान है और सबसे खेत सबसे बड़ी प्रयोगशाला है। वे कहते हैं कि चिकित्सकों का मानना है कि फूड पॉयजनिंग में कोताही बरतना घातक हो सकता है और रोगी का उपचार तुरंत जरूरी है, लेकिन एक किसान जिसे जड़ी- बूटियों के औषधीय गुणों के बारे में पता है, वह तुरंत प्याज, अदरक व शहद के सेवन से फूड पॉयजनिंग में तत्काल राहत पा लेगा। वह कहते हैं कि अगर जड़ी- बूटियों के औषधीय गुणों के बारे में जानकारी हो तो घर- घर में वैद्य तैयार हो सकते हैं। वह इसी काम में जुटे हुए हैं।

बच्चों की तरह करों पेड़ों से प्यार

नागरा का कहना है कि खान पान, रहन- सहन और जीवन शैली में आए परिवर्तन के चलते लोगों को कई तरह की बीमारियों का सामना करना पड रहा है। कई तरह के कैंसर हो रहे हैं और आंकड़ा तेजी से बढ़ रहा है। शूगर, यूरिक ऐसिड, ब्लड प्रैसर जैसी बीमारियों ने तो बहुत से लोगों को अपनी चपेट में ले लिया है। गैस, अपच और जोड़ों के रोग आम होने लगे हैं। इसके लिए अस्पताल मरीजों से और बाजार महंगी दवाईयों से भरा है। वे कहते हैं कि इन अधिकतर बीमारियों का उपचार जड़ी- बूटियों से संभव है। जरूरत इस बात की है कि जड़ी- बूटियों के उपचार के परम्परागत ज्ञान का व्याप्त स्तर पर प्रचार हो।

दिल को सकून, नेक काम कर रहा हूं

नागरा कहते हैं कि जड़ी- बूटियों से प्रेम ने उन्हें देश- विदेश में कई मित्र दिए हैं। उन्हें सकून है कि इस बहाने वह मानव सेवा करने में कामयाब रहे हैं। वे औषधीय पौधों की खेती की जानकारी को लेकर होने वाले हर कार्यक्रम में भाग लेते हैं। किसानों, युवा मंडलों, किसान क्लबों, महिला मंडलों व कई सामाजिक संसथाओं के साथ मिल कर वह औषधीय पौधों की खेती के प्रचार- प्रसार में जुटे हुए हैं। वह कहते हैं कि इस काम से उनके दिल का सकून मिलता है। उन्हें लगता है कि वाहे गुरू मानवता की भलाई के लिए उनसे यह नेक काम करवा रहे हैं।

नेशनल मेडीसनल प्लांट बोर्ड के आरसीएफसी नॉर्थ, जोगेंद्रनगर के प्रयास रंग लाए

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला धलूं हिमाचल का हर्बल गार्डन वाला स्कूल

आरसीएफसी नॉर्थ, फीचर सर्विस

नेशनल मेडीसनल प्लांट बोर्ड के क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तरी भारत, जोगेंद्रनगर के प्रयासों से हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिला के नगरोटा बगवां उपमंडल की राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला धलूं खुद के हर्बल गार्डन वाला प्रदेश का पहला स्कूल बन गया है। मजेदार बात यह है कि स्कूल में मौजूद पानी के स्त्रोत के जरिये पौधों को पानी देने के लिए स्प्रींकलर सिस्टम स्थापित किया गया है। स्कूल के परिसर में जड़ी- बूटियों की विभिन्न प्रजातियों के सैंकडों पौधे रोपे जा चुके हैं, जबकि भविष्य पर परिसर की दूसरी ओर भी पौधारोपण की तैयारी है। सितंबर माह में विधिवत रूप से इस हर्बन गार्डन को स्कूली बच्चों को समर्पित कर दिया गया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में कांगड़ा तथा नगरोटा बगवां शिक्षा खंडों के शिक्षक व स्टूडेंट्स व भारी मात्रा में स्थानीय किसान, पंचायत प्रतिनिधि व फॉरेस्ट कॉपरेटिव सोसायटी के प्रतिनिधि उपस्थित थे। इस अवसर पर स्थानीय विधायक अरूण कुमार कुका, एसडीएम नगरोटा बगवा शशी पाल नेगी, स्कूल के प्रिंसीपल रविंद्र कुमार सहित कई हस्तियों ने पौधारोपण किया। इस अवसर पर आयर्वेद संस्थान एवं हरबोरियम जोगेंद्रनगर की ओर से औषधीय पौधों व उनसे तैयार उत्पादों की प्रदर्शनी भी आयोजित की गई। क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र की ओर से इस अवसर पर औषधीय पौधे भी प्रदर्शित किए गए, जिन्हें खरीदने में लोगों में खासा उत्साह दिखा। स्थानीय विधायक ने अपने सम्बोधन में कहा कि यह गर्व की बात है कि उनके क्षेत्र के किसी स्कूल से जड़ी- बूटियों के बगीचे की शुरूआत हो रही है। इससे स्कूली बच्चों को औषधीय पौधों को पहचानने व उनके गुणों के बारे में जानने का अवसर मिलेगा। अपने सम्बोधन में उन्होंने कहा कि आयुष मिशन के तहत जड़ी- बूटियों की खेती के लिए सरकार अनुदान प्रदान कर रही है। किसान कलस्टर बनाकर सरकार की योजनाओं का लाभ उठा सकते हैं। स्कूल के प्रिंसीपल रविंद्र कुमार ने स्कूल में हर्बन गार्डन स्थापित करने की इस अनूठी पहल के लिए क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र के विशेषज्ञों का धन्यावाद करते हुए कहा कि उनके स्कूल के बच्चे औषधीय के गुणों के बारे में जान सके, इसके लिए हर्बल गार्डन से मदद मिलेगी।

प्रदर्शनी में लोगों ने खरीदे पौधे

इस अवसर पर आयुर्वेद संस्थान एवं हारबेरियम जोगेंद्रनगर की ओर से आयोजित प्रदर्शनी को देखने के लिए ग्रामीणों की भारी भीड़ उमड़ी और लोगों ने स्टॉल से पौधों की खरीद भी की। क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र के उपनिदेशक डॉ. सौरभ शर्मा व क्षेत्रीय निदेशक डॉ. अरूण चंदन ने औषधीय पौधों के बारे में किसानों व शिक्षकों के सवालों के जवाब दिए। इस अवसर पर संस्थान की मासिक पत्रिका 'जड़ी-बूटी बाजार' व संस्थान की विवरिका का भी आबंटन किया गया। फॉरेस्ट कॉपरेटिव सोसायटी धलूं के पदाधिकारियों ने क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र के अधिकारियों से मांग की कि उनके जंगल में भी औषधीय पौधे लगाने की बड़े पैमाने पर पहल की जाए। उन्होंने इस सम्बन्ध में तमाम औपचारिकताओं को पूरा करने का भरोसा दिया। क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र के अधिकारियों ने फॉरेस्ट कॉपरेटिव सोसायटी के सदस्यों को यकीन दिलवाया कि इस बारे में वे वन विभाग के अधिकारियों से संवाद करेंगे और इस जंगल में औषधीय पौधों की खेती के की संभावनाएं तलाशी जाएंगी। डॉ. अरूण चंदन ने जड़ी- बूटियों की खेती को लेकर सरकार की योजनाओं की जानकारी देते हुए कहा कि बंदरों से प्रभावित जमीन जड़ी- बूटियों की खेती करने के काम आ सकती है। उन्होंने महिलाओं के अनुरोध किया कि वे औषधीय पौधों की नर्सरी प्रबंधन से घर के पास आजीविका के साधन विकसित कर सकती हैं। महिला समूहों का गठन कर इस दिशा में पहल की जा सकती है। इस अवसर पर बच्चों के लिए चिल्ड्रन सांइस का भी आयोजन किया गया। विभिन्न स्कूलों के बच्चों ने एक से बढ़ कर एक मॉडल पेश किए। खेती, बागवानी, पर्यावरण, जल संकट, ऊर्जा संकट व प्रदूषण जैसे गंभीर मुद्दों पर बच्चों की और से प्रस्तावित समाधान उनकी प्रतिभा का लाजवाब प्रदर्शन था। मुख्यातिथि सहित सभी विशेष मेहमानों ने बच्चों की पीठ थपथपाई।

'जिंको बाइलोबा' रोपा

इस अवसर पर एसडीएम नगरोटा बगवां शशीपाल नेगी ने जिंको बाइलोबा का पौधारोपण किया। बता दें कि जिंको बाइलोबा न्यूक्लियर पॉल्यूशन से बचाव करने वाला पेड़ है। हिरोशिमा में 1945 में हुए परमाणु बम विस्फोट के दो किलोमीटर के बीच के दायरे में लगे जिंको बाइलोबा के छह पेड़ उन चंद जीवित वस्तुओं में से थे, जो उस क्षेत्र में हुए विस्फोट के बावजूद बचे रहे। विस्फोट से उस क्षेत्र के लगभग सभी अन्य पौधे और जानवर नष्ट हो गए थे। हालांकि परमाणु विस्फोट से जिंको बाइलोबा के पेड़ भी जल गए थे, लेकिन वे बच गए और जल्द ही फिर से हरे हो गए। हिरोशिमा के ये पेड़ आज भी जीवित हैं। नेशनल मेडीसनल प्लांट बोर्ड के क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र ने जिंको बाइलोबा का क्वालिटी प्लांटिंग मेटीरियल तैयार किया है और इस अमूल्य पेड़ के संरक्षण की मुहिम शुरू की है।

स्टूडेंट फार्मर की कॉन्सेप्ट

पौधारोपण को लेकर आयोजित कार्यक्रम में जड़ी- बूटियों की खेती के प्रचार- प्रसार के लिए हुई चर्चा के दौरान स्टूडेंट फार्मर की कॉन्सेप्ट निकल कर सामने आई। शिक्षक समुदाय की ओर से ऐसा विचार आया कि प्रदेश के सभी स्कूलों में जड़ी- बूटियों में रूचि रखने वाले स्टूडेंट्स की पहचान कर उन्हें औषधीय पौधों की खेती के लिए प्रचार- प्रसार के लिए रोल मॉडल के तौर पर पेश कर सकते हैं। इसे स्टूडेंट फार्मर का नाम दिया जा सकता है। आरसीएफसी के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. अरूण चंदन ने कहा कि वह इस विचार को लेकर वे अपने विभाग के आला अधिकारियों के साथ चर्चा के बाद शिक्षा विभाग से बात करेंगे।

क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल

हिमाचल में डॉ. वाईएस परमार बागवानी और वानिकी युनिवर्सिटी नौणी, सोलन, सीएसआई- हिमालयन जैव विविधता संस्थान पालमपुर और भारतीय चिकित्सा प्रणाली अनुसंधान संस्थान जोगेंद्रनगर क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल तैयार करते हैं।

हिमाचल प्रदेश व केरल में तीन- तीन सरकारी संस्थान तैयार कर रहे गुणवता वाली औषधीय पौध रोपण सामग्री

भारत के 19 सरकारी संस्थान उपलब्ध करवाते हैं क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल

आरसीएफसी नॉर्थ जोगेंद्रनगर, फीचर

नेशनल मेडीसनल प्लांट बोर्ड के मुताबिक भारत के विभिन्न हिस्सों में 19 संस्थान किसानों को औषधीय व सुगंधित पौधों की गुणवत्ता वाली रोपण रमग्री उपलब्ध करवाने का काम करते हैं। हिमाचल प्रदेश व केरल में सबसे ज्यादा तीन सरकारी संस्थान इस काम में जुटे है तो मध्य प्रदेश, पश्चिमी बंगाल कर्नाटक व गुजरात के दो- दो सरकारी संस्था गुणवत्ता वाले औषधीय पौधे तैयार कर किसानों को उपलब्ध करवाते हैं। इसके अलावा उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, अरूणचल प्रदेश, जम्मू में एक- एक सरकारी संस्थान औषधीय व सुगंधित पौधों की गुणवत्तापरक रोपण सामग्री किसानों को उपलब्ध करवाते हैं। देश में जड़ी-बूटियों की बढ़ती मांग के चलते अब नेशनल मेडीसनल प्लांट बोर्ड औषधीय व सुगंधित पौधों की गुणवत्ता वाली रोपण सामग्री तैयार करने के लिए निजी क्षेत्र में भी नर्सरी प्रबंधन कर रहा है।

यहां मिलता क्वाालिटी प्लांटिंग मैटीरियल

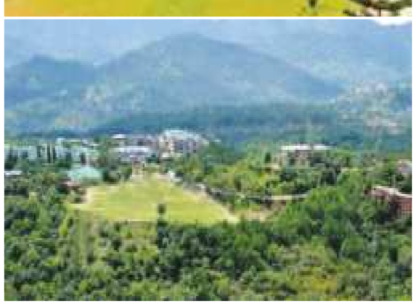

औषधीय एवं सुगंधित पौधों का क्वालिटी मेटीरियल उपलब्ध करवाने में हिमाचल प्रदेश का खास स्थान है। डॉ. वाई एस परमार बागवानी और वानिकी, विश्वविद्यालय नौणी, सोलन, सीएसआई- इंस्टीट्यूट ऑफ हिमालयन बायोरसोर्स प्रौद्योगिकी, पालमपुर व भारतीय चिकित्सा प्रणाली अनुसंधान संस्थान जोगेंद्रनगर क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल तैयार करते हैं। इसके अलावा देश के अन्य भागों में 26 सरकारी संस्थान क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल तैयार करते हैं। इनमें राज्य वन अनुसंधान संस्थानपर्यावरण और वन विभाग ईटानगर, आईसीएआर- औषधीय व सुगंधित पौधे अनुसंधान निदेशालय गुजरात, आनंद कृषि विश्वविद्यालय गुजरात, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ इंटीग्रेटिव मेडिसिन जम्मू, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ हॉर्टीकल्चर अनुसंधान कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, बंगलौर, फॉरेस्ट रिसर्च संस्थान केरल, एरोमेटिक एवं मेडीसनल प्लांट रिसर्च सेंटर केरल कृषि विश्वविद्यालय एर्नाकुलम केरल, केरल कृषि विश्वविद्यालय, जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर, राज्य वन अनुसंधान संस्थान जबलपुर, डॉ. बालासाहेब सावंत कोंकण कृषि विद्यापीठ, वन महाविद्यालय, रत्नागिरी महाराष्ट्र, मेडीसनल एंड एमोमेटिक विभाग, बागवानी कॉलेज और अनुसंधान संस्थान तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयंबटूर, सीएसआईआर- सेंटर इंस्टीच्यूट ऑफ मेडीसनल प्लांट एंड ओरनामेंटल प्लांट लखनऊ, पश्चिम बंगाल राज्य औषध पादप बोर्ड व राम कृष्ण आश्रम, नरेंद्रपुर कोलकाता शामिल हैं। नेशनल मेडीसनल प्लांट बोर्ड के प्रोत्साहन के बाद अब निजी क्षेत्र के लोग भी औषधीय व सुगंधित पौधों का क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल तैयार करने लगे हैं।

हिमाचल में तीन सरकारी संस्थान उपलब्ध करवाते क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल

हिमाचल प्रदेश में तीन सरकारी संस्थान मेडीसलन प्लांटंस व ओरनामेंट प्लांटस का क्वालिटी प्लांटिंग मेटीरियल उपलब्ध करवाते हैं। इन संस्थाने में डॉ. वाई एस परमार बागवानी और वानिकी, विश्वविद्यालय नौणी, सोलन, सीएसआई- हिमालयन जैव विविधता संस्थान पालमपुर और भारतीय चिकित्सा प्रणाली अनुसंधान संस्थान जोगेंद्रनगर औषधीय एवं सुगंधित पौधों का क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल तैयार कर किसानों को उपलब्ध करवाते हैं। आयुष विभाग के नेशनल मेडीसनल प्लांट बोर्ड के तहत काम करने वाले क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र ने अब निजी क्षेत्र में औषधीय व सुगंधित पौधों की नर्सरी प्रबंधन के लिए किसानों को तैयार किया है।

सर्पगंधा

18 माह में तैयार होने वाली सर्पगंधा की प्रति एकड़ फसल 25 से 30 क्विंटल होती है। जड़ में 55 से भी ज्यादा क्षार पाये जाते हैं। 80 प्रतिशत क्षार जड़ों की छाल में केंद्रित होते हैं।

अगर किसी किसी को सर्प या बिछू काट जाए तो यह पौधा काफी उपयोगी होता है। काटे हुए स्थान पर इसे लगाने से राहत मिलती है

आयुर्वेद दवा उद्योग में सर्पगंधा की भारी मांग, किसानों से सर्पगंधा की खरीद के लिए किए करार

एक एकड़ से चार लाख की कमाई, इसलिए सर्पगंधा की खेती करवाई

आरसीएफसी नॉर्थ जोगिंद्रनगर, फीचर सर्विस

नेशनल मेडिसनल प्लांट बोर्ड के क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तरी भारत, जोगेंद्रनगर ने इस साल हिमाचल प्रदेश, पंजाब व उत्तर प्रदेश में 25 एकड़ भूमि पर सर्पगंधा की खेती करने के लिए किसानों को प्रोत्साहित किया है। क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र ने हिमाचल और पंजाब की नर्सरियां में सर्पगंधा का क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल किसानों को उपलब्ध करवाया है, ताकि उनकी फसल की पैदावार अधिक हो। सर्पगंधा की खेती के लिए प्रोत्साहित करने के लिए किसानों को नेशनल आयुष मिशन के तहत पौध खरीद पर अनुदान प्रदान किया गया है। इससे सर्पगंधा की खेती की लागत कम हो गई है। क्षेत्रीय एवं सुगतमा केंद्र ने सर्पगंधा की खेती का चुनाव इसलिए किया गया है कि एक तो सर्पगंधा की जड़ों की बाजार में भारी मांग है और दूसरा इसकी अच्छी कीमत मिलती है। किसान महज 75 हजार रुपये खर्च कर एक एकड़ में डेढ़ साल में 3-4 लाख रुपए की कमाई सकते हैं। सर्पगंधा की औसत उपज प्रति एकड़ 25-30 क्विंटल होती है। क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र के अधिकारी यह उम्मीद कर रहे हैं कि 25 एकड़ पैदा होने वाली उपज का बाजार मूल्य एक करोड़ से ज्यादा होगा। क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. अरूण चंदन का कहना है कि किसानों को अपनी उपज बेचने के लिए बिचौलियों के पास न फंसना पड़े और उत्पाद का सही मूल्य किसानों को मिले, इसके लिए क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र ने सर्पगंधा की खेती करने वाले किसानों के दवा उद्योग के साथ एमओयू करवाए हैं। देश की कई नामी आयुर्वेद दवा निर्माता कंपनियों ने सर्पगंधा की खरीद के लिए करार किए हैं। बता दें कि सर्पगंधा की जड़ों में काफी ज्यादा एक्केलाइड पाया जाता है जिनका प्रयोग रक्तचाप, अनिद्रा, व उन्माद आदि रोगों में होता है। औषधीय गुणों से युक्त पौधों में सर्पगंधा का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। इसका वानस्पतिक नाम रावोल्फिया सर्पेंटीना है। यह पुष्पीय पौधों के द्विबीजपत्रीय कुल एपोसाइनेसी का सदस्य है। अंग्रेजी में इसे सर्पेंटीन तथा स्नेक रूट नामों से जाना जाता है। कई आयुर्वेदिक औषधियों में सर्पगंधा की जड़ों का प्रयोग होता है। कुदरती तौर पर उगने वाले सर्पगंधा पर संकट के बादल छाए हैं। एक तरफ आयुर्वेद उद्योग में सर्पगंधा की मांग बढ़ रही है, दूसरी ओर सर्पगंधा की आपूर्ति कम हो रही है। सर्पगंधा की बाजार में भारी मांग को देखते हुए नेशनल मेडीसनल प्लांट बोर्ड ने आर्थिक अनुदान देकर किसानों को सर्पगंधा की खेती की ओर मोड़ा है। हिमाचल प्रदेश, पंजाब व उत्तर प्रदेश के किसानों में सर्पगंधा की खेती शुरू कर दी है। क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र के विशेषज्ञ सर्पगंधा की खेती कर रहे किसानों को बेहतर उपज के लिए जरूरी सहयोग उपलब्ध करवा रहे हैं।

सर्पगंधा की फसल 18 माह में तैयार हो जाती है। महज 75 हजार रुपये खर्च कर एक एकड़ में डेढ़ साल में 3-4 लाख रुपये की कमाई की जा सकती है। सर्पगंधा की औसत उपज प्रति एकड़ 25-30 क्विंटल होती है। सर्पगंधा के फल, तना, जड़ सभी चीजों का उपयोग होता है। कई आयुर्वेदिक दवाईयों में सर्पगंधा का प्रयोग होता है, इसलिए बाजार में इसकी भारी मांग रहती है और कीमत भी बढ़िया मिलती है।

बड़े काम का सर्पगंधा

क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र के उपनिदेशक डॉ. सौरभ शर्मा कहते हैं कि अगर किसी व्यक्ति को सर्प या बिछू काट जाए तो यह पौधा काफी उपयोगी होता है। काटे हुए स्थान पर इसे लगाने से राहत मिलती है। वे कहते हैं कि इस पौधे की जड़, तना और पत्ती से कई चीजों का निर्माण होता है। सर्पगंधा के औषधीय गुण मुख्यत: पौधे की जड़ों में पाए जाते हैं। जड़ में 55 से भी ज्यादा क्षार पाये जाते हैं। लगभग 80 प्रतिशत क्षार जड़ों की छाल में केंद्रित होते हैं। जड़ का रस अथवा अर्क उच्च-रक्तचाप की बहुमूल्य औषधि है। सर्पगंधा का प्रयोग हिस्टीरिया के इलाज में भी अत्यंत लाभकारी है। सर्पगंधा की पत्तियों का रस नेत्र ज्योति बढ़ाने में सहायक होता है। इसके अतिरिक्त मानसिक विकारों के उपचार में भी सर्पगंधा बहुत ही लाभकारी है।

18 महीने में तैयार होती सर्पगंधा की फसल

यह एक छाया पसंद पौधा है। इसे आम, लीची के पेड़ के आसपास प्राकृतिक रूप से उगाया जा सकता है। सर्पगंधा की खेती बीज द्वारा, तना कलम व जड़ कलम द्वारा की जा सकती है। सर्पगंधा का बीज अंकुरण कम होता है और 3-4 सप्ताह का समय लगता है। नर्सरी में तैयार पौध को 45 सेंटीमीटर गुना 50 सेंटीमीटर की दूरी पर रोपाई करते हैं। जनवरी माह से लेकर वर्षा काल आरंभ होने तक 30 दिन के अंतराल पर और जाड़े के दिनों में 45 दिन के अंतराल पर सिंचाई करनी होती है। इसकी खेती उष्ण एवं समशीतोष्ण जलवायु में की जा सकती है। 10 डिग्री सेंटीग्रेड से 38 डिग्री सेंटीग्रेड तक इसकी खेती के लिए बेहतर तापमान है। 1200-1800 मिलीमीटर तक वर्षा वाले क्षेत्र में इसकी खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है। सर्पगंधा के पौधे की ऊंचाई मुख्यता 6 इंच से लेकर 2 फुट तक होती है। इसका तना एक मोटी खाल से ढका रहता है और फूल गुच्छों में पाए जाते हैं। इसके फूल मुख्य रूप से गुलाबी और सफेद रंग के ही होते हैं और अप्रैल से लेकर नंवबर तक लगते हैं। इसके पत्ते लंबे, चमकीले और नोकदार होते हैं। 3-4 पत्तों का गुच्छा रहता है। इसके फल मटर के समान चिकने व हरे होते हैं, जो पकने पर बैंगनी या काले हो जाते हैं। इसकी जड़े सर्पीली तथा 0.5 और 2.5 सेमी तक के व्यास की होती है। इसे दोमट मिट्टी से लेकर काली मिट्टी में उगाया जा सकता है। सर्पगंधा की फसल 18 महीने में तैयार हो जाती है। इसकी जड़ों को काफी सावधानी से निकाला जाता है। बड़ी और मोटी जड़ों को अलग और पतली जड़ों को अलग कर देते है। बाद में पानी से धोकर मिट्टी को साफ किया जाता है और फिर 12 से 15 सेंटीमीटर के टुकड़ों में काटकर सुखा देते हैं। सर्पगंधा उष्णकटिबंधीय हिमालय तथा हिमालय के निचले प्रदेशों सिक्किम व असम में भी पाई जाती है। भारत में सर्पगंधा पश्चिमी तट के किनारे भी पाया जाता है। भारत के अतिरिक्त श्रीलंका, म्यनमार, मलेशिया, इंडोनेशिया, चीन तथा जापान में भी सर्पगंधा पाया जाता है। चूंकि जंगलों में सर्पगंधा विलुप्त हो रही है और तेजी से इसका प्रयोग बढ़ता ही जा रहा है, अतः आने वाले समय में इसके बजार भाव में तेजी होना तय है।

NATIONAL MEDICINAL PLANTS BOARD
Plants For Health & Prosperity

E-Charak
e-Channel for Herbs, Aromatic, Raw Material & Knowledge

जड़ी-बूटी बाजार

उत्तराखंड विशेष

हर माह प्रकाशित/प्रसारित

www.rcfcnorth.in ■ कुल पृष्ठ : 8 ■ वर्ष 3, अंक 1 ■ 1 जनवरी से 31 जनवरी 2020

डब्ल्यूएचओ की मदद से आयुष बनाएगा परम्परागत दवाईयों का बैंचमार्क मॉडल

क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तर भारत, आयुष मंत्रालय भारत सरकार, पिन-175015, दूरभाष-01908-222970 (टेलीफैक्स), 9418010624 (मोबाइल) email:rcfcnorth@gmail.com

क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तरी भारत, जोगेंद्रनगर, भोले बाला चेरीटेबल ट्रस्ट व लोक चेतना मंच के सांझा प्रयास

उत्तराखंड को हर्बल राज्य बनाने के लिए हितग्राहियों ने रानीखेत में बनाई रणनीति

आरसीएफसी उत्तरी भारत, जोगेंद्रनगर फीचर

उत्तराखंड को हर्बल राज्य बनाने की दिशा में केंद्र सरकार के आयुष मंत्रालय की ओर से गंभीर पहल हुई है। रानीखेत के चिलियानौला में आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला में औषधीय खेती के सभी हितग्राहियों के गहन- चिंतन मंथन के बाद औषधीय कृषिकरण की राह में रूकावट बनने वाली तमाम अड़चनों के तत्काल समाधान ढूंढने की कवायद शुरू हो गई है। यह कार्यशाला इसलिए भी अहम रही, क्योंकि इसकी अध्यक्षता केंद्रीय आयुष मंत्रालय के सचिव पदमश्री वैद्य राजेश कुटेजा ने की। राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड के मुख्य कार्यकारी अधिकारी जेएन शास्त्री कार्यशाला में बतौर विशेष अतिथि उपस्थित हुए। कायक्रम में लाल पैथ लैब के अध्यक्ष पदमश्री डा. अरविन्द लाल विशेष तौर पर उपस्थित रहे। उन्होंने राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड के जरिये औषधीय कृषिकरण, दवा निर्माण व होलिस्टक टूरिज्म के क्षेत्र में निवेश करने का प्रस्ताव भी प्रदेश सरकार को भेजा। कार्यशाला में प्रदेश सरकार से जड़ी- बूटियों के क्षेत्र की समस्याओं के समाधान के लिए व्हाइट पेपर तैयार कर प्रदेश सरकार से चर्चा करने की रणनीति भी तैयार की गई।

मिशन के लिए गोल्डन ट्राईएंगल

राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड के क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तरी भारत जोगेंद्रनगर, भोले बाला चेरीटेबल ट्रस्ट एवं अस्पताल और लोक चेतना मंच के सांझा प्रयासों से आयोजित इस कार्यशाला को गोल्डन ट्राईएंगल का नाम दिया गया। औषधीय पौधों की खेती करने वाले विभिन्न जनपदों के साठ किसानों, गैर सरकारी संस्थाओं के सदस्यों, अनुसंधान व शिक्षण संस्थानों के विशेषज्ञों, उद्योग जगत के सदस्यों, व राज्य पादप बोर्ड के विशेषज्ञों ने कार्यशाला में भाग लिया। किसानों ने अपने अनुभवों को विशेषज्ञों के साथ सांझा करते हुए जड़ी- बूटियों की खेती, वैल्यू एडिशन, पोस्ट हार्बेस्टिंग व मार्केटिंग में आने वाली समस्याओं से अवगत करवाया। जड़ी- बूटियों से बने उत्पादों की प्रदर्शनी के आयोजन सहित इस अवसर पर मासिक 'जड़ी- बूटी बाजार' पत्रिका के दो अंकों का विमोचन किया गया व प्रतिशील किसानों का सम्मानित किया गया।

आयुर्वेद व औषधीय पौधों के विकास के लिए कार्यशाला

समाधान के प्रयास

आयुष मंत्रालय के सचिव पदमश्री वैद्य राजेश कुटेजा ने भरोसा दिलाया कि उत्तराखंड में औषधीय खेती को बढ़ावा देने के लिए आयुष विभाग हर संभव मदद करेगा। औषधीय खेती से सम्बन्धित राज्य सरकार से जुड़े मुद्दों के समाधान के लिए वह उत्तराखंड के मुख्य सचिव के साथ बैठक करेंगे। जैव विविधता बोर्ड से सम्बन्धित मुद्दों को बोर्ड के राष्ट्रीय चेयरमैन से उठाया गया है। ऑर्गेनिक सार्टिफिकेशन के लिए राष्ट्रीय पादप बोर्ड किसानों की मदद करेगा। उन्होंने राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड के सीईओ जेएन शास्त्री व क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तर भारत, जोगेंद्रनगर के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. अरूण चंदन को इन तमाम मुद्दों के बारे में नियमित फॉलोअप करने के निर्देश दिए।

किसानों ने की अपने मन की बात

कार्यशाला के पहल दिन किसानों ने औषधीय कृषिकरण की वैल्यू चेन में विभिन्न चरणों में आने वाली समस्याओं को विशेषज्ञों के सामने रखा। किसानों ने बताया कि गुणवत्ता वाले बीज व पौध उपलब्ध न होने से पैदावार कम होने से किसान को नुक्सान उठाना पड़ता है। खेतों की घेराबंदी न होने के कारण जंगली जानवर उनकी फसलों को हानि पहुंचाते हैं। जड़ी- बूटियों के भंडारण की सुविधा ने होने के कारण उनकी गुणवत्ता प्रभावित होती है। जड़ी- बूटियों की खेती में फॉरेस्ट वेरिफिकेशन की प्रक्रिया बेहद जटिल है। जड़ी- बूटियों का कृषि उपज में शामिल न होने और उनका न्यूनतम समर्थन मूल्य घोषित न होने की वजह से जड़ी- बूटियों के विपणन में समस्या आती है और किसानों को औने- पौने दाम पर अपने उत्पाद को बेचने पर मजबूर होना पड़ता है। औषधीय कृषिकरण में प्रदेश सरकार की पॉलीसी में बड़े सुधार की गुजांइश है और किसानों के लिए सिंगल विंडो जैसी सुविधा की दरकार है। किसानों की पीड़ा है कि औषधीय कृषिकरण से सम्बन्धित आयुर्वेद विभाग, वन विभाग व जैव विविधता बोर्ड के बीच आपसी तालमेल की कमी से किसान पिसता है। किसानों ने कहा कि राज्य में औषधीय कृषिकरण को बढ़ाने के लिए राज्य औषध पादप बोर्ड को भी मजबूत करने की जरूरत है। किसानों ने कहा कि मनरेगा के तहत औषधीय कृषिकरण को शामिल किया जाना चाहिए और कृषि भूमि के साथ लगती सरकारी भूमि औषधीय पौधों की खेती के लिए किसानों को लीज पर दी जानी चाहिए। किसानों ने आयुष मंत्रालय के सचिव वैद्य राजेश कुटेजा को अपनी मांगों से संबंधित ज्ञापन दिया।

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि आयुष मंत्रालय भारत सरकार के क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तर भारत, जनपद मंडी, हिमाचल प्रदेश द्वारा मासिक पत्रिका जड़ी - बूटी बाजार का प्रकाशन किया जा रहा है।

कृषि और किसान का विकास करके ही देश को वास्तविक रूप से विकसित किया जा सकता है। माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी किसानों की समृद्धि के लिए प्रतिबद्ध हैं। इसके दृष्टिगत केंद्र सरकार तथा राज्य सरकार द्वारा समन्वित प्रयास किए जा रहे हैं। औषधीय पौधों की खेती को प्रोत्साहित करने तथा किसानों के कल्याण के लिए प्रदेश सरकार अनेक योजनाओं का संचालन कर रही है। मैं आशा करता हूं कि पत्रिका जड़ी- बूटी बाजार में पाठकों के लिए उपयोगी सामग्री का समावेश किया जाएगा। पत्रिका के उद्देश्यपूर्ण प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(योगी आदित्यनाथ)

नेशनल मॉडल 'घेस'

कुटकी महोत्सव को लेकर चर्चा में आया घेस गांव।
गांव के डेढ़ किसान कर रहे हैं कुटकी की खेती।
आयुष मंत्री ने घेम में की है राष्ट्रीय संस्थान खोलने की घोषणा।
अब स्थानीय स्तर पर होगी कुटकी की प्राइमरी प्रोसेसिंग।
कुटकी की खेती के विस्तार की योजना पर काम।

1000 करोड रूपए का नेशनल मिशन ऑन सप्लाई चेन मेनेजमेंट ऑफ मेडीसनल प्लांट्स

जड़ी-बूटियों की खेती के आय बढ़ाने के लिए प्राइमरी प्रोसेसिंग की पहल

आरसीएफसी नॉर्थ जोगेंद्रनगर, फीचर सर्विस

भारत सरकार, आयुष मंत्रालय व राष्ट्रीय पादप बोर्ड ने विशेषज्ञों के प्रयासों से पहली बार नेशनल मिशन ऑन सप्लाई चेन मेनेजमेंट ऑफ मेडीसनल प्लांट्स की शुरूआत होने जा रही है। आयुष विभाग के इस मिशन के लिए एक हजार करोड़ का प्रावधान किया गया है। राष्ट्रीय औषद पादप बोर्ड के क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तर भारत के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. अरूण चंदन ने रानीखेत में आयोजित बैठक में खुले सत्र के दौरान किसानों को जानकारी दी कि इस मिशन के तहत किसान वैल्यू चेन को मजबूत करने के लिए स्वयं सहायता समूह बनाकर, कॉपरेटिव बनाकर अथवा फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी बनाकर पचास लाख से 5 करोड़ तक की वित्तीय मदद हासिल कर सकते हैं। इस मिशन के तहत 100 से 300 किसान

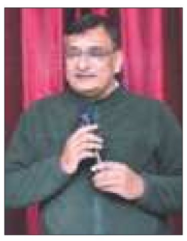

मिलकर मेडीसनल प्लांट्स की वैल्यू चेन मेनेजमेंट पर काम कर सकते हैं। जड़ी- बूटियों की खेती करने वाले किसानों की आय को बढ़ाने के लिए आयुष की नई योजना पहली अप्रैल से लागू होने जा रही है।

घेस गांव बनेगा नेशनल मॉडल

डॉ. चंदन ने किसानों को राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड की ओर से चलाई जा रही योजनाओं की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सरकार की ओर से किसानों, अनुसंधान करने वालों व उद्योग को जोड़ने का काम किया जा रहा है। उन्होने कहा कि घेस गांव को देश का मॉडल की पहल की जा रही है। घेस में पैदा होने वाली कुटकी को एग्रीकलचर प्रोड्यूज के रूप में लिया जाए और घेस में कुटकी के वैल्यू एडिशन के लिए प्रस्ताव आयुष विभाग को भेजा गया है।

बेचने के लिए डिजिटल प्लेटफार्म

डॉ. चंदन ने कहा कि राष्ट्रीय आयुष मिशन के अंतर्गत वॉलंटीयर सेर्टीफाइड स्कीम के तहत कुटकी का आर्गेनिंग प्रमाणीकरण के प्रयास किए जा रहे हैं। न्यूनतम मूल्य निर्धारण से लेकर जड़ी- बूटियों को कृषि विभाग के ऑनलाइन प्लेटफार्म ई नैम के अंदर शामिल किया जा रहा है। ई चरक एप्लीकेशन के तहत भी उत्पाद को बेचा जा सकता है। आयुर्वेद व औषधीय पौधों का पहला इंकुवेशन संेटर क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र जोगेंद्रनगर में शुरू किया है।

किसानों से अहम सुझावों पर अमल की जरूरत

कार्यशाला के पहले दिन किसानों के लिए खुले सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें किसानों ने अपनी कामयाबी की कहानियों व जड़ी- बूटियों की खेती करने की राह में आ रही समस्याओं के बारे में विशेषज्ञों को जानकारी दी। रानीखेत में उत्तरकाशी, धरतुला, बागेश्वर, टिहरी व चमोली से साठ किसान पहुंचे। सभी किसानों ने सिंगल विंडो स्स्टिम व जड़ी बूटियों के भौतिक सत्यापन व ऑर्गेनिक सार्टिफिकेशन की प्रकिया को आसान बनाने की मांग की।किसानों का कहना है कि कृषि भूमि के साथ लगती सरकारी जमीन को किसान को जड़ी- बटियां उगाने के लिए लीज पर दिया जाए। किसान बोले कि उनकी मिट्टी की जांच हो, जमीन की घेराबंदी हो, खेती कलस्टर में हो और पोडक्शन कलस्टर भी बनें। उन्होंने कहा कि दूरदराज तक भारत सरकार की योजनाएं पहुंचाने के प्रयास हों। किसान एवं पूर्व प्रधान भाग सिंह वर्ष 1990 से जड़ी बटियों को उगाने का काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि जंगली जानवरों का आतंक व जंगलों से अवैध रूप से होने वाले जड़ी बूटियों के दोहन को रोकने की कोशिश होनी चाहिए। एक अन्य किसान ने कहा कि जड़ी- बूटियों के संरक्षण की बहुत जरूरत है। जड़ी- बूटियों की खेती कर रहे छह जिलों में जड़ी बूटियों की निकासी के लिए फॉरेस्ट वेरिफिकेशन सरल होना चाहिए। घेस गांव के कैप्टन केसर सिंह 1997 में पेंशन आए। 72 सल की उम्र में जड़ी बूटियां उगा रहे केसर सिंह ने कहा कि लाइसेंस का मिसयूज हो रहा है। कई लोग खेती की जगह जंगल से जड़ी- बूटियां निकाल रहे हैं। जंगल वाला कच्चा माल सस्ता है तो हमारा खेतों में उगाया हमारा माल कौन खरीदेगा। ज्योति रावत चार लोगों के साथ कुटकी की खेती कर रहे हैं। वे अतीश पर भी काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि जड़ी बूटियों को उगाने के लिए बैक लोन आसान होना चाहिए। हरपाल नेगी ने औषधीय पौधों की खेती के विकास के लिए कॉर्डिनेशन कमेटी गठित करने का सुझाव दिया। किसान देवेंद्र सिंह नेगी वर्ष 2016 से कूट की खेती कर रहे हैं। पांच साल तक कूट का घटिया पौध के कारण बर्बाद हो गई। उन्होंने कहा कि उत्तराखंड में गुणवता वाले बीज व पौध एक बड़ा मुद्दा है। औषीधय पौधों में ऐसे बैंक की जरूरत महसूस की जा रही है। नेशनल प्लांट बोर्ड दिल्ली के डा. एम एस रावत, व धनेश कुमार, अल्मोड़ा जिला आयुर्वेदिक अधिकारी डॉ. के एस, उत्तराखंड आयुर्वेदिक विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. नवीन जोशी, डॉ. सहायक प्रोफेसर डॉ. दीप चंद पांडे, सेंटर फॉर एरोमैटिक प्लांट्स के डॉ. शाह, उत्तराखंड जैव विविधिता बोर्ड के अमित सिंह चौहान, उद्यान विभाग से हरीश कुमार, किसान पान सिंह विष्ठ, आनंद नेगी, गोविंद सिंह नेगी, पुष्कर सिंह विष्ठ, देवेंद्र सिंह नेगी, कुवंर सिंह नेगी, भुपाल सिंह मेहता, हीरा वल्लभ, राजेंद्र सिंह चौहान च सुकुमार ने चर्चा में भाग लिया। राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित इनोवेटर धर्मवीर कम्बोज की बनाई प्रोसेसिंग मशीन प्रदर्शित की गई और जड़ी- बूटियों की खेती से संबंधित 'पहल' फिल्म भी दिखाई गई।

वैद्यों पर अध्ययन करने वाले डॉ. हरपाल नेगी

उत्तरांचल यूथ एवं रूरल डपलपमेंट सेंटर के संस्थापक डॉ. हरपाल नेगी 1985- 86 में दिल्ली से पढ़ाई कर यह सोच कर चमोली के नरेंद्रगढ़ आए कि अपने क्षेत्र के लोगों के लिए काम करना है। उन्होंने साल 1995 में परम्परागत वैद्यों पर काम करना शुरू किया। उनके जनून की हद देखिए कि उन्होंने वैद्यों के अध्ययन के लिए चार जिलों के हर

गांव को छान मारा और 2000 में 'उत्तराखंड के परम्परागत वैद्यों का समाजशास्त्रीय अध्ययन' पर डॉक्टरेट किया। उन्होंने चार जिलों के नीड़ी वैद्य, एकल वैध व तंत्र वैद्यों का अध्ययन करने के बाद इन वैद्यों की सेवाएं हैल्थ गाइड के रूप में लेकर उत्तराखंड में हर्बल टूरिज्म के विकास का सुझाव दिया। उन्होंने होलेस्टिक ट्रीटमेंट से पिंडर वैली के विकास का प्लान बनाया है और घेस गांव में कुटकी महोत्सव के आयोजन में अहम भूमिका निभाई है।

सूत्रधार

उत्तराखंड खासकर कुमाऊं के लिए यह एक सुनहरा अवसर है। यहां की जलवायु औषधीय कृषिकरण के लिए उपयुक्त है। हमारा संसथान भी औषधीय पौधों के कृषिकरण, प्रोसेसिंग व दवा निर्माण के क्षेत्र में काम करने को आगे आना चाहता है। हम हर्बल टूरिज्म की योजनाओं पर भी काम कर रहे हैं। हम यहां के जड़ी उत्पादकों के साथ मिल कर औषधीय खेती को मिशन के मौर पर प्रचारित व प्रसारित करने का प्रयास कर रहे हैं।

डॉ. विजय उपाध्याय, भोले बाबा रिसर्च सेंटर।

बहुत सारे किसान जड़ी बूटी की खेती के बारे में ज्यादा नहीं जानते हैं। जो पुराने उत्पादक हैं, वे मास्टर ट्रेनर बनकर दूसरे किसानों को प्रशिक्षण देने में अहम भूमिका निभा सकते हैं। संस्था किसानों के उत्पाद के मूल्य संवर्धन व बेचने को लेकर व्यवस्था करने की कोशिश कर रही है। लक्ष्य यह है कि जड़ी- बूटियों की खेती का विस्तार हो, खेती करने वालों की संख्या बढ़े और किसानों को उनके उत्पाद का सही मूल्य मिले।

जोगेंद्र विष्ठ, लोक चेतना मंच।

जड़ी- बूटियां परम्परागत खेती का विकल्प है। उच्च हिमालय में औषधीय पौधों की खेती की बड़ी संभावनाएं हैं। ऐसी औषधियों की बड़ी मांग है और अच्छी कीमत है। इस बुहत सारे औषधीय उत्पाद दस से पंद्रह हजार प्रति किलोग्राम के हिसाब से बिके हैं। हर साल लाखों का प्लांटिंग मैटरीयल बिक रहा है। बहुत सारी प्रजातियों का बीज नहीं मिलता। बीज पर शोध की बड़ी जरूरत है। कुट व कुटकी पर अनुसंधान चलता रहना चाहिए।

डॉ. विजय कांत पुरोहित, प्रोफेसर गढ़वाल युनिवर्सिटी

नेशनल इंस्टीच्यूट ऑफ सोवा रिग्पा लेह में स्थापित किया जा रहा है। संस्थान का मुख्य कार्य हिमालयी क्षेत्र की विभिन्न चिकित्सा परम्पराओं को डॉक्यूमेंटेड करना और उनको सांइटिफिक डोमेन में लाकर उनके स्टैंडर्ड निर्धारित करना है।

भारत सरकार के आयुष मंत्रालय के सचिव पदमश्री वैद्य राजेश कुटेजा ने कार्यशाला में गिनाई योजनाएं

डब्ल्यूएचओ की मदद से आयुष बनाएगा परम्परागत दवाईयों का बैंचमार्क मॉडल

आरसीएफ नॉर्थ, जोगेंद्रनगर फीचर सर्विस

भारत सरकार के आयुष मंत्रालय के सचिव पदमश्री वैद्य राजेश कुटेजा ने कहा कि हम जानते हैं कि आयुष की विधाएं सबसे ज्यादा सफल, कम खर्चीली और स्थानीय संसाधनों पर आधारित हैं, लेकिन दुनिया भर में एंट्री लेबल पर परम्परागत दवाईयों का कोई बैंचमार्क मॉडल नहीं है। इसके लिए सब विश्व स्वास्थ्य संगठन के प्रोटोकोल को ही फॉलो करते हैं। भारत के आयुष विभाग की आर्युवेद के प्रोटोकोल स्थापित करने की परियोजना में विश्व स्वास्थ्य संगठन पार्टनर के रूप में काम कर रहा है।

हेल्थ एंड विलेज सेंटर

उत्तराखंड के अल्मोड़ा जिला के रानीखेत में आयुर्वेद एवं जड़ी-बूटियों के विकास पर रणनीति बनाने के लिए आयोजित कार्यशाला में उन्होंने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि अल्मोड़ा में साठ आयुर्वेदिक चिकित्सालय हैं। इनके चिकित्सकों का सामूहिक प्रशिक्षण भी हुआ है। अल्मोडा को आयुर्वेदिक जिला घोषित करने की कल्पना को पूरा करने के लिए यह सुनहरा अवसर है। आयुष्मान भारत योजना के अंतर्गत आयुष विभाग साढ़े बारह हजार हेल्थ एंड विलेज सेंटर बनाने जा रहा है। इसके तहत राज्यों की आयुर्वेदिक डिस्पेंसरियों को अपग्रेड किया जा रहा हैं। अल्मोडा की सभी डिस्पेंसरियों को हेल्थ एंड विलेज सेंटर के तौर पर अपग्रेड करना चाहिए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हरियाणा में इस योजना को लॉन्च कर दिया है और अब आयुष विभाग रैडी टू लॉन्च की स्टेज पर है।

बेसलाइन के लिए मिलेगी मदद

उन्होंने कहा कि न केवल डिस्पेंसरियों को हेल्थ एंड विलेज सेंटर के रूप में अपग्रेड करवाएं, बल्कि वे अपने अपने क्षेत्र में बेसलाइन तैयार करें। हर डिस्पेंसरी के केचमेंट एरिया में लोगों के स्वास्थ्य की स्थिति का अवलोकन कीजिए और दो साल बाद आयुष को रिपोर्ट दीजिए। इस बारे में अगर प्रस्ताव आता है तो आयुष विभाग वित्तीय सहयोग के लिए तैयार है। उन्होंने कहा कि आयुष विभाग के अधिकारी भी इस बारे में राज्य सरकार से बात करेंगे।

शुरू होगी कॉपरेटिव फार्मेसी

उन्होंने कहा कि रानीखेत में बंद पड़ी कॉपरेटिव फार्मेसी को शुरू करवाने के लिए राज्य सरकार से बात करेंगे। सनद रहे कि भोले बाबा ट्रस्ट के चेयरमैन डॉ. अरविंद लाल ने रानीखेत में बंद पड़ी कॉपरेटिव फार्मेसी को ट्रस्ट की ओर से शुरू करने में वह इच्छा जताई है। सचिव ने क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तरी भारत के क्षेत्रीय निर्देशक डॉ. अरूण चंदन को इस सिलसिले में फॉलोअप करने के निर्देश दिए।

भारत में हर्बल टूरिज्जम के विकास में अहम हुई आयुष विभाग की भूमिका

760 करोड़ का प्रस्ताव

वैद्य राजेश कुटेजा ने कहा कि दो माह पहले ही भारत सरकार की 'चैंपियन सर्विसेस स्कीम' शुरू हुई है, जिसमें विश्व स्तरीय सुविधाएं भारत में उपलब्ध करवानी होंगी। इस स्कीम में कई लाइन मंत्रालय हैं, आयुष भी इसमें शामिल है। इस स्कीम के तहत आयुष मंत्रालय के 760 करोड़ के परियोजना प्रस्ताव को मंजूरी मिली है और नीति आयोग ने इस प्रस्ताव की सराहना की है। इस परियोजना के तहत हर्बल टूरिज्जम के विकास के साथ डे केयर सेंटर व बड़े अस्पताल निर्मित किए जाएंगे। यह परियोजना नए वित्तीय वर्ष में शुरू होगी। इस परियोजना के तहत सॉफ्ट लोन व ब्याज सबसिडी का प्रावधान है। उन्होंने कहा कि उत्तराखंड सरकार ने अध्यात्मिक वैलनेस जोन बनाने की जो योजना शुरू की है, उसमें आयुष मंत्रालय पार्टनर की भूमिका में हैं और इस योजना को मिलकर आगे बढ़ा रहे हैं।

सोवा रिग्पा का विस्तार

वैद्य राजेश कुटेजा ने कहा कि आमची अथवा सोवा रिग्पा हिमालयी क्षेत्र की परम्परागत चिकित्सा पद्धति है, लेकिन कुछ लोगों को भ्रम है कि यह तिब्बत की चिकित्सा पद्धति है। उन्होंने बताया कि यह चिकित्सा पद्धति भारत के कई पर्वतीय क्षेत्रों में उपचार के लिए प्रचलित है। भारत सरकार ने इस चिकित्सा पद्धति का राष्ट्रीय संस्थान स्थापित करने का निर्णय लिया है। नेशनल इंस्टीच्यूट ऑफ सोवा रिग्पा लेह में स्थापित किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि इस संस्थान का मुख्य कार्य हिमालयी क्षेत्र की विभिन्न चिकित्सा परम्पराओं को डॉक्यूमेंटेड करना और उनको सांइटिफिक डोमेन में लाकर उनके स्टैंडर्ड निर्धारित करना है।

कृषि उपज के रूप में दर्ज होगी जड़ी- बूटियों की खेती

वैद्य राजेश कुटेजा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ हुई मंत्रालय की बैठक में तय हुआ है कि आयुष विभाग कृषि विभाग के साथ मिल काम करेगा। किसान की गिरदावरी में जड़ी- बूटियों की खेती कृषि उपज के तौर पर दर्ज होगी। राष्ट्रीय पादप बोर्ड जड़ी- बूटियों की वैल्यू एडिशन के लिए ऑर्गेनिक सार्टिफिकेशन को प्रोत्साहन देगा व बाजार से लिंकेज करेगा। उन्होंने कहा कि आयुष विभाग राज्य पादप बोर्ड उत्तराखंड को मजबूत करेगा। अगर प्रदेश सरकार की ओर से प्रस्ताव आएगा तो अल्मोड़ा में पचास बिस्तरों वाले अस्पताल को खोलने का प्रयास करेंगे। उन्होंने चिंता जताई कि आयुष की तरफ से जारी होने वाले फंड को स्टेट खर्च नहीं कर पा रहे हैं।

आयुष ग्रिड की कनेक्टिविटी

पदमश्री वैद्य राजेश कुटेजा ने बताया कि उनका विभाग 'आयुष ग्रिड परियोजना' पर काम कर रहा है। यह देश की अहम परियोजना है। आयुष से सम्बन्धित कृषिकरण, शिक्षा, अनुसंधान, उपचार कुछ भी हो, उसके आईटी के सल्यूशन होने चाहिए। इसी दिशा में आगे बढ़ते हुए आयुष विभाग ने इस परियोजना का काफी काम पूरा कर लिया गया है। उन्होंने बताया कि विश्व स्वास्थ्य संगठन का इंटरनेशनल क्लासिफिकेशन ऑफ डिडिजिज है। इसके तहत सभी बीमारियों की कोडिंग होती है, जिसके अनुसार ही उनका निदान किया जाता है। आयुष विभाग ने विश्व स्वास्थ्य संगठन के साथ करार किया है कि आयुष की टर्मोलॉजिस्ट को इंटरनेशनल क्लासिफिकेशन ऑफ डिडिजज में डालेंगे। वैद्य राजेश कुटेजा ने बताया कि उसके स्टैंडर्ड, कोर्स व आईटी आधारित सेल्यूशन तैयार कर लिया गया है और पोर्टल लॉन्च हो गया। आयुष ग्रिड परियोजना अगले दो साल में बन कर तैयार होगी। उन्होंने बताया कि आयुष ग्रिड परियोजना को हॉस्पीटल इंफरमेशन मेनेजमेंट सिस्टम से कनेक्ट किया गया है। आयुष ग्रिड परियोजना से कनेक्ट किसी भी आयुर्वेद संस्थान में अगर इंटरनेशनल क्लासिफिकेशन ऑफ डिडिजि के आधार पर उपचार होता है और उसके आउटकम को रिकॉर्ड करते हैं तो विभिन्न बिमारियों के उपचार का एक बड़ा महत्वपूर्ण रिकार्ड दर्ज होगा। उन्होंने बताया कि आईटी आधारित इक्को सिस्टम से ऐसा संभव है। उन्होंने बताया कि आयुष आधारित हॉस्पीटल इंफरमेशन मेनेजमेंट सिस्टम सिंपल व क्लाउट आधारित है। अभी इसे पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर शुरू किया गया है।

प्लांटिंग मैटीरियल पर फोकस

वैद्य राजेश कुटेजा ने कहा कि हाई अल्टीट्यूड में क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल का कोई स्कोप नहीं है, क्योंकि इतनी ऊंचाई पर कोई संस्थान स्थित नहीं है। उन्होंने कहा कि लेह में 11,000 फुट की ऊंचाई पर डीआरडीओ का हाई एल्टीडयूड रिसर्च सेंटर है। उन्होंने कहा कि आयुष विभाग गुणवता वाले प्लांटिंग मैटीरियल के लिए डीआरडीओ के अधिकारियों के साथ संपर्क करेगा।

सभी एजेंसियां करें सहयोग

वैद्य राजेश कुटेजा ने ई-चरक प्लेटफार्म पर वैल्यू एडिशन वाले प्रोडक्ट्स को डालने की सुचारू व्यवस्था बनाने के लिए मुख्य कार्यकारी अधिकारी को निर्देश दिए। उन्होंने रानीखेत में स्थित सीसीआरएस के क्षेत्रीय केंद्र के विशेषज्ञों व उत्तराखंड आयुर्वेद विश्वविद्यालय के अनुसंधानकर्ताओं से स्थानीय लोगों के साथ मिल कर जड़ी-बूटियों के क्षेत्र में नए प्रयोग व शोध करने के लिए सहयोग मांगा।

उत्तराखंड सरकार से करेंगे बात

वैद्य राजेश कुटेजा ने माना कि उतराखंड में जडी-बूटियों की खेती में पॉलिसी गैप है। उन्होंने कहा कि एक विस्तृत व्हाइट पेपर बनाकर प्रदेश सरकार के मुख्य सचिव के साथ मुद्दे को उठाया जाएगा। बायो डायवर्सिटी बोर्ड से सम्बन्धित मुद्दों को राष्ट्रीय स्तर पर उठाया है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड घर के पास रोजगार व आजीविका उपलब्ध करवा पलायन रोकने की दिशा में काम कर रहा है।

5 साल में 16 करोड़ का कारोबार

वैद्य राजेश कुटेजा ने बताया कि राजस्थान के नागौर के एक प्रगतिशील किसान ने वहां के किसानों को खर-पतवार समझी जाने वाली प्राकृतिक रूप से पैदा होने वाली विभिन्न प्रकार की जड़ी-बूटियों की जानकारी देकर उनको कलेक्ट व वैल्यू एडिशन करने का सामाजिक उद्यम विकसित किया और पांच साल में 16 करोड़ का कारोबार किया है। ऐसा करने में वन विभाग की मदद की जरूरत होगी।

पते की बात

जे एन शास्त्री

मुख्य कार्यकारी अधिकारी,
राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड।

जड़ी- बूटी उत्पादन में उत्तराखंड व हिमाचल अगले दो सालों में देश में अपनी अलग पहचान बनाने वाले हैं। राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड इन दोनों राज्यों के उच्च हिमालयी क्षेत्रों में दुर्लभ दिव्य जड़ी- बूटियों की खेती के लिए के महत्वांकाक्षी योजना पर काम कर रहा है। जिनकी बाजार में भारी मांग है और अच्छी कीमत मिलती है, ऐसी जड़ी- बूटियों की खेती से अगले दो सालों में किसानों की आय तीन गुणा तक हो जाएगी। 16 से लेकर 30 जड़ी- बूटियों की खेती के प्रयास होंगे और इसके लिए किसानों को क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल, पोस्ट हार्वेस्टिंग तकनीक उपलब्ध करवाने में मदद की जाएगी।

उत्तराखंड और हिमाचल पर रहेगा फोकस

जड़ी- बूटी उत्पादन में उत्तराखंड व हिमाचल अगले दो सालों में देश में अपनी अलग पहचान बनाने वाले हैं। राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड इन दोनों राज्यों के उच्च हिमालयी क्षेत्रों में दुर्लभ दिव्य जड़ी- बूटियों की खेती के लिए के महत्वांकाक्षी योजना पर काम कर रहा है। जिनकी बाजार में भारी मांग है और अच्छी कीमत मिलती है, ऐसी जड़ी-बूटियों की खेती से अगले दो सालों में किसानों की आय तीन गुणा तक हो जाएगी। ऐसी16 से लेकर 30 जड़ी- बूटियों की खेती के लिए प्रयास होंगे और इसके लिए किसानों को क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल से लेकर पोस्ट हार्वेस्टिंग तकनीक उपलब्ध करवाने में मदद की जाएगी। प्रोटोकोट के मुताबिक प्रमाणीकरण सहित अल्पाईन क्षेत्र की जड़ी-बूटियों का क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल उपलब्ध करवाया जाएगा, ताकि किसानों को फसल की अच्छी पैदावार मिले।

बड़ी-बड़ी हिमालय व डाबर जैसी कंपनियां कॉपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी के तहत किसानों के लिए काम कर रही हैं। किसानों को जड़ी- बूटियों का क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल उपलब्ध करवाने के लिए ऐसी कंपनियों से सहयोग लिया जाएगा। आईटीसी कपंनी कॉपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी के तहत दक्षिण भारत में15 हजार एकड़ में पेड़ लगाना चाहती। इस कंपनी से भी उत्तराखंड के किसानों के लिए मदद के प्रयास किए जाएंगे। किसानों को उनके उत्पाद की सही कीमत मिले, इसके लिए किसान अपने उत्पाद की गुणवता जांच के लिए ड्रग्स टेस्ट प्रयोगशाला से टेस्ट जरूर करवाए। औषध पादप बोर्ड के हर क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र के अधीन ऐसी प्रयोगशाला शामिल है, जहां ऐसे टेस्ट संभव हैं। ऐसा करने से किसान के उत्पाद के शोध व सार्टिफिकेशन दोनों हो जाएंगे। देश में ऐसी 48 ड्रग्स टेस्ट प्रयोगशालाएं काम कर रही हैं। सभी क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्रों को इसके लिए निर्देश जारी किए गए हैं।

औषधीय पौधों की वैल्यू चेन में वैद्य लोगों का बहुत बड़ा लिंक है। आलम यह है कि बहुत से वैद्यों को भी जड़ी- बूटियां खारी बावली से खरीदने को मजबूर होना पड़ता है। वैद्यों को औषधीय पौधों की वैल्यू चेन में जोड़ने से कम मात्रा में जड़ी- बूटियों का उत्पादन करने वाले किसानों के उत्पाद के लिए खरीददार मिल जाएंगे। किसानों के उत्पाद को सही कीमत मिले, उसे अपना उत्पाद औने-पौने दामों पर न बेचना पड़े और भुगतान समय पर हो, इसके लिए किसानों के सीधे बड़ी कंपनियों के साथ करार करवाए जाएंगे। ऐसी कंपनियों की पहचान की जा रही है। जल्द ही शॉर्टलिस्ट कर ऐसी 30 -35 कंपनियों को उत्पाद खरीद के लिए किसानों से लिकेज करवाएंगे।

किसानों के जड़ी-बूटी के उत्पाद को कृषि उपज में शामिल करने और उनके न्यूनतम समर्थन मूल्य तय करने की दिशा में काम शुरू किया जा चुका है। उत्तराखंड में जड़ी- बूटियों का दो सौ हैक्टेयर संरक्षित क्षेत्र है,जबकि इससे छह गुणा जयादा1200 हेक्टेयर में जड़ी- बूटियों की खेती की जा रही है। यह खुद में ही एक अनूठा मॉडल है, जहां संरक्षित क्षेत्र के मुकाबले ज्यादा क्षेत्र पर जड़ी- बूटियां उगाई जा रही हैं। देश के अन्य राज्यों में भी ऐसा मॉडल स्थापित करने के प्रयास होंगे। देश भर में जड़ी- बूटियों का उत्पादन क्षेत्र बढ़ाने के साथ ही उनकी पैदावार बढ़ाने की दिशा में भी काम जा रहा है। किस समय किस फसल की पोस्ट हार्वेस्टिग की ट्रेनिंग की जरूरत है, क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र कलेंडर बनाकर किसानों के लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था करने जा रहे हैं। राष्ट्रीय औषद पादप बोर्ड कल्टीवेशन सार्टिफिकेट के मुद्दे को वन विभाग के साथ प्रमुखता से उठा रहा है।

डिजिटल मार्केटिंग के जरिये जड़ी- बूटी उत्पादक की पहुंच को ग्लोबल बनाने की योजना पर राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड काम कर रहा है। ई कॉमर्स वेबसाइट 'ई चरक' में एक ओर विंडो जोड़ कर जड़ी- बूटियों के उत्पादों को डिसप्ले किया जाएगा। किसान को यहां रजिस्टर्ड करना होगा। पिछले तीन साल में इस दिशा में बहुत से काम हुए हैं। क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्रों के खुलने से केंद्र की बहुत सी योजनाएं जड़ी- बूटी उत्पादकों तक पहुंची है। अगले तीन साल में इस क्षेत्र में कई अहम योजनाओं का क्रिन्वयन शुरू होगा। इसके लिए किसानों का सहयोग जरूरी होगा।

सम्पादक
डॉ. अरूण चंदन

हम ऑनलाईन उपलब्ध हैं
pdf **यहां से डाऊनलाड करें।**
www.rcfcnorth.in/download

लेखकों से आग्रह
यदि आप विषय से संबंधित कोई लेख/अनुभव/जानकारी प्रकाशनार्थ भेजना चाहें तो निसंकोच भेजें। छपने योग्य होने पर अवश्य प्रकाशित किया जाएगा।
सम्पादक

हमसे संपर्क करें
क्षेत्रीय निदेशक / सम्पादक
ई- चरक
जड़ी- बूटी बाजार
क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र
राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड
आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान
जोगिंद्रनगर, मंडी, हिमाचल प्रदेश।
पिन : 175015
हेल्पलाईन : 8544734206
दूरभाष : 01908 222333
बैवसाइट : www.rcfcnorth.in
मेल: rcfcnorth@gmail.com

लाल पैथ लैब का उत्तराखंड को ऑफर

पदमश्री डॉ. अरविंद लाल

लेखक लाल पैथ लैब के अध्यक्ष हैं।

अध्यात्मिक दृष्टि से समृद्ध कुमाऊं में आयुर्वेद संस्थान स्थापित करने वाली लाल पैथ लैब यहां पाए जाने वाले चार सौ औषधीय पौधे के कृषिकरण, उनके अनुसंधान व दवा उत्पादन में काम करने को तैयार है।

त्रिपुरा और गुजरात सरकार के साथ पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप मोड में काम कर चुकी मशहूर कंपनी लाल पैथ लैब उत्तराखंड को हर्बल राज्य बनाने की दिशा में काम करने को तैयार है। लाल पैथ लैब कुमांऊ के रानीखेत में हेड़ाखान बाबा अस्पताल ण्वं रिचर्स सेंटर का संचालन कर रही है। अध्यात्मिक दृष्टि से समृद्ध कुमाऊं में आयुर्वेद संस्थान स्थापित करने वाली लाल पैथ लैब यहां पाए जाने वाले चार सौ औषधीय पौधे के कृषिकरण, उनके अनुसंधान व दवा उत्पादन में काम करने को तैयार है। कंपनी ने राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड के माध्यम से यह प्रस्ताव प्रदेश सरकार को दिया है। इतना ही नहीं, लाल पैथ लैब यहां कई सालों से बंद पड़ी एक कॉपरेटिव ड्रग्स कंपनी को रिवाइव करने को तैयार हैं। इसके लिए भी कंपनी की ओर से सरकार को प्रस्ताव दिया गया है।

लाल पैथ लैब कंपनी के स्वामित्व वाला अस्पताल एवं रिसर्च सेंटर रानीखेत में साल 1995 से संचालित किया जा रहा है। यहां के दूरदराज के क्षेत्र में लोगों के स्वास्थ्य की देखभाल में इस संस्थान का अहम रोल है। इस संस्थान में अब तक साढ़े सात लाख रोगियों का उपचार किया जा चुका है। गरीबों का यहां निशुल्क उपचार किया जाता है, जबकि बाकि मरीजों का उपचार न्यूनतम दरों पर किया जाता है। यह संस्थान ग्रामीण कैंपों में अढ़ाई लाख ग्रामीणों का उपचार कर चुका है। कैटरेट के मरीजों की बड़ी संख्या को देखते हुए संस्थान ने वर्ष 2003 में ऑफथेमॉजी सेंटर खोला। प्रसिद्ध श्रॉफ आई अस्पताल दिल्ली से पार्टनरशिप मे चलने वाले इस अस्पताल में अब तक बीस हजार लोगों की कैटरेट सर्जरी की जा चुकी है। साल 2004 में जब आयुर्वेद व पंचकर्मा में केरल का

नाम प्रमुखता से लिया जाता था, इस संस्थान ने यहां आयुर्वेदिक अस्पताल शुरू किया और पंचकर्मा सेंटर की पहल की। अभी तक आयुर्वेदिक अस्पताल में 36 हजार मरीजों का उपचार किया जा चुका है। पंचकर्मा के क्षेत्र में इस संस्थान ने अपनी खास पहचान बनाई है। दुनिया भर के तीस देशों से लोग पंचकर्मा करवाने यहां पहुंच रहे हैं। अभी तक छह हजार लोगों का उपचार पंचकर्मा से किया जा चुका है। यह संस्थान उत्तरी भारत का सबसे मशहूर संस्थान बन गया है।

उत्तराखंड में आयुर्वेद में अपनी खास पहचान बना चुकी लाल पैथ लैब अब यहां औषधीय कृषिकरण, उसके वैल्यू एडिशन व आयुर्वेद दवा निर्माण में निवेश के लिए तैयार है। कुमाऊं का वातावरण औषधीय पौधों के कृषिकरण के अनुकूल है और यहां चार सौ औषधीय पौधों की प्रजातियां पाई जाती हैं। बड़े स्तर पर यहां औषधीय पौधों की खेती हो रही है। दवा व खाद्य उद्योग में तेजी से बढ़ती औषधीय पौधों की मांग को देखते हुए लाल पैथ लैब इस क्षेत्र में निवेश को तैयार है।

रानीखेत में आयोजित कार्यशाला में कुटकी उत्पादकों की आय बढ़ाने के लिए बनाई रणनीति

वैल्यू एडिशन से उत्तराखंड के किसानों की तकदीर बदलेगी कुटकी की खेती

आरसीएफसी नॉर्थ जोगेंद्रनगर, फीचर सर्विस

उत्तराखंड के जड़ी- बूटी उत्पादक अब कुटकी को कच्चे माल के तौर पर बाजार में बेचने के बजाये उसमें वैल्यू एडिशन कर सीधे दवा उत्पादकों को बेचेंगे। आयुर्वेद व औषधीय पर पौधों के विकास के लिए रणनीति बनाने को लेकर 22 जनवरी को रानीखेत में आयोजित कार्यशाला में आशुष मंत्रालय के सचिव वैद्य राजेश कुटेजा व राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड के कार्यकारी अधिकारी जेएन शास्त्री की उपस्थिति में यह निर्णय हुआ है कि कुटकी के उत्पादकों को उनके उत्पाद का उचित मूल्य दिलवाने के लिए कुटकी की न केवल ऑर्गेनिक सार्टिफिकेशन करवाई जाएगी, बल्कि उसमें वैल्यू एडिशन करने की सुविधा स्थानीय स्तर पर किसानों को उपलब्ध करवाई जाएगी। राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड की ओर से स्थानीय स्तर पर ही कुटकी की प्राइमरी प्रोसेसिंग, पोस्ट हार्वेस्टिंग व बायो प्रोडक्ट्स बनाने के लिए किसानों को प्रशिक्षित किया जाएगा तथा तकनीकी सहायता उपलब्ध करवाई जाएगी। चमोली, उत्तराकाशी व टिहरी क्षेत्र के कई उच्च हिमालयी गांवों में हजारों किसान कुटकी की खेती कर रहे हैं। उत्तराखंड के उच्च हिमालयी क्षेत्रों में कुटकी को सतत् आजीविका व रोजगार का मॉडल बनाने की यह अनूठी पहल है।

सचिव की ऑन स्पॉट डायरेक्शन

आयुष मंत्रालय के सचिव वैद्य राजेश कुटेचा ने राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड के मुख्य कार्यकारी अधिकरी जेएन शास्त्री और क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तर भारत, जोगिंद्रनगर के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. अरूण चंदन को उत्तराखंड में कुटकी के संरक्षण, संवर्धन, गुणवता वाले प्लांटिंग मैटीरियल की उपलब्धता, कृषिकरण, जैविक प्रमाणीकरण, वैल्यू एडिशन, न्यूनतम समर्थन मूल्य निर्धारण, कुटकी उत्पादन को कृषि उपज में शामिल करने व उसके विपणन के लिए सुविधा की व्यवस्था करने के निर्देश दिए हैं।

क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल का करना होगा उचित प्रबंध

कुटकी से उत्तरांखड के सीमांत हिमालयी क्षेत्रों में सतत् आजीविका व रोजगार का मॉडल सथापित करने के लिए सबसे अहम है कि किसानों को गुणवता वाला प्लांटिंग मैटीरियल उपलब्ध हो, ताकि उन्हें अच्छी पैदावार मिले। बेशक अब यहां

की कई गैर सरकारी संस्थाएं व किसान कुटकी का प्लांटिंग मैटीरियल तैयार कर रहे हैं, लेकिन दूसरी ओर कुटकी के उन्नत बीज व पौध उपलब्ध करवाने लिए जड़ी- बूटी शोध एवं विकास संस्थान गोपेश्वर, चमोली के प्रयास उत्साहवर्धक नहीं हैं। ज्यादा पैदावार देने वाली कुटकी की नई वैरायटी विकसित करने के शोध अभी सार्थक सिद्ध नहीं हुए हैं। संस्थान कुटकी का क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल उपलब्ध करवाने में भी फिसड्डी साबित हुआ है। इस संस्थान ने जहां साल 2010 में किसानों को कुटकी के दो लाख से ज्यादा पौधे उपलब्ध करवाए थे, वहीं वर्ष 2019 में महज पांच हजार पौधे उपलब्ध करवाए हैं। उत्तराखंड पादप बोर्ड भी इस दिशा में निष्क्रिय ही रहा है। क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तरी भारत, जोगेंद्रनगर के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. अरूण चंदन का कहना है कि उनका संस्थान उत्तराखंड में कुटकी की नर्सरी तकनीक विकसित करने के लिए किसानों को प्रोत्साहित कर रहा है। राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड के मुख्य कार्यकारी अधिकारी जे एन शास्त्री कहते हैं कि कुटकी के क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल की उपलब्धता से कुटकी की पैदावार बढ़ेगी और ज्यादा किसान कुटकी की खेती के प्रति आकर्षित होंगे। आयुष मंत्रालय के सचिव वैद्य राजेश कुटेजा का कहना है कि इस सिलसिले में लेह स्थित डीआरडीओ के रिसर्च सेंटर से भी संपर्क करेंगे।

कुटकी महोत्सव का असर

चमोली जनपद का घेस गांव कुटकी की खेती को लेकर राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने में कामयाब रहा है। कुटकी उत्पादन के चलते इस सीमांत पहाड़ी गांव में केंद्रीय आयुष मंत्री श्रीपद नायक और उत्तराखंड के मुख्यमंत्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत दस्तक दे चुके हैं। पिछले साल यहां पर 'कुटकी महोत्सव' का आयोजन किया गया था। बतौर मुख्यातिथि यहां पधारे केंद्रीय आयुष मंत्री श्रीपद नायक ने घेस गांव में राष्ट्रीय जड़ी- बूटी संस्थान खोलने की स्वीकृति दी है। उन्होंने घेस गांव को 'आयुष ग्राम' के तौर पर विकसित करने के लिए संभव मदद का भरोसा दिया। महोत्सव के दौरान उत्तराखंड के सीएम त्रिवेन्द्र सिंह रावत ने कुटकी के ऑरगेनिक प्रमाणपत्र करने की बात कही है। यह कुटकी महोत्सव का ही असर है कि रानीखेत में आयोजित कार्यशाला में आयुष मंत्रालय के सचिव वैद्य राजेश कुटेजा बतौर मुख्यातिथि व राष्ट्रीय पादप बोर्ड के सीईओ एएन शास्त्री बतौर विशेष अतिथि पहुंचे। कार्यशाला में पहुंचे साठ किसानों में अधिकतर किसान कुटकी की खेती कर रहे हैं। दवा उद्योग में बढ़ती कुटकी मांग और बाजार में बढ़िया कीमत के चलते राष्ट्रीय पादप बोर्ड उत्तराखंड में न केवल कुटकी उत्पादन को विस्तार देने के लिए नर्सरी तकनीक विकसित करने की योजना पर काम कर रहा है, बल्कि इसके ऑर्गेनिक प्रमाणीकरण, इसे कृषि उपज में शामिल करने, न्यूनतम समर्थन मूल्य घोषित करने व स्थानीय स्तर पर वैल्यू एडिशन कर आय बढ़ाने व किसानों की मार्केटिंग कनेक्टिविटी के लिए प्रयास शुरू हो चुका है। क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तर भारत, जोगिंद्रनगर के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. अरूण चंदन कहते हैं कि उत्तराखंड के कुटकी उत्पादकों को विभिन्न योजनाओं के तहत लांभावित किया जा रहा है, ताकि यह क्षेत्र कुटकी सहित विभिन्न जड़ी- बूटियों की खेती में मुकाम हासिल करे।

कुटकी की खेती में कामगार स्वायत्त सहकारिता का रोल

चमोली जनपद में पहाड़ियों से घिरे 5600 फुट की ऊंचाई पर स्थित नारायण बगड़ व घेस गांव की जड़ी- बूटी उत्पादन एवं विपणन की सहकारी संस्था 'कामगार स्वायत्त सहकारिता' ने किसानों को कुटकी की खेती के लिए प्रोत्साहित करने में अहम भूमिका निभाई है। यह संस्था वर्ष 1999 से किसानों को विभिन्न प्रशिक्षण दिलवाने के साथ जड़ी-बूटियों खासकर कुटकी के उत्पादन एवं विपणन में मदद कर रही है। घेस गांव में 150 किसान कुटकी का उत्पादन कर रहे हैं। यहां के कई किसानों ने कुटकी के नर्सरी उत्पादन की भी पहल की है और हर साल लाखों का क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल किसानों को उपलब्ध करवा रहे हैं।

सिक्किम, हिमाचल तक जा रही कुटकी की पौध

चमोली के घाट विकास खंड में वर्ष 1994 से अंकुर संस्था उच्च हिमालयी क्षेत्रों में पैदा होने वाले जड़ी बटियों की खेती के लिए किसानों को प्रशिक्षित कर रही है। यह संस्था जड़ी-बूटियों की नर्सरी स्थापित कर किसानों को उच्च गुणवता वाला क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल उपलब्ध करवा रही है। इस संस्था के प्रयासों से क्षेत्र के कई किसान स्वयं सहायता समूह बनाकर कुटकी की खेती करने के लिए आगे आए हैं। यहां तैयार कुटकी का क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल हिमाचल प्रदेश व सिक्किम के किसान भी खरीद रहे हैं। कुटकी उत्पादक पुष्कर सिंह कहते हैं कि कुटकी ने घाटी के किसानों के लिए अजीविका व रोजगार के नए अवसर प्रदान किए हैं।

चार हजार किलोग्राम कुटकी पैदावार का लक्ष्य निर्धारित

बागेश्वर जिला में कपकोट ब्लॉक के बदियाकोट, तीख, सोरांग, कर्मी तोली, व कीमू आदि गांवों की 203 नाली भूमि पर कुटकी की खेती हो रही है। इस साल इन गांवों में कुटकी के पांच लाख पौधे रोपे गए हैं। 'हिमालयन जैविक कृषि उत्पादन' सहित कई सहायता समूह कुटकी की खेती कर रहे हैं। यहां के 208 किसान परिवार कुटकी की खेती कर रहे हैं। जिन स्थानों पर इस साल बिजाई की गई है, उसकी पैदावार 2022 तक बाजार में भेजने को तैयार होगी। यहां चार हजार किलोगाम पैदावार का लक्ष्य निर्धारित किया गया है और ऐसा अनुमान है कि बाजार में इसकी कीमत बीस लाख से ज्यादा होगी। वैल्यू एडिशन होने की सूरत में इसका मूल्य दोगुणा होने की उम्मीद है।

मई 2016 में उत्तराखंड के तेजपत्ता को जीआईसी एक्ट 1999 के अंतर्गत पंजीकृत कर जियोग्राफिकल इंडीकेटर प्राप्त हुआ। यह उत्तराखंड में तेजपत्ता की गुणवत्ता, प्रर्याप्त उत्पादन तथा अन्य कई विशेषताओं का सूचक है।

75 सालों से उगाई जा रही लाहुल में कुठ, वर्ष 1960 तक चरम पर रहा कुठ का कारोबार

उत्तराखंड में सतत् आजीविका व रोजगार पैदा कर पलायन रोकेगा 'मीठा तेजपत्ता'

आरसीएफसी नॉर्थ, फीचर सर्विस

उत्तराखंड के जंगलों में बहुयत पैदा होने वाले और अपने खास औषधीय गुणों के चलते अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 'मीठा तेजपत्ता' कहे जाने वाला ओषधीय पौधा उत्तराखंड में कृषि आर्थिकी का चेहरा बदलने वाला है। आने वाले समय में तेजपत्ता सतत् आजीविका व रोजगार का मॉडल बनकर उत्तराखंड में पयालन की समस्या का समाधान करेगा। इतना ही नहीं, रोजी- रोटी की तलाश में घर से बाहर गए यहां के लोगों की घर वापसी में भी यह पौधा चमत्कारी होने वाला है। उत्तराखंड में विभिन्न जनपदों में बड़े पैमाने पर तेजपत्ता के कृषिकरण की पहल तो काफी समय पहले हो चुकी है और दस हजार से ज्यादा किसान तेजपत्ता की खेती कर रहे हैं। अब राज्य में इसके कृषिकरण को विस्तार देने के प्रयास तेज हो गए हैं। तेजपत्ता के पत्ते, छाल व इससे तैयार एसेंसियल ऑयल की बाजार में भारी मांग होने के चलते उत्तराखंड के किसानों को राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड की ओर से तेजपत्ता की व्यवसायिक खेती के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड उत्तराखंड में न केवल तेजपत्ता के कृषिकरण को तेज करेगा, बल्कि इसमें वैल्यू एडिशन कर किसानों की आय को बढ़ाने के प्रयास करेगा। किसान की बाजार तक पहुंच को सरल बनाने के लिए स्थानीय स्तर पर उत्पाद बेचने की सुविधा प्रदान की जाएगी।

लागत अधिक, कीमत कम

22 जनवरी को रानीखेत में उत्तराखंड में आयुर्वेद व औषधीय पौधों के विकास की खातिर रणनीति बनाने के लिए आयोजित कार्यशाला में किसानों ने तेजपत्ता के कृषिकरण में पेश आ रही समस्याओं को विशेषज्ञों के सामने रखा। किसानों ने बताया कि तेजपत्ता की कटाई से लेकर पत्तों को सुखाने तक किसान की लागत औसतन 30 रुपए प्रति किलोग्रमा आ रही है, जबकि मार्केट में तेजपत्ता की कीमत पचास रुपए प्रति किलोग्राम से कम है। तेजपत्ता को बेचने के लिए मार्केट की सुविधा न होने के कारण उत्पादकों को उसकी सही कीमत नहीं मिल पा रही है।

ऐसे बढ़ेगी किसान की आय

राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड के कार्यकारी अधिकरी जेएन शास्त्री ने बताया कि ज्यादा पैदावार देने वाली तेजपत्ता की नई वैरायटी तैयार करने पर अनुसंधान किया जाएगा। तेजपत्ता की गुणवत्ता वाली पौध उपलब्ध करवाने के लिए यहां के किसानों को नर्सरी तकनीक प्रबंधन में दक्ष किया जाएगा। उत्पाद का सही मूल्य मिले, इसके लिए तेजपत्ता का ऑर्गेनिक प्रमाणीकरण करने के साथ ही इसका न्यूनतम समर्थन मूल्य निर्धारित करने के प्रयास किए जाएंगे।

'मीठा तेजपत्ता'

उत्तराखंड का तेजपत्ता राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय बाजार में मीठा तेजपत्ता के नाम से प्रचलित है, जिसका उपयोग मसाले के बजाय आयुर्वेद व अन्य चिकित्सा पद्धतियों में औषधि के रूप में किया जाता है। उत्तराखंड में उत्पादित तेजपत्ता अपनी विशिष्ट गुणवत्ता के कारण अन्य राज्यों के तेजपत्ता से भिन्न है, जिसकी अन्य राज्यों में भी मांग है। हरिद्वार व ऊधमसिंह नगर को छोड़कर बाकी जनपदों में 1000- 2200 मीटर की ऊंचाई पर नम व छायादार स्थानों पर तेजपत्ता आसानी से पैदा किया जा सकता है। यह पौधा उत्तराखंड के जंगलों में स्वतः ही बहुतायत मात्रा में उग आता है। वाइल्ड कलेक्शन के जरिये तेजपत्ता बाजार में बेचा जाता रहा है। वर्तमान में उत्तराखंड में तेजपात का उत्पादन 10,000 से अधिक कृषकों द्वारा किया जा रहा है तथा वार्षिक उत्पादन लगभग 1000 मैट्रिक टन से अधिक है। 31 मई 2016 को उत्तराखंड के तेजपत्ता को जीआईसी एक्ट 1999 के अंतर्गत पंजीकृत कर जियोग्राफिकल इंडीकेटर प्राप्त हुआ। यह उत्तराखंड में तेजपत्ता की गुणवत्ता, प्रर्याप्त उत्पादन तथा अन्य कई

विशेषताओं का सूचक है। तेजपत्ता की छाल जिसे दालचीनी कहा जाता है, उसे मसालों की श्रेणी में रखा गया है। बुजुर्ग पेड़ दालचीनी देने के काम आते हैं। तेजपत्ता के पत्ते व छाल के अलावा इसके इसेंसियल ऑयल की भी बाजार में भारी मांग है। उत्तराखंड के तेजपत्ता में सिनेमलडिहाईड नामक सक्रिय तत्व सर्वाधिक मात्रा में पाया जाता है, जिस कारण यह औषधि के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। तेजपत्ता की पत्ती व छाल दोनों का उपयोग किया जाता है। पत्तियों की सबसे अधिक खपत मसाला उद्योग में होती है। पत्तियों को सीधे मसाले के रूप में प्रयोग होता है और पत्तियों से मिलने वाले सुगंधित तेल का भी सौन्दर्य प्रसाधन में इस्तेमाल होता है। पौधरोपण करने के पांच साल बाद तेजपत्ता की फसल मिलनी शुरू हो जाती है। एक हेक्टेयर क्षेत्रफल में ही प्रतिवर्ष तकरीबन 30 क्विंटल पत्तियों का उत्पादन होता है। जिससे किसानों को प्रति हेक्टेयर 1.50 लाख की आय होती है।

चालीस साल तक फसल देता तेजपत्ता

तेजपत्ता का वानस्पतिक नाम सिनेमौमम तमाला है, जो लोरेसी कुल के अंतर्गत आता है। विश्व भर में तेजपत्ता की 350 प्रजातियां हैं, जिनमें से बीस प्रजातियां भारत में पाई जाती हैं। तेजपत्ता और दाल चीनी का आयुर्वद व अन्य ग्रंथों में विस्तार से वर्णन मिलता है। लगभग दो हजार ईस्वी पूर्व के इतिहास में इसको मसालों व औषधि के रूप में प्रयोग करने का उल्लेख हैं। समान्यता इसे इंडियन बे लीफ के नाम से जाना जाता है। फूड, फार्मास्युटिकल, परफ्यूमरी, ऑयल व कॉस्मेटिक इंडस्ट्री में तेजपत्ता व दालचीनी की भारी डिमांड रहती है। फ्रांस व अमेरिका के बाजार में में तेजपत्ता के ऑयल की भारी मांग रहती है। तेजपत्ता की एक बार रोपाई के बाद इससे कम से कम 30-40 वर्षों तक फसल की प्राप्ति होती है। तेजपत्ता की बहुवर्षीय फसल होने के कारण किसान को हर वर्ष करने वाली रोपाई से छुटकारा मिलता है। इसे उगाने में खरपतवार की समस्या नहीं होती है। तेजपत्ता की डिमांड बाजार में निरंतर बनी रहती है, जिसके चलते इसके अच्छे दाम मिलते हैं। तेजपत्ता को खेतों की मेड़ों, बागों तथा पहाड़ी ढलानों पर आसानी से उगाया जा सकता है। तेजपत्ता के बुजुर्ग पेड़ों की छाल से दालचीनी तैयार होती है। कृषि आर्थिकी का मजबूत संतभ होने के साथ तेजपत्ता मृदाक्षरण रोकने व पर्यावरण संरक्षण में भी सहायक है।

आर्थिकी बदलने में कारगर साबित होगा उत्तराखंड का बेशकीमती पेड़

नैनीताल में तेजपत्ता उत्पादन के मामले में मुख्य उत्पादक क्षेत्र बन रहा है। जिले के सात विकास खंडों में 3759 कृषक 250 हेक्टेयर क्षेत्रफल में तेजपत्ता की खेती कर रहे हैं। अब भीमताल व ओखलकांडा क्षेत्र में 17 एरोमा कलस्टर विकसित किए जा रहे हैं, जिसमें 786 कृषकों की 183 हेक्टेयर क्षेत्रफल भूमि को तेजपत्ता की खेती करने के लिए चयन किया गया है। जड़ी-बूटी शोध संस्थान गोपेश्वर के सहयोग से मां बाराही स्वायत्त सहकारिता समिति चम्पावत ने 100 नाली जमीन पर जड़ी- बूटी और सुगंधित पौधों की खेती करने का निर्णय लिया है। यहां दस हजार तेजपात की पौध लगाने का लक्ष्य रखा है। राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड उत्तराखंड में व्यापक स्तर पर तेजपत्ता की खेती के लिए किसानों के साथ काम कर रहा है। एक तरफ जहां तेजपत्ता के तहत उत्पादन क्षेत्र में बढोतरी की जाएगी, वहीं दूसरी ओर तेजपत्ता के उत्पादन को भी बढ़ाया जाएगा। क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तर भारत के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. अरूण चंदन का कहना है कि उत्तराखंड के तेजपत्ता की वैल्यू चेन पर काम करते हुए इसके क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल से लेकर उत्पाद की ड्रग टेस्टिंग, प्रमाणिकरण, ऑर्गेनिक सार्टिफिकेशन व पोस्ट हार्वेस्टिंग तकनीक व न्यूनतम समर्थन मूल्य घोषित करवाने में किसानों का सहयोग किया जा रहा है। उत्पाद बेचने के लिए किसानों की मार्केट व उद्योग से लिकेज करवाने के अलावा डिजिटल प्लेटफार्म 'ई चरक' व ई नैम के जरिये उनकी पहुंच को ग्लोबल बनाया जाएगा। तेजपत्ता यहां की आर्थिकी बदलने में कारगर साबित होगा।

क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल

जड़ी- बूटियों की गुणवता वाली पौध तैयार करने के लिए विशेषज्ञों की देख- रेख में जड़ी- बूटियों की सात नर्सरियां स्थापित हुई हैं और नर्सरी तकनीक व नर्सरी प्रबंधन के लिए किसान आगे आए हैं।

क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल की नर्सरी तकनीक विकसित करने के लिए राष्ट्रीय औषध पादप करेगा बड़ी पहल

क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल की कमी किसानों की राह में सबसे बड़ी रूकावट

आरसीएफसी नॉर्थ जोगेंद्रनगर, फीचर

जड़ी- बूटियों के उच्च गुणवता वाले बीज व पौध न मिलने के कारण उतराखंड के खासे परेशान हैं। आलम यह है कि कई प्रजातियों के बीज तक नहीं मिल पा रहे हैं। घटिया बीज व पौध का खामियाजा किसानों को भुगतना पड़ा रहा है। पौध अच्छी नहीं होने के कारण उनके खेत मे कम गुणवता वाला उत्पाद व कम पैदावार हो रही है। रानीखेत में आयोजित कार्यशाला के दौरान दोनों दिन क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल के संकट का मुद्दा चर्चा में रहा। किसानों का कहना है कि सरकारी स्तर पर जड़ी- बूटियों का क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल उपलब्ध करवाने के प्रयास गंभीर नहीं हैं। जड़ी- बूटियों का कोई सीड बैंक न होने की वजह से दुर्लभ प्रजातियों के संरक्षण की मुहिम संकट में है। किसानों का कहना है कि जब तक गुणवता वाला क्वालिटी मैटीरियल किसान को नहीं मिलेगा, जड़ी- बूटियों की सप्लाई चेन में किसान को पहले कदम पर ही नुक्सान उठाना पड़ेगा। किसानों से क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल के मुद्दे को प्राथमिकता के आधार पर हल करने की मांग अधिकारियों से की। राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड के क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तर भारत, जोगेंद्रनगर के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. अरूण चंदन ने कहा कि उनके केंद्र ने इस बार यहां के किसानों को क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल उपलब्ध करवाने की कोशिश की है, लेकिन यहां बड़े स्तर पर नर्सरी उत्पादन की जरूरत है। राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड के कार्यकारी अधिकारी जेएन शास्त्री ने कहा कि क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल उपलब्ध करवाने के लिए नर्सरी तकनीक के विकास के लिए कॉर्पोरेट सोशल रिस्पोंसिविलिटी के तहत बड़ी कंपनियों से सहयोग लिया जाएगा। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड औषधीय पौधों की नर्सरी तकनीक विकसित करने के लिए महत्वाकांक्षी परियोजना पर काम कर रहा है, जिसके नतीजे जल्द आने वाले हैं। उन्होंने कहा कि स्थानीय किसानों को भी नर्सरी तकनीक में दक्ष किया जाएगा। आयुष मंत्रालय के सचिव वैद्य राजेश कुटेचा ने कहा कि उच्च हिमालयी क्षेत्रों में होने वाले औषधीय पौधों का क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल उपलब्ध करवाने के लिए वे लेह स्थित डीआरडीओ के अधिकरियों से संपर्क करेंगे।

सात नर्सरियों की पहल से शुरूआत

नेशनल मेडीसनल बोर्ड के क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तर भारत, जोगेंद्रनगर के प्रयासों से उत्तरी भारत के किसानों ने जड़ी- बूटियों की नर्सरी लगाने की दिशा में कदम बढ़ाए हैं। यह पहला मौका है, जब उत्तरी भारत में विभिन्न तरह की जड़ी- बूटियों की गुणवता वाली पौध तैयार करने के लिए विशेषज्ञों की देख- रेख में जड़ी- बूटियों की सात नर्सरियां स्थापित हुई हैं और नर्सरी तकनीक व नर्सरी प्रबंधन के लिए किसान आगे आए हैं। किसानों को जरूरी इनपुट्स उपलब्ध करवाए गए और विशेषज्ञों ने समय- समय पर नर्सरियों का निरीक्षण कर क्लालिटी प्लांटिंग मैटीरियल तैयार किया है। इन नर्सरियों में उत्तरी भारत में पैदा होने वाली छह दिव्य औषधियों मोरिंगा, यलो शतावर, गिलोये, सम्मी, अतीस व सर्पगंधा के लाखों पौधे तैयार किए गए हैं। क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड व उत्तर प्रदेश के किसानों को उपलब्ध करवाया गया है। स्किल इंडिया के तहत ट्रेनिंग सेंटर खोल कर किसानों को वाइल्ड कलेक्शन और नर्सरी तकनीक व प्रबंधन में दक्ष किया जाएगा।

क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल की स्थिति

नेशनल मेडीसनल प्लांट बोर्ड के मुताबिक भारत के विभिन्न हिस्सों में 19 सरकारी संस्थान किसानों को औषधीय व सुगंधित पौधों की गुणवत्ता वाली रोपण सामग्री उपलब्ध करवाने का काम करते हैं। हिमाचल प्रदेश व केरल में तीन सरकारी संस्थान, मध्य प्रदेश, पश्चिमी बंगाल, कर्नाटक व गुजरात के दो- दो सरकारी संस्थान गुणवता वाले औषधीय पौधे तैयार कर किसानों को उपलब्ध करवाते हैं। उत्तर प्रदेश, तमिलनाडू, अरूणचल प्रदेश, जम्मू में एक- एक सरकारी संस्थान औषधीय व सुगंधित पौधों की गुणवतापरक रोपण सामग्री किसानों को उपलब्ध करवाते हैं। देश में जड़ी- बूटियों की बढ़ती मांग के चलते नेशनल मेडीसनल प्लांट बोर्ड औषधीय पौधों की गुणवता वाली रोपण सामग्री तैयार करने के लिए निजी क्षेत्र को प्रोत्साहित कर रहा है।

आजीविका व रोजगार

24 किसानों ने एक साल में दो करोड़ का प्लांटिंग मैटीरियल बेचा है। केवल दो माह अक्तूबर- नंबर में ही बीस लाख का कुटकी, कूट व अतीश का प्लांटिंग मैटीरियल बेचा गया।

उत्तराखंड के कई उच्च हिमालयी गांवों में औषधीय कृषिकरण से सतत् आजीविका व रोजगार का का अनूठा मॉडल स्थापित हुआ है।

औषधीय पौधों की खेती को रोजगार व सतत् आजीविका का मॉडल बनाने वाले किसानों की प्रेरककथाएं

उत्तराखंड के किसानों ने किया कमाल, जड़ी- बूटियां उगाकर पेश की मिसाल

उत्तराखंड के किसान औषधीय कृषिकरण में सफलता की कई कहानियां लिख रहे हैं। हजारों किसानों ने परम्परागत खेती को छोड़ कर औषधीय कृषिकरण की पहल की है और इससे सतत् आजीविका व रोजगार का मॉडल स्थापित करने में कामयाब रहे हैं। रानीखेत में आयुर्वेद व जड़ी बूटियों के विकास पर रणनीति बनाने को लेकर आयोजित कार्यशाला में उत्तरकाशी, धरतुला, बागेश्वर, टिहरी व चमोली से कई ऐसे किसान पहुंचे जो उच्च हिमालयी क्षेत्र में बहुमूल्य औषधीय पौधे उगाकर अपनी कृषि आर्थिकी को मजबूत कर रहे हैं। कुछ किसान औषधीय पौधों की नर्सरी तकनीक को विकसित कर क्वालिटी प्लांटिंग मैटीरियल भी पैदा कर रहे हैं। उच्च हिमालय में पैदा होने वाले औषधीय पौधों की दवा बाजार में बड़ी मांग है और अच्छी कीमत मिल रही है। उत्तराखंड में पैदा होने वाले बुहत सारे औषधीय उत्पाद इस साल दस से पंद्रह हजार रूपए प्रति किलोग्राम के हिसाब से बिके हैं। एक अध्ययन के मुताबिक यहां के 24 किसानों ने एक साल में दो करोड़ का प्लांटिंग मैटीरियल बेचा हैं। नर्सरी उत्पादन में जुटे इन किसानों ने अक्तूबर- नंबर में बीस लाख का कुटकी, कूट व अतीश का प्लांटिंग मैटीरियल बेचा है। कार्यशाला में पहुंचे कुछ किसानों की कामयाबी के प्रेरक किस्से पढिए।

नर्सरी लगाई, खेती से भी कमाई

चमोली के बाण गांव निवासी किसान पान सिंह विष्ट कूट, कुटकी व जटामांसी की पौध तैयार करने के पचास नाली में खेती भी कर रहे हैं। इस साल अभी तक वे पांच लाख का प्लांटिंग मैटीरियल बेच चुके हैं। अभी तक उन्होंने अपना उत्पाद नहीं बेचा है, क्योंकि सही कीमत नहीं मिल रही है। खरीददारों की व्यवस्था नहीं है।

कुटकी की पौध बेचकर हुए मालामाल

चमोली जनपद किसान पुष्कर सिंह विष्ट जड़ी- बूटियां 2004 से उगा रहे। 2008 में अल्पाइन हर्ब्स हिमालय कॉपरेटिव बनाई। कूट, कुटकी की नर्सरी व मार्केटिंग का काम किया। पिछले साल आठ लाख का कुटकी का प्लांटिंग मैटीरियल बेचा। इतना ही कूट का प्लांटिंग मैटीरियल बेचा है।

चंदन की खूशबू से आर्थिकी की सोच

अल्मोडा के किसान भुपाल सिंह मेहता चंदन की खेती कर रहे है। आठ साल दुबई में रहने के बाद वे घर लौटे और चंदन के दो सौ पेड़ों से खेती की शुरूआत की। इस साल उनके गांव में तीन हजार चंदन के पेड़ लग रहे हैं। दस साल में 'चंदन कोष' बनाने के सपने के साथ उन्होंने चंदन परियोजना की रिपोर्ट तैयार की हैं।

लाखों में खेल रहे जड़ी- बूटी उत्पादक

उत्तरकाशी के किसान राजेंद्र सिंह चौहान 2006 से जड़ी- बूटियां उगाने का काम कर रहे हैं। 2015 में वे चार उन्य किसानों के साथ मिल कर पचास नाली में कुटकी 75 नाली में अतीश व 25 नाली में कूट उगाई है। उन्होंने 15 लाख का प्लांटिंग मैटीरियल व चार किलो बीज भी पैदा किया है।

कुटकी का प्लांटिंग मैटीरियल

गोविंद सिंह नेगी कुटकी की खेती कर रहे हैं। उन्होंने इस बार कपूर कचरी भी पैदा की है। सात- लाख का कुटकी का प्लांटिंग मैटीरियल बेचा है। हर्बल रिर्सच एंड डपलपमेंट इंस्टीच्यूट चमोली को एक रूपए प्रति पौधे के हिसाब से बेचा। समर्थन मूल्य न होने से कोटेशन बेस सिस्टम के कम कीमत है।

कूट की खेती से चमका नाम

चमोली जनपद के कुंवर सिंह नेगी 2013 से कूट की खेती कर रहे हैं। इस बार उनके खेतों में तीन क्विंटल कूट की पैदावार हुई। अभी तक उन्होंने अपने उत्पाद को बेचा नहीं है। वे कहते हैं कि अब उनके गांव में कई किसान परम्परागत खेती की जगह जड़ी- बूटियों की खेती करने की ओर अग्रसर हुए है।

बड़ी इलायची से उत्पादन से आर्थिकी

किसान हीरा वल्लभ अपने गांव के अन्य कई किसानों के साथ मिल कर पांच साल से बड़ी इलायची उगा रहे हैं। पहले साल 15 किलोग्राम उत्पाद पैदा हुआ, जिसे उन्होंने 1200 रूपए प्रति किलोग्राम के हिसाब से बेचा। उनके गांव के किसान अब अन्य जड़ी- बूटियों की खेती के लिए आगे आ रहे हैं।

कूट, कुटकी व जटामांस

रूद्रपुर से सुकुमार नर्सरी उत्पादन का काम करते हैं और जड़ी- बूटियों के उत्पाद भी खरीदते हैं। उन्होंने सर्पगंगा की खेती के लिए एग्रीमेंट किया है। उन्होंने हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड में पचास एकड़ में रोनी सर्पगंगा के उत्पाद को खरीदने के लिए एग्रीमेंट किया है।

उद्योगिनी के गंभीर प्रयासों से विदेशों में बिक रही उत्तराखंड में पैदा होने वाली तुलसी की हर्बल चाय

दिल्ली आधारित गैर सरकारी संस्था उद्योगिनी उत्तराखंड में एरोमेटिक व मेडिसनल प्लांट्स में काम कर रही है। संस्था किसानों के लिए मूल्य आधारित श्रृंखला में काम करती है। साल

2016 से संस्था राज्य के उच्च हिमालयी क्षेत्रों में मेडीसनल प्लांट्स खासकर कुटकी, कपूर कचरी व तुलसी की खेती को प्रोत्साहित कर रही है। संस्था ने साल 2018 में दो हैक्टेयर पर मनरेगा के तहत जड़ी- बूटियों की खेती करवाई है। संस्था सिंचाई का प्रबंध करने पर जोर दे रही है। संस्था ने वैल्यू एडिशन कर तुलसी, रोजमैरी टी बनाने से शुरू किया है। बद्री केदार कॉपरेटिव सोसायटी के माध्यम से हर्बल टी बेच रहे हैं। उद्योगिनी अपने उत्पाद ऑनलाइन सेल कर रही है और कुटकी व कपूर कचरी की टेस्टिंग रिपोर्ट के बाद बेहतर मार्केटिंग के लिए वेल्यू एडिशन करने के लिए प्रोसेसिंग यूनिट लगा रही है। रानीखेत में आयोजित कार्यशाला में उद्योगिनी से पहुंची अनुश्रिया दत्ता ने बताया कि संस्था चमोली के देवाल ब्लॉक में काम कर रही है।

एक मशीन से अविष्कार से चमकी धर्मवीर की तकदीर

हरियाणा के यमनानगर के एक अनपढ़ किसान धर्मवीर कम्बोज ने ऐसी मशीन बनाई है जो प्राइमरी

प्रोसेसिंग में वरदान बन गई। इस मशीन से जूस, जैल, जैली, जैम तैयार किए जा सकते हैं। उन्हें इस मशीन के लिए पेटेंट मिला है। उन्हें इस मशीन के निर्माण के लिए राष्ट्रपति के हाथों पुरस्कार मिला है। इस मशीन के चलते ही उन्हें पैडमैन फिल्म में अक्षय कुमार के साथ डांस का अवसर मिला है। कार्यशाला में धर्मवीर नें अपनी मशीन को प्रदर्शित किया और उससे कई तरह के जूस बनाकर दिखाए।

स्टीविया उत्पादकों के जीवन में मिठास घोलने के लिए एक दशक से प्रयासरत हैं सौरभ अग्रवाल

सौरभ अग्रवाल पिछले कई सालों से स्टीविया पर जनून से काम कर रहे हैं। वे अभी तक स्टीविया के अध्ययन व अनुसंधान पर पांच करोड़ का निवेश कर चुके हैं। उन्होंने बद्दी में स्टीविया आधारित उद्योग स्थापित किया है। वे एक दशक से इंटरनेशनल स्टीविया कांफ्रेंसेज करवा रहे हैं। वह उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड व हिमाचल प्रदेश में एक हजार एकड़ में स्टीविया की खेती करने के लिए किसानों से करार कर रहे हैं। सौरभ अग्रवाल ने बताया कि स्टीविया के दुनिया भर में पाए जाने वाले पौधों की नर्सरी विकसित करने की योजना पर काम कर रहे हैं। उन्होंने स्टीविया के बारे में अपने नॉलेज को बढ़ाने के लिए साऊथ अमेरिका तक का दौरा किया है। उन्होंने बताया कि वर्ष 2009 में जब वे स्टीविया आयात कर रहे थे, तक तक भारत की फूड सेफ्टी अथॉरिटी स्टीविया के बारे में नहीं जानती थी। उन्होंने बताया कि सात साल बाद

स्टीविया को नेचुरल स्टीटनर के तौर पर फूड एक्ट के तहत अप्रूव किया गया।

E-Charak
e-Channel for Herbs, Aromatic, Raw Material & Knowledge

जड़ी-बूटी बाजार

राष्ट्रीय अभियान विशेष हर माह प्रकाशित/प्रसारित

www.rcfcnorth.in ■ कुल पृष्ठ : 8 ■ वर्ष 3, अंक 3 ■ 1 मार्च से 31 मार्च 2020

क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तर भारत, आयुष मंत्रालय भारत सरकार, पिन-175015, दूरभाष-01908-222970 (टेलीफैक्स), 9418010624 (मोबाइल) email:rcfcnorth@gmail.com

औषधीय ज्ञान और परंपरागत उपचार की पहल: हर घर के किचन गार्डन में होगा बीस औषधीय पौधों वाला हर्बल गार्डन

नेशनल मेडीसनल प्लांट बोर्ड का राष्ट्रीय अभियान

'20 मेडीसनल प्लांट्स फॉर 2020'

आरसीएफसी उत्तरी भारत, जोगेंद्रनगर फीचर

आयुष चिकित्सा प्रणाली दुनिया भर में व्यापक रूप से स्वीकार की जाती है और स्वास्थ्य देखभाल में बड़े पैमाने पर व्यवहार में लाई जाती है। दुनिया भर के करोड़ों लोग अपने स्वास्थ्य को सुरक्षित रखने के लिए आयुष पर भरोसा करते हैं। ऐसे में लोगों के बीच से लोकप्रिय आयुष संसाधनों से जुड़े औषधीय ज्ञान और परंपरागत उपचार के बारे में उपयोगकर्ताओं व आम लोगों को अनुकूल तरीके व वैज्ञानिक रूप से जागरूक और शिक्षित करना महत्वपूर्ण है। देश भर में 20 औषधीय पौधों के समृद्ध विविध पारंपरिक ज्ञान के बारे में स्थानीय लोगों के बीच जागरूकता बढ़ाने, इन औषधीय पौधों की खेती करने के लिए लोगों को प्रोत्साहित व प्रशिक्षित करने और स्वास्थ्य लाभ के लिए उनका उपयोग करने के लिए राष्ट्रीय अभियान 2020 की देशव्यापी शुरूआत की है। इस राष्ट्रीय अभियान के तहत राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड पहली बार कीचन गार्डन में बीस औषधीय पौधों वाला हर्बन गार्डन स्थापित करने की अनूठी पहल कर रहा है।

नेशनल मिशन का यह है मकसद

- घरेलू हर्बल चिकित्सा के रूप में अभियान के लिए चयनित बीस औषधीय पौधों को उनके कीचन गार्डन में उगाने के लिए देश भर में लोगों को प्रोत्साहित और प्रेरित करना है।
- स्थानीय लोगों को मिशन के तहत चयनित औषधीय पौधों के गुणों के बारे में जानकारी प्रदान करने के लिए विभिन्न माध्यमों का प्रयोग करना है।
- राष्ट्रीय मिशन के तहत चयनित बीस औषधीय पौधों उपयोग और उनके स्वास्थ्य लाभों के बारे में स्थानीय लोगों के बीच जागरूकता को बढ़ाना है।
- जो लोग औषधीय पौधों की खेती करने के इच्छुक हैं, इस अभियान के तहत उन लोगों को औषधीय पौधों की खेती करने व उनकी हार्वेस्टिंग तकनीक के लिए प्रशिक्षित करना है।
- मिशन के तहत औषधीय पौधों की स्थानीय और वैश्विक मांग व उनकी विपणन क्षमता, उनके प्रमुख उत्पादक क्षेत्रों के बारे में जानकारी का प्रसार का प्रचार करना है।

राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड के राष्ट्रीय अभियान के लिए चयनित औषधीय पौधे

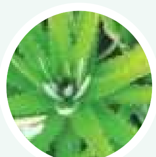
घृतकुमारी

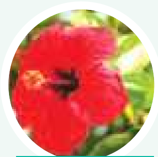
गुढल

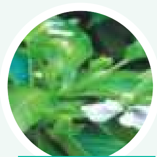
अडूसा

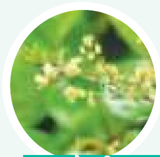
मेहंदी

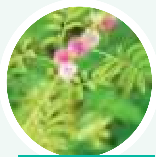
लाजवंती

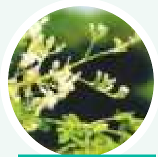
सहजन

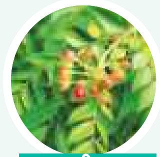
कड़ीपत्ता

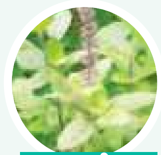
तुलसी

20 पौधे

घृतकुमारी (एलो बार्बडेंसिस),सतावरी (शतावरी रेसमोसस),ब्राह्मी (बेकोपा मोननेरी), पुनर्नवा (बोहरविया डिफ्यूसा), मंडूकपर्णी (सेंटेला इयाटिका), हडजोड़ (सीसस क्यूड्रान्युलैरिस), लैमन ग्रास(सिंबोपोगन सिट्रस), गुढल (हिबिसकस रोसा- सिनेंसिस), अडूसा (जस्टिसिया एडहोटोडा), मेहंदी (लोसोनिया इनरमिस),लाजवंती (मिमोसा पुडिका), सहजन (मोरिंगा ओलीफेरा), कड़ीपत्ता (मुरैना ओबेनिगि), तुलसी (ऑसीमम सेंकटम), आंवला (फेल्थेंस एंबलीका), पत्ता आजवायन (परेकटांसथस एंबोयनिक्स), गिलोय, (टिनपोस्पोरा कॉर्डिफ़ोलिया), नीरगुंडी (वीटेक्स नेगुंडो), अश्वगंधा (विथानिया सोम्निफेरा), अदरक (जिंजिबेर ऑफ़िसिनाले)।

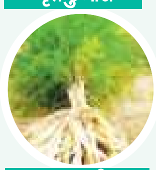
सतावरी

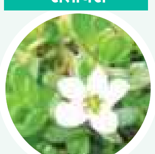
ब्राह्मी

पुनर्नवा

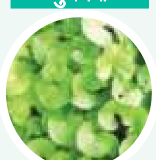
मंडूकपर्णी

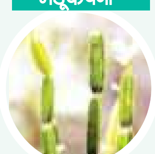
हडजोड़

लेमन ग्रास

राष्ट्रीय अभियान में प्रस्तावित हैं कई गतिविधियां

- नेशनल मेडीसनल प्लांट बोर्ड के वर्ष 2020 के लिए राष्ट्रीय अभियान में कई गतिविधियां प्रस्तावित हैं। अभियान में शामिल 20 औषधीय पौधों के घरेलू उपचार और पारम्परिक उपयोग के बारे में जागरूक करते हुए हर घर में औषधीय पौधों का बगीचा स्थापित करना अभियान का लक्ष्य है।
- औषधीय पौधों का बगीचा लगाने के लिए लोगों को अभियान के लिए चयनित बीस औषधीय पौधों का वितरण और रोपण। कार्यान्वयन एजेंसी औषधीय पौधों से जुड़े पारंपरिक ज्ञान का दस्तावेजीकरण करके लाभार्थी को प्रत्येक प्रजाति के पौधे के उपयोग और लाभ के बारे में जानकारी प्रदान करेगी।
- घनी आबादी वाले शहरी इलाकों में राष्ट्रीय अभियान के तहत औषधीय पौधों को गमलों में छतों पर रोपने के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया जाएगा।
- सूचना, शिक्षा और संचार की गतिविधियां जैसे क्षेत्रीय स्तर पर जागरूकता कार्यक्रम, कार्यशाला व प्रशिक्षण आयोजित किए जाएंगे। चयनित औषधीय पौधों के घरेलू उपचार और पारम्परिक उपयोग का बुकलेट व ब्रोशर के जरिये प्रकाशित साहित्य के रूप में ज्ञानकोष का दस्तावेजीकरण और उसके बाद उसका डिजिटलीकरण व वेब-होस्टिंग करना।
- कार्यान्वयन के विभिन्न चरणों में फोटोग्राफिक प्रलेखन सहित अभियान के तहत शामिल सभी घरों का एक डेटाबेस अभियान के लिए अपनाई गई प्रक्रिया, दृष्टिकोण, लाभ अर्जित करने और स्थिरता तंत्र पर एक राइटअप के साथ राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड को प्रस्तुत किया जाएगा।

राष्ट्रीय अभियान को हकीकत की जमीन पर उतारेंगे यह संस्थान व संगठन

नेशनल मेडीसनल प्लांट बोर्ड के वर्ष 2020 के लिए निर्धारित किए गए राष्ट्रीय अभियान को हकीकत की जमीन पर उतारने के लिए कई संस्थाओं व संस्थानों को शामिल किया गया है। विभिन्न राज्यों के राज्य औषधीय पादप बोर्ड, नेशनल मेडीसनल प्लांट बोर्ड के क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र, आयुष संस्थान व अस्पताल, आयुष औषधालय, वेलनैस सेंटर, सरकारी विश्वविद्यालय, संगठन और प्रतिष्ठित गैर-सरकारी संगठन इस अभियान में कार्यान्वयन एजेंसी की भूमिका अदा करेंगे।

हर्बल गार्डन के लिए सहायता के मानदंड

राष्ट्रीय अभियान के तहत प्रति घर हर्बल गार्डन बनाने के लिए 2500 रूपए की वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी। इस सहायता राशि में पौध उगाने, परिवहन, जागरूकता, प्रलेखन, प्रचार- प्रचार सामग्री का उपयोग, लोक थिएटर व विशेष अभियान आदि की लागत भी शामिल है।

औषध पादप बोर्ड को करना होगा आवेदन

कार्यान्वयन एजेंसी बनने के लिए राज्य औषधीय पादप बोर्ड, नेशनल, क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र, आयुष संस्थान व अस्पताल, आयुष औषधालय, वेलनैस सेंटर, सरकारी विश्वविद्यालय, संगठन और प्रतिष्ठित गैर-सरकारी संगठन प्रासंगिक प्रोफार्मा पर औषध पादप बोर्ड को आवेदन कर सकते हैं, जोकि एनएमपीबी की वेबसाइट www.nmpb.nic.in पर उपलब्ध हैं।

'**औषधीय** पौधों का वितरण कृषि जलवायु क्षेत्र के अनुसार भिन्न होता हैं। विशिष्ट क्षेत्र में घरेलू हर्बल थेरेपी के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले बारहमासी औषधीय पौधों की प्रजातियां अभियान गतिविधियों के लिए भी शामिल हो सकती हैं।'

- जेएन शास्त्री, कार्यकारी अधिकारी, राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड।

आंवला

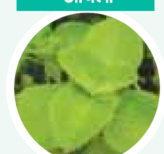
पत्ता आजवायन

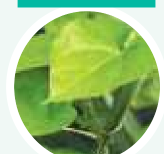
गिलोय

नीरगुंडी

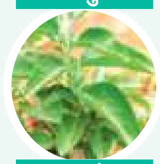
अश्वगंधा

अदरक

मेडीसनल प्लांट्स फॉर 2020

राष्ट्रीय मिशन

बीस औषधीय पौधों के घरेलू उपचार और पारम्परिक उपयोग के बारे में जागरूक करते हुए हर घर में औषधीय पौधों का बगीचा स्थापित करना अभियान का लक्ष्य है।

औषधीय पौधों का बगीचा लगाने के लिए लोगों को अभियान के लिए चयनित बीस औषधीय पौधों का वितरण और रोपण।

एलोविरा का पहली सदी से औषधि के रूप में हो रहा है इस्तेमाल, आयुर्वेद में उल्लेख

घृत कुमारी को हर मानव सभ्यता में औषधीय पौधे के तौर है पर मान्यता

घरेलू उपचार, पारम्परिक उपयोग

एलोवेरा की तासीर गर्म होती हैं। कांटेदार पत्तियों को छीलकर उसका रस सुबह खाली पेट लिया जाए तो दिनभर शरीर में शक्ति व चुस्ती- स्फूर्ति बनी रहती है।

एलोवेरा में एंटी बैक्टेरिया और एंटी फंगल गुणों के चलते छोटी-मोटी चोट, जलने-कटने व किसी कीड़े के काटने पर इसके जेल को प्रभावित जगह पर लगाने से राहत मिलती है।

एलोवेरा खून में शर्करा के स्तर को बनाए रखता है। यह पौधा बवासीर, डायबिटीज, गर्भाशय के रोग, पेट की खराबी, जोड़ों का दर्द व फटी एड़ियों के लिए यह लाभप्रद है।

एलोवेरा का सेवन खून की कमी को भी दूर करता है और शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।

एलोवेरा अच्छा क्लींजर है। कील-मुंहासों की समस्या में गुणकारी है।

आयुर्वेद के प्राचीन ग्रंथों में मिलता उल्लेख

आरसीएफसी नॉर्थ जोगेंद्रनगर, फीचर सर्विस

औषधीय पौधे के रूप में विख्यात घृत कुमारी को एलोवेरा, क्वारगंदल या ग्वारपाठा के नाम से भी जाना जाता है। इसकी उत्पत्ति संभवतः उत्तरी अफ्रीका में हुई है। इसे सभी मानव सभ्यताओं ने एक औषधीय पौधे के रूप में मान्यता दी है। इस प्रजाति के पौधों का इस्तेमाल पहली शताब्दी से दवा के रूप में किया जा रहा है, इसका उल्लेख आयुर्वेद के प्राचीन ग्रंथों में मिलता है। यह पौधा इंसान की इम्युनिटी को बढ़ाने वाले पौधे के रूप में अपनी पहचान रखता है।

पौधे की पहचान : घृत कुमारी का पौधा बिना तने या छोटे तने का एक गूदेदार और रसीला पौधा होता है, जिसकी लम्बाई 60-100 सेंटीमीटर तक होती है। इसका फैलाव नीचे से निकलती शाखाओं द्वारा होता है। इसकी पत्तियां भालाकार, मोटी और मांसल होती हैं, जिनका रंग, हरा, हरा-स्लेटी होने के साथ कुछ किस्मों में पत्ती के ऊपरी और निचली सतह पर सफेद धब्बे होते हैं। पत्ती के किनारों पर की सफेद छोटे दांतों की एक पंक्ति होती है। गर्मी के मौसम में पीले रंग के फूल उत्पन्न होते हैं।

कई खनिज-यौगिकः एलोवेरा में अमीनो एसिड, विटामिन और खनिज व कई यौगिक तत्व पाए जाते हैं। घृत कुमारी के अर्क का प्रयोग बड़े स्तर पर सौंदर्य प्रसाधन और वैकल्पिक औषधि उद्योग में किया जाता है। दुनिया भर में इसकी व्यवसायिक खेती हो रही है। सजावटी पौधे के रूप में इसे घरों में गमले में भी उगाया जा रहा है। गमले में इस पौधे को उगाने के लिए पौधों के लिए बालुई मिट्टी जिसमें पानी का निकास अच्छा हो, तेज खिली धूप की स्थिति आदर्श होती है।

पूरे हिमालयी क्षेत्र में उगता है सतावर, इस औषधीय पौधे की जड़ें आती हैं काम

सतावर है 'औषधियों की रानी', पर अब मंडरा रहा लुप्त होने का खतरा

दो हजार सालों से होती आ रही सतावर की खेती

आरसीएफसी नॉर्थ जोगेंद्रनगर, फीचर सर्विस

सतावर को शतावर, शतावरी, सतावरी, सतमूल और सतमूली के नाम से जाना जाता है। यह औषधीय पौधा पूरे हिमालयी क्षेत्र में उगता है। यह पौधा अनेक शाखाओं से युक्त कांटेदार लता के रूप में एक मीटर से दो मीटर तक लम्बा होता है। इसकी जड़ें गुच्छों के रूप में होती हैं। आयुर्वेद में इसे 'औषधियों की रानी' माना जाता है। इसके कंद का इस्तेमाल किया जाता है। वर्तमान समय में इस पौधे पर लुप्त होने का खतरा है।

जड़ों का मोलः इसकी कंदिल जडें मधुर तथा रसयुक्त होती हैं। यह पादप बहुवर्षी होता है। इसकी शाखाएं बाद में पत्तियों का रूप धारण कर लेतीं हैं। इसकी पत्तियां पतली और सुई के समान होती है। इसका फल मटर के दाने की तरह गोल तथा पकने पर लाल होता है। शतावर के पौधे को विकसित होने एवं कंद के पूर्ण आकार प्राप्त करने में तीन वर्ष का समय लगता है। यह फसल शीतोष्ण से उष्ण कटिबंधी पर्वतीय क्षेत्रविभिन्न कृषि मौसम स्थितियों के तहत उग सकती है।

घटकः पॉलिसाइक्लिक एल्कालॉइड, स्टेराइडल सैपोनिन, शैटेवैरोसाइड ए, शैटेवैरोसाइड बी, फिलिया स्पैरोसाइड सी और आइसोफ्लेवोंस जैसे रासायनिक घटक पाए जाते हैं।

उपयोगः उपयोग सिद्धा तथा होम्योपैथिक दवाइयों में होता है। इसकी खेती दो हजार वर्ष से भी पहले से की जा रही है। औषधियों को बनाने के लिए प्रति वर्ष पांच सौ टन सतावर की जड़ों की जरूरत पड़ती है।

घरेलू उपचार, पारम्परिक उपयोग

सतावर का इस्तेमाल दर्द कम करने, स्तनपान के लिए दूध की मात्रा बढ़ाने,पेशाब की जलन को कम करने और कामोत्तेजक के रूप में किया जाता है।

सतावर की जड़ तंत्रिका प्रणाली और पाचन तंत्र की बीमारियों के इलाज, ट्यूमर, गले के संक्रमण, ब्रोंकाइटिस और कमजोरी में फायदेमंद होती है।

सतावर कम भूख लगने व अनिद्रा की बीमारी को दूर करने में फायदेमंद है। जिनका वजन कम है, उन्हें भी इससे फायदा होता है।

सतावर को महिलाओं के लिए एक बढ़िया टॉनिक माना जाता है। कामोत्तेजना की कमी और बांझपन को दूर करने और रजोनिवृत्ति के इलाज में भी सतावर लाभकरी है।

'ब्रेन बूस्टर' कही जाती है ब्राह्मी'

घरेलू उपचार, पारम्परिक उपयोग

ब्राह्मी का उपयोग बुद्धि में बढ़ोतरी करने के लिए किया जाता है। इसका प्रतिदिन सेवन करने से कॉन्सेंट्रेशन पावर भी बढ़ती है।

ब्राह्मी में कई ऐसे पोषक तत्व पाए जाते हैं जो कब्ज को दूर करते हैं। इसमें खून साफ़ करने की भी क्षमता होती है।

ब्राह्मी का सेवन करने से अनिद्रा की बीमारी ठीक हो जाती है। इससे खांसी और बुखार में राहत मिलती है।

ब्राह्मी बाल झड़ना रोकने के काम आती है। इसका इस्तेमाल मिर्गी दूर करने के लिए किया जाता है।

ब्राह्मी में एंटीऑक्सीडेंट पाया जाता है, जो वायरस या बैक्टीरिया से लड़ने में मदद करता है और हमारे इम्यून सिस्टम को और मजबूत बनाता है।

आरसीएफसी नॉर्थ जोगेंद्रनगर, फीचर सर्विस

ब्राह्मी एक ऐसा औषधीय पौधा है, जिसके तने और पत्तियां मुलायम, गूदेदार और फूल सफेद होते हैं। फूल छोटे, सफेद, नीले और गुलाबी रंग के होते हैं। यह पौधा नमी वाले स्थानों में पाया जाता है, तथा मुख्यतः भारत ही इसकी उपज भूमि है।

फीका व शीलत : इसका स्वाद फीका होता है और इसकी तासीर शीतल होती है। यह पौधा भारत में गीले, नम, दलदली क्षेत्रों और समतल मैदानों में पाया जाता है। इस वर्ग की बीस प्रजातियां पाई जाती हैं, जिनमें से तीन भारत में पाई जाती हैं। ब्राही की गांठे से शाखाएं निकलती हैं। बीज छोटे और भूरे रंग के होते हैं।

छह माह की फसल : इसकी फसल पांच- छह महीने के बाद कटाई के लिए तैयार हो जाती है। बाह्मी एकत्रित करने के लिए सबसे अच्छा समय अक्टूबर नबंवर माह के बीच होता है। तने को आधार से चार- पांच सेटीमीटर ऊपर तक काटा जाता है। शेष बचे हुए तने को पनर्जनन के लिए छोड़ दिया जाता है। सजावटी पौधे के रूप में इसे घरों में गमले में भी उगाया जा सकता है। इसके लिए बालुई मिट्टी व तेज धूप की स्थितिआदर्श होती है।

राष्ट्रीय मिशन के तहत औषधीय पौधों से जुड़े पारंपरिक ज्ञान का दस्तावेजीकरण किया जाएगा और हर लाभार्थी को प्रत्येक प्रजाति के पौधे के उपयोग और लाभ के बारे में जानकारी प्रदान की जाएगी।

टूटी हड्डियां जोड़ने की दवा हड़जोड़

घरेलू उपचार, पारम्परिक उपयोग

हड़जोड़ टूटी हुई हड्डियों को जोड़ देती है। हड्डी जोड़ने के लिए यह पीने तथा लगाने दोनों ही के काम में आती है।

हड़जोड़ वात और कफ का नाश करती है। यह गरम, दस्तावर और कीड़ों को मारती है। बवासीर को दूर करने के साथ ही यह आंखों की बीमारियों को भी दूर करती है।

हड़जोड़ पाचनशक्ति वर्द्धक है और रक्त प्रदर या मासिक स्राव की अधिकता में इसका सेवन करने से लाभ मिलता है। ब्रोंकियल अस्थमा में भी लाभकारी है।

हड़जोड़ पाइल्स से राहत दिलाती है। इससे जननांग रोगों में लाभ होता है।

हड़जोड़ के सेवन से डिलीवरी के दर्द से आराम मिलता है। प्रदर या ल्यूकोरिया में हड़जोड़ का सेवन फायदेमंद होता है।

आरसीएफसी नॉर्थ जोगेंद्रनगर, फीचर सर्विस

हड़जोड़ या अस्थिसंधानक बहुवर्षी वनस्पति है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि यह लता हड्डियों को जोड़ती है। आयुर्वेद में टूटी हड्डी जोड़ने में इसे रामबाण माना गया है। यह पौधा हड्डियों को लचीला भी बनाता है, इसलिए इसका प्रयोग खिलाड़ी भी करते हैं। यह छह इंच के खंडाकार चतुष्कोणीय तनेवाली लता होती है। हर खंड से एक अलग पौधा पनप सकता है। चतुष्कोणीय तने में हृदय के आकार वाली पत्तियां होती हैं, जिनमें छोटे फूल लगते हैं और लाल रंग के मटर के दाने के बराबर फल लगते हैं। यह बरसात में फूलती है और जाड़े में फल आते हैं।

उपयोगी तत्व: आयुर्वेद के अनुसार हड़जोड़ में सोडियम, पोटेशियम और कैल्शियम कार्बोनेट व फास्फेट भरपूर पाया जाता है, जो हड्डियों को मजबूत बनाता है। बवासीर, वातरक्त, कृमिरोग, नाक से खून और कान बहने पर इसके स्वरस का प्रयोग होता है।

उपयोग: इसके तने का ही प्रयोग किया जाता है। हड़जोड़ एनाबॉलिक हार्मोंस व कोलेस्ट्रॉल का स्तर नियंत्रित रखता है। यह सूजन घटाने जोड़ों के दर्द को दूर करने और हड्डियों को मजबूती देने में उपयोगी है।

यह जड़ी- बूटी हर वर्ष बरसात में हो जाती है नवीन, इसलिए पुनर्नवा पड़ा है नाम

पुनर्नवा रखती है हमेशा जवान, बुढ़ापा कभी न फटकने दे करीब

घरेलू उपचार, पारम्परिक उपयोग

पुनर्नवा का एंटी हीलिंग तत्व बुरे बैक्टीरिया से लड़ने में मदद करता है, इसीलिए यह कैंसर दूर करने में मदद करता है।

पुनर्नवा में नई कोशिकाएं विकसित करने की क्षमता है। यह रक्त शोधक के तौर पर भी काम करता है।

पुनर्नवा के सेवन से शरीर में स्फूर्ति आती है और शारीरिक क्षमता बढ़ती है। शरीर में रक्त का संचार भी ठीक तरीके से होता है।

पुनर्नवा दिल की बीमारी, दमा, शरीर दर्द, उल्टी, यकृत व पीलिया रोगों से बचाता है।

पुनर्नवा का रस चर्म रोग, कील-मुंहासे व झाइयां दूर करता है। यह खुजली, रैशेस व सफेद दाग को भी ठीक करता है।

पुनर्नवा पाचन क्रिया को दुरुस्त व वजन को नियंत्रित रखता है।

पुनर्नवा बवासीर की समस्या से भी राहत दिलाता है।

पंचाग व जड़ का चिकित्सा में होता प्रयोग

आरसीएफसी नॉर्थ जोगेंद्रनगर, फीचर सर्विस

पुनर्नवा एक जादुई जड़ी-बूटी है, जो अपने नाम के अनुरूप व्यक्ति को एक नया रूप देने में सक्षम है। इसके नियमित सेवन से हम छरहरी काया पा सकते हैं। यह औषधी हर वर्ष नवीन हो जाती है, इसलिए इसे पुनर्नवा नाम दिया गया है। पुनर्नवा भारत में वर्षा ऋतु में सब जगह उत्पन्न होता है और 2400 मी की ऊंचाई तक पाया जाता है।

जड़ और पंचांग का प्रयोग : इसकी जड़ और पंचांग का प्रयोग चिकित्सा में किया जाता है। सफेद और लाल पुनर्नवा की पहचान यह है कि सफेद पुनर्नवा के पत्ते चिकने, दलदार और रस भरे हुए होते हैं और लाल पुनर्नवा के पत्ते सफेद पुनर्नवा के पत्तों से छोटे और पतले होते हैं।

औषधीय घटक: पुनर्नवा का मुख्य औषधीय घटक एक प्रकार का एल्केलायड है, जिसे पुनर्नवा कहा गया है। इसकी मात्रा जड़ में लगभग 0.04 प्रतिशत होती है। अन्य एल्केलायड्स की मात्रा लगभग 6.5 प्रतिशत होती है। पुनर्नवा के जल में न घुल पाने वाले भाग में स्टेरॉन पाए गए हैं, जिनमें बीटा-साइटोस्टीराल और एल्फा-टू साईटोस्टीराल प्रमुख है। इसमें ऐसेंटाइन भी मिला है। इसके अतिरिक्त कुछ महत्वपूर्ण कार्बनिक अम्ल तथा लवण भी पाए जाते हैं। अम्लों में स्टायरिक तथा पामिटिक अम्ल एवं लवणों में पोटेशियम नाइट्रेट, सोडियम सल्फेट एवं क्लोराइड प्रमुख हैं।

उपयोग : श्वेत पुनर्नवा चरपरी, कसैली, अत्यन्त आग्निप्रदीपक और पांडु रोग, सूजन, वायु, विष, कफ और उदर रोग नाशक है। इसका उपयोग शोथ, पेशाब की रुकावट, त्रिदोष प्रकोप और नेत्र रोगों को दूर करने के लिए विशेष रूप से किया जाता है।

इंसान की मेधा शक्ति बढाने वाली वनस्पति के रूप में गिनी जाता है मण्डूकपर्णी

ध्यान व एकाग्रता बढ़ाने में रामबाण मण्डूकपर्णी हर चिंता भी लेती है हर

वसन्त ऋतु में आते हैं फूल, ग्रीष्म ऋतु में लगते फल

आरसीएफसी नॉर्थ जोगेंद्रनगर, फीचर सर्विस

मण्डूकपर्णी एक ऐसी औषधीय वनस्पति है जो नमी वाले स्थानों पर होती है। उत्तरी भारत में यह लगभग हर नमी वाली व छाया वाली जगह पर मिल जाती है। मेढक के समान पत्रवाली, बुद्धिवर्धक व जलासन्न भूमि में होने के कारण इसका नाम मण्डूकपर्णी पड़ा है। यह औषधीय पौधा भूमि पर फैलकर बड़ा होता है। इसके तने और पत्तियां मुलामय, गूदेदार और फूल सफेद होते है।

नमी व छाया का पौधा: यह पौधा नम स्थानों में पाया जाता है। आधा ईंच से लेकर एक ईंच तक वाले पत्ते कुछ मांसल और छत्राकार होते हैं तथा किनारों पर दंतुर होते है। इस वनस्पति को मेधा शक्ति बढाने वाली वनस्पति के रूप में गिना जाता है। इसका क्षप वर्षायु होता है जो कभी-कभी दो-तीन वर्षों तक भी रहता है। इसके पत्र गोल वुकाकृति, सात सिराओं से युक्त,स्वाद में तिक्त होते हैं। पुष्प-छोटे रक्तवर्णं, वसन्त ऋतु में होते हैं। फल-छोटे ग्रीष्मऋतु में होते हैं जिनमें चपटे बीज रहते हैं।

घटक : इसमें हाइड्रोकोटिलिन क्षाराभ पाया जाता है । इसकी पत्तियों ग्रेन तक ग्लाइकोसाइड होता है। इसमें बेलेरिन, राल, पेक्टिक अम्ल, स्टेरॉल, वसाम्ल, टैनिन, ऐसकोविकअम्ल पाए जाते हैं।

उपयोग : मण्डूकपर्णी तिक्त होने के कारण कफ और पित्त का शमन करती है । स्मरणशक्ति को बढ़ाती है। यह वनस्पति मस्तिष्क शामक व अमीवा नाशक है व रक्तपित्त शामक है।

घरेलू उपचार, पारम्परिक उपयोग

मण्डूकपर्णी पौधा दिमाग और तंत्रिका तंत्र को मजबूत व उनकी कार्यप्रणाली को बेहतर करता है। यह ध्यान और एकाग्रता को भी बढ़ाता है।

मण्डूकपर्णी का उपयोग मस्तिष्क की कार्यप्रणाली को बढ़ाने, चिंता की समस्याओं को कम करने में होता है। यह शरीर को तनाव झेलने में मदद करता है।

मण्डूकपर्णी उच्च रक्त चाप को नियंत्रित करने में मदद करता है। इससे पेट के अल्सर से पीड़ित लोगों को फायदे मिलता है।

मण्डूकपणी का उपयोग स्ट्रेच मार्क्स कम करने व घाव भरने के लिए किया जाता है।

मण्डूकपणी लिवर को स्वस्थ बनाए रखने में मदद करता है। यह अल्जाइमर रोग को ठीक करने में मदद करता है।

अमृत के बराबर गुणों वाली है 'अमृता'

डॉ. अरूण चंदन
क्षेत्रीय निदेशक,
क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र उत्तरी भारत,
जोगेंद्रनगर, राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड।

गिलोय के अमृत तुल्य गुणों के कारण इसे अमृता कहा जाता है। गिलोय को गडूची और गुल्वेल नामों से भी जाना जाता है। आयुर्वेद में इसका खास महत्व है। आचार्य चरक ने गिलोय को वात दोष हरने वाली श्रेष्ठ औषधि माना है। यह शरीर में इंसुलिन उत्पादन क्षमता बढ़ाती है। रोगों से लड़ने, उन्हें मिटाने और रोगी में शक्ति के संचरण में यह अपनी विशिष्ट भूमिका निभाती है। गिलोय का नियमित प्रयोग सभी प्रकार के बुखार, फ्लू, पेट कृमि, रक्त विकार, निम्न रक्तचाप, हृदय रोग, मूत्र रोग, एलर्जी, उदर रोग, चर्म रोग आदि अनेक व्याधियों से बचाता है।

हमारे देश में सदियों से गिलोय का प्रयोग होता आया है। त्रिदोष हरने वाली, रक्तशोधक, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाली, ज्वरनाशक, खांसी मिटाने वाली प्राकृतिकऔषधि के रूप में गिलोय का खूब उपयोग किया जाता रहा है। टाइफायड, मलेरिया, कफ, पीलिया, यकृत निष्क्रियता, तिल्ली बढ़ना, सिफलिस, एलर्जी सहित त्वचा विकार, झाइयां, झुर्रियां व कुष्ठ आदि रोगों के उपचार में गिलोय का सेवन आश्चर्यजनक परिणाम देता है। इसे दुधारू पशुओं के आहार में शामिल किया जाता है, जिससे उनमें दूध देने की क्षमता बढ़ती है।

गिलोय को गडूची और गुल्वेल नामों से भी जाना जाता है। आयुर्वेद में इसका खास महत्व है। आचार्य चरक ने गिलोय को वात दोष हरने वाली श्रेष्ठ औषधि माना है। यह शरीर में इंसुलिन उत्पादन क्षमता बढ़ाती है। रोगों से लड़ने, उन्हें मिटाने और रोगी में शक्ति के संचरण में यह अपनी विशिष्ट भूमिका निभाती है। गिलोय का नियमित प्रयोग सभी प्रकार के बुखार, फ्लू, पेट कृमि, रक्त विकार, निम्न रक्तचाप, हृदय रोग, मूत्र रोग, एलर्जी, उदर रोग, चर्म रोग आदि अनेक व्याधियों से बचाता है।

गिलोय के अमृत तुल्य गुणों के कारण इसे अमृता कहा जाता है। वैज्ञानिक शोधों से अब यह साबित हो चुका है कि गिलोय एक श्रेष्ठ इम्मुनोमोमोदुलेटर औषधि है और शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाती है। गिलोय में ग्लुकोसाइन, गिलोइन, गिलोइनिन, गिलोस्तेराल तथा बर्बेरिन नामक एल्केलाइड पाए जाते हैं। हाल ही में अमेरिका में एक पेटेंट स्वीकृत हुआ है, जिसके अनुसार गिलोय का उपयोग एक विधि द्वारा एड्स, फ्लू, राजयक्ष्मा (टीबी) व क्षीण रोग प्रतिरोधकता के लिए किया गया है।

गिलोय की जड़, फल तथा पत्ती का उपयोग औषधीय रूप में किया जाता है, लेकिन इसके तने का सबसे ज्यादा प्रयोग किया जाता है। खेतों की मेंड़, घने जंगल, घर के बगीचे, मैदानों में लगे पेड़ों के सहारे कहीं भी गिलोय की बेल प्राकृतिक रूप से अपना घर बना लेती है। इसके पत्ते चिकने और पान की शक्ल के होते हैं। इसकी बेल पीले सफेद रंग की होती है। यह कभी सूखती या नष्ट नहीं होती है तथा इसे काट देने पर उसमें से फिर नई लता पैदा हो जाती है। पतझड़ में इसके पत्ते झड़ जाते हैं और बरसात में इस पर फिर से नए पत्ते आ जाते हैं। गिलोय पूरे भारतवर्ष में समुद्र तल से 900 मीटर की ऊंचाई तक प्राप्त होती है। इसकी जड़ सफेद रंग की होती है। यह मुलायम व रसयुक्त होती है तथा इसमें तेज एरोमैटिक गन्ध होती है। गिलोय के फूल कोंपल में लगे रहते हैं। जब पौधा पत्ती रहित होता है तभी इसमें फूल लगते हैं। फूलों का रंग पीला या हरा- पीला होता है। इसके पुष्प गुच्छों में लगे रहते हैं। इसके फल मटर के समान गोल या अंडाकार होते हैं। कच्चा फल हरा होता है, जबकि पकने पर यह लाल रंग लिए होता है। गिलोय का लिसलिसा पदार्थ सूखा हुआ भी मिलता है, इसे 'गिलोय सत्व' कहते हैं। आयुर्वेद दवा निर्माण में सत्व का प्रयोग बढ़ रहा है।

आयुर्वेद दवा निर्माण बाजार में गिलोये की बढ़ती मांग के चलते इस पौधे के कृषिकरण के लिए कार्ययोजना को मूर्तरूप देते हुए पिछले साल भारत सरकार के आयुष मंत्रालय तहत आने वाले नेशनल मेडिसिनल प्लांट्स बोर्ड ने गिलोय के कृषिकरण को हर घर तक पंहुचाने के लिए 'अमृता फॉर लाइफ' राष्ट्रीय अभियान की चलाया गया। अभियान का लक्ष्य आंवला और ग्वारपाठे की तरह लोग देश के लोगों को गिलोय के गुणों से परिचित करवाने के साथ गिलोय के कृषिकरण को घर-घर तक पहुंचाना था। नेशनल मेडिसिनल प्लांट्स बोर्ड के सभी क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र, सभी प्रदेशों के राज्य मेडिसनल बोर्ड और सभी राज्यों के आयुर्वेद विभागों इस अभियान को सफल बनाने के लिए अहम भूमिका अदा की और गिलोय के कृषिकरण को बढ़ाने के लिए साल भर देश के विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित किए गए और किसानों को गिलोय के पौधे आर्बंटित किए गए। गिलोय का पौधा कितना गुणकारी है, इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि नेशनल मेडीसनल प्लांट्स बोर्ड ने इस साल जिस बीस औषधीय पौधों को राष्ट्रीय अभियान में शामिल किया है, उनमें गिलोय भी शामिल है।

सम्पादक
डॉ. अरूण चंदन

हम ऑनलाईन उपलब्ध हैं
pdf यहां से डाऊनलाड करें।
www.rcfcnorth.in/download

लेखकों से आग्रह
यदि आप विषय से संबंधित कोई लेख/अनुभव/जानकारी प्रकाशनार्थ भेजना चाहें तो निसंकोच भेजें। छपने योग्य होने पर अवश्य प्रकाशित किया जाएगा।
सम्पादक

हमसे संपर्क करें
क्षेत्रीय निदेशक / सम्पादक
ई- चरक
जड़ी- बूटी बाजार
क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र
राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड
आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान
जोगिंद्रनगर, मंडी, हिमाचल प्रदेश।
पिन : 175015
हेल्पलाईन : 8544734206
दूरभाष : 01908 222333
बैवसाइट : www.rcfcnorth.in
मेल: rcfcnorth@gmail.com

सहजन मानव के लिए कुदरत का चमत्कार

डॉ. सौरभ शर्मा
उपनिदेशक, क्षेत्रीय एवं सुगमता केंद्र, उत्तर भारत, जोगेंद्रनगर।

सहजन में 92 तरह के मल्टीविटामिन्स, 46 तरह के एंटी आक्सीडेंट, 36 तरह के दर्द निवारक और 18 तरह के एमिनो एसिड मिलते हैं। यह तीन सौ रोगों, अस्सी प्रकार के दर्द व बहत्तर प्रकार के वायु विकारों का शमन करता है।

सहजन औषधीय गुणों से भरपूर पेड़ है। इसके अलग-अलग हिस्सों में तीन सौ से अधिक रोगों के रोकथाम के गुण हैं। सहजन को अस्सी प्रकार के दर्द व बहत्तर प्रकार के वायु विकारों का शमन करने वाला बताया गया है।

सहजन में 92 तरह के मल्टीविटामिन्स, 46 तरह के एंटी आक्सीडेंट, 36 तरह के दर्द निवारक और 18 तरह के एमिनो एसिड मिलते हैं। इसमें कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, कैल्शियम, पोटेशियम, आयरन, मैग्नीशियम, विटामिन ए, सी और बी कॉम्प्लेक्स प्रचुर मात्रा में है। सहजन में दूध की तुलना में चार गुना कैल्शियम और दुगना प्रोटीन पाया जाता है।

सहजन किसी भी तरह की भूमि पर पनप सकता है और कम देख- रेख की मांग करता है। यह जिस जमीन पर यह लगाया जाता है, उसके लिए भी लाभप्रद है। इसके फूल, फली और टहनियों को कई तरह से उपयोग में लाया जा सकता है। चारे के रूप में इसकी पत्तियों के प्रयोग से पशुओं के दूध में डेढ़ गुना तक बढ़ोतरी होती है। इसकी पत्तियों के रस को पानी में मिलाकर फसल पर छिड़कने से उपज में बढ़ोतरी है। यह भोजन के रूप में अत्यंत पौष्टिक है और इसमें औषधीय गुण हैं। इसमें पानी को शुद्ध करने के गुण भी मौजूद हैं। पानी में घुल कर सहजन एक प्रभावी नेचुरल क्लैरीफिकेशन एजेंट बन जाता है। यह न सिर्फ पानी को बैक्टीरिया रहित बनाता है बल्कि यह पानी की सांद्रता को भी बढ़ाता है।इसकी फली के अचार और चटनी कई बीमारियों से मुक्ति दिलाने में सहायक हैं। सर्दियां जाने के बाद फूलों की सब्जी बना कर खाई जाती है फिर फलियों की सब्जी बनाई जाती है।

करीब पांच हजार वर्ष पूर्व आयुर्वेद ने सहजन की खूबियों को पहचाना था। सहजन के बीज से तेल निकाला जाता है और छाल पत्ती, गोंद, जड़ आदि से दवाएं तैयार की जाती हैं। सहजन की फली वात व उदरशूल में, पत्ती नेत्ररोग, मोच, शियाटिक व गठिया में उपयोगी है। सहजन की जड़ दमा, जलोधर, पथरी, प्लीहा रोग के लिए उपयोगी है। इसकी छाल का उपयोग शियाटिका, गठिया व यकृत आदि रोगों के लिए श्रेयष्कर है। सहजन से वात व कफ रोग शांत हो जाते हैं। इसके ताज़े पत्तों के रस से कान दर्द ठीक हो जाता है। सहजन की सब्जी खाने से गुर्दे और मूत्राशय की पथरी निकल जाती है और पित्ताशय की पथरी में लाभ होता है। सहजन के पत्तों का रस पेट के कीड़े निकालता है और उलटी दस्त भी रोकता है। यह रक्तचाप में लाभकारी होता है और मोटापा कम करता है। इससे दांत दर्द में आराम मिलता है। इसके पत्तों का साग खाने से कब्ज दूर होती है। यह मिर्गी के दौरों में लाभकारी होता है। इससे घाव और सूजन ठीक होते है।

वात, पित्त, कफ ठीक करे अड़ूसा

घरेलू उपचार, पारम्परिक उपयोग

अड़ूसा वातकारक, कफ, पित्त कम करने वाला, स्वर के लिए उत्तम, हृदय की बीमारी, रक्त संबंधी बीमारी, तृष्णा या प्यास, सांस संबंधी रोग, खांसी, ज्वर, वमन, प्रमेह, कोढ़ तथा क्षय रोग में लाभप्रद है।

अड़ूसा का सेवन कफ को पतला कर बाहर निकालता है तथा सांस-नलिकाओं स्थायी प्रसार करता है।

अड़ूसा रक्त शोधक एवं रक्त स्तम्भक है, क्योंकि यह छोटी रक्त वाहनियों को संकुचित करता है। यह प्राणदानाड़ी को अवसादित कर रक्तभार को कुछ कम करता है।

अड़ूसा की पत्तियां सूजन कम करने, वेदना कम करने, कुष्ठ से राहत दिलाने में मदद करती हैं। इसका प्रयोग पूराने कफ रोगों में अधिक लाभकारी होता है।

आरसीएफसी नॉर्थ जोगेंद्रनगर, फीचर सर्विस

अड़ूसा का उपयोग सर्दी-जुकाम के इलाज के लिए घरेलू नुस्खों के तौर पर होता आ रहा है। आयुर्वेद में भी वासा कहे जाने वाले अड़ूसा का औषधि के रुप में विशिष्ट स्थान है। आयुर्वेद में कहा जाता है कि वासा वात, पित्त और कफ को कम करने में बहुत काम आता है। अड़ूसा रक्तशोधक एवं रक्तस्तम्भक है।

झाड़ीदार पौधा : अड़ूसा का पौधा झाड़ीदार होता है। श्वेत अड़ूसा के फूल सफेद रंग के होते हैं। इसकी मंजरियां फरवरी से मार्च में आती हैं। इसकी फली 18-22 मिमी लम्बी, 8 मिमी चौड़ी, रोम वाली होती है तथा प्रत्येक फली में चार बीज होते हैं। रक्त अड़ूसा के फूल गहरे लाल रंग के होते हैं। कृष्ण अड़ूसा का पूरा भाग बैंगनी रंग का होता है।

गुणों की खान : अड़ूसा सिरदर्द, आंखों की बीमारी, पाइल्स, मूत्र रोग जैसी अनेक बीमारियों में बहुत फायदेमंद साबित होता है। आचार्य चरक ने अड़ूसा को रक्तपित्त की चिकित्सा में श्रेष्ठ माना है। इसका पत्ता कफ, पित्त को कम करने वाला होता है। नेत्ररोगों के साथ पथरी, ब्लड ग्लूकोज, कुष्ठ, ग्रहणी, योनिरोग और वात संबंधी बीमारियों में अन्य द्रव्यों के साथ वासा का प्रयोग मिलता है।

लैमन ग्रास के लिए उपयुक्त है पहाड़ी क्षेत्र, साल में होती हैं तीन फसलें

खून की कमी को दूर करता है और दिमाग को तेज करती है लैमन ग्रास

घरेलू उपचार, पारम्परिक उपयोग

लैमनग्रास एंटीऑक्सीडेंट, एंटीफ्लामेंटरी और एंटीसेप्टिक गुणों से भरपूर होती है, जो कई तरह की स्वास्थ्य समस्याओं से बचाए रखने में मददगार होती है, वहीं दिमाग तेज करने के लिए भी यह बेहतरीन है।

लैमनग्रास की चाय पीना शरीर के विभिन्न हिस्सों में होने वाले दर्द को समाप्त करने के लिए काफी लाभकारी होता है।

लैमनग्रास की चाय खास तौर से सिरदर्द और जोड़ों के दर्द में बेहद फायदेमंद है।

लैमनग्रास पेट दर्द, गैस, पेट फूलना, कब्ज, अपच, जी मिचलाना या उल्टी आना जैसी समस्याओं में असरकार औषधि है। यह पेट में होने वाली ऐंठन में भी फायदेमंद है।

लैमनग्रास आयरन से भरपूर होने के कारण एनीमिया के रोगियों के लिए फायदेमंद होती है। नियमित सेवन से शरीर में आयरन की कमी को पूरा किया जा सकता है।

कॉस्मेटिक इंडिस्ट्री के लिए लैमन ग्रास ऑयल

आरसीएफसी नॉर्थ जोगेंद्रनगर, फीचर सर्विस

लैमन ग्रास एक तरह की घास होती है, जिसमें निंबू की तरह खूशबू होती है। इसकी पत्तियों का उपयोग लेमन टी बनाने में होता है। इसकी खेती करने के लिए पहाड़ी क्षेत्र उपयुक्त रहता है। लैमन ग्रास का पौधा साल भर में तीन बार उपज देता है। हर कटाई करने के बाद इसकी सिंचाई करने से उत्पादन में बढ़ोतरी होती है। लैमन ग्रास की खेती करने के लिए अप्रैल-मई माह में इसकी नर्सरी तैयार की जाती है। जुलाई अगस्त में पौधे खेत में लगाने के लायक हो जाते है। इस फसल को बहुत ही काम सिंचाई की जरूरत होती है।

औषधीय गुणः लैमनग्रास एंटीऑक्सीडेंट, एंटीफ्लामेंटरी और एंटीसेप्टिक गुणों से भरपूर होती है। यह न केवल खून की कमी को देर करती है, बल्कि दिमाग को भी तेज करती है। एनीमिया के रोगियों के लिए लैमनग्रास का सेवन बहुत गुणकारी होता है।

साल में तीन फसलें : लेमन ग्रास की पहली कटाई 120 दिनों के बाद शुरू हो जाती है। उसके बाद दूसरी और तीसरी कटाई 50 से 70 दिनों के अंतराल में होती है। लेमन ग्रास के छोटे छोटे टुकड़े कर आसवन विधि से तेल निकाला जाता है। प्रति एकड़ में लगभग 100 किलो ग्राम तेल का उत्पादन होता है।

उपयोगः इससे निकलने वाले तेल का उपयोग कई तरह के सौदर्य प्रसाधनों व खाद्य पदार्थों में निम्बू की खुशबू लाने के लिए होता है। लैमनग्रास की सौंदर्य प्रसाधन व खाद्य उद्योग में बढ़ती मांग के चलते अब बड़े पैमाने पर इसकी व्यवसायिक खेती की जा रही है।

गुड़हल की जड़ से लेकर पुष्प तक में किसी न किसी बीमारी का अचूक इलाज

कई रोगों में रामबाण है पूजा- पाठ में काम आने वाला गुड़हल का फूल

आयुर्वेद में गुड़हल की जड़ों से बनती कई औषधियां

आरसीएफसी नॉर्थ जोगेंद्रनगर, फीचर सर्विस

गुड़हल के फूल को सनातन धर्म में अत्यन्त पवित्र माना गया है। गुड़हल के फूल को अड़हुल का फूल भी बोलते हैं। अधिकांशतः गुड़हल के फूल का इस्तेमाल पूजा-पाठ आदि कामों के लिए किया जाता है, लेकिन आयुर्वेद में गुड़हल को एक बहुत ही उत्तम औषधीय पौधा बताया गया है। इसकी जड़ से लेकर पुष्प तक हर चीज किसी न किसी बीमारी का इलाज है।

तुरही के आकार के फूल : गुड़हल विश्व के समशीतोष्ण, उष्णकटिबंधीय और अर्द्ध उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में पाया जाता है। गुड़हल की पत्तियां प्रत्यावर्ती, सरल, अंडाकार या भालाकार होती हैं और अक्सर इनके किनारे दंतीय होते हैं। फूल आकार में बड़े, आकर्षक, तुरही के आकार के होते हैं। प्रत्येक पुष्प में पांच या इससे अधिक पंखुड़ियां होती हैं। इन पंखुडियों का रंग सफेद से लेकर गुलाबी, लाल, पीला या बैंगनी भी हो सकता है और इनकी चौडाई 4-5 सेमी तक होती है। इसका फल सूखा और पंचकोणीय होता है, जिसकी हर फांक में बीज होते हैं। फल के परिपक्व होने पर यह अपने आप फूटता है और बीज बाहर आ जाते है।

गुण व उपयोग : आयुर्वेद में गुड़हल याददाशत बढ़ाने, अनिद्रा रोग दूर करने, गंजापन दूर करने शरीर को चुस्त रखने जैसी बिमारियों के उपचार में उपयोगी माना गया है। भारतीय पारंपरिक चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद के अनुसार सफेद गुड़हल की जड़ों को पीस कर कई दवाएं बनाई जाती हैं।

घरेलू उपचार, पारम्परिक उपयोग

गुड़हल के पत्तों को पीसकर लगाने से बालों को पोषण मिलता है, बाल काले, चमकीले व लम्बे होते हैं और सिर भी ठंडा रहता है।

गुड़हल डैंड्रफ की समस्या से छुटकारा पाने में लाभकारी होता है और इससे गंजापन दूर होता है।

गुड़हल का शरबत पीते रहने से नींद न आने की परेशानी में लाभ होता है।

गुड़हल से ल्यूकोरिया ठीक होता है। कुछ ही माह में खून की कमी दूर होती है व शरीर में शक्ति मिलती है।

गुड़हल के उपयोग से याद्दाश्त बढ़ती है, मासिक धर्म के विकारों में लाभ होता है, पुरुषत्व (सेक्सुअल स्टेमना) भी बढ़ता है।

गुड़हल से मुंह के छालों, सिर दर्द व पेट दर्द में आराम मिलता है।

आयुर्वेद में मेहंदी का खास महत्व, त्वचा और हड्डी रोग में खास भूमिका

खून साफ करती, सिरदर्द दूर करती और शरीर की गर्मी भगाती मेहंदी

घरेलू उपचार, पारम्परिक उपयोग

मेहंदी का प्रयोग खून साफ करने के लिए औषधि के तौर पर किया जाता है। घुटनों या जोड़ों में दर्द की समस्या में मेहंदी का लेप करने से राहत मिलती है।

मेहंदी सिरदर्द व माइग्रेन जैसी परेशानियों के लिए एक बेहतरीन विकल्प है। मेहंदी को पीसकर सिर पर लगाने से काफी फायदा होता है।

मेहंदी की छाल या पत्ते पीस कर शरीर के जले हुए स्थान पर लगाने से घाव जल्दी ठीक होता है।

मेहंदी के लेप से बाल काले, घने और चमकदार होते हैं।

मेहंदी तासीर में ठंडी होने के कारण शरीर में बढ़ी हुई गर्मी को कम करने में प्रयोग में लाई जाती है। हाथों और पैर के तलवों में मेहंदी लगाने से शरीर की गर्मी कम होती है।

मेहंदी का नहीं होता है कोई भी साइड इफेक्ट

आरसीएफसी नॉर्थ जोगेंद्रनगर, फीचर सर्विस

मेहंदी केवल हाथों की शोभा ही नहीं बढ़ाती है, बल्कि इसके पत्ते शरीर को ज़बरदस्त स्वास्थ्य लाभ भी देते हैं। मेंहदी से व्यक्ति को कई प्रकार की बीमारियों से राहत मिलती है और शरीर स्वस्थ रहता है। मेंहदी का प्रयोग विशेष रूप से औषधि के तौर पर किया जाता है। इससे कई प्रकार के त्वचा रोग, हड्डी रोग में आराम मिलता है। आयुर्वेद में मेंहदी को उत्तम माना गया है। मेंहदी के कोई साइड इफेक्ट भी नहीं हैं।

झाड़ीदार पौधेः मेहंदी एक कटीला पुष्पीय पौधा होता है। मेहंदी का पौधा उत्तरी अफ्रीका, अरब, भारत तथा पूर्वी द्वीप समूह में पाया जाता है। यह एक घरेलु और जंगली दोनों प्रकार का पौधा है। पुष्पों में मदकारी सुगन्धी होने से इसे मदयन्तिका कहते हैं। मेहंदी के झाड़ीदार पौधे होते हैं और शाखाएं कांटेयुक्त नुकीली होती हैं। पुष्प हरिताभ श्वेत, गुच्छों में सुगंधित शाखाग्र खिलते हैं। फल गोल तथा कई बीजों वाले होते हैं। फूल, जुलाई से सितम्बर तक खिलते हैं, फल पुष्पकाल के बाद आता है।

गुणकारी तत्व : मेहंदी की पत्ती तथा बीज इसके प्रयोज्य अंग हैं। मेहदी में लासौन, हाइड्रोक्सी, नेफ्थाक्विनोन, रेजिन, टेनिन, गेलिक, एसिड, ग्लूकोज, मेनीताल, वसा, म्यूसीलेज तथा क्विनोन जैसे घुलनशील तत्व पाए जाते हैं।

उपयोग : मेहंदी के इस्तेमाल से दिमाग शांत रहता है। उल्टी, कब्ज, कुष्ठ, बुखार, जलन, रक्तपित्त, पेशाब में कठिनाई, रक्तचाप आदि के उपचार के लिए मेहंदी का इस्तेमाल किया जाता है। कई तरह के सौंदर्य प्रसाधनों में भी मेहंदी का उपयोग किया जाता है।

अपने आप-पास के वातावरण को शुद्ध करने के गुण वाला औषधीय पौधा

लाजवंती हड्डियों को करती है और मजबूत, घाव भरने में भी है रामबाण

कोई छू ले तो सिकुड़ कर खुद को बंद कर लेता पौधा

आरसीएफसी नॉर्थ जोगेंद्रनगर, फीचर सर्विस

लाजवंती का पौधा एक पौष्टिक पौधे की तरह गुणकारी है। इसको छुई मुई, सोने वाला पौधा व संवेदनशील पौधा भी बोलते है। यह एक ऐसा पौधा होता है, जिसको अगर कोई व्यक्ति छू दे तो यह अपने आप को सिकुड़ कर बंद कर लेता है, फिर थोड़ी देर बाद अपने आप ही खुल जाता है।

साल भर उगता : यह पतली शाखाओं वाला और घना काटेदार पौधा होता है इसकी लम्बाई 5 फीट तक हो सकती है। इसका इस्तेमाल जड़ी- बूटी के लिए किया जाता है। यह अधिकांशतः पेड़ों और झाड़ियों के नीचे खाली जगहों व छायादार जगहों पर ज्यादा पाया जाता है। इसमें लाल रंग के फूल लगते हैं। यह साल भर उगता है। लाजवंती के पौधो को उगने के लिए बीज का इस्तेमाल होता है।

गुणकारी तत्वः लाजवंती के पौधों में मिमोसिन और तुर्गोरिन, इसके पत्तों में 4- ओ गल्लिक एसिड जड़ में टैनिन व बीज वाले भाग में म्युसिज होता है। इस पौधे में कुछ ऐसे तत्व पाए जाते हैं, जिनके चलते यह पौधा जहां होता है वहां के वातावरण को शुद्ध कर देता है।

आयुर्वेद में उपयोग : आयुर्वेद में लाजवंती की जड़, पत्तों और बीज का इस्तेमाल अनेक बिमारियों के उपचार के लिए किया जाता है। आयुर्वेद में इसे दर्द निवारक और एंटी डिपेंडेंट उपाय के रूप में प्रयोग किया जाता है। लाजवंती के पूरे पौधे का उपयोग गर्भाशय के ट्यूमर के उपचार सहित जलोदर, संधिशोध जैसी कई बिमारियों के उपचार के लिए किया जाता है।

घरेलू उपचार, पारम्परिक उपयोग

लाजवंती का इस्तेमाल घाव भरने के लिए किया जाता है। यह सांप के काटे व्यक्ति के विष को खत्म कर देता है।

लाजवंती का प्रयोग बवासीर से पीड़ित व्यक्ति को आराम पहुंचाता है। लाजवंती को अल्सर की बीमारी में भी इस्तेमाल किया जाता है।

लाजवंती की जड़ डायरिया पीड़ित के लिए लाभकारी है। मधुमेह रोगियों को इसके पत्तों के रस से लाभ प्राप्त होता है।

लाजवंती के पत्तों को पीस कर गले पर लगाने से खरास व खांसी में राहत मिलती है।

लाजवंती पेशाब में जलन व अपच में गुणकारी है। यह पथरी में राहत देती है।

लाजवंती के सेवन से हड्डियों में मजबूती आती है। हड्डियों के खिचाव में भी यह गुणकारी होती है।

दिल को मजबूत रखे कढ़ी पत्ता

घरेलू उपचार, पारम्परिक उपयोग

कढ़ी पत्ता में डाइक्लोरोमेथेन, एथिल एसीटेट और महानिम्बाइन जैसे खास तत्व होने के कारण वजन घटाने, कोलेस्ट्रॉल को कम करने और फैट के स्तर को नियंत्रित करने की क्षमता पाई जाती है।

कढ़ी पत्ता में कैल्सियम आयरन, जिंक और वैनेडियम जैसे खनिज पदार्थ होने के कारण यह एनीमिया से निजात दिलाने में सहायक है।

कढ़ी पत्ता में हाइपोग्लाइसेमिक गुण पाए जाते हैं जो शरीर में शुगर की मात्रा को कम करने में सहायक व डायबिटीज जैसे जोखिमों को कम करने में मददगार होते हैं।

कढ़ी पत्ता में टैनिन और एल्कलॉइड जैसे तत्व पाए जाते हैं, जो लिवर की कार्यक्षमता को बढाते हैं। ये हेपेटाइटिस और सिरोसिस के जोखिम को कम करते हैं।

आरसीएफसी नॉर्थ जोगेंद्रनगर, फीचर सर्विस

मीठी नीम के नाम पहचान रखने वाला कढ़ी पत्ता मसाले के तौर पर स्वाद बढ़ाने के अलावा औषधीय पौधे के तौर पर भी अपनी खास पहचान रखता है। कढ़ी पत्ता हमारे खाने के स्वाद को तो बढ़ाता ही है, साथ ही यह हमारे शरीर को कई प्रकार की बीमारियों से भी दूर रखने में मदद करता है।

खुशबूदार पत्तियां : कढ़ी पत्ता का पौधा छोटा होता है, जिसकी उंचाई 2-4 मीटर होती है और जिसके तने का व्यास 40 सेंमी तक होता है। इसकी पत्तियां नुकीली होतीं हैं, हर टहनी में 11-21 पत्तीदार कमानियां होती हैं और हर कमानी 2-4 सें.मी. लम्बी व 1-2 सें.मी. चौड़ी होती है। ये पत्तियां बहुत ही खुशबूदार होती हैं।

औषधीय गुण : कढ़ी पत्ता में कई प्रकार के औषधीय गुण होते हैं। इसमें विटामिन सी, विटामिन ए, विटामिन बी, विटामिन ई, कार्बोहिड्रेट, फाइबर, कैल्शियम, फास्फोरस, लोहा व विटामिन सी पाए जाते हैं। कढ़ी पत्ता में एंटी डायबिटीक, एंटीऑक्सीडेंट , ऐंटीमाइक्रोबियल, एंटी इन्फ्लेमेटरी, हिपैटोप्रोटेक्टिव, ऐंटी हाइपरकोलेस्ट्रोलेमिक जैसे औषधीय गुण मौजूद हैं।

राष्ट्रीय मिशन

विभिन्न चरणों में फोटोग्राफिक प्रलेखन सहित में शामिल सभी घरों का एक डेटाबेस, अपनाई गई प्रक्रिया, दृष्टिकोण, लाभ अर्जित करने और स्थिरता तंत्र पर एक राइटअप के साथ राष्ट्रीय औषध पादप बोर्ड को प्रस्तुत किया जाएगा।

ठंड, खांसी भगाए पत्ता आजवायन

घरेलू उपचार, पारम्परिक उपयोग

पत्ती अजवायन ठंड और खांसी को दूर करने के लिए गुणकारी है।

पत्ती अजवायन में संतुलित मात्रा में सोडियम, आयरन, कैल्शियम और पोटैशियम होने के कारण इसके उपयोग से मूत्र संबंधित परेशानी नहीं होती।

पत्ती अजवायन पाचन नली और मस्तिष्क में किसी भी तरह के संक्रमण और सूजन को रोकने में भी मददगार है। इसमें एंटी-एजिंग गुण भी मौजूद होते हैं।

पत्ती अजवायन के पत्तों की चाय पीने से न सिर्फ पेट साफ होता है बल्कि इससे जुड़ी बीमारियां भी खत्म होती है।

पत्ती अजवायन में एंटीऑक्सिडेंट, एंटीकैंसर एंटीबायोटिक, एंटी-इन्फ्लैमेटरी गुण होते हैं, जिससे कई स्वास्थ्य लाभ होते हैं।

आरसीएफसी नॉर्थ जोगेंद्रनगर, फीचर सर्विस

एक पूरी तरह से अलग पौधे का हिस्सा होने के बावजूद, इनकी सुगंध आजवायन की तरह होने के कारण इसे पत्ती अजवायन के रूप में जाना जाता है। पत्ती अजवायन के नाम से मशहूर ये पत्तियां जिस पौधे की होती हैं, उसे 'इंडियन बोरेज' अथवा इंडियन मिंट के नाम से भी जाना जाता है। इसे अजवायन प्लांट भी कहा जाता है।

पत्तियां हैं गुणकारी: इस पौधे की पत्तियां बेहद फायदेमंद हैं, जो चमकीले हरे रंग की होती हैं और व्यापक और गूदेदार होते हैं। पत्तियों पर बहुत ही महीन और मुलायम बालों की एक परत होती है। इसे आसानी से अपने किचन गार्डन में उगाया जा सकता है। पौधे के रूप में इसे गमले में भी उगाया जा सकता है।

आयुर्वेद में प्रतिष्ठित: यह कई स्वास्थ्य लाभों के लिए आयुर्वेद में भी प्रतिष्ठित है। पत्तियों के कई उपयोग और फायदे हैं। पत्ता अजवाइन में विटामिन के, ए और सी से भरपूर होते हैं। इसमें एंटी-ऑक्सीडेंट की भी अच्छी मात्रा होती है। इसे कच्चा भी खा सकते हैं। इसकी चाय, सूप, पराठे और पकौड़े में इसका इस्तेमाल कर सकते हैं। इसे विशिष्ट स्वाद के लिए व्यंजनों में भी एड किया जा सकता है।

तुलसी को सुख और कल्याण के प्रतीक के तौर पर देखा जाता है, होती है पूजा

शरीर शोधन के साथ पर्यावरण के संरक्षण में भी बड़ी गुणकारी है तुलसी

घरेलू उपचार, पारम्परिक उपयोग

तुलसी दमा और टीबी रोग में बहुत ही लाभकारी है।

तुलसी मलेरिया सहित मच्छरों के काटने से होने वाली ज़्यादातर बीमारियों के इलाज में कारगर है। यह बुखार में भी गुणकारी है।

तुलसी की जड़ कुष्ठ रोग में लाभकारी होती है। यह माइग्रेन और साइनस में भी राहत देती है।

तुलसी आंखों के रोगों के लिए रामबाण औषधि है और सभी वात रोगों को दूर करने में सहायक है।

तुलसी किडनी के रोगों में भी लाभकारी है। इसके हर हिस्से को सांप के ज़हर में उपयोगी माना गया है।

तुलसी दिल को मजबूत बनाती है। इससे हाई ब्लड प्रेशर ठीक हो जाता है।

तुलसी यौन रोगों के इलाज यौन-दुर्बलता व नपुंसकता में फायदेमंद है।

आयुर्वेद में तुलसी के गुणों का विशेष स्थान

आरसीएफसी नॉर्थ जोगेंद्रनगर, फीचर सर्विस

हिंदू परिवारों में तुलसी को सुख और कल्याण के प्रतीक के तौर पर देखा जाता है और उसकी पूजा की जाती है। आयुर्वेद में तुलसी के विभिन्न औषधीय गुणों का एक विशेष स्थान है और इसे संजीवनी बूटी के समान भी माना जाता है। आयुर्वेदिक चिकित्सा में तुलसी के हर भाग को स्वास्थ्य के लिहाज से फायदेमंद बताया गया है।

पर्यावरण के लिए उपयोगी : आमतौर पर घरों में दो तरह की तुलसी देखने को मिलती है, एक जिसकी पत्तियों का रंग थोड़ा गहरा होता है और दूसरा, जिसकी पत्तियों का रंग हल्का होता है। तुलसी शरीर का शोधन करने के साथ-साथ वातावरण का भी शोधन करती है तथा पर्यावरण संतुलित करने में भी मदद करती है। तुलसी एक द्विबीजपत्री तथा शाकीय औषधीय पौधा है। यह झाड़ी के रूप में उगता है और एक से तीन फुट ऊंचा होता है। पत्तियां एक से दो इंच लम्बी सुगंधित और अंडाकार या आयताकार होती हैं। पुष्प मंजरी अति कोमल एवं आठ इंच लम्बी और बहुरंगी छटाओं वाली होती है, जिस पर बैंगनी और गुलाबी आभा वाले छोटे हृदयाकार पुष्प चक्रों में लगते हैं। बीज चपटे पीतवर्ण के अंडाकार होते हैं।

रासायनिक संरचना : तुलसी में ट्रैनिन, सैवोनिन, ग्लाइकोसाइड और एल्केलाइड्स प्रमुख रसायन हैं। तुलसी में 0.3 प्रतिशत तक तेल पाया जाता है, जिसमें यूजीनॉल, यूजीनॉल मिथाइल ईथर तथा कार्वाकोल होता है। सीटोस्टेरॉल, पामिटिक, स्टीयरिक, ओलिक, लिनोलक और लिनोलिक अम्ल इसके मुख्य घटक हैं। तुलसी के पत्तों में विटामिन सी व कैरीटीन होता है। तुलसी बीजों में हरे पीले रंग का तेल पाया जाता है।

डायबिटीज के मरीजों के लिए बहुत काम की चीज, चर्बी घटाकर मोटापा दूर करता

आंखों के लिए है अमृत के समान आंवला शरीर को भी देता है ठंडक

फल के साथ आंवले के पेड़ की भी होती है पूजा

आरसीएफसी नॉर्थ जोगेंद्रनगर, फीचर सर्विस

आंवला एक छोटे आकार और हरे रंग का फल है। इसका स्वाद खट्टा होता है। आयुर्वेद में इसे अत्यधिक स्वास्थ्यवर्धक माना गया है। आंवला विटामिन सी का सर्वोत्तम और प्राकृतिक स्रोत है। हिन्दू मान्यता में आंवले के फल के साथ आंवले का पेड़ भी पूजनीय माना जाता है। कहा जाता है कि अगर आंवले के पेड़ के नीचे भोजन पका कर खाया जाए तो सारे रोग दूर हो जाते हैं।

विटामिन सी : आयुर्वेद के अनुसार यह फल पित्तशामक है और संधिवात में उपयोगी है। ब्राह्मरसायन तथा च्यवनप्राश दो विशिष्ट रसायन आंवले से तैयार किए जाते हैं। आंवले का मुरब्बा और आचार गुणकारी हैं। आंवले के रस व गूदे में विटामिन सी पाया जाता है।

नर और मादा फूल : आंवला एक मुलायम और बराबर शाखाओं वाला वृक्ष है। इसके फूल नर और मादा होते हैं और हरे-पीले रंग के होते हैं। फल हल्के पीले रंग के होते हैं, जिनका व्यास 1.3-1.6 सैंमी होता है। आंवले में आर्द्रता, प्रोटीन, वसा, खनिज द्रव्य, कार्बोहाइड्रेटस, कैल्शियम, फॉस्फोरस, लौह व निकोटिनिक एसिड पाए जाते हैं। इसमें गैलिक एसिड, टैनिक एसिड, ग्लूकोज, अलब्यूमिन तत्व भी पाए जाते हैं।

औषधीय गुण: आंवला दाह, पांडु, रक्तपित्त, अरुचि, त्रिदोष, दमा, खांसी, श्वास रोग, कब्ज, क्षय, छाती के रोग, हृदय रोग व मूत्र विकार को नष्ट करने की शक्ति रखता है। आंवला वीर्य को पुष्ट करके पौरुष बढ़ाता है और चर्बी घटाकर मोटापा दूर करता है।

घरेलू उपचार, पारम्परिक उपयोग

आंवला डायबिटीज के मरीजों के लिए बहुत काम की चीज है। पीड़ित व्यक्ति अगर आंवले के रस का प्रतिदिन शहद के साथ सेवन करे तो बीमारी जल्द से राहत मिलती है।

आंवला एसिडिटी की समस्या में बेहद फायदेमंद होता है। आंवले जूस से पेट की सारी समस्याओं से निजात मिलती है।

आंवला पथरी की समस्या में भी कारगर उपाय साबित होता है।

आंवला का सेवन खून में हीमोग्लोबिन की कमी को दूर करता है। यह शरीर में लाल रक्त कोशिकाओं के निर्माण में सहायक होता है।

आंवला आंखों के लिए अमृत समान है। यह आंखों की रोशनी को बढ़ाने में सहायक होता है और मोतियाबिंद को दूर करता है।

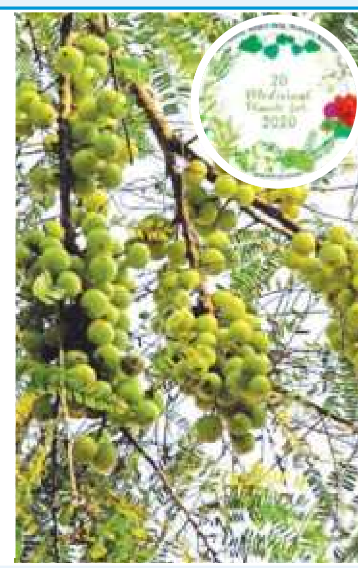

मेडीसनल प्लांट्स फॉर 2020

राष्ट्रीय अभियान

औषधीय पौधों का वितरण कृषि जलवायु क्षेत्र के अनुसार भिन्न होता हैं। विशिष्ट क्षेत्र में घरेलू हर्बल थेरेपी के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले बारहमासी औषधीय पौधों की प्रजातियां अभियान गतिविधियों के लिए भी शामिल हो सकती हैं।

सेक्सुअल एक्टिविटी को बढ़ाने में मददगार होता है निर्गुन्डी का पौधा

बैक पेन और स्लिप डिस्क के रोग में बेहतरीन पेन किलर है निर्गुंडी

घरेलू उपचार, पारम्परिक उपयोग

निर्गुन्डी के पत्तों को कूटकर टिकिया बनाकर यदि पीड़ा वाली जगह पर बांध दिया जाए तो दर्द तुरंत कम हो जाता है।

निर्गुन्डी की पत्तियों का काढ़ा बनाकर कुल्ला करने मात्र से गले का दर्द दूर हो जाता है।

निर्गुन्डी तेल व थोड़ा सा नमक मिलाकर गरारे मुंह में छाले या गले में सूजन में लाभ मिलता है।

निर्गुन्डी का तेल लगाने मात्र से कटे होंठों को राहत मिलती है। निर्गुन्डी की पत्तियों के तेल से कान दर्द में लाभ मिलता है।

निर्गुन्डी के पत्तों का काढ़ा सायटिका जैसी स्थिति में भी प्रभावी होता है।

निर्गुन्डी का चूर्ण सेक्सुअल एक्टिविटी को बढ़ाने में मददगार होता है। छाल का चूर्ण मांसपेशियों की सूजन में लाभकारी होता है।

निर्गुन्डी के तेल की मालिश सर्दी, जुकाम और बुखार में रोगी को आराम देती है।

पंचकर्म चिकित्सा प्रणाली में निरगुंडी के उपयोग

आरसीएफसी नॉर्थ जोगेंद्रनगर, फीचर सर्विस

निर्गुन्डी एक ऐसा औषधीय पौधा है, जो शरीर को रोगों से रक्षा करता है। इसे वात से सम्बंधित बीमारियों में रामबाण औषधी माना जाता है। छह से बारह फुट उंचा इसका पौधा झाड़ीनुमा सूक्ष्म रोमों से ढका रहता है। पत्तियों की पहचान किनारों से की जा सकती है। इसके फल छोटे,गोल एवं सफेद होते हैं।

पांच के समूह में पत्तियां : निरगुंडी की पत्तियां पांच के समूह में लगी होती हैं। यही पत्तियां दवा के काम आती हैं। इसकी छाल पतली, चिकनी, नीलाभ वर्ण की होती है। पत्तियां दो से छह इंच लंबी तथा लगभग तीन चौथाई इंच चौड़ी होती हैं। पत्तियों का डण्ठल लंबा होता है। पत्तों को मसलने से एक विशिष्ट प्रकार की तीव्र अप्रिय गंध निकलती है। पुष्प छोटे नीलाभ या बैंगनी आभा लिए लंबी मंजरियों में होते हैं। फल छोटे-गोल, एक चौथाई इंच व्यास के होते हैं तथा पकने पर काले हो जाते हैं। बीज काली मिर्च जैसे छोटे मिश्रित रंग के होते हैं। इसकी छाल हरे रंग की तथा लकड़ी पीले रंग की होती है।

गुण : निरगुंडी में कैस्टकीन और आमसो ओरमंटीन रासायनिक तत्व मिलता है। आयुर्वेद की पंचकर्म चिकित्सा प्रणाली में निरगुंडी के कई तरह से उपयोग होते हैं। यह कफ वातशामक औषधि के रूप में जानी जाती है। यह दर्द को कम करने वाला व घाव को भरने वाले गुणों से युक्त होता है। इसके पत्ते में रक्तशोधन का भी विशेष गुण इसका उपयोग जुकाम, सिरदर्द, आमवात विकारों तथा जोड़ों की सूजन में किया जाता है। यह केशों के लिए हितकर, नेत्र ज्योति बढ़ाने वाला, शूल, सूजन, वायु, पेट के कीड़े नष्ट करने, कोढ़ व ज्वर आदि रोगों की चिकित्सा में भी काम आता है।

अश्वगंधा कैंसर सेल्स को बढ़ने से रोकता है और नए सैल नहीं बनने देता

मानव शरीर की प्रतिरोधक क्षमता और यौनक्षमता बढ़ाती है अश्वगंधा

अश्वगंधा की जड़ से आती है घोड़े के मूत्र जैसी गंध

आरसीएफसी नॉर्थ जोगेंद्रनगर, फीचर सर्विस

अश्वगंधा का यह नाम शायद इसलिए पड़ा है कि इसकी जड़ में घोड़े के मूत्र जैसी गंध होती है। औषधि के रूप में इसकी जड़ और फलों का इस्तेमाल होता है। यह एक विषनाशी बूटी है जो स्नायुतंत्र पर कार्य करती है। अश्वगंधा एक सीधा बढ़नेवाला, शाखाओं वाला छोटा पौधा है जिसकी सामान्य लंबाई डेढ़ मीटर तक होती है। अश्वगंधा कठोर और सूखा बर्दाश्त करने वाला पौधा है। अश्वगंधा न केवल कैंसर के उपचार में कारगर है, बल्कि इंसान की प्रतिरोधक व यौनक्षमता बढ़ाने में अहम भूमिका निभाता है।

रासायनिक घटक : अश्वगंधा में एनाफेरीन, एनाहाइग्रीन, बीटा-सिस्टेरॉल, क्रोजेनिक एसिड, सिस्टेन, कस्कोहाइग्रीन, लौह तत्व, सियूडोट्रोपिन, स्कोपोलेटिन, सोमिनिफेरीनीन, सोमनीफेरीनीन, ट्रोपैनॉलस, विथेफेरीन-ए, वेथेनीन, विथेनेनीन, वेथेनॉलाइड्स ए- वाई, एनाफेरिन, एनाहाइग्रीन, सिस्टरॉल, क्लोरोजेनिक एसिड व विथनीन जैसे रासायनिक घटक होते हैं। अश्वगंधा के मुख्य अवयव एल्केलॉइड्स और स्टेरॉइडल लेक्टॉन है।

आयुर्वेद में उपयोग : आयुर्वेद में अश्वगंधा का उपयोग शारीरिक क्षमता और आरोग्यवृद्धि में किया जाता है। इसकी जड़ का इस्तेमाल बलवर्द्धन, यौनक्षमता में वृद्धि और शरीर में प्रतिरोधक क्षमता वृद्धि के लिए होता है। अश्वगंधा के फल, पत्तियां, जड़ों और बीजों का इस्तेमाल यौनक्षमता में वृद्धि, मूत्रोत्पादक व स्मृति क्षय के उपचार के लिए होता है।

घरेलू उपचार, पारम्परिक उपयोग

अश्वगंधा का इस्तेमाल कैंसर जैसी खतरनाक बीमारी में बहुत असरकारी है। यह कैंसर सेल्स को बढ़ने से रोकता है और नए सेल्स नहीं बनने देता।

अश्वगंधा शरीर में रिएक्टिव ऑक्सीजन स्पीशीज का निर्माण करता है, जो कैंसर सेल्स को खत्म करने और कीमोथेरपी से होने वाले साइड इफेक्ट्स से बचाने का काम करता है।

अश्वगंधा में मौजूद ऑक्सीडेंट इम्युन सिस्टम को मजबूत बनाने का काम करता है। यह सर्दी-जुकाम जैसी बीमारियों से लड़ने की शक्ति प्रदान करता है।

अश्वगंधा वाइट ब्लड सेल्स और रेड ब्लड सेल्स दोनों को बढ़ाने का काम करता है। यह मानसिक तनाव जैसी गंभीर समस्या को ठीक करने में लाभदायक है।

दर्द व सूजन में वरदान है अदरक

घरेलू उपचार, पारम्परिक उपयोग

अदरक में सूजन को कम करने की शक्ति अत्यधिक मात्रा में होती है। यह उन लोगों के लिए वरदान की तरह है, जो जोड़ों के दर्द और सूजन से परेशान हैं।

अदरक में एंटीऑक्सीडेंट्स होते हैं, जो शरीर में ताजे रक्त के प्रवाह को बढ़ाते हैं। इनमें खून को साफ करने का खास गुण होता है।

अदरक में कैंसर से शरीर को बचाए रखने का गुण होता है। यह कैंसर पैदा करने वाले सेल्स को खत्म करता है व स्तन कैंसर पैदा करने वाले सेल को बढ़ने से रोकता है।

अदरक में खून को पतला करने का नायाब गुण होता है। यह ब्लड प्रेशर में तुरंत लाभ के लिए जाना जाता है।

अदरक में सभी प्रकार के दर्द से राहत देने की क्षमता इसे खास बनाती है।

आरसीएफसी नॉर्थ जोगेंद्रनगर, फीचर सर्विस

अदरक गुणों से भरपूर मसाला है। सर्दी, खांसी, पाचन और सामान्य दर्द से लेकर कैंसर, ह्रदय रोग और मधुमेह जैसी बीमारियों में इसे फायदेमंद पाया गया है। गीले स्वरूप में इसे अदरक तो सूखने पर इसे सौंठ कहते हैं। अदरक का कोई बीज नहीं होता।

पौष्टिक तत्व : अदरक का पुष्प एक युग्मसंमित या असंमित इपिगाइनस होता है। इसका भूमिगत तना खाने के काम आता है। इसकी प्रकृति गरम होती है। अदरक में कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा रेशा, कैल्शियम, फास्फोरस, आयरन, विटामिन ए, नमी जैसे पौष्टिक तत्व पाए जाते हैं। इसमें सिमपोडियल राइजोम पाया जाता है।

गुण : आयुर्वेद के अनुसार अदरक गुरु, तीक्ष्ण, उष्णवीर्य, अग्नि प्रदीपक, कटु रसयुक्त, मल भेदक, भारी, गरम, उदराग्नि बढ़ाने वाला, विपाक में मधुर रसयुक्त, रूक्ष, वात-कफ नाशक होता है।

आयुर्वेद में उपयोग : आधी से ज्यादा पारंपरिक हर्बल औषधियों में अदरक को शामिल किया जाता है। अदरक एक शक्तिशाली पाचक है और इसका जोड़ों के दर्द के उपचार में भी इस्तेमाल किया जाता है।

संख्या- ओ- ६ ८०९ /सीएम-२/201९

योगी आदित्यनाथ

मुख्य मंत्री
उत्तर प्रदेश

दिनांक : 13 AUG 2019

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि आयुष मंत्रालय भारत सरकार के क्षेत्रीय एवं सुगमता केन्द्र उत्तर भारत, जनपद मण्डी, हिमाचल प्रदेश द्वारा मासिक पत्रिका 'जड़ी–बूटी बाजार' का प्रकाशन किया जा रहा है।

कृषि और किसान का विकास करके ही देश को वास्तविक रूप से विकसित किया जा सकता है। मा0 प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी किसानों की समृद्धि के लिए पतिबद्ध हैं। इसके दृष्टिगत केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकार द्वारा समन्वित प्रयास किए जा रहे हैं। औषधीय पौधों की खेती को प्रोत्साहित करने तथा किसानों के कल्याण के लिए प्रदेश सरकार अनेक योजनाओं का संचालन कर रही है। मैं आशा करता हूं कि पत्रिका 'जड़ी–बूटी बाजार' में पाठकों के लिए उपयोगी सामग्री का समावेश किया जाएगा।

पत्रिका के उद्देश्यपरक प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(योगी आदित्यनाथ)

For more information contact:

Regional Cum Facilitation Centre, Northern Region 1,
National Medicinal Plants Board, Ministry of AYUSH
at **Research Institute in Indian Systems of Medicine (RIISM),**
Department of Ayush, Himachal Pradesh
Joginder Nagar-175015, District Mandi, Himachal Pradesh
rcfcnorth@gmail.com
rcfcnorth.in, echarak.in, bharataayush.com
+91 90151 70106

rcfcnorth.in

bharataayush.com